६।७।८६

निघंटु-विज्ञान

प्रकाशक—
चि० चू० पं० विश्वेश्वरदयालुजी वैद्यराज

॥ श्री गणेशायनमः ॥

निघंटु–विज्ञान

(मख़ज़न उल मुफ़रदात)

अनुवादक—

पं० जगन्नाथप्रसाद शर्मा हेड मुदर्रिस

कस्बा–जसपुर, जिला–नैनीताल

प्रकाशक—

चि० चू० पं० विश्वेश्वरदयालुजी वैद्यराज

सम्पादक—अनुभूत योगमाला

बरालोकपुर–इटावा

—

प्रथमवार १००० | सन् १६४० ई० | मूल्य २)

प्रकाशकः—

पं० विश्वेश्वरदयालु वैद्यराज,

बरालोकपुर इटावा ।

मुद्रकः—

दी–हरिहर प्रिंटिंग काटेज

बरालोकपुर-इटावा ।

शोधन विधान

१—अभ्रक

अभ्रक को बारीक कतर के थोड़े से छुहारों की गुठली के साथ पोटली में बांधकर गर्म जल के बर्तन में खूब मलें, जब अभ्रक छनकर पानी में आ जावे, तो नितार और सुखाकर बराबर के शहद और नौसादार में खूब पीसकर एक मिट्टी के बर्तन में भर कपरौटी कर तीन दिन रात खूब आंच देनी चाहिये, यहां तक कि शहद और नौसादर की तोल जाती रहे नहीं तो फिर आंच दें। फिर बराबर के शोरे के साथ पीस कर दूसरी बार आंच दें। तो हलका और नर्म हो जायगा, यह अभ्रक बवासीर और कालिज के लिये मुजर्रब है, यानी आजमाया हुआ है।

२—अभ्रक

हल (पीसना)—एक बड़ी मूली को भीतर से खाली करके खूब पिसी हुई अभ्रक को उस मूली में भरें और मूली ही की पक्की डाट लगाकर घोड़े की लीद में गाड़ दें, चौथे दिन निकाल लें, ईश्वर की इच्छा से अभ्रक सफेद चमकदार पानी की भांति हो जायगी।

३—अभ्रक

इहराक़ (फूंकना)—सफेद और साफ अभ्रक को धोकर और हथौड़े से धीरे २ कुचल के अंगूर के तीक्ष्ण सिर्के में भिगोदें, और तीन दिन पीछे उसी सिर्के में पकाकर निकाल के कूटें फिर बड़ी सी थैली में खजूर की गुठली के साथ भरके तीक्ष्ण सिर्के में मलें जब नम व लचलचा हो जाय तब निकाल कर पत्थर पर खूब पीसकर टिकिया बनालें, फिर मिट्टी के बर्तन में बन्द कर कपरौटी लगा बिनवा कंडों की आंच १ सप्ताह तक दें तो राख हो जाय, फिर निकाल कर भंगरे व धतूरे बहेड़े और आंवले के अर्क में अलग २ पीसकर टिकिया बना मिट्टी के बर्तन में भर कपरौटी कर, अलग २ पहले की तरह आंच दें। परीक्षा अभ्रक के कुश्ते की यह है कि—धूप में उसकी चमक न मालूम हो, किसी २ मनुष्य ने ३०० आंचों तक देना कहा है। परन्तु यह विधि हिन्दी है।

४—अबरेशम

तहमीस (भूनना)—अबरेशम को साफ व धो और कतर कर लोहे के बर्तन में करके अग्नि पर रखें और तले ऊपर करते जांय, यहां तक कि कड़ा और पीसने के योग्य हो जाय।

५—अजवाइन

तदबीर—तीन दिन रात तीक्ष्ण सिर्के में भिगो कर छाया में सुखालें, परन्तु सिर्का चार अंगुल अजवाइन से ऊपर रहे।

६—अफ़यून

तहमीस (भूनना)—अफ़ीम को टुकड़े २ बाक़ले की तरह कर, मिट्टी के बर्तन में धीरे २ भूने या चिराग़ (दिये) की लौ में टपटपालें।

७—अफ़यून

तदबीर—अफ़यून को पानी या गुलाब में चार पहर तर करके आग पर रक्खें और मलें जिससे कि खूब हिल हो जाय फिर छान नीचे की गाद दूर कर पानी को इतना पकाकर इकट्ठा करलें कि

गोली बांधने योग्य हो जाय यदि पकाते समय थोड़ी सी अंगूर की शराब भी मिलादें तो स्वाद युक्त और गुणदायक हो जावे।

८---अण्डे का छिलका

इहराक़ (जलाना)—अंडे के छिल्के को तीन दिन नमक के पानी में भिगोकर भीतर की झिल्ली और मल को साफकर कूट के मिट्टी के वर्तन में भरे फिर कपरौटी करके फूंकदे कि भस्म होजावे। उत्तम छिलका बच्चा निकला हुआ होता है, शुतुरमुर्ग के अंडे का छिलका सबसे उत्तम होता है।

९---ऐ

तदबीर—अंडे के छिलके को नमक के पानी और खिली हुई राख में भिगोकर धोवें, अन्दर की झिल्ली व मल दूर कर और फिर साफ पानी में धो और सुखाकर काम में लावें।

नोट—ठंडे पानी से कई बार धोना जिससे कि उसकी दुर्गन्ध जाती रहे।

१०—एलुवा

तदबीर—एलुवे को सीप या बिही या शलजम या गाजर या अमरूद में रखके और कपड़ा लपेट ऊपर से आटा लगाकर अग्नि में डाल दें थोड़ी देर बाद जब कि गर्मी एलुवे तक पहुँच गई हो, तब निकाल कर सुखालें और काम में लावें।

११—वारतङ्ग के पत्ते

तरवीक़ (पतला करना)—पत्तों को धो और साफ करके, पीसकर उनका रस निकाले फिर आग पर पकावें जब फट जाय तब छान लें, और काम में लावें।

१२---आदमी क बाल

तहमीस—बालों को साबुन लगाकर धोना, सूखजाने पर कंघी करे फिर बारीक कतर आग पर इतना खिलावे कि पीसने के योग्य हो जाय और उनमें बू आने लगे।

नोट—आदमी के शिर के बाल उत्तम होते हैं।

१३---पारा

तस्फ़िया व तदबीर (साफ़ करना)—पारे को गाढ़े कपड़े में चालीस बार छानें, फिर कांच या पत्थर या मिट्टी के खरल में अरंड का स्वरस डाल डाल कर पीसें, जिससे कि स्याही और चिकनाहट दूर हो, फिर मकोय के स्वरस में पीसे फिर भिगोई हुई हरड़ के अर्क में पीसें, फिर आधे पानी से हांडी में नर्म आंच से पकावें, थोड़ा २ पानी तीन बार और डालें जब पानी जल जावे और पारा रह जावे तब उसको लेकर काम में लावें।

१४—बारहसींगा

इहराक (जलाना)—इसके बारीक बर्क कतर कपड़ा लपेट ऊपर से कपरौटी कर तेज आग में फूंक दें, लेकिन ऊपर के इलाज में कुश्ता करने की आवश्यकता नहीं है, घिस कर ही काम में लाया जावे।

१५—बिच्छू

तहमीस व इहराक़—बिच्छू को मिट्टी के वर्तन में जिन्दा रख कर और ढकन व खमीर लगा, गर्म तनूर (तन्दूर) में रात्रि भर रक्खें, सुबहको निकाल और पीस कर रेशमी वस्त्र में छान कर काम में लावें।

गर्म तनूर से यह मतलब है कि तनूर में खूब आग जला कर निकाल लें और साफ करलें, उसमें

बिच्छू वाले वर्तन को रख कर तनूर को बन्द करदें उत्तम तनूर जलाने के वास्ते अंगूर की लकड़ी है, और यदि बिच्छू को राख करना हो तो तीक्ष्ण आंच दें कि राख हो जावे, उत्तम बिच्छू नर है, नर की पहिचान दुबला व पतलापन है।

१६—बहरोजा

तदबीर—एक हांडी में आधी दूर तक पानी भर उसके मुंह पर छछरा (छीदा बुना) कपड़ा बांध उसके ऊपर बहरोजा रख मुंह बन्द कर आग पर रक्खें. जब बहरोजा पानी की गर्मी से टपक और छन कर हांडी में गिर जावे तो कपड़ा मैल सहित अलग कर बहरोजा लेवे, इसी प्रकार पांच छै बार करें, जिससे कि बहरोजा चूर्ण करने योग्य हो जाय।

१७—फिटकड़ी

तमहीस—फिटकरी को करछे में रख कर तेज अग्नि पर रक्खें जिससे कि पिघल कर सूखी और हवील सी हो जाय।

१८—भिलावा

तदवीर—दो पत्थर या लोहे के टुकड़े गर्म कर और भिलावे को दो खंड कर उसमें खूब दबादें जो शहद सा निकले उसको बांस की कमची से अलग करके कहीं रखदें और भिलावे को छील कूट कर दवा में मिलावें और यदि माजून व मिश्रित दवा में मिलाना हो तो छिलके सहित भिलावा को अखरोट नारियल के तेल के साथ कूटें।

१९—भंग

तदबीर व तहमीस—भंग को गुब्बार से शुद्ध कर दूब घास के स्वरस में मिला कर सुखावें, फिर भिगोई हुई अजवायन के पानी में मल के सुखावें फिर गो घृत लगा कर कोरे मिट्टी के वर्तन में आग पर खिलावें कि जलने न पावे।

२०—प्याज जङ्गली व नरगिसी

तशविया (भुनभुनाना)—यह दो प्रकार की होती है, एक गूदेदार और दूसरी परतदार। जिसमें गूदेदार विष और बेकाम की है।

परत वाली प्याज की शुद्धी की विध यह है कि प्याज को साफ करके उसके ऊपर सना हुआ आटा लपेट कर भूभल अग्नि में दबावें, जिससे कि आटा पक जाय और प्याज तक गर्मी पहुँच जाय, फिर निकाल कर आटा छुड़ा काम में लाना चाहिये।

२१—तुर्बुद

तस्फिया (साफ करना)—इसकी जड़के ऊपर का छिलका और भीतर का गूदा दूर करके रेशा लें, क्योंकि इन दोनों में विषैलापन है।

२२—तुख्म रेहां व तुख्म कोंचा

तहमीस (भूनना)—कोरे मिट्टी के वर्तन में आग पर रख कर खिलालें, जिससे कि जलने न पावें।

२३—तूतिया

गुसल व तस्वील (धोना व साफ करना)— तूतिये को खूब पीस कर चीनी के वर्तनमें रख ऊपर से अंगूर का स्वरस डालें, सात दिन तक यों ही रक्खा रहने दें. फिर उसी पानी में धीरे २ पीस कर सुखावे. बाद को बर्फ के साथ फिर बारीक पीस और सुखा कर रखलें।

तूतिया बारीक पीस कर बहुत से पानी में घोल लें जब वर्तनकी तली में बैठ जाय तब उसे सुखालें, इसी प्रकार सात बार करें।

२४---चाकसू

तदवीर—चाकसू को पोटली बांध कर साफ या मूंग की दाल या गधे की लीद में पका के छील डालें।

२५---चांदी

इहराक (जलाना)—चांदी के चूर्ण को लोहे के बर्तन में नमक और पानी के साथ तीक्ष्ण अग्नि पर जलावें, ऊपर से थोड़ी सी पिसी हुई गंधक को छिड़क दें तो जल जावेगा।

२६---जस्ता

इहराक—जरा शाहतरा पीस कर जस्ते पर खब घोटदें फिर कपरौटी कर तीक्ष्ण अग्नि में एक दिन रात रक्खें बाद को निकाल कर बारीक पीस लें, यह आंखोंकी बीमारीके लिये लाभदायक है।

२७—चिमगादर

इहराक (जलाना)—चिमगादर के बच्चे के पंख और पेट के मल को दूर कर धोवे और नमक छिड़क कर बर्तन में रख ढकना बन्द कर तीक्ष्ण अग्नि में बर्तन को रक्खें जिससे कि जल जावे।

२८---जमालगोटा

तदबीर—जमालगोटे को एक पोटली में बांध, गोबर या गधे की लीद में पानी मिलाकर डालदें और खूब पकावें, फिर दूसरी बार दही में इसी प्रकार पकावें। फिर जमालगोटे को निकाल दो टुकड़े कर उसके भीतर के अंखुवों को निकाल फेंक दें।

नोट—जिसको मेदे का रोग हो उसको जमालगोटा खाना अच्छा नहीं है।

२९---चूना

गुसल (धोना)—एक बड़े से बर्तन में चूने को घोलकर थोड़ी देर बाद रेत व कंकर जो तली में बैठें उसको दूर कर पानी को रात भर ठहरने दें, सुबह को नितार लें और दूसरा पानी डाल दें, सुबह को वह भी नितार लें। इसी प्रकार सातबार करें, बाद को चूना जो तली में जमा है, उसको सुखाकर काम में लावें।

३०---रांगा

इहराक (जलाना)—एक कंडे (उपले) के बीच में खाली कर गड्ढा करें और लौंग काली मिर्च बराबर और हीरा कसीस चौथाई ले बारीक पीस आधे को कंडे के गड्ढे में बिछावे उसके ऊपर हिरन खुरी रांगा रख कर शेष पिसी हुई दवा को रांग के ऊपर बिछा कर गड्ढा बन्द कर और थोड़े से बिनवा कड़ों के बीच में उसे रख फूंक दे, बाद को स्वांग शीतल होने पर निकाल कर काम में लावे।

३१---रोगन तैल

गुसल (धोना)—कोइ सा तैल हो उस पर ठंडा पानी बहुत सा डाल कर तेल को पानी पर से नितार लें, यदि अधिक गर्म कोई तेल हो तो उसकी शुद्धी के लिये लगातार यही विधि तीन बार या इससे अधिक आवश्यकतानुसार करे।

३२—जफ़्त [एक तैल है]

गुसल—जफ्त को पिघला कर ठंडे पानी में डालें, जिससे मैल मिट्टी नीचे बैठ जाय और जो पानी के ऊपर रहे उसको लेले, इसी प्रकार लगातार तीन बार करें और काम में लावें यदि गुनगुना पानी हो तो उत्तम है।

३३---जीरा

जीरे को चीनी के बर्तन में सिरके के साथ तीन दिन रात तक भीगा रक्खें, सिर्का ४ अंगुल जीरे के ऊपर रहे, फिर जीरे को निकाल सुखालें और काम में लावें, लेकिन धूप या आग पर न सुखाना चाहिये।

३४---ज़मुर्रद

गुसल (धोना)—जमुर्रद को खूब खरल कर पानी में मिलावें जो बर्तन की नली में उसकी कंकर या दरदरा बैठे उसको लेकर फिर पीसकर और पानी में मिलावें इसी प्रकार लगातार कई बार पीस २ कर पानी में मिलावें, फिर सब पानियों को एक जगह मिलाकर एक दिन रात बन्द करके रक्खा रहने दें बाद को जो तली में बैठा है उसको लेकर काम में लावें आंख के लिये फिर भी पीसें।

३५---सांप

इहराक़ (जलाना)—जौन सा भी सांप हो जीवता हुआ एक बर्तन में बन्द कर ढक्कन लगा कपरौटी कर एक रात्रि भर तनूर में रक्खे फिर निकाल कर देखें कि सुख गया होगा बाद को पीसकर काम में लावें, यह ख़ूनाज़ीर को लाभदायक है।

३६---सज्जी

इहराक़ (भूनना)—सज्जी को दरदरा करके मिट्टी के बर्तन या करछे को आग पर खूब गर्मकर उसमें डालें और किसी वस्तु से उसे चलाते जाय जब राख सी हो जाय तब उतार कर काम में लावें।

३७---सुर्मा

गुसल व तकलीस (धोना व भुर्भुरा करना)—सुर्मे को तीन दिन रात हरी सौंफ के रस में भिगो कर छाया में सुखालें, बाद को रुई लपेट कर आग पर जलावें, जब धुंआ निकलना बन्द हो तो निकाल कर साफ करलें।

अन्यच्च—सुर्मे की डली को बकरी की चर्बी में लपेट कर आग पर रक्खें, जब चर्बी जल जाय और सुर्मा लाल हो जाय तब निकाल कर खी के दूध या गौ के घृत में ठंडा करलें, या सुर्मे को खूब बारीक खरल कर बहुत से पानी में घोल दें, जब तली में बैठ जाय तब सुखालें।

३८---सफेदा

गुसल (धोना)—सफेदा को पीस के पानी में घोलदें जब ठहर जाय तब दरदरी कंकड़ी को फिर पीसकर पानी में घोलें इसी प्रकार तीन बार पीसें और घोलें, बाद को एक दिन रात उस पानी को ठहरा कर नितार लें और तली में जमें हुये को काम में लावें।

३९---सकमूनिया

तरबिया (भुलभुलाना)—सेब या बिही या अमरूद को भीतर से खोखला कर घुने हुये तिल उसके भीतर चिपका, सकमूनियां को उसके भीतर रख मुंह बन्द कर और कपड़े में लपेट ऊपर सना हुआ आटा लगा, तनूर या भूभल में रक्खें, जब पकजाय तो निकाल सकमूनियां को अलग कर छाया में सुखा काम में लावें।

४०—संगबसरी

तदबीर—संगबसरी को सात बार आग में लाल कर गुलाब या दही के तोड़ या अनार के पत्तों के रस में या नीबू के रस में बुझा ठंडा कर काम में लावें।

४१—संखिया

हिल—संखिया को बारीक पीस लटजीरे की राख आठवां भाग मिला एक आतशी शीशी में भरे फिर उड़द की खिचड़ी पका शीशी को खिचड़ी में गाड़ देवे, एक पहर के बाद निकाल कर सात दिन तक धूप में रक्खें, ईश्वर की कृपा से बारीक हो जायगा।

४२—सोना

इहराक (जलाना)—सोने का बारीक चूर्ण कर लोहे के बर्तन में रक्खें, ऊपर आठवां भाग पिसा हुआ सीसा छिड़कें बाद को नमक का पानी उसके २ अंगुल ऊपर तक भर बर्तन को आग पर रख पकावें जब पानी सब जल जाय तब सोने को निकाल कर खरल करें और पानी में धोवें यानी कई बार पीस २ कर पानी की तली में बैठावे जब धुल जावे तब काम में लावें।

४३—सींगिया विष

तदवीर—सींगिया विष को एक कपड़े की पोटली में बांधे और पोटली में एक लोहे का तार बांद कर दूसरा सिरा तार का एक लकड़ी में बांध दे और एक बड़ी हांडीमें पांचसेर दूधगले तक भरके पोटली उसमें इस तरह से लटकावे कि पोटली दूध से छः अंगुल ऊपर रहे तार बंधी लकड़ी को हांडी के किनारों पर लगादे फिर उसके ऊपर ढक्कन लगा के धीमी आंच पर रक्खें, एक दिन रात के पीछे हांडी को उतार सींगिया उसमें से निकाल और सुखाकर काम में लावें। और दूध भरी हांडी को पृथ्वी में गाड़ दे जिससे कि कोई जानवर उसे न खावे और यदि सींगिया खाने के लिये दरकार हो तो यही विधि तीन बार करें। ४० दिन के पीछे दूध की हांडी को पृथ्वी से निकाले और उसमें के कीड़े छानकर सुखा ले यह किसी २ तिला के लिये उत्तम चीज है।

४४---सीप

इहराक (जलाना)—सच्ची सीपी को ले उसके ऊपर मिट्टी लगा तनूर में खूब जलावे जिससे कि जलकर श्वेत व नर्म और भुरभुरी हो जाय नहीं तो दुबारा कपरौटी करके जलावे बाद को पीस कर काम में लावें।

४५—सीसा

इहराक़ (जलाना)—सीसे के बारीक पत्रों को एक मिट्टी के बर्तन में रख उस पर थोड़ा सा पिसा हुआ गंधक बुरक के बर्तन का मुख किसी ऐसे ढक्कन से बन्द करो कि जिसमें छेद हो फिर उस पर कपरौटी लगाओ, फिर आग में फूंक दो जब अच्छी तरह भस्म हो जाय तब निकाल और उसे पीस कर काम में लाओ।

४६-शीशा [कांच]

तकलीस (चूना बनाना)—कांच को साफकर बारीक पीस लोहे के करछले में रख आग पर खूब लाल करो बाद को सज्जी के पानीमें बुझाओ। इसी प्रकार से लगातार तीन बार करो तो शीशा नर्म और मिट्टी के समान हो जायगा फिर पीस कर काम में लाओ। यह पथरी को तोड़कर बहादेने के वास्ते अद्भुत गुणदायक है।

४७—शोरा

तसईद (जौहर उड़ाना)—साफ और शुद्ध क़लमी शोरा लेकर पीसो। एक कोरी हांडी में दो अंगुल मोटी तह जमाओ उसके ऊपर सिर्वांकी के

बीज का चूर्ण बुरकाओ फिर उसके ऊपर दूसरी तह शोरे की लगाओ फिर सिर्वाकी का चूर्ण बुरकाओ इसी प्रकार सात तह जमाओ उस हांडी पर एक दूसरी हांडी उलटी करके दोनों के मुंह आपस में जोड़ दो और ऊपर से कपड़मिट्टी लगा दो फिर चूल्हे पर रख के उसके नीचे धीमी २ आग १ दिन जलाओ फिर हांडी को खोल कर ऊपर की हांडी में से शोरे को (जो उड़ कर ऊपर जा लगा है) निकाल लो और काम में लाओ।

यह सोजाक व जियान और पथरी के लिये पाव भर गाय के दूध के साथ खाना अद्भुत गुणदायक है।

४८—अकीक

इहराक व तकलीस(जला कर चूना बनाना)—अक़ीक को अग्नि पर खूब गर्म और लाल कर ठंडे पानी में बुझाओ, इसी प्रकार लगातार कई बार करो, जब पानी सूख जावे और अकीक नर्म और सुभुरा हो जावे, तब काम योग्य समझो।

४९—ग़ारीकून

मुदब्बर व मुगरबल (तदवीर छानने की)—ग़ारीकून को कम्बल या फलालेन के टुकड़े में खूब छानो जिससे कि उसमें से रेशे जो नाखूनसे जिनमें विषैलापन होता है दूर हो जावे। बाद को ग़ारीकून को काम में लाओ।

५०—कासनी के पत्ते

तर्वीक (पतला करना)—बिना धोये हुये कासनी के पत्तों को मल कर उनका रस निकाल आग पर फाड़ कपड़े में छान कर साफ शुद्ध करलें, सफरावी बुखार को और जिगर के वरम को लाभदायक है, इनको कभी न धोवे क्योंकि इनका गुण दूर हो जाता है।

५१—काफूर

तसईद (जौहर उड़ाना)—काफूर को एक कोरी हांड़ी में भर उसके ऊपर दूसरी उलटी हांडी रख, दोनों के मुंह आपस में बांध डमरू सा कर कपड़ मिट्टी लगा, धीमी आंच दें जब काफूर उड़ कर ऊपर की हांडी में जा लगे तब उसको निकाल कर काम में लावे।

५२—कुचला

तदबीर—कुचले को एक दिन रात भिगोवे,जब फूल जाय तब छिलका दूर कर, सोहन से रेत चूर्ण करे, चूर्ण को एक रात दिन सिर्के में भिगो कर सुखावे। या उसी चूर्ण को पोटली में बांध हांडी में दूध के साथ पकावे और पोटली बांध कर सुखाले और दूध को कहीं अलग दूर फेंक दे।

५३—कछुवा

इहराक (जलाना)—कछुवे का पेट फाड़ भीतरका मल निकाल साफ करे और खूब धो डाले बाद को मिट्टी की कोरी हांडी में बन्द कर, कपरौटी लगा तन्दूर या चूल्हे में रख आंच दे, जब जल कर सफेद हो जाय तब निकाल के काम में लावे।

५४—गंधक

तदबीर—एक हांडी में गले तक दूध भर बारीक कपड़े से उसका मुंह बांध और ढांप दे, उस कपड़े पर दरदरा गंधक पीस कर रख दे और उस पर उलटा लोहे का तवा रखे,तवे पर दहकते अंगारे रख कर खिलावे जब गंधक पिघल और छन कर दूध में पहुँच जाय तब उसे निकाल कर काम में लावे।

५५—गोखुरू

तदबीर—गोखुरू को ३ दिन रात दूध में भिगो और निकाल छाया में सुखावे, इसी प्रकार तीन बार करे फिर सुखा और कूट कर काम में लावे, यह जियान व कुव्वत के वाह के लिये गुणकारी है।

५६—कहरवा

इहराक—अकेले कहरवा को टुकड़े २ कर एक वर्तन में बन्दकर कपरोटी लगा फूंकदें, फिर निकाल और पीस कर काम में लावे, कहरवा को बिना फूके भी काम में लाते हैं।

५७—खीरा

तशविया (भुलभुलाना)—खीरे के ऊपर मिट्टी सनी हुई लपेट गर्म भूभल में दबादे, बाद को निकाल, मिट्टी छुड़ा साफ कर पानी निचोड़ काम में लावे।

५८—केकड़ा

इहराक (जलाना)—नहर का बड़ा केकड़ा जो मादा हो, मादा की पहिचान यह है कि यदि उसकी पीठ में सुई गाड़ें तो कुछ रतूबत निकले, उस केकड़े को चीड़ फाड़ पेट का मल दूर कर और पांव काट नमक और अंगूर की राख लगा खूब धोवें बाद को खुश्क कर एक वर्तन में रख मुंह बंद कर ऊपर कपड़ मिट्टी लगा, एक रात तन्दूर में रखे जब राख हो जावे तब उसे निकाल और पीस कर काम में लावें।

५९—लाजवर्द

गुसल (धोना)—लाजवर्द को खूब बारीक रेत के समान पीस पानी में घाले और हिलाकर उसमें जैतून का तेल डाले और पकावे फिर तली में बैठालें, फिर खूब पीस कर पानी में घाल जैतून का तेल डाल कर पकावें जब तली में बैठ जाय तब निकाल और खुश्क कर काम में लावे।

६०—लाख

गुसल (धोना)—एक वर्तन में बहुत सा खूब गर्म पानी भर चिराग की लाय से लाख को पिघला कर उस पानीमें टपकाते जांय जिससे उसका मैल व मिट्टी पानी की तली में बैठती जाय, लाख को पानी में से नितार कर यही विधि तीन बार करे, पश्चात् लाख को निकाल के काम में लावे।

६१ लौकी [कद्दू]

तशविया (भुलभुलाना)—लौकी के ऊपर पिंडोल मिट्टी लपेटकर दोपहर तक भूभल में दबा रहने दे, पश्चात् निकाल मिट्टी छुड़ा और धोकर लौकी का पानी निचोड़ ले फिर छानकर काम में लावे, यह सफरा के बुखार और जिगर के वरम को गुणदायक है।

६२—लोहचून

तदबीर—फौलाद के लोहे को सोहन से चूर्ण कर मिट्टी कोरे पात्र में भर अग्नि पर खूब लाल कर तिल के तेल में बुझाओ, दूसरी बार गर्म कर अंगूर के सिर्के में व तीसरी बार गौमूत्र में और चौथी बार गौ के खट्टे दही के तोड़ में बुझाओ, फिर धो कर पीसकर पानी में बैठा कर निकाल लो और काम में लाओ।

६३—लोहे का मैल

तदबीर—लोहे का मैल जो गर्म कर कूटने से निकलता है, जिसको पपड़ी कहते हैं उसे कूट छान खूब तीक्ष्ण सिर्के या अंगूर शराब में १४ दिन तक

भिगोवें परन्तु सिर्का या शराब चार अंगुल ऊपर रहे इससे निकाल कर सात दिन तक गंदना के स्वरस या लहसुन के पत्तों के स्वरस में भिगोवें, बीच में एक बार रस को बदल दे यह रस भी चार अंगुल ऊपर रहे, इसके पश्चात् निकाल के बादाम रोगन या खुब्बाजी के तैल में भूने, फिर खूब बारीक पीस या खरल करके काम में लावें।

६४—माजरयून

तदबीर—माजरयून को तीन दिन रात तीक्ष्ण सिर्के में भिगोवें, बीच में एक दो बार सिर्का बदल दे, परन्तु सिर्का चार अंगुल ऊपर रहे, पश्चात् निकाल के सुखालें, फिर बारीक कर रोगन बादाम में तर करके जिस प्रकार चाहें काम में लावें।

६५—माजू

तदबीर—माजू को तिलके तैल में तले,जब फट जाय तब कूट छान कर काम में लावें।

६६—मूंगा

इहराक (जलाना) मूंगे को कूट कर एक मिट्टी के बर्तन में भर मुंह बन्द कर कपड़ मिट्टी लगा एक रात भर तन्दूर में रक्खें, तो जल कर सफेद हो जायगा, लेकिन जल कर राख न होने पावे, यदि एक बार में ठीक न हो तो दूसरी बार फिर तन्दूर में रक्खे।

६७—मूंगे की जड़

इहराक—इसकी भी विधि मूंगे ही की तरह है और यह बिना कपरौटी करे भी फुके तो भस्म हो सकती है।

६८—मुर्दासङ्ग

गुसल (धोना)—मुर्दा संग को बराबर के लाहौरी नमक में खूब पीस मिलाकर पत्थर या मिट्टी के बर्तन में रख ऊपर से इतना पानी डालो कि चार अंगुल ऊपर रहे.फिर पानीको हिला झुला कर छोड़ दो, सात दिन के पश्चात् ताजा पानी बदल और हिला दिया करो, इसी प्रकार हर सात दिन के पीछे ऐसा ही किया करो, ४० दिन के पश्चात् पानी में नीचे बैठे मुर्दासंग को खुश्क कर काम में लाओ।

६९—मुर्दा बादल

इहराक (जलाना)—मुर्दा बादल जिसे स्पंज कहते हैं लेकर साबुन लगा कर साफ करो और धूप में सुखा कर बारीक कतर लो, फिर किसी लोहे या मिट्टी के बर्तन में रखकर आग पर रक्खो और किसी लकड़ीसे चलाते जाओ,तब वह खिल जायगा और पिसने के योग्य हो जायगा (लेकिन जल कर राख न हो) पश्चात् काम में लाओ।

७०—मकोय के पत्ते

तर्वीक (पतला करना)—मकोय के पत्तों को खूब कुचल कर स्वरस निकालो, फिर उसे आग पर फाड़ और छान कर काम में लावो।

७१—मोती

तकलीस (भुभुरा करना)—अनबिधे मोती ले किसी मिट्टी के बर्तन में रख कर उसमें थोड़ा सा दूध डालें और ढक्कन से बन्दकर आटा लगा धीमी आंच पर रक्खें, दो घटे के पश्चात् उतार और निकाललें तो नर्म और पीसने के योग्य हो जावेंगे।

७२—मोम

गुसल(धोना)—मोमको खूब उबालकर ठंडे पानी में डालो और१ दिन तक रहने दो जिससे कि मिट्टी आदि तली में बैठ जाय, पश्चात् पानी पर से मोम

को उतार तीनबार औटा २ कर पानी में डालो फिर काम में लाओ ।

७३—मोमियाई

गुसल धोना—इसकी विधि मोम ही की तरह करनी चाहिये ।

७४—नमक

इहराक़ (जलाना)—नमक को महीन पीस शहद में सान बारीक कपड़े में बांध और कपरौटी लगा तनूर या चूल्हे में एक ईंट के ऊपर रखदें जब तनूर या चूल्हा शीतल होजाय तब निकाल और मिट्टी दूर कर काम में लावें ।

७५—हैड़

तक़लिया व इहराक़ (तलना व जलाना)— हैड़ को गाय के घृत या बादाम रोग़न में इतना तलें कि खूब काली और चमकीली हो जाय ।

इहराक़—काबुली हैड़ को ख़मीरी आटे में बन्द कर गुलगुले बना आग में डाल दें, जब बिलकुल जल जावें तब निकाल और पीसकर काम में लावें ।

७६—हरताल

इहराक़ (फूंकना)—उत्तम हरताल ले, चने के बराबर टुकड़े करे, और एक मिट्टी के पात्र में भर मुंह बन्द कर कपरौटी लगा अंगारों पर रक्खें, ढक्कन में एक रोशन (सूराख़) करदें जिससे कि धुआं निकलता रहे और देखते रहें कि जब तक धुआं निकले तो कच्ची है और जब धुआं सफेद हो तो समझे कि उत्तम और गुणदायक हो गई तब निकाल कर काम में लावें लेकिन इसके धुयें से बदन को बचाते रहें ।

७७—याक़ूत

तकलीस (भुभुरा करना)—याक़ूत को आग पर खूब गर्म कर १० बार पानी में बुझावे तो नर्म व भुभुरा हो जायगा ।

७८—यशब

इहराक़—यशब को पीस मिट्टी के बर्तन में भर, कपरौटी कर तनूर में रक्खें, जिससे कि जल कर सफेद हो जावे लेकिन राख न होवे, यदि एक आंच में न हो तो तीन आंच देनी चाहिये । दो तीन आंच में उम्दा हो जायगा ।

॥ इतिशम् ॥

* श्री गणेशायनमः *

निघंटु-विज्ञान

[मख़्ज़न उल मुफ़रदात]

१—आबनूस

प्रसिद्ध नाम—आबनूस व तेंदू।

संस्कृत—तिन्दुक।

फ़ारसी—आबनूस।

अर्बी—आबनूस।

रंग—काला।

ज़ायका स्वाद—फीका कुछ कड़वा।

पहिचान—एक प्रकार का बहुत ऊंचा पेड़ है।

स्वभाव—गर्म खुश्क दर्जा २ में।

हानि—माद्दे और मेदे को।

दर्पघ्न—समग़ अरबी व शहद।

प्रतिनिधि—कनार की लकड़ी।

मात्रा—१० माशे।

गुण व कार्य—लताफ़त बढ़ाता है, और जिला करता है। पेशाब खूब जारी करता है, गुर्दे व मसाने की पथरी को तोड़ता है, तिहाल और सुद्दे को खोलता है, खून के जोश को बुझाता और साफ करता है, जर्ब व खारिश को नफ़ा करता है, और इसका बुरादा खून के सैलान और मनी के सैलान को रोकता है।

(जहरीला नहीं)

२—आड़

प्र० नाम-आड़ू। सं०-आड़ू। फ़ा०-सफ्तालु। अ०-खोख सूखी। रंग-हरा या कुछ सुर्खी। जा०-शीरीं व चाशनीदार रस। प०-हिन्दी में एक पेड़ का फल है। स्व०-सर्द तर २ दर्जे का। हानि-बलगमी मिजाज को मुज़िर है। दर्प०-शहद और अदरखका मुरब्बा। प्रति०-किशमिश। मात्रा-१० दाने।

गुण व कार्य—माद्दे को नरम करता है, तुष्टगी व जोश खून व गर्मी खुश्क बुखारात को साकिन (ठहराता) करता है, पित्त को और खालिस सफ़रावी व खूनी बुखारको मुफ़ीदहै, भूख व वाहको ज़ियादा करता है, और इसका फूल २ मासे इस्कात हमल को काफी है, इसके बीज का रोगन कान के दर्द और बहरेपन को मुफीद है, इसके पत्तों को पीने और लगाने से माद्दे के कीड़े मर जाते हैं।

(जहरीली नहीं)

३—मदार

प्र० नाम-आक व मदार। सं०-अर्क। फ़ा०-ख़र्ग। अ०-अशर। रंग-सबज़ माइल सफेदी। जा०-कड़वा। प०-एक किस्म का छोटा दरख्त है। स्व०-दूध खुश्क ३ और फूल वगैरा ४ दर्जे में।

हानि–जिगर और फेफड़े को। द०–रोग़न। प्र०–शलरम। मात्रा—३॥ माशे।

गुण व कार्य—इसका दूध गोश्त को खा जाता है और जिल्द में जख्म डाल देता है, इसके पत्ते सर्दी के वरमों को तहलील करते हैं, सर्दी के दर्द को तस्कीन देता है, पेट के कीड़ों को मारता है, इसका फूल खाने को खूब हजम करता है, माहे के मर्जों में भी फायदेमन्द है।

(कुछ–कुछ जहरीला है)

४—आकाहूली

प्र० नाम–आकाहूली। रङ्ग–सब्ज़ माइल व सुर्ख़। स्वाद–कड़वा होता है। पहिचान–एक किस्म दवा हिन्द में होती है। स्वभाव–गर्म खुश्क १ दर्जे में। हानि–पट्ठों और जोड़ों को। दर्पघ्न–शहद। प्रतिनिधि–साग खुर्फा। मात्रा–२½ तोला।

गुण व कार्य—इससे पेट वग़ैराके कीड़े दूर होते हैं। फिसाद बलग़म और सफरा को दूर करती है। प्रमेह यानी जिर्यान मनी को फायदेमन्द है।

(ज़हरीली नहीं)

५—आल

प्र० नाम–आल। सं०–आल। फ़ा० वुकुम। अ०–वुक़म। रंग–सुर्ख। जायका स्वाद–कुछ कड़वा। पहिचान–एक बड़े दरख्त की जड़ है। स्वभाव–गर्म ३ दर्जे की खुश्क ५ दर्जे की। हानि–खाने से कुल ऐज़ा को क़ातिल है। दर्पघ्न–कै करना और घी पीना। प्रतिनिधि–मजीठ।

मात्रा—१ तोला।

गुण व कार्य—जख्म में इसका फ़तीला रखना जख्म को भर लाता है, खून के बहने को रोकता है, जख्म के मवाद को खुश्क करता है। इसके जोशान्दे से मुंह धोना गालों की रंगत को साफ करताहै और नहाना जाड़ बन्दको मजबूत करताहै।

(विशेष जहरीली नहीं है)

६–आलू

प्र० नाम–आलू। सं०–आलुकम्। फ़ारसी–आलू। रंग–सुर्ख व भूरा। जायका स्वाद–फीका। पहिचान–एक फल है, हिन्दुस्तान में पौदे की जड़ में होता है। स्वभाव–सर्द खुश्क १ दर्जे में। हानि–देर में हजम होता और माहे को गर्लीज़ करता है। दर्पघ्न–गोश्त व गरम मसाला। प्रतिनिधि–अर्वी मात्रा–२० तोले।

गुण व कार्य—अजज़ाय मनी को पैदा करता है, और मनी (वीर्य) को ग़लज़त बख्शता है। और चूंकि नफ़ख़ पैदा करता है, इस वास्ते बाह को भी हरकत में लाता है। और मसाने को मज़बूत करता है, और इसका सुर्मा आंखों में कुव्वत देता है, और जाला काटता है।

(जहरीला नहीं)

७—आलू बुखारा

प्र० नाम–अलू बुखारा। सं०–फ़ा०–आलू बुखारा व आलूचा। अ०–अजास। रंग–सुर्ख। जायका स्वाद–तुर्श खट्टा व रसदार। पहिचान–एक प्रसिद्ध फल है। स्वभाव–सर्द १ दर्जे में और तर २ दर्जे में। हानि–दिमाग़ व माहे व पट्ठों को। दर्पघ्न–उन्नाव व मस्तगी व गुलकंद। प्रति०–तमर हिन्दी यानी इमली। मात्रा–१५ दाने से २० दाने।

गुण व कार्य—तबियत को नर्म करता है, आंतों में फिसलन पैदा करता है। सफरावी व ख़ूनी बुखार को अजहद नफा करता है, जोश खून को बुझाता है, पित्तों को दूर करता है, मिचली

को खोता है खुजली के माद्दे को पाक करता है, कुल माद्दे में पुख्तगी पैदा करता है, तशंगी को खोता है, बावजूर तुर्शी के इमली खांसी को मुजिर नहीं है।

(जहरीला नहीं है)

८—आलू बालू

प्र० नाम-आलू बालू। अ०-क़रासिया। रंग-सुर्ख। जायका स्वाद-खट्टा व रसदार। पहिचान-एक छोटा व गोल फल है। स्वभाव-पुख्ता गर्म तर १ दर्ज खाम सर्द खुश्क १ दर्जे में। हानि-हुख्मा लाता है। दर्पघ्न-सिकंजबीन। प्रतिनिधि-आलू बुखारा। मात्रा-१ अदद।

गुण व कार्य—माद्दे से जिगर में जल्द नाफिज होता है, हलक की खुश्की और फेफड़े की खुश्की व खुरखुरेपन को नफा करता है, दस्तावर है, तबियत को नर्म करता है, गर्मी और सोजिस व जोशेखून व सफरे को तस्कीन करता है, मिचली और प्यास को नफा करता है। माद्दे को कुव्वत देता है। (जहरीला नहीं)

९—आंवला

प्रसिद्ध नाम-आंवला। सं०-आंवलकी। फा०आमला। अ०-आमलह। रंग-भूरा, जर्दी माइल और खुश्क स्याह। स्वाद-बकठा व कड़वा। पहिचान-एक पेड़का फल है। स्वभाव-सर्द २ दर्ज में खुश्क २ दर्जे में। हानि-तिहाल को और कुलंज पैदा करता है। दर्पघ्न-शहद व रोगन बादाम। प्रतिनिधि-काबुली हैड़। मात्रा-१० माशे।

गुण व कार्य—काबिज है, माद्दे और आंतों में मवाद वालाई गिरने नहीं देता, खिल्तों को गन्दा होने से बाज रखता है, माद्दे सौदावी को निकाल फेंकता है, दिल को फरहत बख़शता है, और कुव्वत देता है, बानहासा बाह को हरकत में लाता है, इसका मुरब्बा दिल व पेजा में दिमाग व माद्दे को कुव्वत बख़शता है, इसका इस्तैमाल तप में बाद मुसहिल के भी जायज़ है, इसका गाढ़ा गाढ़ा जमाद (लेप) नकसीर को बन्द करता है। (जहरीला नहीं)

१०—आंबा हल्दी

प्रसिद्ध नाम-अम्बिया हल्दी। सं०-दारु हरिद्रा। फा०-दार चोबह। अ०-दार हल्द। रंग=सुर्खी मायल। स्वाद-तलख व बदमजा व कुछ तेज। पहिचान-एक पेड़की जड़ है,यह जमीन के अन्दर होती है। स्वभाव-गर्म खुश्क ३ दर्जे में। हानि-दिल को। दर्पघ्न-नारंज। प्रतिनिधि-बावची। मात्रा-४ माशे।

गुण व कार्य—रीह को तहलील करती है, और आफत रसीदा अजू के ऊपर मवाद गिरने से रोकती है, और जल्दी हजम होती और करती भी है, तथा पथरी को तोड़ फेंकती है, पेशाब के बन्द हो जाने व जर्ब व खारिश व चोट में लेप करने से फायदा करती है, इसका मंजन हमेशा लगाने से मुंह के स्वाद को दुरुस्त रखता है।

(ज़हरीला नहीं)

११—अबरक

प्रसिद्ध नाम-अबरक। संस्कृत व हिन्दी-अभ्रक। फ़ारसी-सितारा जमीन। अर्बी-तलक। रंग-शफ़्फ़ाफ व चमकदार। स्वाद-फीका। पहिचान-खान के पत्थर की किस्म से है और पर्त पर्त होती है। स्वभाव-सर्द २ दर्ज खुश्क १ दर्जे में।

हानि–तिहाल व गुर्दे को। दर्पघ्न–कतीरा व शहद व रोग़न। प्रतिनिधि–तेन क़ीमूलिया।

मात्रा—१ माशा।

गुण व कार्य—मुनासिब दवाइयों के साथ इसका पानी खूनी व जिगरी दस्तों को व मुंह से खून जाने को फायदेमन्द है, और गुर्दे व मसाने की पथरी को तोड़ता है और इसका तिला जखम सीना व वरमाये पिस्तां (छाती के वरम) को नफ़ा करता है, लेकिन सिर्फ इसका पीना ख़तरनाक है। (क़ातिल है)

१२—उटंगन के बीज

प्र०–उटंगन के बीज। फ़ा०–तुख्म अंजरा। अ०–बजरुल क़रीस। रंग–नीला स्याही माइल। स्वा०–फ़ीका बदमज़ा। प०–एक बीज बजरकतां (अजसी) की तरह है। स्व०–गर्म व खुश्क २ दर्जे में। हानि–गुर्दा व आंतों को द०–समगअर्बी व कतीरा। प्र०–ख़िर्दमाना व गन्दना। मात्रा—६ माशा।

गुण व कार्य—खुश्क व तर खांसी और आलात तनफ्फुस को और इस्तस्कां (जलंधर) को मुफीद है, वरमतिहाल को तहलील करता है, गुर्दे के मर्ज को नफ़ा देता है, मुकव्वी बाह है, बलगम को दस्त की राह से निकाल देता है, सीने और फेंफड़े को रद्दी माद्दे से पाक करता है।

(ज़हरीला नहीं)

१३—अतीस

प्र०–अतीस। सं०–अतिविषा। रंग–भूरा। स्वाद–कुछ बकठा। प०–एक घास की जड़ अंगुली सी होती है। स्व०–गर्म खुश्क दो दर्जे में। हानि–काबिज। मात्रा—आधा माशा।

गुण व कार्य—बाह को क़वी करती है, खाने को हजम करती है, दस्तों को बन्द करती है, बलगम को दूर करती है, रियाह को तहलील करती है, बवासीर और इस्तस्काये जक़ी को नफ़ा करती है। जहरीली नहीं है।

१४—अजमोद के बीज

प्र०–अजमोद के बीज। सं०–अजमोद। फ़ा०–तुख्मकरफ्स। अ०–बजरुल करफ्स। रंग स्याह। स्वाद–तेज व चरपरा। प०–एक बीज है। अनीसून की तरह का। स्व०–गर्म खुश्क २ दर्जे में हानि–रद्दी खुबासत पैदा करती और मिर्गी को उभारती है, इसकी जड़, फेफड़े को मुजिर है। द०–अनीसून, मस्तगी। प्र०–खुरासानी अजवायन। मात्रा—६ या ९ माशे, जड़ ७ माशे।

गुण व कार्य—दमे और खुश्क खांसी और अन्दरूनी ऐजा की सर्दी में फायदेमन्द है, रियाह और नफ़क को तहलील करता है, जिगर व तिहाल के सुद्दे को तोड़ देता है, पेशाब खूब लाता है, पथरी को तोड़ता है, भूख व बाह को हरकत देता है। इसकी जड़ बलगमी रोगों को दूर करती है, गिजा को हजम करती है, इस्तस्का को फायदेमन्द है, अपने असर में बीज से कवीतर है।

(बीज व जड़ दोनों जहरीली नहीं है)

१५—अजवायन देशी

प्र०–अजवायन देशी। सं०–यवानिका। फ़ा०–अंजबाह। अ०–मकोन मलूकी। रंग–भूरा स्याही मायल अनीसून की तरह का है। स्वाद–तेज तलखी मायल तेज बू। प०–एक किस्म का बीज अनीसून की तरह का है। स्व०–गर्म व खुश्क ३ दर्जे में। हानि–गर्म मिजाजों को मुजिर है, दर्द शिर

लाने वाला और दूध कम करता है। द०-धनियां, उन्नाब शकर। प्र०-कलौंजी व जीरा स्याह। मात्रा-६ मा० या १ तोला।

गुण व कार्य—खाना हजम करता है, भूख बढ़ाती है, बलग़म के फ़साद और रियाह व अफरा को और इस्तस्क़ा को दूर करती है और सुद्दे यानी रग के बुत्ते को खोल देती है, जिगर की सर्दी को नफा देती है, पेशाब व हैज को जारी करती है और बाज समयात के वास्ते तिरयाक है और मसाना से पथरी को तोड़नेवाली है।

(जहरीली नहीं)

१६—अजवायन खुरासानी

प्र०-अजवायन खुरासानी। सं०-यवानिका। फ़ा०-तुख्मबंग। अ०-बज्र लबंज। रंग-तीन किस्म का स्याह, सफेद व सुर्ख। स्वाद-तेज व कड़वा। प०-एक किस्म का बीज मेथी की मानिन्द है। स्व० सफेद सर्द व खुश्क २ दर्जे में। स्याह सर्द खुश्क ३ दर्जे में। हानि-सफेद खुनाक पैदा करती है और स्याह क़ातिल है। द०-अफ़यून व खशखाश। मात्रा—३ माशा।

गुण व कार्य—सब नजलों को नफा करती है, और सीलान रतूबतको दफे करतीहै,और कानके हर तरह के दर्द को तस्कीन बख्शती है, बलगमी खांसी को मुफीद है, खखार में खून आने को दफै करती है, खुश्की ज्यादा करती है, अजू में सुस्ती पदा करती है, नींद लाती है और बानहासा क़ाबिज व हाबिस हैज बन्द करने वाली बगैरा है।

(स्याह सम क़ातिल है, और सफेद जहरीली नहीं है)

१७—अखरोट

प्र०-अखरोट। सं०-अक्षोट। फ़ा०-चार मगज व गर्दगान। अ०-जोजुल हिन्द। रङ्ग-भूरा स्वाद-फीका लजीज व मर्गन। प०-एक विलायती मेवा है, इसकी गिरी बादाम की गिरी की सी लजीज है। स्व०-गर्म ३ दर्जे और खुश्क २ दर्जे में। हानि-गर्म मिजाजवालोंको। द०-आब,अनार। प्र०-चिरौंजी व चिलगोजा। मात्रा—१ तोला से २ तोला तक।

गुण व कार्य—बहुत ही लतीफ है, तबियत को नर्म करता है, रद्दी माद्दे को तहलील करता है, और बाह ज्यादा लाता है, और ऐजाये रईसा बातनी हवासों को कुव्वत देता है, इसका मग़ज़ भुना हुआ खांसी को फायदामन्द है, जो सर्दी से होवे और यह मौतदिल है।

(जहरीली नहीं है)

१८—अदरक

प्र०-अदरक। सं०-आर्द्रकम्। फ़ा०-जंजबील तरव आलूचा सुल्तानी। अ०-जंजबीलुल रतब। रं०-भूरा। स्वाद-तेज व तेज़ बू। प०-एक जड़ है जो जमीन के नीचे होती है। स्व०-गर्म ३ खुश्क १ दर्जे में। हानि-गर्म मिजाज वालों को। द०-रोगन बादाम। प्र०-मिर्च स्याह। मात्रा—१ तोला।

गुण व कार्य—हाजिम है और पेट के अफारे और रीह को दूर करती है, भूख पदा करता है, बलगम व माद्दे की रतूबत को दूर करती है, मादे और जिगर व कुव्वत हाजम को मजबूत करती है, इसका मुरब्बा बलगमी मिज़ाजों व सर्द मिज़ाज वालों को बहुत मुफ़ीद है।

(जहरीला नहीं है)

१९—ऊद्‌बहरी के बीज

प्र॰ नाम-ऊदबहरा के बीज । फ़ा॰-तुख्म मूरद । अ॰-हब्बुलास । रंग-स्याह । स्वाद-कुछ तलख व बकठी । पहिचान-एक पेड़ का ..ल है । स्वाद-मु क्विबुलकुवी । हानि-शिर में दर्द पैदा करता और जुकाम लाता है, दर्पघ्न-गुलबनफ़्शा । प्रतिनिधि-अक़ाकिया व गुलहिना । मात्रा-६ से ६ माशा तक ।

गुण व कार्य—गर्मी की खांसी को मुफ़ीद है, बकठेपन के सबब दस्तों को बन्द करता है, तलखी के सबब पेशाब लाता है, पेचिस को नफ़ा करता है, दिल को कुव्वत देता है, इसका तेल तबख़ीर सहरोश बात को और दवारुस्सदर को फ़ायदमन्द है ।

(ज़हरीला नहीं है)

२०—ऊदबहरा की जड़

प्र० नाम-ऊदबहरा की जड़ । फ़ा॰-बेखमूरद । अ०-असलुल अलास । रंग-भूरी स्याही मायल । स्वाद-कड़वा व बकठी । पहि॰-प्रसिद्ध है । स्वाद-मुसक्विबुलक़वी । हानि-दर्द शिर पैदा करती है । दर्पघ्न-गुल बनफ़्सा व समग़अरबी । प्र०-अक़ाकिया व गुल हिना । मात्रा-६ माशा ।

गुण व कार्य—व सबब अतरियेन के मुकव्वी और मुआफ़िक़ दिल है और रूह व माद्दे को कुव्वत देता है । और इस्तहाजा के खून और दस्तों को बन्द करती है, पेशाब को खूब जारी करती है, बरम को तहलील करती है, आसेब चश्म और कान के दर्द को फायदा करती है ।

(ज़हरीला नहीं है)

२१—आरंगान

फ़ा०-आरंगान । रंग-सुर्ख व ज़र्द । स्वाद-फीका । पहि॰-एक किस्म का पत्थर है । स्व॰-सर्द खुश्क १ दर्जे में ।

गुण व कार्य—घावों में गोश्त भर लाता है । ऐज़ा के ख़ारजी बरम को खोता है और ज़ख्म में जिला करता है, मूरद के साथ इसका इस्तै-माल करना गुर्दे व मसाने की पथरी और रेत को खोलता है ।

२२—अर्जुन

प्र०-अर्जुन । सं॰-ककुभ । रंग-भूरा । स्वाद बकठा । पहि॰-एक बहुत बड़ा दरख्त है । दवा में इसकी छाल ली जाती है । स्व०-गर्म व खुश्क १ दर्जे में । हानि-गर्म मिज़ाज वालों को ।

गुण व कार्य—बलग़म के फिसाद को दूर करता है, सफरेको फ़ायदा करता है, चोट लगने पर इसे पिलाना और लगाना फायदेमन्द है और इसकी छाल का सफ़ूफ़ बाह लाता है, जिरयान को नफ़ा देता है ।

२३—अबरेशम

प्र०-अबरेशम । सं॰-ऊर्णकीट । अ-क़ज़ । रंग-ज़र्द व सफ़ेद । स्वाद-फीका बदमज़ा । प०-एक क़िस्म का कीड़ा बाज दरख्तों पर होता है । यह अपने लुआब को छोड़ता है । स्वाद-गर्म खुश्क १ दर्जे में,बाजे इसको मौतदिल कहते हैं । प्रति॰-जला हुआ मोती । मात्रा-३ माशे से ६ माशा तक ।

गुण व कार्य—ऐजाये रईसा को कुव्वत देता है, बदन को फ़रवह करता है, बाह को क़वी करता है और सुद्दे को खोलता है, रूह को फ़रहत

बखशता है, गालों का रंग साफ करता है। तबियत में लताफ़त ज्यादा करता है। रुतूबत को सोखता है, आंखों की बीमारी और खफ़कान और मेदे की सरदी को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

२४—उड़द

प्रसिद्ध नाम-उड़द। संस्कृत-माष। फ़ारसी-माष। अर्बी-माष। रंग-हरा, स्याही मायल। स्वाद-फीका। पहिचान-अपने ऊपर घर बनाता है, एक किस्म का अनाज है, हिन्द में पैदा होता है। स्वभाव-सर्द रतूबत यबूसत में मौतदिल और फसली रुतूबत ज़ायद है। हानि-नफ़ाख़ व देर में हज़म। दर्पघ्न-मिर्च व अदरक व हींग। प्रतिनिधि-लोबिया।

गुण व कार्य—बाह व इस्तादगी बढ़ाता है, दूध व मनी पैदा करता है और कुल बदन के हिस्से को ताक़त देता है, आंतों में फिसलन पैदा करता है और अगर ताज़ा २ पीस कर वर्स (कोढ़) के दाग पर लगावें तो बहुत मुफ़ीद है और अगर इसके आटे का ख़मीर करके सिर पर रक्खे तो नकसीर बन्द करता है, इसकी दाल पकी हुई बालों की जगह मलें तो बाल उम्दा और गुंजन पैदा होता है। जहरीली नहीं बल्कि गिज़ा है।

२५—अरंड

प्र॰ नाम-अरंड। संस्कृत नाम-एरंड। फ़ा॰-बेद अंजीर। अ॰-ख़रोअ। रंग-हरा भूरा व स्याह। स्वाद-कड़वा बद मजा। पहिचान-एक पेड़ है, जिसका फल कांटेदार होता है, गिरीसफेद तेल दार होती है। स्वभाव-गर्म खुश्क १ मायल वा ऐतदाल। हानि-मेदे को सुस्त करता है और करब तथा मिचली और कै लाता है। दर्पघ्न-कतीरा व मस्तगी। प्रतिनिधि-जमालगोटा।

मात्रा-५ अदद।

गुण व कार्य—रद्दी मवाद को तहलील करने वाला है। पेट को नर्म करता है, सर्द खिलात का क़वी दस्तावर है और फ़ालिज व लकुवा व राशा व कुलंज व इस्तस्का और वजअमुकासिल को फायदे मन्द है, इसका तेल हर फ़सल में क़वी तर है और मोहस्सिल है, यह कुलंज में क़वी और दस्तावर है, इसका पंचांग आग के जले को अजहद मुफ़ीद है।

(जहरीला नहीं)

२६—अर्ग़वान

प्रसिद्ध नाम-अर्ग़वान। फ़ा॰-अर्ग़वान। रंग-फूल इसका खूब सुर्ख। स्वाद-कड़ुवा व कुछ बकठा। पहि॰-एक पेड़ है। स्वभाव-गर्म खुश्क १ मायल वा ऐतदाल। हानि--इसकी जड़ कै लाती है। प्रतिनिधि-वर्ग उन्नाव वा संदल या गुलसुर्ख।

गुण व कार्य—लसदार माद्दे को निकाल फेंकता है और मेदे की सर्दी को खोलता है और, गुर्दे की वद्दी और आलात तनफ़्फ़ुस को पाक करता है, और जलाके इसके इस्तैमाल करने से मुंह से खून आने पर फायदेमन्द है, इसका बीज आंखों की दवा में क़ायम मुक़ाम चाकसू की रमद हार को दूर करता है।

(जहरीला नहीं है)

२७—घुंइय्यां

प्र॰-अरबी। फ़ा॰-अ॰-क़ल कलाश। रंग-भूरी। स्वा॰-फीका और इसका जायक़ा हलक़ में ख़राश करता है। पहि॰-हिन्द में

एक किस्मकी तरकारी है, जमीन के नीचे पैदा होती है। स्व०-गर्म १ तर २ दर्ज में और वाजे सर्द कहते हैं। हानि-देर में हजम होती है। दर्प०-दारचीनी व लौंग व तुरशी। प्रति०-भिण्डी।

गुण व कार्य—बदन को फ़रबे करती है, बाह को हरकत देती है, खांसी व मुंह की खुश्की व नरखरह के खुर्खुराने को और दस्तों को मुफ़ीद है, मनी को गाढ़ा करती है, वाजे इसी बजह से इसको सालब हिन्दी कहते हैं।

(जहरीला नहीं बल्कि गिज़ा है)

२८—अरहर व तूर

प्र०-अरहर व तोर। सं०-आढ़की। फा०-शाखल। अ०-शाखल। रंग-ज़र्द व सुर्ख। स्वाद-फीका व सैंधी। पहि०-एक किस्म का अनाज है। और हिन्द में होती है। स्व०-गर्म खुश्क २ दर्ज में हानि-देर हजम, निफ़ाख़ (अफ़ारा) बुखारात पैदा करती है, नींद न लाने वाली है। दर्प०-तुर्शियां व रोगन काहू। प्रति०-मसूर।

गुण व कार्य—सफ़रावी दस्तों व फ़िसाद खून और शहर को रफ़ा करती है और क़लीलुल गिज़ा है। इसके पत्तों के जोशांदे से कुल्ली करना दांतों के दर्द को फ़ायदेमंद है।

(जहरीला नहीं बल्कि गिज़ा है)

२९—अड्सा

प्र०-अड्सा। सं०-बांसा व अड्सा। रंग-फूल सफेद पत्ते सब्ज़। स्वा०-फीका कुछ मीठा। पहि०-एक दरख़्त आदमी के कद का हिन्द में होता है। स्वाद-गर्म खुश्क १ और फूल सर्द १ दर्ज में। मात्रा-६ माशा।

गुण व कार्य—इसका फल दिक और सफ़रेको नफ़ा है, हिद्दत खून और पेशाब की चिकनापन को तस्कीन करता है। पेशाब की सुर्खी को दूर करता है। और इसकी जड़ खांसी व दमे व कास व तप बलगमी व प्रमेह (जिर्यान) व यरकां व मिचली व जुखाम और सोज़ाक को नफ़ा करता है और इसके पत्तों के जोशांदे से कुल्ली करना दांतों के दर्द को फ़ायदामंद है।

(जहरीली नहीं)

३०—अरबा

प्र०-अरबा। रंग-हरा। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक बूटी बरसातमें होती है। चने की तरहका फल होता है। स्व०-सर्दतर १ दर्जे में। हानि-दमे अफ़्नी पैदा करता है। दर्प०-सिर्का।

गुण व कार्य—बलगम और रियाह पैदा करता है, हिन्दू उसका आचार डालते हैं।

(जहरीला नहीं है)

३१—अस्पंद

प्र०-अस्पंद। फ़ा०-इस्पंद। अ०-हुर्मल। रंग-काला। स्वाद-कुछ तल्ख व बूदार। पहि०-एक बूटी के फल का बीज है। स्व०-गर्म ३ खुश्क २ दर्ज में। हानि-दर्द सर लाता है और गर्म मिजाज वालों को मुज़िर है। दर्प०-सिकंजबीन व अमरूद वगैरा की रस। प्रति०-तितली व अजवायन व मूली के बीज। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—आंतों के रियाह को तहलील करता है, कुलंज व कांवर व दमे व जलंधर व मिर्गी और तमाम सर्दी की बीमारियों को फ़ायदेमन्द है, हैज़ को जारी करता है, खून को साफ

करता है, बाह लाता है और गठिया को नफा करता है। (जहरीली नहीं है)

३२ —अस्पगोल

प्रसिद्ध नाम-अस्फगोल । सं०-ईसबगोल। फा०-अस्पगोल। अ०-बज़ूज कतोना। रंग-लाल सफेदी लिए और कुछ काले भी होते हैं। स्वाद-फीका। पहिचान-एक बीज है । स्वभाव-सर्द ३ तर २। हानि-पीठ को कमजोर करता है, और भूख लाता है । दर्पघ्न-शहद। प्रतिनिधि-बिहीदाना, कनोचह। मात्रा-६ माशे से १ तोला तक।

गुण व कार्य—गर्मी व प्यास को गर्मी के बुखार को और खून के जोश को तस्कीन करता है, तबिअत को नर्म करता है आंतों में फिसलन पैदा करता है, हलक व सीने और जबान की खुखुंराहट को दूर करता है, आंतों के जख्म व मरोड़ और आंतों को फायदेमन्द है, और बिरियां किया हुआ (भुना हुआ) क़ाविज है, इसकी कुल्ली मुंह के जोश और मुंह के दांतों को मुफीद है, सिर्के में पीस कर इसका लेप गर्मी के वरम को और सिर दर्द को मुफीद है। (जहरीला नहीं है)

३३—दौना और दयारू

प्र० नाम हिन्दी-दौना और दयारू । फ़ा-बस्तुखुद्दूस । अ०-उस्तुखुद्दूस । रंग-सब्ज स्याही मायल। स्वाद-कड़वा व तेज। पहिचान एक घास है, इसका पत्ता सातरे के पत्ते की शकलकाहै, बीज रेजा रेजा होता है। स्वभाव-गर्म १ खुश्क २। हानि-फेफड़े को और गरम मिजाजों को मुजिर है। दर्पघ्न-कतीरा। प्रतिनिधि-आकाश वेल। मात्रा-७ माशा।

गुण व कार्य—रद्दी माद्दे को तहसील करता है और जिला करता है, लतीफ करता है, सुद्दे को खोलता है, और बदन व दिल व दिमाग़ और पेट के अन्दरूनी ऐज़ा को कुव्वत देता है, रूह को साफ करता है और फ़रहत देता है, सीने व दिमाग़ की बीमारी को नफा करता है, और माद्दह सौदावी व बलग़मी को दस्तों की राह निकालता है, गठिया को दूर करता है। (जहरीला नहीं है)

३४—असगंध

प्रसिद्ध नाम-असगन्ध । सं०-अश्वगंधा। रंग-अन्दर से सफेदी मायल। स्वाद-फीका व कुछ कड़वा । पहिचान-हिन्दुस्तान की एक बूटी है। स्वभाव-गर्म व खुश्क ३ मय लसदार तरी के। हानि-गर्म मिजाज वालों को । दर्पघ्न-कतीरा। प्रतिनिधि-सोरंजान। मात्रा-२ माशा।

गुण व कार्य—खांसी व दमे और ऐजाकि-वरम को मुफीद है। बदन व बाह व कमर और रहम को कुव्वत बख्शता है, बलग़म की ख़्वाबी (नींद) को दूर करता है, और गठिया के लिये कायम मुकाम सोरंजान तलख़ के हैं। (जहरीली नहीं है)

३५—अश्नान (रीठा)

प्र० नाम-अश्नान । फ़ा०-ग़ासोल । अ०-अश्नान। रंग हरा। स्वाद-कड़वा। प०-एक किस्म की घास है। स्व०-गर्म व खुश्क २ दर्जे में। हानि मसाने को। द०-शहद। प्र०-साबुन। मात्रा—१० माशा।

गुण व कार्य—जिला करता है, माद्दे को पाक करता है, पेशाब जारी करता है और इस्तस्का

(जलंधर)को नफ़ा करता है और ११ मासा बच्चे को साकित करता (गिराता) है और जख्मों के जायद गोश्त को काटता और साफ कर देता है। और ३॥ मासा बन्द हैज को जारी करने के लिए क़वी असर रखता है, इसका मंजन दांतों को जिला बख्शता है, अरब के आदमी साबुनकी जगह इससे कपड़े धोते हैं, रंगीन और रेशमी कपड़े इससे साफ होते हैं। (जहरीली नहीं है)

३६—अफीम

प्र०-अफ़ीम। सं०-अहिफेन। फ़ा०-अफ़यून। अ०-लबनुल खशखाश। रंग-स्याह ताजा सफेद। स्वाद-कड़वा। प०-पोस्ते में सुई चुभाकर दुध निकालने पर वह जम जाता है और यह हिन्द में होता है। स्व०-सर्द खुश्क ४ दर्जे। हानि-वात की व जहरीली कवी के। द०-जाफरान व दारचीनी।

गुण व कार्य—बेहोश व हरकत करने वाली है, कब्ज पैदा करती है। वरम को तहलील करती है। नींद लाती है। सुद्दा पैदा करती। कुल दर्दों को तस्कीन बख्शती है सरअत इंजाल को नफ़ा करती है। नवाजल को व बलग़मी खांसी को व कान के दर्द को और कुल आंखों की बीमारियो को मुफीद है। लगाने से या खाने से हर तरह लाभ देता है। अस्पगोल के लुआब में अफीम को हल करके बालों की जगह लगाने से बाल नहीं निकलता है। (जहर है)

३७—अफ़सन्तीन

प्र०-अफसन्तीन। फ़ा०-मरूअह। अ०-खतरक रंग-सब्ज गुब्बार आलूद। स्वाद-कड़वा व तेज बू। प०-एक क़िस्म की घास है, इसका फूल बाबूने के फूल सा होता है। स्व०-गर्म व खुश्क २ में। हानि-जोफमेदे व दिमाग को और शिरदर्द लाता है। द०-अनीसून मस्तगी व नीलोफर। प्र०-असारून व जाअदह। मात्रा—७ माशा।

गुण व कार्य—मसाम को खोलती है। जिल्द को गर्म करती है। हैज के खून को जारी करती है सौदावी व सफरावी माद्दे को दस्त के जरिये से निकालती है, रियाह को तहलील करती है। बलगमी मरजों को नफा करती है। इसका जोशांदा खिलती व मुरक्कब बुखारों को मुफीद है। पेट के कीड़े मारकर निकाल देती है। इसके पत्ते यह मेदे के लिये मुक़व्वी हैं। (जहरीली नहीं)

३८—अक़ाक़िया

प्र०-अकाकिया। हिन्दी कीकर का गोंद। सं०-बब्बूल निर्यास। फ़ा०-उसारह बबूल। अ०-अकाकिया। रंग-स्याह सब्जमायल व सुर्खी। स्वाद-कड़वा व सुगंधी वाला। कीकर के पेड़ को गोदकर उसका उसारा निकालते हैं। स्व०-गैर मफसूल सर्द व खुश्क ३ व मगसूल व खुश्क २ हानि-सुद्दा पैदा करता है। द०-रोगन बादाम। प्र०-संदल व रसौत। मात्रा—३॥ माशा।

गुण व कार्य—खुश्की लाता है। माद्दे को अज माउफ़ से बाज रखता है। कब्ज करता है मुंह से खून आने को रोक देता है। मेदे और जिगर को कुव्वत बख्सता है। और अस्तरखाय मिक़द और आंखों को कुव्वत देता है और आंखों के दुखने को फायदा देता है। नफजुल्दम यानी खून बहने को फायदेमन्द है। (जहरीली नहीं)

३९—आकाशबेल

प्र०-आकाशबेल। सं०-अमरलता। फ़ा०-दरख्तपेचां। अ०-अफतीमून। रंग-पीला। स्वाद-कड़वा व सुगंधीदार। प०-एक तरह की बेल है

जो बिना पत्ते और फल की है, दरख्तों पर फैली रहती है और उसको खुश्क कर देती है। स्व०-गर्म व खुश्क ३ दर्जे में। हानि-दर्द बढ़ाती है, गशी लाती है। प्यास लाती है। फेफड़े को मुजिर है। द०-कतीरा व जाफरान व रोगन बादाम व समग अर्बी। प्र०-लाजवर्द व तुम्बुद व शातरा। मात्रा—६ मा० से १ तोले तक।

गुण व कार्य—गरमी को तहलील करती है और सुद्दे (बुल्ले) को खोलती है। सौदावी व बलगमी माद्दे को दस्तों की राह से निकालती है। मालीखोलिया व काबूस और अक्सर दिमागी मर्जों को मुफीद है। खून को साफ करती है। अक्सर जिल्द की बीमारियों को नफा करती है। तिल्ली के वरम में इसका जमाद (लेप) फायदामन्द है।

(जहरीली नहीं)

४०—अकरकरा

प्र०-अकरकरा। सं०-अकार करभा। फा०-अ०-अकरकरा। रंग-काला। स्वाद-तेज व चरपरा व तेज बू। प०-एक जड़ी है स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-फेफड़े को। द०-मवीजज व कतीरा। प्र०-सोंठ व दार फिलफिल व शहद। मात्रा—१ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दे यानी बुल्ले को खोलता है और दिमागी फुजलात को खोता है, हर किस्म के बलगम को छांटता है और लकवा फालिज व इस्तरखा व राशा व कजाज़ व दर्द सीना और अकुलनिसां को मुफीद है। और सकता के लिए भी फायदेमन्द है। सर्द मिज़ाज वालों की बाह को कुव्वत बख्शता है। हैज को जारी करता है और अगर पीस कर बच्चों की जबान पर मलें तो लकनत और गन्दगी जबान को दूर करता है। और इसके जोशांदे से कुल्ली करना दांतों को मजबूत करता है।

(जहरीली नहीं)

४१—अगर

प्र०-अगर। फा०-अगर। अ०-ऊदगर्की। रंग-स्याह व भूरा। स्वाद-कड़वा व कुछ तेज व खुशबूदार। प०-एक पेड़ की लकड़ी है जो जलने से खुशबू देती है, अच्छी वह है जो पानी में डूब जावे। स्व०-गर्म २ खुश्क १ दर्जे में। हानि-गर्म मिजाज वालों को। द०-काफूर व गुलसुर्ख। प्र०-दारचीनी व लौंग व जाफरान। मात्रा—३ माशे।

गुण व कार्य—रूह को लुत्फ बख्शती है व सुद्दा खोलती है, दिल को फरहत देती है, पट्ठों को कुव्वत देती है। हवास व दिमागी कवी व जिगर व मेदे और अंतड़ियों को कुव्वत बख्शती है, रियाह को तहलील करती है, रहम की सर्दी को नफा करती है, बाह लाती है और खफकान को दूर करती है।

(जहरीली नहीं)

४२—अगस्त

प्र०-अगस्त। सं०-अगस्त वृक्ष। रंग-फूल गुलाबी व सफेदी मायल होते हैं। स्वाद-फीका। प०-हिन्द में एक पेड़ होता है। स्व०-सर्द २ खुश्क ३। हानि-पेट में रियाह पैदा करता है।

गुण व कार्य—गर्मी और पित्तों को दफै करता है, इसका फूल पित्तों को दूर करता है और कुव्वत सामा यानी सूंघने की ताकत को ताकत देता है और रतौंधी को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

४३—अगिया

प्र०-अगिया। रंग-हरा। स्वाद-कड़वा व तेज

प०-एक प्रसिद्ध बूटी है,अक्सर कीमियागर इसकी बहुत तलाश में रहते हैं। स्व०-गर्म ३, खुश्क २, हानि-जिल्द को गन्दा करती है। और खारिश लाती है। द०-मुर्दासंग व गाय का घी। मात्रा—१ हब्बा (रत्ति)।

गुण व कार्य—अगर गंधक को इसके अर्क में ४० दिन रात तक रखकर धूप में रखे, बाद को दो हब्बा (रत्ती) वह गन्धक पान में खावे तो भूख बहुत खुलती है, और बाह जियादा लाती है, और अगर कलई(रांग)को इसके अर्कमें कुश्ता(भस्म) करे तो खांसी व दमेको बहुत मुफीद है और किसी तरह का नुकसान नहीं देती है। (जहरीली नहीं है)

४४—इलायची छोटी

प्र०-इलायची छोटी। सं०-एला। फ़ा०-हिलबुवा व खैरबुवा। अ०-काकला सफ़ा। रंग-छिलका सफेद व दाना काला। स्वाद-खुनक व खुशबूदार व लतीफ़। प०-हिन्द के टापुओं में एक मशहूर फल है, वहाँ से जोश दी हुई आती है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि दिल व फेफड़ा व आंतों को। द०-कतीरा व वंशलोचन। प्र०-कबाब व बड़ी इलायची व लौंग। मात्रा-३से ४ माशे तक।

गुण व कार्य—रूह को फरहत बख्शती है, और लतीफ करती है,जख्मको जिला देती है। और रियाह को तहलील करती है, सीने व हलक व मेदे की रतूबत को जज़्ब व खुश्क करती है। और मेदे व क़लब (दिल) को कुव्वत बख्शती है, और खफ़क़ान व कै व मितली और उबकाई को नफा करती है और मुंह की बू को और हवा को खुशबूदार करती है। और गुर्दे व मसाने की पथरी को निकालती है। (जहरीली नहीं है)

४५—इलायची बड़ी

प्र०-इलायची बड़ी। सं०-महएला। फ़ा०-हील कलां। अ०-काकला व कबार। रंग-स्याह दाना भी स्याह। स्वाद- बहुत खुश्क व खुशबूदार। प०-यह भी एक टापू का मशहूर फल है और जोश दिया हुआ आता है। स्व०-गर्म १ खुश्क २। हानि-आंतों और फेफड़े को। द०-कतीरा व कन्द। प्र०-कबाबा व छोटी इलाइची। मात्रा—५ माशा।

गुण व कार्य—रूह को फरहत देती है और मेदे को कवी करती है, भूख को खोलती है। दस्तों को बन्द करती है। मितली व रियाह मेदे को नफा करती है.इसके दाने मसूढ़ों को मजबूत करते हैं और जड़ों को खोलते हैं और इसके छिलको का लेप गर्मी के शिर दर्द में फायदेमन्द है।

(जहरीली नही है)

४६--अलसी

प्र० नाम अलसी। सं०-अतसी। फ़ा०-बज़रग। अ०-बज़ार क़तां। रंग-सुर्ख। स्वाद-फीका। पहि०-एक खुश: के बीज हैं, अनाज की तरह पैदावार है। स्व०-सर्द खुश्क १, बाजे गर्म खुश्क ३ में कहते हैं। हानि-बीनाई, अंतड़ियों और हज़म को। दर्प०-धनियां व शहद व सिकंजबीन। प्रति०-मेंथी। मात्रा-१० माशे।

गुण व कार्य—इसका लऊक बलगमी खांसी को दूर करती है, और सीने को रतूबत से पाक करता है। तबियत को नर्म करती है, सीने को जिला देती है, वहम को तहलील करती है। गुर्दे व मसाने के कुरह को भरती है, पेशाब को खूब लाती है, बाह ज्यादा करती है, मनी को गाढ़ा

करती है। मसाने व गुर्दे की पथरी को तोड़ कर निकालती है। (जहरीली नहीं)

४७—अमरलता के बीज

प्र० नाम—अमरलता के बीज। सं०—अमरलता के बीज। फा०—तुख्म वरश। अ०—बज्रुल क़सूस। रंग—सुर्खी मायल। स्वाद—फीका। पहि०—एक बीज है, जो मूलीके बीज से छोटा है। स्व०—गर्म खुश्क २ दर्जे में। हानि—तिहाल व फेफड़े को। दर्प०—सिकंजबीन व शहद व तुख्म कासनी। प्रति०—अफसन्तीन व बादरोज। मात्रा—७माशे की।

गुण व कार्य—माद्दे से पाक करता है और मेदे व अंतड़ियों को खोलता है, खिलती बुखार को नाफा करता है पेशाब को खूब लाता है, पसीना व हैज़ खूब जारी करता है, दूध ज्यादा पैदा करता है, तबियत को नर्म करता है और फुजलात को नफा करता है। (जहरीला नहीं)

४८—अमरूद

प्र० नाम—अमरूद। सं०—अमृतफल। फा०—अमरूद। अ०—कमशरी। रंग—जर्द सफेदी मायल। स्वाद—मीठा व तुर्श। पहि०—एक मेवा है जो ताज़ा व तर ही खाते हैं। स्वभाव—सर्द व तर शीरी मायल व हरारत। हानि—नफख व सर्द मिज़ाज वालों को और ज़इफुल मेदे को। दर्पघ्न—सोंठ का मुरब्बा व सौंफ। प्रतिनिधि—बिही।

गुण व कार्य—फरहत करता है और कुव्वत बख्शता है, बावजूद काबिज होने और मुलय्यन होने को जिला करता है, दिल और मेदे और कुव्वत काबिज हाजमे को कवी करता है, तबियत को नर्म करता है, खफकान को दूर करता है, भूख बढ़ाता है, दिमाग को तर रखता है, इसकी कली मुफ़रह है और मुकव्वी है, और नज़फुद्दम को क़ातअ है, इसके पत्ते दस्तों और जख्मों के लिये बहुत लाभदायक हैं, और फिटकरी के साथ इसका जोशांदा दांतों के दर्द को मुफीद है, इसके पत्ते जले हुए क़ायम मुकाम तूतिया के हैं। (जहरीली नहीं)

४९—अमड़ा

प्र० नाम—अमड़ा। सं०—आम्रातक। रंग—सब्ज। स्वाद—तुर्श व कुछ कड़ुवा। पहि०—आम की तरह का एक फल है। स्व०—सर्द २ खुश्क १।

गुण व कार्य—सफ़रावी बीमारियों व सफ़रावी दस्तों को और गर्म मिज़ाज वालों को फायदेमन्द है इसके पेड़ की छाल पीसकर अगर ताजे बकरी के दूध के साथ पिये तो वह नाक के मर्ज को मुफीद है, इसकी गुठली की गिरी हैज़ के बन्द करने में मुफीद है। (जहरीली नहीं)

५०—अमल बेत

प्र० नाम—अमलबेत। सं०—अम्लवेत। रंग—जर्द सुर्खी मायल। स्वाद—खट्टा। पहि०—एक किस्म का नींबू है, अगर उसमें सुई चुभो दें तो गल जाती है। स्व०—सर्द तर। हानि—बलगम पैदा करता है। दर्पघ्न—लौंग व मिर्च स्याह। मात्रा—१ दाना।

गुण व कार्य—अक्सर अमराज कलब (दिल) को मुफीद है और तापों को काट देता है, हाज़म है और मेदे को नर्म करता है, भूख लाता है, खून के जोश को अमन करता है, वायगोला के दर्द को लाभ करता और पेट के दर्द को मुफीद है,

और अगर खुरासानी अजवायन नमक संग के साथ सात बार इसके अर्क में तर करके सुखा लिया जावे तो अक्सर बादी और पेट के मरज़ को फायदेमंद है और चूरन में इसको मिलाना मुफीद है। (ज़हरीली नहीं)

५१---अमलतास

प्र० नाम-अमलतास। सं०-राजवृक्ष। फा०-खयार शम्बर। अ०-खयार शम्बर क़फ़लूस। रंग-काला। स्वाद-कड़वा बूदार। पहि०--एक पेड़ की फली है, इसका गूदा काम में आता है। स्व०-गर्म तर १ और बाजे इसको मौतदिल कहते हैं। हानि-मेदे को और गशी लाती है। पेचिस व आंतों को खराश लाती है। दर्पं०-मस्तगी व बादाम रोगन व कदूवजलाल इमली। प्रतिनिधि-तुरंजवीन सहचन्द व मवीज़। मात्रा-२ तोले से ८ तोले तक।

गुण व कार्य—मुलय्यन सीना है व तबियत को नर्म करती है और जोश खून को सकून (अमन) देती है, गरम वरमों को तहलील करती है, माद्दे को दस्तों की राह आसानी से निकालती है, इसलिये इसका गरगरा धनिये के साथ खुनाक को मुफीद है। इसके पत्ते कुल वरमों को तहलील करते हैं, जोश करने से अमलतास का असर बातिल हो जाता है।

(जहरीली नहीं)

५२---इमली व इम्बली

प्र० नाम-इमली व इम्बली। सं०-तिन्तड़ीक। फा०-तमर हिन्दी। अ०-सबारा। रंग-सुर्ख व कोहना स्याह। स्वाद-खट्टा। पहि०-बालिस्त की बराबर एक फली होती है, इसके पेड़ के पत्ते व फूल भी तुर्श हैं। स्व०-सर्द १ खुश्क २ कोई २ मातदिल भी कहते हैं। हानि-आवाज़ को व खांसी को व नजले को और सुद्दा लाती है। दर्पघ्न-उन्नाब व बनफ्शा। प्रतिनिधि-आलूबुखारा। मात्रा-४ तोला से ८ तोला तक।

गुण व कार्य—आलू से ज्यादा लतीफ है, दिल और मेदे को कुव्वत देती है, मितली को तस्कीन करती है, तबियत को नर्म करती है। सफरा व मोहतरका अखलात को दस्तों के जरिये से निकालती है, खून के जोश को नाफै है, खफकान को खोती है, दौरानसिर को मुफीद है, वबाई हवा की समय्यित दूर करती है, इसके फूल क़ाबिज़ और मसकिन हैं और तबियत को नर्म करते हैं, इसके बीज काबिज और मुमसक मनी हैं इसके पत्तों के जोशांदे का गरगरा खुनाक को मुफीद है।

(ज़हरीली नहीं)

५३---अनार मीठा

प्र० नाम-अनार मीठा। सं०-दाड़िम फा०-अनार शीरीं। अ०-रमान हलू। रंग-सुर्ख व सब्ज़ व दाना सफेद व सुर्ख। स्वाद-मीठा। पहि०-एक प्रसिद्ध मेवा है। स्व१-सर्द खुश्क २ मातदिल भी कहते हैं। हानि-मेदे व बुखार वालों को। दर्पघ्न-अनार तुर्श और सर्द मिजाज वालों को सोंठ का मुरब्बा। प्रतिनिधि-अनार तुर्श।

गुण व कार्य—खून पैदा करता है, जिगर में में पचाने की अच्छी गिजा है, और नफाख है और जिला करता है, पेट को नर्म करता है, पेशाब जारी करता है, जिगर को कुव्वत देता

है, प्यास को तस्कीन देता है, बाह लाता है, तमाम आजाये रईसा को कुव्वत देता है, इसका अर्क मय बक्कल के दस्तों को बन्द करता है। इनमें विलायती सब बातों में अच्छा है, इसका बक्कल जला हुआ खांसी को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

५४--अनार खट्टा

प्र० नाम-अनार खट्टा। सं०-अम्ल दाड़िम। फा०-अनार तुर्श। अ०-रमान हामिज। रंग-दाना सुर्ख व सफेद। स्वाद-खट्टा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्वभाव-सर्द व तर १ व कुव्वत काबिजा। हानि-सर्द मिजाज वालों को और कुव्वत बाजिवा जिगर व बाह को। दर्प०-अनार शीरी। प्रति०-अनार शीरी।

गुण व कार्य—सीने की सोजिश और मेदे और जिगर की गर्मी को तस्कीन देता है, जोश खून और सफरा को नफा करता है, पित्तों की वजह से जो कै व दस्त आवें इनको मुफीद है यरकां और सूखी खुजली को नफा करता है, खुमार और गर्मी के यरकां को फायदेमन्द है।

(जहरीला नहीं)

५५---अनार मेखूश

प्र०-अनार मेखूश। अ०-रमान मजा। रंग-सुर्ख। स्वाद-चाशनीदार। प०-मशहूर है। स्व०-सर्द तर। हानि-सर्द मिजाज वालों को। दर्प०-सोंठ का मुरब्बा। प्रति०-अंगूर खाम।

गुण व कार्य—इसके गुणादि मीठे अनार के बराबर हैं, बल्कि यह मीठे से कवी उल असर है और अगर इसका अर्क मय इसके बक्कल के निचोड़ा जावे और उसमें शकर मिलाकर पीवे तो सफराबी कै व दस्त और खारिश को और यरकां को नफा करता है और मेदे को कुव्वत देता है और हिचकी को खोता है।

(जहरीला नहीं)

५६—अनार का बीज

प्र०-अनार का बीज। सं०-दाड़िम बीजम्। फा०-तुख्म अनार। अ०-हब्बुल रमान। रंग-सफेद स्वाद-फीका। प०-मशहूर है। स्व०-सर्द व खुश्क। हानि-सर्द मिजाज वालों को। द०-जीरा। प्र०-समाक़। मात्रा—६ से ६ माशे तक।

गुण व कार्य—क़ाबिज है और भूख लगाता है मेदेको कुव्वत देता है। सफरावी मवाद मेदे पर नहीं गिरने देता है, सफरावी कै व मितली और दोनों किस्म की खुजली को नफा करता है।

(जहरीला नहीं)

५७—अनार का छिलका

प्र०-अनार का छिलका। सं०-दाड़िम त्वक्। फा०-पोश्त अनार। अ०-कसरुल रमान। रंग-जर्द सुर्खी मायल। स्वाद-बकठा। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-मीठे का सर्द तर २ तुर्श का सर्द खुश्क१

गुण व काय—गर्मीके वरमको नफा करता है। मसूड़ों को कुव्वत देता है, इसके खसान्दे का कुकना चावल जौ के साथ पेचिश और दस्तों को बन्द करता है। खसान्दे से आवदस्त करना बवासीर के खून को बन्द करता है, और सूखा पीसकर छिड़कना खरोज मेदे (कांच निकलने) को मुफीद है।

५८--आम

प्र०-आम। सं०-आम्र। फा०-अम्बा। अ०-अंबज। रंग-सुर्ख सब्ज जर्द। स्वाद-मीठा व खट्टा व रसदार। प०-एक हिन्दुस्तानी मेवाहै ताजा खाने

के क़ाबिल है। स्व०-कच्चा सर्द १ खुश्क २ पक्का गर्म खुश्क फूल सर्द खुश्क १। हानि-निफ़ाख़ और खाली पेट में और गर्म मिज़ाज वालों को। द०-जामुन व सिकंजबीन व ठंडा पानी।

गुण व कार्य—कवी और अरबाह व बाह व गुर्दा व मसाना व मेदे और आंतों को कुव्वत देता है। क़लमी की किस्म का राकीक और दर हजम है कच्चे आम (कैरी) आग में भुलभुलाई हुई का अफ़शुर्दा लूह और बवाई हवा को नफ़ै है। इसके फूल (बौर) का सफ़ूफ़ प्रमेह व फिसाद खून और बलगम को मुफ़ीद है और इम्साक लाता है, इसके तुख़्म की गिरी मनी को गाढ़ा करती है। और दस्तों को बन्द करती है। आम का चोंप दानां पैदा करती और ज म पैदा करती है। इसकी पत्ती हल्दी के साथ सुस्ती और आलस को खोती है।

(जहरीला नहीं)

५९—हिंगूवृक्ष

प्र०-हिंगूवृक्ष। फ़ा०-अंगदान। अ०-अंजदान बलायती व रूमी। रंग-स्याह व सब्ज। स्वाद-तेज व बूदार। प०-एक विलायती बूटी है जिसका गोंद हींग हैं। यह २ किस्म का होता है। स्व०-गर्मखुश्क ३। हानि-यकृत व मसाने व आंतों को और गर्म स्वभाव वालों को। द०-जरिश्क व कतीरा। प्र०-राई। मात्रा—१ माशा।

गुण व कार्य -वर्मों को तहलील करता है। लताफ़त देता है, रद्दी माद्दे को पाक करता है। पेशाब व हैज को जारी करता है, सुद्दा खोलता है मेदे और बाह को कुव्वत देता है, अन्दरूनी दर्दों को तस्कीन करता है और औरत, हैज खतम होनेके बाद फौरन इसको ४॥ माशे एक हफ्ता में खाले तो हामिला (गर्भवती) न हो।

(जहरीली नहीं)

६०---अंजन

प्र०-अंजन। सं०-अंजनम्। फ़ा०-सुर्मा। अ०-अस्मद। रंग-स्याह व सफ़ेद। स्वाद-बदमज़ा प०-नर्म व कुदरती सोख्ता एक पत्थर है। स्व०-सर्द १ खुश्क २। हानि०-ऐजाय सीना। द०-कतीरा व शकर। प्र०-अनार। मात्रा-खाया नहीं जाता।

गुण व कार्य—क़ाबिज है, खुश्की लाता है, आंखों को सेहत करता है, बिनाई को कुव्वत देता है। आंखों की सर्दी व गर्मी और चीपड़ को दूर करता है जख्मों को भर लाता है, नकसीर और जिर्यान व हैज़ को बन्द करता है और इसका लत किया हुआ कपड़ा रखना, कांच निकलने को मुफ़ीद है और रहम की सख्ती को नर्म करता है।

(जहरीली नहीं)

६१---अंजीर

प्र०-अंजीर। सं०-अंजीर। फ़ा०-अंजीर। अ०-तिन। रंग-सुर्ख, व स्याह। स्वाद-मीठा।

प०-एक पेड़ का मेवा विलायती व हिन्दी है स्व०-गर्म १ तर २। हानि-यकृत व मेदे को। द०-बादाम व सातर। प्र०-चिलगोजा व मवीज़। मात्रा ५ से ७ दाने तक।

गुण व कार्य—ताज़ा लताफत करती और रियाहको तहलील करती है, जिला करती है, मिर्गी व फालिज और बलगमी मर्जों को नफ़ा करती है' तबियत को नर्म करती है, धीरे २ दस्त लाती है, सुद्दा व वरम तिहाल व असर बोल खोर लागरी गुर्दे को दूर करती है, इसका शर्बत खांसीको मुफ़ीद है, इलाखश्क कूल अफक ल में ज़ईफ़ है।

(जहरीला नहीं)

६२---अञ्जवार

प्र०-अंजवार। फ़ा०-अंगबार। अ०-अंजवार रंग-सुर्खी मायल। स्वाद-फीका। प०-एक पेड़ मुल्क श्याम में आदमी की बराबर का होता है इसकी जड़ काम आती है। स्व०-खुश्क व सर्द ३ हानि-सर्द स्वभाव वालों को। द०-सोंठ। प्र०-जरिश्क व गिले अर्मनी। मात्रा—४ से १२ माशा तक।

गुण व कार्य—कुलएजा से खून बन्द करती है खसूसन सीने और फेफड़ेसे और सफरा सोजिस व खून को सकून देती है। बवासीर के खून और पेचिश व कै और पुराने दस्तों को बन्द करती है। नजला को रोकती है।

(जहरीली नहीं)

६३---इन्द्रयव

प्र०-इन्दर जौ। सं०-इन्द्रयव। फ़ा०-जवान कंजिश्क। अ०-लसानुल मुसाफिर। रंग-सुर्खी मायल। स्वाद-फीका व तरल व तेज। प०-एक बीज है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-सिर में दर्द लाता है और गर्म मिजाज को मुजिर है। द०-धनियां। प्र०-तोदरी जोजाबुवा और वहमन सुर्ख।

गुण व कार्य—रियाह तुन्द को तस्कीन देता है। पसली और बखे के दर्द को मुफ़ीद है, कमर के दर्द व रहम को और पुरानी खांसी व दम व खफ़कान और मरोड़ को दूर करता है, पथरी को तोड़ता है। बाह को उभारता है, अज़ायपना सुल (लिङ्ग) को कुव्वत देता है। इसमें भीगा हुआ कपड़ा, शहद और जाफ़रान के साथ रखना हमल को मदद देता है। लेकिन रजोधर्म के बाद रखे।

(जहरीला नहीं)

६४---इन्द्रायन का फल

प्र०-इन्द्रायन का फल। सं०-इन्द्रायण। फ़ा०-खपुंज़ा तलख। अ०-हंजल। रंग-सुर्ख व सफेद। स्वाद-निहायत कड़वा। प०-एक छोटा सा फल है। स्व०-गर्म४ खुश्क२। हा०-कै को लाता है। द०-समैग़र्बी व कतीरा व निशास्ता। प्र०-हब्बुल नील व महमूदा। मात्रा—१ से ३ मा० तक।

गुण व कार्य—वरमों व रियाह को तहलील करता है। ग़लीज किस्म के बलग़म और सौदा को दस्तों की राह खारिज करता है। बदन के अन्दर के खिलतों को ज़ज़ाब करता है और सर्दी की बीमारियों को जैसे मिर्गी, राशा, लकुआ, जलंधर को फायदेमन्द है और दिमाग को फ़ज़ूल से पाक करता है, पेट से केचुआ व कदूदाना निकालता है, बलगमी व रीही कुलंजको और जिगर व मेदा और आंतों के मर्ज को मुफीद है।

(यह जहरीली है)

६५---अण्डा मुर्गी का

प्र०-अंडा मुर्गी का। सं०-कुक्कुटाण्ड। फ़ा०-खाया मुर्ग। अ०-बैज़ल रेक। रंग-सफेद, स्वाद-फीका व थोड़ा शोर। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-जर्दी मायल सफेदी सर्द व तर ३। हानि-मेदे में पथरी पैदा करता है। और कुलंज लाता है। द०-गर्म मसाला व नमक। प्र०-रूवियांताजा। मात्रा—२ से ७ अदद।

गुण व कार्य—छः मास के बच्चों को जिगर में पचने की अक्सार ग़िज़ा है। दिल व दिमाग़ और बदन व बाह को कुव्वत देता है, गर्म नजलों को सीने से दूर करता है। सीने की खुर्खुराहट और मेदे के मुंह से खून आने को दूर करता है। ६ माह के बच्चों को दूध

की मानिन्द ग़ज़ा है। इसकी जर्दी का रोगन बाह को ताक़त देता है और बाल जल्द निकालती है, इसके छिल्के बदबर सोख्ता सीने के मर्ज़ और बाह को मुफ़ीद है।

(ज़हरीला नहीं)

६६--अंकोल

प्रसिद्ध नाम-अंकोल। सं०-अंकोल। रंग-हरा व भूरा। स्वाद-शीरीं (मीठा) पहि०-एक पेड़ है, इसके पत्ते सफ्तालू की तरह के होते हैं, इसका फल मीठा और गिरी कड़ी होती है। स्व०-गर्म व तर १। हानि-बलग़म बहुत लाता है।

गुण व कार्य—दिल को कुव्वत देता है, बलग़म को फिसाद और रियाह को दफ़ै करता है, वरम को दूर करता है, पेट के दर्द को खोता है, पेट के कीड़ों को मारता है। इसकी जड़ की छाल का सफूफ़, स्याह मिर्च के साथ १ माशा बवासीर को बहुत मुफ़ीद है।

(ज़हरीला नहीं)

६७—अंगूर हिन्दी

प्रसिद्ध नाम-अंगूर हिन्दी दाख। सं०-द्राक्षा। फ़ा०-अंगूर स्याह औशावियाआरज़। अ०-अनव व हसरम। रंग-ज़र्द व स्याह। स्वाद-मीठा व रसदार। पहि०-प्रसिद्ध है। स्वभाव-पका गर्म तर १ कच्चा सर्द १ व खुश्क २। हानि-मेदे व मसूढ़े व तिहाल को रियाह पैदा करने वाली। दर्पघ्न-सौंफ व गुलकन्द। प्र०-मवीज मुनक्के।

गुण व कार्य—जल्द हज़म होता है, और मेदे में जल्द नफ़ा देता है, अक्सीर खाना है, उम्दा खून पैदा करता है, बदन को फ़र्बे करता है। खून को साफ़ करता है, सौदावी व अहतराक़ी मवाद को दफ़ै करता है, जिला करता है, मादे को पकाता है, और इसको तुख्म खतमी के साथ पका कर वरम पर लगावें तो वरम को तहलील करता है। और मसाम को खोलता है।

(ज़हरीली नहीं)

६८--अनन्नास

प्र० नाम-अनन्नास। फ़ा०-अनन्नास। रंग-बाहर सुर्ख व भीतर ज़र्द। स्वाद-रसदार। पहि०-एक फल है, अक्सर हिन्द में होता है। स्व०-सर्द तर २ बाज़े गर्म १ तर २ मानते हैं। हानि-हंजरह व पेज़ाय नफ़ासको। दर्प०-शकर व सोंठ का मुरब्बा। प्रति०-सेब।

गुण व कार्य—फ़रहत देता है और दिल व जिगर व दिमाग़ व मेदे को कुव्वत देता है। खफ़क़ान को दफ़ै करता है, गर्मी सफ़रा को तस्कीन देता है और लागर और सर्द मिजाज को कुव्वत देता है। मुरब्बा और शर्बत इसका उम्दा और लतीफ़ होता है, यह दोनों असर में भी क़वी है, और इसके मीठे चावल भी पकते हैं।

(ज़हरीला नहीं)

६९--अंचार

प्र० नाम-अंचार। सं०-चिरौंजी। रंग-काला। स्वाद-रसदार। पहिचान-एक दक्खिनी पहाड़ी फल है, जिसकी गिरी चिरौंजी है। स्व०-सर्दतर और बाजे गर्म तर मानते हैं। हानि-प्यास लाता है और आंखों को मुज़िर है। दर्प०-शकर व नमक।

गुण व कार्य—मितली व उबकाई को दफ़ै करती है, दस्त लाती है, सौदावी व सफ़रावी मादे को छांटती है, ज़िगर को कुव्वत देती है,

इसका शर्बत फरहत लाती है।

(जहरीला नहीं)

७०--ऊटकटारा

प्र० नाम-ऊंटकटारा । सं०-कोकिलाक्ष । फा०--उश्तरखार । अ०-शोकता उलजमल । रंग-ज़र्द व सफेद कांटेदार । स्वाद-कड़वा । पहि०-एक बूटी है । स्व०-गर्म खुश्क ३ । हानि-दिमाग़ व गुर्दे को । दर्पघ्न-सिर्का व शर्बत वगैरह । प्र०-अंजदान । मात्रा-१ माशे ।

गुण व कार्य—सुद्दे को खोलता है, मेदे में गर्मी पैदा करता है और भूख लाता है खानाहज़्म करता है, पेशाबको जारी करता है । कामलाको दफ़े करता है । गठिया को खोता है, और सर्द असर वाले जहर का मारक है, इसको जड़ बाह लाती है, इसका अर्क गुर्दे व तिहाल की बीमारियों को नफ़ा करता है । (जहरीली नहीं)

७१--ऊख व गन्ना व पौंडा

प्र० नाम-ऊख व गन्ना व पौंडा । सं०-इक्षु । फा०-नैशकर । अ०-कसबुल सकर । रंग-सफेद व सुर्ख । स्वाद-बहुत मीठा व रसदार । पहि०-प्रसिद्ध है । स्व०-गर्म दर १ व तर दर २ । हानि-निफाख़ और मूर्तव फेफड़े को मुज़िर है । द०--अनीसून ।

गुण व काय—खून को लतीफ़ करता है । और बन्द करता है, सुद्दा खोलता है सीने व फेफड़े और खांसी के खुखुराने को नफा करता है । रतूबत को जिला देता है बदन को फ़रबे करता है, हाज़िम है, पेशाब लाता है, मसाने को पाक करता है, पेट को नर्म करता है, बाह को हरकत देता है और मेदे की सोजिश को दफे करता है ।

(जहरीला नहीं)

७२--ऐलशीरीं

प्र०-ऐल शीरी । अ०-तुगशीस व कबुल अज । रंग-दो किस्म, सुर्ख व सफेद । स्वाद-लाल मीठा, सफेद कड़वा । पहि०-एक बूटी है । और यह अक्सर चने के खेत में होता है । स्वभाव-सर्द व खुश्क ३ । हानि-फेफड़े को मुज़िर है । दर्पघ्न-कतीरा व शकर । प्रतिनिधि-समग़-अर्बी व माजू व पोस्त मुर्ग़ सोख्ता । मात्रा—३ माशे ।

गुण व कार्य—क़ाबिज़ है, सोज़िश खून को नाफ़ा करता है,सैलान खून व पसीनेको बन्द करता है, मेदे को कुव्वत देता है, और जिगर को भी कुव्वत देता है और गर्म मवाद को अज़ पर गिरने नहीं देता है । (ज़हरीली नहीं)

७३--एलुवा व मुसव्विर

प्र०-एलुवा व मुसव्विर । सं०-एलुवा । फा०-सबर । अ०-सबर सकोतरी । रंग-स्याह । स्वाद-बहुत कड़वा । प०-एक उसारा है, घीकुवार को निचोड़कर रसोंत की तरह बनाते हैं । स्व०-मुरक-बुल् क़वी गर्म खुश्क २ । हानि-आंतों और मेदे को सुस्त करता है । दर्प०-कतीरा गुलसुर्ख व मस्तगी । प्र०-तुबुंद असहाल में व रसौत वरम में । मात्रा-४॥ माशे ।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलता है, रियाह को तहलील करता है, क़वी दस्तावर हर ख़िल्तत का है । मेदे व फासिद ख़िलती को पाक करता है, कुव्वत बीनाई को कुव्वत बख़्शता है, बहुत पुराने

ज़ख्मों को भर लाता है, आंखों की बीमारियों को फायदेमन्द है और उश्क व रसौत व अफीम और अक़ाक़िया के साथ सिर्के में हल करके वरम तिहाल पर लगावें तो फ़ायदेमन्द और मुजर्रब है।

(ज़हरीला नहीं)

७४—एला

प्र० नाम-एला। रंग-भूरा। स्वाद-शीरीं व खट्टा। प०-एक पेड़ है जिसके पत्ते दराज और फल इमली के से होते हैं। स्व०-शीरीं गर्म १ तुर्श सर्द १। हानि-गर्म मिजाज वालों को मुज़िर है। मात्रा-३॥ माशे।

गुण व कार्य—तबियत को नर्म करता है और अक्सर ऐज़ा को कुव्वत देता है। और गलीज रियाह और सफ़रावी फिसाद को खोता है, अक्सर हिन्दुओं के इस्तैमाल में ज्यादा आता है।

(जहरीला नहीं)

७५--ऐल पालक

प्र० नाम-ऐल पालक। रंग-सब्ज़। स्वाद-बदमज़ा व तेज। प०-एक बूटी है। स्व०-सर्द हानि०--गर्म मिजाज वालों को। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—खजली और जुज़ाम (कोढ़) को दूर करती है, पेट के कीड़े मारती है, प्यास खोती है, और कै को दफे करती है, बलगम व सफरा व खून के फिसाद को और बाह को मुफीद है और पेशाब लाती है।

७६--ईंट

प्र० नाम-ईंट। सं०-इष्टिका। फा०-खिश्त। अ०-आजर। रंग-सुर्ख व स्याह। स्वाद-मटियाहा मज़ा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म १ व खुश्क ४। हानि-मेदे व गुर्दे को। दर्पघ्न-सिर्का व कतीरा। प्रति०-फिटकरी व सीपी। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—बहुत खुश्की लाती है और खून इस्तहाज़ा को बन्द करती है, अगर शकर के साथ इस्तैमाल किया जावे और अगर इसको गर्म करें और सिर्का डालकर पथरी को सेके तो उसे बैठा देती है और कुए की पुरानी ईंट जियाबतीस यानी पानी पीते ही पेशाब आने को मुजर्रब है और रक़्तमनी को खोती है।

(जहरीली नहीं)

७७--ईंगुर

प्र० नाम-ईंगुर। सं०-हिंगुल। फा०-संगरफ़। अ०-ज़ंजफ़र। रंग-सुर्ख। स्वाद-बदमज़ा। प०-गन्धक की तरह एक खान से निकलता है। स्व०-गर्म २ खुश्क ३। हानि-ख़राबी लाता है। दर्पघ्न-घी व दूध गाय का। प्रति०-मुर्दासंग। मात्रा-नहीं खाया जाता है।

गुण व कार्य—क़ाबिज़ है, और खून पैदा करता है, रतूबत को जज़ब करता है, आफ़ित रसीदा अज़ू पर मादा नहीं गिरने देता, गर्मी के वरमों को तहलील करता है, सूखी व तर खुजली व कोढ़ और आग से जले हुए को नफ़ा करता है, जिल्दी मर्ज़ (चर्म रोग) यानी आतशक व कोढ़ वगैरा में इसका खाना भी जायज है। मिश्रानी वैद्यक में इसका रस व कुश्ता बलग़म व खांसी और दमे वगैरा में देते हैं और बाहर की बीमारी में भी देते हैं।

(ज़हरीली है)

बाब उलबाव (बे)

इसमें ८० दवाइयां हैं।

७८—बाबूना

प्र०-बाबूना। फा०-बाबूना। अ०-बाबूनज रंग-जर्द व भूरा। स्वाद-फीका खुशबूदार। प०-एक बूटी है। अक्सर इसके फूल काम में आते हैं। स्वभाव-गर्म २ खुश्क ३। हानि-शिर में दर्द लाता है, शिर व हलक भारी करता है। दर्पघ्न-गुल नीलोफर व शर्बत अनार। प्र०-बरजासफ व नाखूना। मात्रा-४॥ माशे।

गुण व कार्य—कुव्वत (जिस्म) जिसमें हरारत पैदा करता है, बरमों को तहलील करता है। जिगर का सुद्दा और रगों के मुंह का बुल्ला (सुद्दा) खोलता है, रूह में लताफत पैदा करता है, पेशाब व पसीना व हैज और दूध को जारी करता है, पथरी को तोड़ता है, कुलंज व मशाने का दर्द व यरकां और खुश्क खांसी को मुफीद है, इसका लेप वर्मों को नर्म करता है, इसका सुर्मा नजूल आंख और दृष्टि को मुफीद है। इसके फूल का तेल पट्ठों को नर्म करता है और ताक़त देता है। (जहरीली नहीं)

७९—मुरहठी

प्र०-मुरहठी। सं०-मधुयष्टिका। फा०-बाबूना गाव। अ०-अक़हवान। रंग-पत्तो सब्ज व फूल जर्द व सुर्ख। स्वाद-फीका तलख व खुशबूदार। पहि०-बाबूने की तरह की एकबूटी है, अक्सर बाबूनेमें इसका मेल करते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-कै लाता है व शिर दर्दलाताहै। द०-नीलोफर व बनफ्शा व अनीसून। प्रतिनिधि-शीह। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—कुल गुण इसके बाबूने के से हैं, मुहल्लिल रियाह और मुलतफ तबिय्यत और सुद्दा खोलती है, पथरी को तोड़ती है; बलग़मी व सौदावी माद्दे को दस्तों के राह खारिज करती है। (जहरीली नहीं)

८०—बावची व बकुची

प्र० नाम-बावची व बकची। सं०-बाकुची। पहिचान-एक गोल और चपटा बीज है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-निफ़ाख़ और जख़म लाती है। दर्पघ्न—सौंफ व रोगन। मात्रा—२ माशे।

गुण व कार्य—माद्दे को नर्म करती है और भूख लाती है, और सफेद दाग व स्याह दाग व खजली और कोढ़ व खूनी फिसाद को खाने और लगाने से फायदा देती है, बलग़मी तप को नफा करती है, कीड़ों को मारती है, पेशाब के रास्ते से जख़म साफ करती है। (जहरीला नहीं)

८१—बाजरा

प्र०-बाजरा। सं०-बाजरम्। फा०-गावरस। अ०-जावरस। रंग-भूरा। स्वाद-फीका। प०-एक किस्म का मशहूर अनाज है। स्व०-गर्म खुश्क २, बाजे सर्द खुश्क २ मानते हैं। हानि-शकील है, रियाह पैदा करता है, प्यास लाता है, सौदावी खून पैदा करताहै व सुद्दालाता है। द०-घी, दूध, शकर। प्र०-चावल व कलौंजी।

गुण व कार्य—बदन व कमर व मेदे और बाह को ताकत देता है, रतूबत फासिला को खुश्क करता है, क़ाबिज है, खुश्की लाता है, थोड़ी गिजा है, इसकी रोटी सफराबी-दस्तों को बन्द करती है,

पेशाब लाता है, कच्चे हमल को गिराता है, इसकी पोटली की सेंक सर्दी के सिर दर्द को मुफ़ीद है, मेदे के नफख (अफारे) और बवासीर के दर्द को तहलील करता है, सिर्के के साथ इसका लेप सर्द वरम को तहलील करता है।

(जहरीली नहीं है बल्कि अनाज है)

८२—बादाम मीठा

प्र०-बादाम मीठा। सं०-मिष्ट बाताद। फ़ा०-बादाम शीरीं। अ०-लोजुल हलू। रंग-बाहर सुर्ख अन्दर सफेद। स्वाद-कुछ मीठा व खुशमज़ा। प०-प्रसिद्ध एक विलायती मेवा है। स्व०-गर्मतर वाजे मातदिल। हानि-देर हजम व शकील है, अंतड़ियों को मुजिर है। द०-शकर। प्र०-चिलगोजा। मात्रा-१ से ३ तो० तक।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलता है, कुव्वत बदनी व जौहर दिमागी का निगहबान है, जिला करता है बीनाई को ताकत देता है, तबियत और हलक को नर्म करता है, सीने को मुआफिक है, मनी पैदा करता है। खुश्क खांसी व मसाने, व सोजाक को नफा देता है, बदन को फरबै करता है, बाह लाता है और कुलंज को नफा करता है।

(जहरीला नहीं)

८३—बादाम कड़वा

प्र०-कड़वा बादाम। सं०-कटु बाताद। फा०-बादाम तलख। अ०-लोजुलमर। रंग-बाहर सुर्ख भीतर सफेद। स्वाद-कड़वा। प०-प्रसिद्ध एक विलायती मेवा है। स्व०-गर्म ३ खुश्क २। हानि-आंतोंको। द०-शकर मिश्री व रोगनबादाम शीरीं। प्र०-मुहल्लब। मात्रा—३ माशा।

गुण व कार्य—वरमको तहलील करताहै, जिला करता है, गलीज खिलतोंके दूर करने व पाक करने में बे मिसाल है, सिर दर्द व खुश्क व तर खांसी और सीने व फेफड़े के वरम को मुफीद है, जिगर के रोग व यरकां (कमला) को नफा करता है, पथरी को तोड़ता है, ४॥ मा० शहदके साथ घिसकर खाना पागल कुत्ते के काटे को मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

८४—जवासा

प्र०-जवासा। सं०-यवासा। फा०-वादावर्द अ०-शौक लवैजा। रंग-बाज सफेद पेड़ सब्ज। स्वाद-कड़वा। प०-एक कांटेदार घास है, ऊंट कटारे की तरह की इसकी कद होती है। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-फेफड़े को मुजिर है। द०-अफसन्तीन। प्र०-शातरा। मात्रा—६ माशा।

गुण व कार्य—बलगम गलीज और सौदा को दस्तों की राह निकालता है, मेदे को कुव्वत देता है सुद्दा खोलता है, पेशाब जारी करता है, रद्दी मवाद को तहलील करता है, दांतों के दर्द को खोता है, बलगमी व सौदावी पुराने बुखार को दूर करता है, पेशाब बन्द हो जाने को मुफीद है, जलंधर और नुकरस (पांव की उंगली के दर्द को) नफा करता है।

(जहरीला नहीं)

८५—रन्दनी

प्र०-रन्दनी। फ़ा०-बादियान रूमी। अ०-अनीसून। रंग-सबज मायल सफेदी। स्वाद-तलख व तेज। प०-सौंफ से छोटा एक बीज है। स्व०-गर्म २ खुश्क ३। हानि-आंतों व गर्म मिजाज वालों को मुजिर है, दर्द सर लाता है। द०-सौंफ व

सिकंजबीन। प्र०-तुख्म सोया व सौंफ। मात्रा-७ से ६ मा० तक।

गुण व कार्य—लताफत करती है, और रियाह को तहलील करती है, और जिला करती है, दर्दों को तस्कीन देती है सुद्दा खोलती है, फालिज को नफा करती है, लकुवा व जलंधर व बलगमी बुखार व सैलान रहम को और गठिया व कांवर को खोती है, पेशाब व दूध और पसीना जारी करती है। बाह को हरकत देती है, इसके अर्क में लत्ता तर किया हुआ बाद तरह (रजस्वला) के रखना हमल कायम को मदद देता है।

(जहरीली नहीं)

८६—बदियान खताई

फा०-बादियान खताई। रंग-भूरा सफेदी मायल। स्वाद-कुछ शीरी व तेज। प०-एक छोटा व खुशबूदार फल है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-करेली व पट्ठों को। द०-भून लेना। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—मुहलिल रियाह हैं, सुद्दा तोड़ती है, मेदे को क़वी करती है, हाजमे की ताकत को बढ़ाती है, खाने की गिरानी और रियाह को दफै करती है। अंतड़ियों का दर्द दूर करती है, बलगम को तहलील करती है, पेशाब जारी करती है, नजले को नाफै है, प्यास लाती है, सिर दर्द पैदा करती है। (जहरीली नहीं)

८७—बारतंग हरी

प्र०-बारतंग हरी। फा०-बारतंग सब्ज। अ०-लिसानुल हमल। रंग-हरा। स्वाद-कड़वा। प०-एक घास है जिसके पत्ते बकरी की जीभ के से होते हैं। स्व०-सर्द व खुश्क १। हानि-फेफड़े व तिहाल को। द०-बनफशा शहद व मस्तगी। प्र०-वर्ग हमाज बस्तानी। मात्रा—५ तोला।

गुण व कार्य—इसका रंग तमाम व भीतरी सर्द ऐजा से खून को रोकता है और जिला करता है, और मवाद गिरने से बचाता है। काबिज है, जिगर को ताकत देता है, और सुद्दे खोलता है, इसका उसारा दिक व सिल और सूजाक को मुफीद है, और अर्क कुव्वत मास्का (ठहराने वाली ताकत) को मजबूत करने में बेमिशाल है। (जहरीली नहीं)

८८—बारतंग के बीज

प्र० नाम-बारतंग के बीज। फा०-तुख्म बारतंग। अ०-बज्रुल लिसानुलहमल। रंग-हरा स्याही दार। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक गोल व छोटा बीज है। स्व०-सर्द व खुश्क १। हानि-दिमाग और फेफड़े को। दर्पघ्न-बनफशा शहद और मस्तगी। प्रतिनिधि-तुख्म हमाज बस्तानी। मात्रा—६ माशे।

गुण व कार्य—प्यास को तस्कीन देता है। सोजाक को नफा करता है, खिलती बुखार व कै और सिल को नफा करता है, आंतों को कुव्वत देता है, मरोड़ को नफा करता है, और रगों में सुद्दा पैदा करता है।

(जहरीला नहीं)

८९—बाकला

प्र० नाम-बाकला। फा०-बाकला। अ०-बाक़ला। रंग-काला। स्वाद-फीका। पहि०-एक बीज है। अंगूठे की बराबर फली में से निकलता है। स्वभाव-सर्द तर १। हानि-तबखीर लाती है, और अक्ल को फासिद करता है।

दर्पण–छिलके निकालना नमक व घी। प्रतिनिधि–लोबिया।

गुण व कार्य—वरम को तहलील और माद्दे को पुख्ता करता है। क़मर मेदे (मेदे के गढ़े) में जल्द उतर जाता है। खांसी को तस्कीन देता है, आंतों के जख्म को भर लाता है, पुराने दस्तों को बन्द करता है, बाह को ताक़त देता है, कंठमाला को तहलील करता है, स्याह दाग़ को खोता है और झांई को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

९०--बालंगा

प्र० नाम–बालंगा। फ़ा०–तुख्म बालंगू। रंग–काला। स्वाद–फीका लसदार। पहि०–एक तरह के बीज हैं। स्वभाव–गर्म तर १, बाजे सर्द तर १ कहते हैं। हानि–मेदे को मुजिर है। दर्प०–मिश्री व अन्जरेवास। प्रति०–रेहां व रेशम। मात्रा–६ माशे।

गुण व कार्य—दिल को कुव्वत देता है, खफकान व दहशत के लिये व खूनी और माही दस्तों के लिये गुलाब के साथ निहायत मुफीद है, पेचिश और मरोड़ खोता है, अगर शकर के साथ हो और प्यास को रोकता है।

(जहरीला नहीं)

९१--बालूत

प्र० नाम–बालूत। अ०–बलूत। रंग–जर्द सफेद। स्वाद–एक किस्म मीठा, एक तलख़। पहि०–एक फल है, जिसके पेड़ में एक साल यह होता है। स्व०–सर्द व ख़ुश्क २। हानि–सुद्दा लाता व सौदा पदा करता है। दर्प०–सिकंजबीन व मश्री। प्रति०–गुलनार व खर्नोब। मात्रा–७ माशे।

गुण व कार्य—क़ाबिज है दस्तों और खून बहने और मुंह से खून आने को बन्द करता है। आंतों के जख़मों व ख़राश और ख़फक़ान व मितली को नफा करता है। पेशाब लाता है। और भुलभुलाया हुआ किसी शर्बतों के साथ बाह लाता है और बाह को हरकत देता है, बदन को ताक़त देता है। जहरों का मारक है, इसको जला कर चुटकी देने से बच्चों के मुंहा को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

९२--बालछड़ व जटामांसी

प्र०–बालछड़ व जटामांसी। सं०–जटामांसी। फ़ा०–सम्बुल हिन्दी। अ०–सम्बुल उलतीब। रंग–स्याह जर्दी मायल। स्वाद–तेज व तेज बू। प०–एक पहाड़ी वे फल व फूल की घास है। स्व०–गर्म व खुश्क २। हानि–गुर्दे को। द०–कतीरा व तवाशीर। प्र०–जराकस व तेजपात। मात्रा–४॥ माशा।

गुण व कार्य—दिमाग व जिगर और मेदे व कुव्वत मास्का (ठहराने वाली ताक़त) को कवी करती है, तफ़तीह (खोलती) करती है और अदरार (रोजाना जारी होना) लाती है, पथरी तोड़ती है, खफकान दूर करती है, मेदे और सीने के रतूबतों को खुश्क करती है, और लहमी इस्तस्का (मासोदर जलंधर) वरमों को नफा करती है। और भीतरी वरमों को फायदे मन्द है। मुंह को खुशबूदार करती है। अगर इसका सुर्मा लगाया जावे तो आंखों की ताक़त बढ़ाती है।

(जहरीला नहीं)

९३--बांस

प्र० नाम–बांस। सं०–वंश। फा०–नै। अ०–क़स्ब। रंग–हरा। स्वाद–फीका। पहि०–कई तरह

का होता है. प्रसिद्ध है । स्व०-सर्द व खुश्क १ । हानि-फेफड़े को । दर्प०-कतीरा ।

गुण व कार्य—इसकी जड़ जिला करती है । और अगर इसको जला और पीस कर चमेली के तेल के साथ गंज और शिर के दाद में लगावें तो फायदा हो, इसके पत्तों का अर्क शहद के साथ पीना खांसी को मुफीद है । इसके पत्तों का जोशान्दा हैज़ के खून और नफास (फजूल) चीजों को खूब छांटता है, हिन्दू लोग इसकी जड़ का अचार भी डालते हैं, जो खुशमज़ा होता है ।

(जहरीला नहीं)

९४—बांदा या बन्दा

प्र०-बांदा या बंदा । सं०-बंदाक । अ०-खरकर्ता रंग-सब्ज व सुर्ख । स्वाद-बकठा व बदमज़ा। प०-एक तरह की घास है जो पुराने पेड़ोंकी शाखों में खुद अलग २ सूरतोंमें निकलतीहै । स्व०-गर्म व खुश्क बाजों के नजदीक सर्द खुश्क १ ।

गुण व कार्य—फ़िसाद रियाह व फोड़ों फुन्सियों और बलगम व सौदा को दूर करता है । जहर के फिसाद को भी दूर करता है, इसके जोशान्दे से कुल्ली करना मसूढ़े के वरम व दांतों के दर्द को खोता है, लेकिन जिस दरख्त का बांदा हो, उसके गुण वैसे ही होंगे ।

(जहरीला नहीं)

९५—बाभनी

प्र०-बाभनी । अ०-खरदून । रंग-कई प्रकार का । पहि०-एक किस्म का जानवर है जो छिपकली के बराबर होता है और एक रोज़ में कई रंग बदलता है । स्व०-गर्म व खुश्क ३ । हानि-इसका खाना जजाम लाता है । मात्रा-इसे खाते नहीं हैं ।

फा०

गुण व कार्य—इसका दिल गले में लटकाना जूड़ी बुखार को नाफे है, इसके खून का सुर्मा बीनाई बढ़ाता है, इसकी बीट जाले और आंख की खुजली को नफा करती है और झांई को मुफीद है ।

(जहरीली नहीं)

९६—वायविडंग

प्र० नाम-वायविडंग । सं०-विडंग । फ़ा०-वरंग काबुली । अ०-बरज काबुली । रंग-काला । स्वाद-कड़वा व तेज़ । पाह०-एक फल स्याह मिर्च की तरह का गोल है । स्व०-गर्म व खुश्क २ । हानि-आंतों को । दर्पध्न-कतीरा व मस्तगी । प्रति०-तुमुस व कर्बाला । मात्रा-१०माशे ।

गुण व कार्य—बलगम व सौदा और रियाह व गलीज़ और लसदार खिलत को दस्तों की राह निकालती है, और जोड़ों से जोर के साथ फिज़ूल रतूबत को छांटती है, मेदे व आंतों के कीड़े मये थैली के निकाल फेंकती है ।

(जहरीली नहीं)

९७—बाल

प्र० नाम-बाल । सं०-कच । फ़ा०-मुए । अ०-शअर । रंग-स्याह व भूरे । पहि०-बाल व मू व शअर बोलने से अक्सर आदमी के बाल से मतलब है । स्व०-सर्द व खुश्क । हानि-खाने से क़ लाता है और कुल भीतर ऐज़ा को मुजिर है । मात्रा-खाते नहीं हैं ।

गुण व कार्य—जले हुए जख्म पर लगाना जख्म को खुश्क करता है, और मुंह आने को मुफ़ीद है, अगर शहद के साथ हो और रफ्त रूमी के साथ खास कर शिर के जख्मों को मुफ़ीद है । मुर्दासंग के साथ सूखी और तर खुजली को

नफ़ा करता है, जेतून के तेल के साथ आग को जले को नफा देता है, इनको सिर्क या पानी में पीस कर लगाना फोड़े और फुन्सी और वर्म तिहाल को नफ़ा करता है और इसकी पिसी हुई चुटकी कांच निकलने को मुफीद है। इसका तेल सफेद कोढ़ के लिए अक्सीर (ज़हरीला नहीं)

९८—बालू या रेत

प्र० नाम-बालू या रेत। सं०-सिकता। फ़ा०-रेग। अ०-रमल। रंग-मटियाला। स्वाद-फीका। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द १ खुश्क ३। हानि-फेफड़े को। प्रति०-खाक संतर।

गुण व कार्य—रतूबत को सोखने और जलंधर के लिए बांधन और इसमें दवाने से फायदा होता है। इसका हमूल यानी लत किया हुआ कपड़ा हैज़ व हमल को मना है, अगर बदमज़ा या बदबूदार पानी के घड़े में डाल कर रक्खें तो पानी को अच्छा और ज़ायकेदार करता है।

(ज़हरीली नहीं)

९९—बबूल-कीकर

प्र०-बबूल। सं०-बब्बूल। फ़ा०-मगैलान। अ०-अमग़ीलान व समरह। पहि०-एक प्रसिद्ध पेड़ है। रंग-पत्ते हरे, फूल पीला, फली हरी। स्वाद-बकठा व कुछ कड़वा। स्वभाव-सर्द व खुश्क। हानि-दिमाग़ व मेदे और गुदा को। दर्पघ्न-बनफ्सा व कतीरा व बिही। प्रतिनिधि-पलाश।

गुण व कार्य—मरतूबफुजला को तजलसकरती है, आक़ित रसीदा अज़ू पर बाह को नहीं गिरने देता है। इसका पानी गर्म खफ़क़ान को मुफीद है, भीतरी ऐज़ा को ताकत देता है। इसके पत्तों का जोशान्दा दस्तों को बन्द करता है। सुद्दे को खोलता है, इसके छाल, पत्तों और फूलका सफूफ और गोंद रकतमनी (धातु क्षीण) व सरअत इंज़ाल (जल्दी गिरने) और जिर्यान (पतला मनी) को खोता है। २० तोला इसके पत्तों का जोशान्दा क़वी दस्तावर और क़ै लाने वाला है।

(ज़हरीला नहीं)

१००—बबूल का गोंद

प्र० नाम-बबूल का गोंद। सं०-बब्बूल निर्यास। अ०-समग़ अर्बी। रंग-पीला व सुर्खी मायल। स्वाद-कुछ मीठा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द खुश्क बाजे के नज़दीक मौतदिल। हानि-मेदे व मिक़अद (गुदा) को। दर्पघ्न-कतीरा व बिहीदाना। प्रति०-गोंदपलास। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—रग के मुंह पर चिपक कर सुद्दा पैदा करता है। सीने को नर्म करता है, काबिज़ व मुक़व्वी मेदा है, और आंतों को भी कुव्वत देता है। सीने के दर्द और हलक के खुरखुराने और सीने व फेफड़े के और क़स्वाय रियाह को मुफ़ीद है, और आवाज साफ करता है और खराश को दूर करता है।

(ज़हरीला नहीं)

१०१—बिल्ली लोटन (छड़ीला)

प्र०-बिल्ली लोटन। स०-शैलेय। फ़ा०-तुरह गुर्बा व बादरंग बोया। अ०-बादरंज बोया। रंग-हरा व स्याही मायल। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक घास है, जिस पर बिल्ली आशिक रहती है। स्व०-गर्मव खुश्क। हानि-पहलू को। दर्पघ्न-समग़ अर्बी। प्रति०-अबरेशम। मात्रा-१०½ माशे।

गुण व कार्य—दिल व दिमाग़ व हवास और जकावत (अक़िल) और मेदे को कुव्वत बख्शती है और फरहत लाती है, दिमागी सुद्दा खोलती है और लतीफ़ करती है, और काबूस और अक्सर बलग़मी व सौदावी बीमारियों को मुफ़ीद है और खफ़कान और वसवीस (वहम) को नाफै है और इसका जमाद (लेप) मुकव्वी क़ल्ब (दिल) है।

(जहरीली नहीं)

१०२—वन पोस्ता

प्र० नाम-बन पोस्ता। फ़ा०-माइशाय सुर्ख़। अ०-उतामूली। रंग-फूल सुर्ख व हरा व पीला स्वाद-कड़वा। पहिचान-एक किस्म की घास है, जो पोस्ता से मिलती है। स्वभाव-गर्म व खुश्क।

गुण व कार्य—मोहल्लिल है और आंख के ज़ख्म को पाक करती है। मुंह आने और राल बहने में मुफीद है।

(जहरीली नहीं है)

१०३—वन्दाल

प्रसिद्ध नाम-वन्दाल सं०-वन्दाल। रंग-हरी। स्वाद-कड़वी। पहिचान-एक नर्म कांटेदार फल है जो सूखा काम में लाते हैं। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-गर्म मिज़ाज वालों को मुजिर है। प्र०-कड़वी तुरई।

गुण व कार्य—मिश्रानी वैद्य के मुताबिक़ यर्का (कामला) और जलंधरको मुफीदहै, इसका खिलाना जूड़ी और श्वांस व दमेको भी मुफीदहै और अगर इसके बीज शकर के साथ खावें तो हैज जारी करता है।

(जहरीला नहीं)

१०४—बंडाआलू (रताल)

प्र०-बंडाआलू। रंग-बाहर से भूरा व कुछ स्याह अंदर सफेद। स्वाद-फीका। प०-एक प्रकार की जड़ शकरकंद की तरह व उससे बड़ी होती है। स्व०-गर्म १। हानि-देर हज़म है और हलक को खुरखुराता है। द०-नमक व तुर्शी व स्याह मिर्च। प्र०-आलू।

गुण व कार्य—वाह लाता है, सफरा के फ़िसाद और बूंद २ पेशाब आने को, हरारत और प्यास को खोता है। दिल को फहरत देता है।

(जहरीला नहीं है)

१०५—पंझंकी व पंचिटकी

प्र०-पंझंकी व पंचिटकी। रंग-हरी। स्वाद-कड़वी। प०-एक घास है जिसके पत्ते मेंहदी के पत्तों से मिलते हैं। स्व०-गर्म व खुश्क।

गुण व कार्य—इसके पत्ते और फल पीसकर अगर जलंधर वाले के पेट पर या किसी वरम पर लगावे तो नफा करते हैं और पेशाब लाती है, इसका पिलाना रतूबत जिस्म के बहाने और बच्चा जल्द पैदा होने को मुफीद है।

(जहरीला नहीं है)

१०७—वंशलोचन

प्र०-वंशलोचन। सं०-वंशरोचन। फ़ा०-तबाशीर। अ०-तवाशीर। रङ्ग-सफेद व नीला। स्वाद-फीका। प०-एक सख्त चीज है, बांस में स्वाती नक्षत्र का बूंद पड़ने से पैदा होता है। स्व०-सर्द २ खुश्क ३। हानि-बाह और फेफड़े को। द०-उन्नाब व मस्तगी व जाफ़रान। प्र०-तुख्म खुर्फा व काशनी व सफेद चंदन। मात्रा-१ माशे।

गुण व काय—फ़हरत लाता है और दिल व जिगर व मेदे को कुव्वत देता है, मेदे की सोजिस और प्यास को तस्कीन देता है, सफरावी कै और खूनी दस्तों को दफै करता है और रतूबत को खुश्क करता है, खफ़क़ान और गर्मी के बुखार को खोता है, इसकी चुटकी मुंह के दाने को व आने को फायदा करती है। (जहरीली नहीं है)

१०७—बिजौरे का छिलका

प्र०-बिजौरे का छिलका। सं०-बीजपूर बल्कल फ़ा०-पोस्त तुंज। अ०-क़सरुल अतरज। रंग-पीला व सुर्खी मायल। स्वाद-बातेजी व तलखी व खुशबू। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म १ खुश्क २। हानि-जिगर व दिमागको। द०-शहद व बनफ्शा। प्र०-पोस्त नीबू। मात्रा—५ माशे।

गुण व कार्य—लताफत तबियत बख्शता है, और काबिज है, सफरा से खून को साफ करता है और कै सफरावी को तस्कीन देता है, दिल और मेदे को ताक़त देता है, अंतड़ियों की हरारत के तस्कीन देता है, रियाह को तहलील करता है, मेदे के अफारे को भी तहलील करता है।

(जहरीली नहा)

१०८—बच्छनाग

प्र०-बच्छनाग। सं०-वत्सनाभ। फ़ा०-जहर। अ०-विष। रंग-बाहर स्याह व भीतर जर्दी मायल स्वाद-कड़वा। प०-एक पहाड़ी जड़ है, स्व०-गर्म खुश्क ४। हानि-क़ातिलहै। द०-जदवार व दायउलमुश्क। मात्रा—२ मा०।

गुण व कार्य—शुद्ध किया हुआ कोढ़ और सफ़ेद दागको व दम को मुफीद है, इसके लिये बहुत ऐहतियात चाहिये।

(जहरीला है)

१०९—बिच्छू

प्र० नाम-बिच्छू। सं०-वृश्चिक। फ़ा०-कशरदम। अ०-अक़रब। रंग-कई रंग का। प०-एक डंकदार और जहरीला जानवर मशहूर है। स्व०-सर्द व खुश्क। हानि-इसकी राख फेफड़े को मुजिर है। द०-गिलेअमनी। प्रति०-कछुवा। मात्रा-राख २ माशे।

इसके तेल की मालिश फ़ालिज व लक़ुवा व इस्तरखा बुखार और गठिया को मुफीद है, इसकी खाक गुर्दे व मसानेकी पथरीको तोड़ती है। इसका तिला लगाना मुकव्वी बाह है।

(जहरीला है)

११०—बच व घुड़बच

प्र० नाम-बच। फ़ा०-अगर तुर्की अ०-बज। रंग-सफेद सुर्खी मायल। स्वाद-तेज। प०-एक गिरहदार जड़ है। स्व०-गर्म ३ खुश्क २। हानि-शिर और खून को। द०-सौंफ और सिकंजबीन। प्र०-जराबन्द व लौंग व रेवन्दचीनी। मात्रा २ माशे।

गुण व कार्य—लताफत बख्शती है और जिला करती है, बाह लाती है, बलगम छांटती है, रियाह को तहलील करती है, दिमाग को बलगमी रतूबत से पाक करती है, फालिज व बदहवासी व इस्तरखा और लकनत जबान (तोतलेपन) को मुफीद है, मेदे और दिमाग की रतूबत को खुश्क करती है जिगर व पट्ठों और मेदे को ताकत देता है, सर्द मिजाज वाले को आंख के रोगी को और दांतों के दर्द को मुफीद है। (जहरीली नहीं)

१११—बिजेसार

प्र०–बिजेसार। सं०–विजयसार। रंग-सब्ज व स्याही मायल। स्वाद-कड़वा प०-एक बहुत बड़ा पेड़ है। स्व०-गर्म १ खुश्क २। हानि-क़ातैबाद है द०-हब्बुल सनोबर। प्र०-बोजिदान। मात्रा—३ माशे।

गुण व कार्य—वर्म व रियाह को तहलील करता है, लताफ़त बख्शता है, ग़लीज़ बलगम को दस्तों के राह निकालता है, कोढ़ और सफेद दाग व मिख़द (गुदा) के कीड़े व जियान व खून के फिसाद और सफरा को दफै करता है।

(जहरीला नहीं)

११२—बखोर मरियम

प्र०–बखोर मरियम। रंग-भूरी। स्वाद-तलखी दार। प०-एक घास की जड़ है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-गुदा को। द०-कतीरा। प्र०-कुन्दरा। मात्रा—७ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलती है, रियाह को तहलील करती है, रतूबत को खुश्क करती है। पेशाब व हैज व दूध और पसीना बहाती है। जिगर के सुद्दे को तोड़ती है, यरकां यानी कामला को मुफ़ीद है, इसकी जड़ बच्चे को जल्द निकालती है और इसके बीज जिला करते हैं।

(जहरीली नहीं)

११३—वर्फ

प्र०–बर्फ। सं०-हिम। फ़ा०-वर्फ। अ०-सलज रंग-सफेद बुर्राक। स्वाद-फीकी। प०-एक आस्मानी चीज है सर्दी में जमीन पर गिर के जम जाती है। स्व०-सर्द ३ खुश्क२। बाजे गर्म खुश्क २ कहते हैं। हानि-सर्द मिजाज वालों को अंतड़ियों को। द०-लौंग व शहद।

गुण व कार्य—बदहवास करती है और प्यास लाती है, दांतों के दर्द को तस्कीन देती है जो कि गर्मी के सबब से होता हो, कुव्वत हाजमा मेदे को कुव्वत देता है, गर्मी के बुखार व खुश्क और तर खांसी को दूर करती है और हलक के अन्दर जोंक चिपट जाय तो उसको निकाल देती है, अगर माथे पर रखी जाय तो नक्सीर को बन्द करती है।

(जहरीली नहीं)

११४—वरगद

प्र०–बरगद। सं०-बट। फ़ा०-दरख्त रेशां। अ०-मातुलजदायब। रंग-पत्ते हरे शाखें भूरी फल सुर्ख। स्वाद-फल कुछ मीठा व फीका। प०-एक बड़ा पेड़ है जिसकी शाखों से रेशे निकल के जमीन में जड़ की तरह घुस जाते हैं। स्व०-गर्म तर २। हानि-गर्म मिजाज वालों को और बाह को। दप०-कतीरा। प्रति०-उम्मुल अखवीन। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—दस्तों को बन्द करता है। फ़िसाद रियाह व सफरा और फोड़े फुन्सी को दूर करता है। इसका दूध वरम को तहलील करता है, और बाह लाता है, बवासीर और रक्त मनी को खोता है, सरअत इंजाल व जिर्यान और कसरत अहतलाम को दफै करता है, और पेजाये रईसा को ताक़त देता है और इमसाक (स्तम्भन) करता है।

(जहरीला नहीं)

११५—वरमडंडी

प्र० नाम-वरमडंडी। सं०-ब्रह्मदंडी। रंग-हरी

स्याह मायल। स्वाद-कड़वी। पहि०-हिन्दुस्तान में एक मशहूर घास है। स्व०-सर्द व्राजे गर्म कहते हैं। प्र०-मुंडी व नीलकंठी। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—खून साफ़ करती है। ज़ख्मों को नफा करती है, सैलान मनी को दूर करती है। व हाजमे बुद्धी (याददास्त) को ताक़त देती है, सफेद दाग़ और चर्म रोग को खोती है, गालों का रंग साफ करती है।

(जहरीली नहीं)

११६—ब्रह्मी

प्र० नाम-ब्रह्मी। सं०-ब्राह्मी। फ़ा०-सरूतुकं-इस्तानी। अ०-ज़ामब रंग-सब्ज़ी मायल। स्वाद-कड़वी व खुशबूदार। पहि०-एक घास है जिसके पत्ते में तुरंज की सी खुशबू आती है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-गर्म मिज़ाज वालों का। दर्पघ्न-धनियां व सन्दल। प्रति०-दालचीनी व कबाबा। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—लताफ़त करती है और मुफ़र्रह है, मेदे व जिगर और ऐज़ाये रईसा को कुव्वत देती है। आवाज को साफ करती है। खांसी व दमे और बलग़म के दूर करने और पट्ठों के मर्ज को मुफीद हैं, देर में पेशाब आने को नफ़ा करती है, बाह लाती है।

(जहरीली नहीं)

११७—बड़हल

प्र० नाम-बड़हल। सं०-लकुच। रंग-फल पीला सुर्खी मायल गिरी सुर्ख व सफेद। स्वाद-चाशनीदार। प०-एक फल है जिसका पेड़ बहुत बड़ा होता है, और पत्ते मिस्ल बांदा के पत्तों के। स्व०-कच्चा सर्द तर व पक्का गर्मतर १। हानि-नफ़ाख़ और मुज़ीफ़ बाह को। दप०-सिकंजबीन।

गुण व कार्य—कच्चा सकील है और बलग़म पैदा करता है व सफरा को दफै करता है, पक्का दिल और मेदे को कुव्वत देता है, इसके बीज बच्चों की तबियत को नर्म करते हैं जब कि दाई के दूध के साथ इस्तैमाल कराये जावें। इसके पेड़ का दूध बच्चों के लिए दस्तावर है और बलगमी बुखार लाता है। (जहरीला नहीं)

११८—बरियारा

प्र०-बरियारा। रंग-हरा व सफेदी मायल फलपीला। स्वाद-कड़वा व तेज। प०-एक मशहूर घास है। स्व०-गर्म तर १।

गुण व कार्य—सफेद पत्ते पानी में मिला के पीना सोज़ाक व जिरयान और पथरी को मुफीद है और पत्ते कूटकर पानी निकाला हुआ सांप के काटने को नफ़ा देता है। और पीले पत्ते वरमों को तहलील करते हैं। और दर्दों को तस्कीन देते हैं।

(जहरीला नहीं)

११९—विषखपरा

प्र०-विषखपरा। सं०-वर्षाभूः। फ़ा०-बालखसपत। अ०-जुन्दकोका। रंग-हरा। प०-एक घास है। जिसके पत्ते चौड़े और लम्बे होते हैं। स्व०-पत्ते गर्म खुश्क १, कोई फूल गर्म खुश्क २ कहते हैं। प्र०-बथुआ। हा०-क़ाबिज़है और रियाह पैदा करता है। मात्रा-६ माशेसे ६ माशे तक।

गुण व कार्य—मादे को नर्म करता है, बलग़म व सफ़रा फिसाद और फोड़ों को दफै करता है और खून को साफ करता है, भूख लाता है और बाज ऐज़ा के वरमों को दूर करता है।

(जहरीली नहीं)

१२०—बकायन

प्र० नाम-बकायन । सं०-महानिम्ब । फ़ा०-आज़ाद दरख्त । अ०-बान । रंग-पत्ते हरे फूल पीला, स्वाद-कड़वा । पहि०-एक बहुत बड़ा पेड़ है जिसकी लकड़ी बहुत नर्म होती है और फल कम होता है । स्व०-गर्म २ खुश्क १ । हानि-यकृत व मेदे को । दर्पघ्न-सौंफ़ । प्रतिनिधि-सलीखा व समर बकायन । मात्रा-१ तोला ।

गुण व कार्य—मुफ़त: मसाम है और मुहल्लिल रियाह और पेशाब लाता है, कोढ़ व सफेद दाग और कन्ठमाला व वरमों व जख़्मों और चर्म रोगों को नफ़ा करता है, खून को साफ करता है इसका लेप वरमों को तहलील करता है, इसका मंजन दांतों को कुव्वत देता है ।

(जहरीली नहीं)

१२१—बकायन के फल

प्र०-बकायन के फल । सं०-महानिम्ब फलम् । फ़ा०-बार दरख्त आज़ाद । अ०-हब्बुलबान तमरुलबान । रंग-स्याह । स्वाद-कड़वा । प०-बकायन का फल गोल होताहै । स्व०-गर्म व खुश्क । हानि-यकृत व मेदे को । द०-सौंफ़ । प्र०-बसवासा व मजीठ । मात्रा-७ माशे ।

गुण व कार्य—जिगर के सुद्दे को खोलता है बलगम व सौदा को दस्तों की राह निकालता है । वरम को तहलील करता है, खून को साफ करता है, तिहाल के दर्द को नफ़ै है, बवासीर और जिगर की सख्ती और खुश्क व तर खुजली को दफ़ै करती है, इसका रोगन पट्ठों के ऐठन को मुफीद है ।

(जहरीला नहीं)

१२२—बकन

प्र०-बकन । रंग-हरा । प०-हिन्द में एक घास है । स्व०-गर्म खुश्क ।

गुण व कार्य—इसके पत्ते पीने से अफ़नी (अफूनत) का बुखार और बलगमी बुखार और सर्दी की खांसी दूर होती है, पेशाब बन्द हो जाने व सोजाक और पथरी को दूर करता है, इसका लेप वरम को तहलील करता है और फोड़े को पकाता है, और खून को साफ करता है ।

१२३—बिलाईकन्द व बराहीकन्द

प्रसिद्ध नाम-बिलाईकन्द व बराहीकन्द । सं०-बिदारीकन्द । रंग-सफेद । स्वाद-शीरीं व तेज व तलख । प०-एक पहाड़ी गोल और बहुत बड़ा कन्द है, स्वभाव-गर्म व खुश्क । हानि-सफरा जोश में लाता है ।

गुण व कार्य—भूख लाता है और ऐजा को कुव्वत बख्शता है, बाह लाता है, रियाह व बलगम को दफ़ै करता है, प्रमेह यानी जिरयान और पेट के कीड़ों को मुफीद है और सब्ज़ी इसकी, खाना खूब खिलाती है और जुजाम यानी कोढ़े को दफ़ै करती है, इसका लेप वरम को तहलील करता है ।

(जहरीली नहीं है)

१२४—बिल्लौर

प्र०-बिल्लौर । सं०-स्फटिक । अ०-हजरुल बिल्लौर । रं०-सफेद बुर्राक । स्वाद-बदमजा । प०-एक किस्म का आइने की तरह पत्थर है । स्व०-सर्द व खुश्क ।

गुण व कार्य—इसका सुर्मा चर्ब व सैलान व बयाज़ चश्म (आंख की सफेदी) को मुफीद है, इसका गले में लटकाना बच्चों के डरने और नींद

से चौंकने को खासा मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

१२५—बथुवा

प्र०-बथुवा। सं०-वास्तूक। फ़ा०-मुसलमा। अ०-क़तफ़। रंग-हरा। स्वाद-फीका बदमज़ा। पहिचान-एक प्रसिद्ध घास है। स्वभाव-सर्द व तर २। हानि-सर्द मिजाज वालों को और रियाह पैदा करता है। दर्पघ्न-गर्म मसाला। प्रतिनिधि-पालक।

गुण व कार्य—जल्द हजम होता है, और खिलत सालह (नेक खिलत) पैदा करता है, जिगर गर्म के मुआफिक है। गर्म मिजाज वालों को भी मुआफिक है और प्यास को तस्कीन देता है, इसके पत्तों का रंग सुद्दा खालता है और पेशाब लाता है, वरम को तहलील करता है, और पथरी तोड़ता है।

(जहरीला नहीं है)

१२६—बथुये के बीज

प्रसिद्ध नाम-बथुवे के बीज। सं०-वास्तूक बीज। फा०-तुख्म मुसलमा। अ०-बज़रुल क़तफ़। रंग-स्याह। स्वाद-फीका। पहिचान-प्रसिद्ध है। स्वभाव-गर्म व खुश्क १। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्पघ्न-गुलाब व कन्द। प्रतिनिधि-पालक के बीज। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलते हैं और दस्तावर है, माद्दे को तहलील करते हैं और पाक करते हैं, जलंधर व कांवर (कामला) व बहुत देर में पेशाब होने व बूंद २ पेशाब होने को और जईफ गुर्दों और अंतड़ियों को मुफीद है, बाह लाता है और खासा मोहरक बाह है।

(जहरीला नहीं है)

१२७—बिजौरा

प्र०-बिजौरा। सं०-विजपूरक। फ़ा०-तुरंज। अ०-अतरज। रंग-पीला सुर्खी मायल। स्वाद-खट्टा। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-बक्कल गर्म खुश्क १। गूदा सर्द तर २। बीज गर्म खुश्क। हानि-दर्द शिर लाता है और गर्म मिजाज वालों को। द०-शर्बत बनफ्सा व अंजीर। प्र०-अर्क नीबू या नारंगी।

गुण व कार्य—लताफ़त बख़शता है, दिल को कुव्वत देता है, काबिज है, सफरावी कै और जोश सफ़रा को तस्कीन देता है। खफ़कान व सफ़रावी दस्तों को खोता है, भूख लाता है। रूह को साफ़ करता है, और सफ़रावी अंबखरों को नहीं चढ़ने देता, इसके बीज बिच्छू के काटे हुए को मुफीद हैं। इसका स्वाद बहुत उम्दा होता है, और तमाम गुण में क़वी है और सत भी उम्दा होता है।

(जहरीला नहीं)

१२८—बनफ्सा

प्र० नाम-बनफ्सा। फ़ा०-बनफ्सा। अ०-बनफ्सज व फ़र्फीर। रंग-हरी स्याही मायल। स्वाद-बकठा। पहि०-एक पहाड़ी घास है, जिसके पत्ते व फूल काम आते हैं। हानि-सर्द व तर १। बाज गर्म १ खुश्क २ कहते हैं। स्वभाव-मुज़ाफ कलब करब लाता है। दर्पघ्न-रब्बुलसूसू व गुल-सुख व बिही। प्रति०-नीलोफर व खुब्बाजी। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—खासे तौर पर माद्दे सफ़रावी को दस्तों की राह आसानी से बाहर निकालता है, प्यास व खून की हिद्दत और सीने व हलक़ के खुरखुराने को तस्कीन देता है। वरम को तह-

लील करता है, मसाने की शोजिश को दूर करता है, खांसी को नफा करता है और नींद लाता है।

(जहरीला नहीं)

१२९—बुन

प्र०-बुन। फा०-बुन। अ०-हब्बुल खिजरा। रंग-सुर्खी व सफेदी मायल। स्वाद-फीका कुछ तलख। पहि०-एक पेड़का फल है, जिसको फ़ारसी में बतम कहते हैं। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-दर्द शिर और बेदारी(होश)लाता है। दर्पघ्न-कतीरा बिही गुलसुर्ख। प्रति०-कड़वा बादाम व पिस्ता। मात्रा-६ से ६ माशे तक।

गुण व कार्य—आवाज़ सीने को साफ़ करता है। सुद्दा खोलता है और दर्दों को तस्कीन देता है, हवास व तिहाल व जिगर को कुव्वत देता है और फरहत लाता है, बाह लाता है और हरकत देता है, इखलात को साफ़ करता है। पेशाब लाता है, मादे को तहलील करता है, नफ़ाफ़ (अफ़ारे) फ़ालिज व लकवे व इस्तरखा व मालिखौलिया व मिराकी को नाफे है:

(जहरीली नहीं)

१३०—बिनौला

प्र०-बिनौला सं०-कार्पासबीजम्। फ़ा०-पम्बःदाना। अ०-हब्बुल कतन। रंग-बाहर स्याह अन्दर सफेद। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-रुई के अन्दर का बीज है। स्व०-गर्म तर। हानि-गुर्दे को दर्पघ्न-खमीरा बनफ्सा व कन्द सफेद। प्रति०-तुख्म फरतम। गिरी। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—बाह लाता है और इमसाक करता है और मादे को तहलील करता है पेट व सीने को नर्म करता है, गर्मी की खांसी को नफा करता है, इल्तनाक रहम को मुफीद है। मनी को गाढ़ा करता है, दूध व घी को पैदा करता है, इसकी गिरी पीना बाह को हरकत देता है, इसका रोगन मलना बाह की ताकत को बढ़ाता है इसका लेप मलना झांई और स्याह दाग व चुनचुने लगने और जख्मों को दूर करता है। अगर इसके पत्ते देग में जोश करके आंख के ऊपर बांधे तो आंख दुखने को मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

१३१—बनियाला

प्र०-बनियाला। रंग-भूरा व कुछ सुर्ख। स्वाद-मीठा व खट्टा। पहि०-एक फल है जो आलू के बराबर और बंगाले में होता है। स्वभाव-सर्द तर २। हानि-बुखार लाता है व बलगमी मिजाजों को मुजिर है। दर्प०-शहद व नमक।

गुण व कार्य—सफरा को तस्कीन देता है, और सफराबी मिजाज वालों को मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

१३२—बूटी शेख फरीद

प्र०-बूटीशेख फरीद। सं०-बला। रंग-हरी। स्वाद-फीका। प०-एक प्रसिद्ध घास है। स्व०-सर्द व बाज गर्म कहते हैं। हानि-देर हजम।

गुण व कार्य—बलगमी बुखार व पेट के दर्द को नाफ़े है, और टूटी हुई हड्डी को जोड़ती है, बाह को हरकत देती है।

(जहरीली नहीं)

१३३—बूदार चमड़ा

प्र०-बूदार चमड़ा। फ़ा०-चर्म बूदार। अ०-बलगार। रंग-स्याह। स्वाद-खाया नहीं जाता। पहि०-एक किस्म का मशहूर चमड़ा है। स्वभाव-

सर्द व खुश्क । हानि-बाह को । दर्पघ्न-मस्तगी । प्रति०-रेशम सोख्ता ।

गुण व कार्य—जलाया हुआ जख्मों को भर लाता है और इसके बर्तन में पानी पीना खफ़-क़ान को खासा मुफीद है ।

(जहरीला नहीं)

१३४—बोल

प्र०-बोल । सं०-बोल । अ०-मुरमुकी । रंग-सुर्ख । स्वाद-फीका व कड़वा । पहि०-एक पेड़ का गोंद है, जिसकी लकड़ीके नेजे बनाये जातेहैं ।स्व०-गर्म ३ खुश्क २ । हानि-गर्म मिजाज वालों और मसाने को । दर्पघ्न-शहद । प्रति०-सबर क़ुस्त तलख । मात्रा-१¾ माशे ।

गुण व कार्य—जिला करता है, बाह को खुश्क करता है, रियाह को तहलील करता है । सर्दी के वरम को तहलील करता है, काबिज है । यदि इसको सूंघें तो दिमाग को पाक करता है और पेशाब व दस्त लाता है । आंतों में फिस-लन पैदा करता है, पेट के कीड़े निकालता है । दर्द गुर्दा व दर्द मुफासिल यानी जोड़ बन्द को और धांस व खांसी और पेचिश रीही व बलगमी को नाफै है, और दस्तों व सर्द जहर को मुफीद है ।

(जहरीली नहीं)

१३५—बूंट (चना)

प्र०-बूँट । सं०-चणक । फ़ा०-खुद सब्ज । अ०-हम्स अख़ज़र । रंग-हरा । स्वाद-फीका खुशमजा । पहि०-कच्चे व हरे चने मशहूर हैं । स्व०-सर्द खुश्क । हानि-निक़ाख को । द०-नमक ।

गुण व कार्य—खून व बलग़म और सफरा बढ़ाता है, बदन व बाह को कुव्वत देता है । और मुमसक है, वक़ौल साहबे अजायबुल मख़लूकात के बूंट खाना, बुए दहन को नेक करता है, यानी मुंह की बदबू को खोता है । बूंट का पुलाव उम्दा पकता है, बूंट शहद में पके हुए मुकव्वी बाह व मुकव्वी बदन हैं ।

(जहरीला नहीं)

१३६—भांग

प्र०-भंग । सं०-विजया । फ़ा०-बंग । अ०-क़िनव व वर्कुलख़याल । रंग-हरी व खुरखुरी । स्वाद-कड़वी तेज । पहि०-यह एक प्रसिद्ध बूटी है भारत में इसके पत्ते स्तैमाल में आते हैं । स्व०-गर्म व खुश्क । हानि-शिर दर्द लाती है द०-कै करना और शर्बतइमाज । मात्रा—६ मा० ।

गुण व कार्य—यह इमसाक लाती है, वीर्य को खुश्क करती है । बदहवासी लाती है और दिमागी रूह को साफ करती है, मेदे की रतूबत को सोखती है और वरमको तहलील करती है । नशीलीहै और उत्तेजक भी है ।

(जहरीली है)

१३७—भंग के बीज

प्र०-भंग के बीज । सं०-विजया बीजम् । फ़ा०-तुख़्म बंग । अ०-बज़्रुल क़िनव । रंग-स्याह स्वाद-कड़वा । प०-मशहूर है । स्व०-गर्म व खुश्क । हानि-मेदे को । मात्रा-३ मा० ।

गुण व कार्य—पेशाब लाता है और इमसाक करता है, वमनी को खुश्क करता है, पेट को गुंग करता है और नशा लाता है । और बाहके तोड़ता है व बीनाई को कम करता है ।

(जहरीली है)

१३८—भटकटैया

प्र०-भटकटैया । सं०-भंटाकी । फ़ा०-बादंज़ान दस्ती । अ०-बादंजानबरी व हदक़ ।रंग-पत्ते हरे व

कांटेदार फूल पीला व सफेद, फलपीला। स्वाद-कुछ कड़वा। प०-एक पेड़ बैंगन के पेड़ की तरह है। एक गज ऊंचा होता है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-कै लाता है। द०-सिकंजबीन। प्र०-अश्तर खार। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य- इसके फल का लेप बलगमी जखमों के वरम को तहलील करता है और नाफै है। इसके खाने से खांसी व दमा दूर होता है, पेट के कीड़े मारता है, बदहवासी लाती है, हाजिम है, इसके पत्ते बवासीर को नफा देते हैं। इसकी जड़ का सफूफ सुर्ख शक्कर व गाय के दूध के साथ पीना स्तम्भन करता है।

(जहरीली नहीं)

१३९---बिहीदाना व बहदाना

प्र०-बिही दाना व बहदाना। सं०-नासपाति। फा०-बिहीदाना व बहदाना। अ०-हब्बुलसफरजल। रंग-स्याह व सुर्ख स्वाद-फीकालसदार। प०-बिही के बीज मशहूर हैं। स्व०-सर्द तर २। हानि-मेदे को जईफ व ढ़ीला करते हैं। द०-सौंफ व शक्कर। प्रतिनिधि-अस्पगोल। मात्रा-७ मा०।

गुण व कार्य—इसका लुआब हलक के खुंखुराने और गर्मी की सूखी खांसी को मुफीद है, मेदे की हरारत को तस्कीन देता है, जूड़ी बुखार व सोजिस और मुंह व जबान की खुश्की को दूर करता है। सिल के जख्म को मुफीद है, आंतों के खराश और अक्सर सफरावी मर्जों को नफा देता है। (जहरीली नहीं)

१४०---भिलावा

प्र० नाम-भिलावा। सं०-भल्लातक। फा०-बिलादर। अ०-हब्बुलक़ल्म व हब्बुल कलब। रंग-ताज़ा हरा व सूखा स्याह। स्वाद-बहुत कड़वा पहि०-एक पहाड़ी पेड़ का फल है, गोल व लम्बा होता है। इसके बीज की गिरी बादाम की गिरी सी होती। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-जनून व सरसाम पैदा करता है। दर्पघ्न-ताजा नारियल। व कुजद (तिल) व जौ का पानी। प्र०-रोगन बिलग्गां व फिन्दक। मात्रा-१॥ माशे।

गुण व कार्य—गर्मी करता है, और रियाह को तहलील करता है और लताफ़त करता है। जिल्द में जखम करता है, और सर्द बीमारियों मिस्ल फालिज व लकवा व राशा व सुलसुलबोल को नाफे है, बाह ज्यादा करता है और मस्से को दूर करता है। (जहरीला है)

१४१---बहमन सफेद

प्र० नाम-बहमद सफेद। रंग-सफेद। स्वाद-फीका। पहि०-एक लुआबदार जड़ है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्प०-उन्नाव व कतीरा। प्रति०-तोदरी व इन्द्र जौ। मात्रा—६ माशे।

गुण व कार्य—बाह लाती है और बदन को फरबै करती है, गर्मी अधिक पैदा करती है, दिल को कुव्वत देती है, रियाह को तहलील करती है, बलगम व खफक़ान और काबर (यरकां) को नफा देती है. गुर्दे व मसाने की पथरी को तोड़ फेंकती है और जख्म को पाक करती है।

(जहरीली नहीं है)

१४२—बहमनसुर्ख

प्र०-सुर्ख। रंग-सुर्ख। स्वाद-फीका या कुछ मीठा। प०-एक मशहूर जल है। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-अस्फल के। द०-उन्नाव व अनीसून। प्र०-इन्द्र जौ व मूसली। मात्रा—६ मा०।

गुण व कार्य—दिल व दिमाग को ताकत देती है, बाह लाती है, बदन को फर्बै करती है, खून को साफ करती है, खफकान को दूर करती है और रियाह को तहलील करता है।

(जहरीला नहीं)

१४३—भंगरा

प्र०-भंगरा । सं०-भृंगराज । अ०-हजीज । रङ्ग-हरा । स्वाद-कड़ुवा व तेज । प०-हिन्द में एक क़िस्म की घास है । स्व०-गर्म व खुश्क २ । प्रति०-वर्ग वेद अंजीर ।

गुण व कार्य—इसके पत्तों का पानी बीनाई और बाह को कुव्वत देता है, बलगमी रतूबत व तिहाल की सख्ती या जुकाम और कुलंजको मुफीद है, इसकी कुल्ली मुंह की बीमारी व दांतों के दर्द को दूर करती है।

(जहरीला नहीं)

१४४—भिंडी

प्र०-भिन्डी । सं०-भिंडिका । अ०-बामियांह बामिया । रंग-हरी व बीज स्याह । स्वाद-फीका लुआबदार । पहि०-लम्बी होती है, यह एक तरकारी है । स्व०-सर्द तर १ । हानि-बलगम पैदा करती है । हानि-सर्द मिजाज को । दर्पध्न-गर्म मशाला । प्रति०-खतमी के बीज व गुल अब्बासी ।

गुण व कार्य—थोड़ी गिजा है, सफरा को दूर करती है । मनी को पैदा व गाढ़ा करती है, आंतों की खराश व जिर्यान और सूजाक को मुफीद है । बाह को कुव्वत देती है । इसकी जड़ का सफूफ सूजाक को लाभ करता है ।

(जहरीली नहीं)

१४५—फूट

प्र०-नाम-फूट । सं०-एर्वारु । फा०-खयार दश्ती । अ०-क़िसा युलबर । रंग-हरी । पहि०-एक बड़ा फल कद्दू सा गर्मी व बरसात में होता है । स्व०-सर्द तर १ । हानि-नफाखा है जल्द सड़ जाता है । दर्पध्न-सफेद कन्द व जवारिश हर्रा । प्रति०-खरबूजा कच्चा ।

गुण व कार्य—दिल व दिमाग को कुव्वत देता है । बलगमी बुखार पैदा करता है, दिमागी सुद्दा खोलता है । तबियत को नर्म करता है और पेशाब लाता है ।

(जहरीली नहीं)

१४६—मूंफली

प्र० नाम-मुंफली । रंग-हरी । स्वाद-कड़वी व तेज । पहि०-एक क़िस्म की घास है जिसके पत्ते बारीक होते हैं । स्वभाव-सर्द व खुश्क ।

गुण व कार्य—बाह को कुव्वत देती है वीर्य को पैदा करती और गाढ़ा करती है, सूजाक को नफा करती है, और मनी जारी होने को मुफीद है ।

(जहरीली नहीं)

१४७—भूसी

प्र० नाम-भूसी । सं०-गोधूम तुष । फा०-सबूस । अ०-नखाला । रंग-सफेद । स्वाद-फीकी पहि०-सिर्फ गेहूँ की भूसी से मुराद है । स्व०-गर्म व खुश्क । हानि-जिगरको । दर्प०-निशास्ता । प्रति०-आरद जौ ।

गुण व कार्य—वरमों और बलगमों को तहलील करती है । मादे को पाक करती है और जिला करती है, सीने व पेट को नर्म करती है, सीने के खुरखुराने व पुरानी खांसी और धांस और गलीज़

रियाह और नफ़ाख़ को मुफ़ीद है। इसकी सेंक नमक के साथ मसाम खोलती है, और रियाह को तहलील करती है। (जहरीली नहीं)

१४८—बहेड़ा

प्र०—बहेड़ा। सं०—विभीतक। फ़ा०—बलैला। अ०—बलोलज़। रंग—भूरा ज़र्दी मायल। स्वाद—बकठा। पहि०—मिस्ल हरड़ के एक फल है। स्व०—सर्द १ खुश्क २। हानि—गुर्दा को। दर्पघ्न—शकर व शहद। प्रति०—आंवला व छोटी हरड़।

मात्रा—१०½ माशे।

गुण व कार्य—लताफत करता है, काबिज़ है मेदे को कुव्वत देता है, भूख लाता है, सौदावी माद्दे को दस्तों की राह निकालता है, और खिल्तवै माद्दे सफ़रावी को निकालता है, पुराने दस्तों व शिर दर्द और बबासीर को नफा करता है और आंखों व दिमाग़ को कुव्वत देता है।

(जहरीली नहीं)

१४९—बिही

प्र० नाम—बिही। फ़ा०—बिहदाना। अ०—सफ़र जल। रंग—पीला व सफ़ेद। स्वाद—मीठा व रसदार। पहि०—एक विलायती मेवा है, ताजा काम में आता है। स्व०—मीठा मोतदिल चाशनीदार सर्द खुश्क २। हानि—सुद्दा बहुत लाती है और कुलंज पैदा करती है। दर्पघ्न—शहद व अनीसून। प्रति०—अमरूद व सेब।

गुण व कार्य—फरहत लाती है, मेदे व दिल व दिमाग़ को कुव्वत देती है, हैवानी व नफ़ूसानी रूह को बहुत फ़रहत देती है और खफ़कान को दूर करती है, काबिज़ है, पेशाब व दूध को जारी करती है और खुश्क खांसी को मुफ़ीद है।

(जहरीली नहीं)

१५०—बीजबन्द

प्र० नाम—बीजबन्द। सं०—बला बीजम्। रंग—स्याह चमकदार। स्व०—सर्द व खुश्क। हानि—नफ़ाख़ व देर हजम। दर्पघ्न—शकर। प्रति०—तुख्म बटंगन। मात्रा—५ माशे।

गुण व कार्य—स्तम्भन करता है और वीर्य खूब पैदा करता है। पीठ व कमर को कुव्वत देता है, और क़वी करता है।

(जहरीली नहीं)

१५१—वेदमुश्क

प्र०—वेदमुश्क। सं०—लताकस्तूरी। फ़ा०—वेदमुश्क व बहरामज। अ०—खिलाफ़बलखी। रंग—हरा। प०—एक पेड़ है जिसके पत्ते शुरू हीसे मुलायम व चौड़े होते हैं। स्व०—सर्द तर १। प्रति०—अर्क नीलोफर।

गुण व कार्य—मुहल्लिल है और लताफत करता है और दिमाग़ी सुद्दा खोलता है, गर्मी के दर्द को तस्कीन देता है। दिल और सिकमी ऐजा और बाहको कुव्वत देता है। इसका अर्क कवीतर है और कुल अफ़आल में जियादातर अर्क ही इस्तैमाल होता है।

(जहरीली नहीं)

१५२—वेदसादह

प्र० नाम—वेदसादह। फ़ा०—वेद सादह। अ०—खिलाफ़। रंग—हरा व सफ़ेद। स्वाद—कड़वा व तेज़ बू। पहि०—यह भी एक पेड़ मुश्क का सा है अक्सर नहरों के किनारे का उम्दा होता है। स्व०—सर्द व खुश्क। हानि—कमर को। दर्पघ्न—

गुलाब व शकर। प्रति०–नीलोफर व गुल हिना। मात्रा–७ माशे व अर्क ५ तोले।

गुण व कार्य—तबिअत को लताफत लाता है, दिल व दिमाग़ को कुव्वत देता है। जिगर का सुद्दा खोलता है, खफकान व प्यास व कै व बुखार और बुखार मुहरका को नाफे करता है। खूनी दस्तों को बन्द करता है, इसका भी अर्क गुलों में उम्दा है।

(जहरीला नहीं)

१५३—बीरबहूटी

प्र० नाम–बीरबहोटी। सं०–इन्द्रगोप फा०–वीरबहूटी। अ०–करम उरुसक क़ागुना। रंग–बाहर व अन्दर बहुत सुर्ख़। पहिचान–एक कीड़ा है जो शुरू बरसात में होता है फिर गुम हो जाता है। स्वभाव–गर्म व खुश्क २। हानि–हमल गिरा देती है। दर्पघ्न–रोगन। प्रतिनिधि–ख़ुरातीन यानी केंचुवा। मात्रा–१ अदद।

गुण व कार्य—बलगमी मिजाज व फ़ालिज और लक़वे को मुफीद है। इसका लेप कुव्वत बाह व इमसाक और इन्द्री को निहायत मुफीद है, इसका तेल बहुत लाभदायक है।

(ज़हरीली नहीं)

१५४—बेर

प्र०–बेर। स०–कर्कन्धुः। फा०–कनार। अ०–सदर हरा व लाल व पीला। स्वाद–खट्टा व मीठा। पहि०–एक पेड़ का फल है, इसका पेड़ काँटेदार होता है। स्व०–गर्म व खुश्क। हानि–गर्म मिजाज वालों व दिमाग और मेदे को। दर्पघ्न–सिकंजबीन व गुलकन्द। प्रति०–सेब।

गुण व कार्य—जिगर में पचाने की अच्छी गिज़ा है। रद्दी गर्मी को बुझाता है, तुर्श दिमाग पर अबखरे नहीं चढ़ने देता और सफरा व प्यास को दफै करता है। इसका पानी जिगर का सुद्दा खोलता है, आंत और मेदे के कीड़े मारता है। इसकी लकड़ी ५। बुरादा खून बहने को बन्द करता है, आंतों के जख्म और दस्तों को न..। देता है। इसके पत्तों का लेप बरमहार को पकाता है, पत्तों के जोशान्दे का पाशोया दिमाग़ पर अबखरात नहीं चढ़ने देता है।

(जहरीला नहीं)

१५५—बैंगुन

प्र० नाम–बैगुन। सं०–वृन्ताक। फा०–बादनगान। अ०–बादरंजान। रंग–बैजनी व सफेद। स्वाद–फीका। पहि०–एक पेड़ का फल प्रसिद्ध है। स्व०–गर्म व खुश्क २। हानि–सौदा पैदा करता व बवासीर व कुलंज लाता है। दर्पघ्न–गोश्त व रोगन व सिर्का।

गुण व कार्य—मेदे को क़वी करता है, सुद्दा खोलता है। सख्तियों को नर्म करता है, पेशाब जारी करता है, गर्मी के दर्दों को खासतौर से तस्कीन देता है, और कलीलुलगिजा अवसीरुल फुज़ूल है, बैगन का शिर घिस कर लगाना बवासीर को खास मुफीद है और आंबाहलदी के साथ इसका तराश कर सेंकना चोट को नफा देता है।

(जहरीला नहीं)

१५६—बेल

प्र० नाम–बेल। सं०–बिल्व। रंग–बाहर हरा व पीला अन्दर। स्वाद–मीठा व लज्जदार। पहि०–

खर्बूजे के आकार का एक फल है। स्व०-गर्म १। हानि-सुद्दा लाता है और बवासीर पैदा करता है। दर्प०-शकर है। मात्रा—१ से २ तो० तक।

गुण व कार्य—दिल व जिगर और मेदे को कुव्वत देता है। क़ाबिज़ है, पुराने दस्तों को बन्द करता है, आंतोंको साफ और रतूबत को दफै करता है। खास तौरपर कब्जको दफै करता है, इसका लेप जिल्द में दाना पैदा करता है और वरम को तह लील करता है। (जहरीला नहीं)

१५७—बेत

प्र० नाम-बेत। सं०-वेतस। फ़ा०-खरान। अ०-हरजान। रंग-पीला व सुर्ख हरा। स्वाद-फीका। पहि०-एक झाड़दार पेड़ है मिस्ल बांस के कई तरह का होता है। स्व०-गर्म तर। हानि-खुश्की लाता है। दर्प०-रोग़न। प्रति०-हारसिंगार। मात्रा-६ मा०।

गुण व कार्य—पथरी को तोड़ता है, बाह को आफित रसीदा अजू पर गिरने नहीं देता है, वरमों को तहलील करता है, इसका पानी निचोड़कर पीना, अगर खून बहता हो तो रोकता है।

(जहरीला नहीं)

१५८—पापड़ी लोन

प्र०-पापड़ीलोन। सं०-लवण पर्पटी फ़ा०-बूररह अर्मनी। अ०-बूरक़। रंग-सफेद। स्वाद-खारा। प०-एक किस्म का हलका और जालीदार नमक है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-मेदे को और ग़सी लाता है। द०-मस्तगी व समग़अ। प्र०-नमक इन्द्रानी। मात्रा-१ मा०।

गुण व कार्य—रियाह को तहलील करता और जिला करता है, जाहिर जिल्द को सुर्ख करता है। और खून को जाहिर की तरफ जज़ब करता है कुलज को दफै करता है, बाह को हरकत देता है, पेट के कीड़े मारता है, ग़लीज़ बलग़म को दस्त के राह निकालता है, इसका सुर्मा शहद के साथ निगाह की हिद्दत को मुफीद है, और चमेली के तेल में आले तनासुल (लिंग) पर मलना बाह क़वी हरकत देता है।

(जहरीला नहीं)

१५९—पारा

प्र० नाम-पारा। सं०-पारद। फा०-सीमाब अ०-ज़ीबक़। रंग-सफेद व सफ़ाँ। पहि०-एक खान की पतली चीज है। स्व०-सर्द २ तर ३। हानि-पट्ठों और मुंह को। द०-दूध व मुर्ग का शोरबा। प्र०-पिघला हुआ शीशा। मात्रा—२ माशा।

गुण व कार्य—गोश्त के साथ खाना बदन को तन्दुरुस्त रखता है, पट्ठों व हाज़मे की ताकत को और बाह को कुव्वत देता है, तर खुजली को मुफीद है, जख्मों और आतशक को मुफीद है, इसका धुवां राशा पैदा करता है, इसका कुश्ता कोढ़ पैदा करता है,

(जहरीला नहीं)

१६०—पाकर

प्र० नाम-पाकर। सं०-प्लक्ष रंग-हरा व भूरा। स्वाद-बदमज़ा। पहि०-एक बड़ा सायादार और दूध वाला पेड़ है। स्वभाव-सर्दतर १।

गुण व कार्य—फोड़े फुन्सी और बाज सूजन और बलग़म के फिसाद को मुफीद है, इसका फल सफरा को दूर करताहै, इसकामुरब्बा तिहाल(तिल्ली) के लिये मुजर्रबहै, इसका दूध आफित रसीदा अजू में माद्दे को नहीं आने देता और तहलील करता

है, इसका फल मुर्झाये दिल को कुव्वत देता है, भूख लाता और सफरा को काटता है।

(जहरीला नहीं)

१६१--पालक

प्र०-पालक। सं०-पालक्या। फा०-अस्पानाज अ०-अस्फा नाज। रंग-हरा। स्वाद-बदमजा। प०-एक प्रसिद्ध साग है। स्व०-सद व तर १। हानि-शिर दर्द लाता है व सर्द मिजाज वालों को। द०-गोश्त व रोगन बादाम। प्र०-खुर्फा व कद्दू। मात्रा-३ तोला।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करता है, माद्दा गिरने को रोकता है, जल्द हजम होता है, मेदे की शजिश व प्यास और गर्मी के बुखारों को मुफीद है, मसाने व गुर्दे की पथरी तोड़ता है, पेशाब बन्द होने और गर्म मिजाज वालों को मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

१६२--पालक के बीज

प्र०-पालक के बीज। सं०-पालक्या बीजम्। फा०-तुख्म अस्पानाज। अ०-बजरुल अस्पानाज। रंग-भूरा व जर्दी मायल। स्वाद-फीका। प०-एक मशहूर व तिकौना साग का बीज है। स्व०-सर्दतर हा०-तिहाल को। द०-गुल मखतूम। प्र०-तुख्म खुरफा। मात्रा—७ माशे।

गुण व कार्य—दिल के दर्द व पेट के दर्दों और गर्मी के बुखारों को मुफीद है, पेशाब जारी करता है, प्यास और मेदे की शोजिश को तस्कीन देता है, इसका शर्बत दिक् व सिल के लिये मुजर्रब है और पेशाब बन्द हो जाने के लिए नफा देता है।

(जहरीली नहीं है)

१६३--पालक जूही

प्र०-पालक जूही। रंग-हरी व भूरी। स्वाद-पत्ते कुछ कड़वे। प०-एक घास है जिसके पत्ते पालक से चौड़े व लम्बे होते हैं। स्व०-गर्मतर। मात्रा—७ माशा।

गुण व कार्य—इसके पत्तों के रंग का तिला स्याह दाग व दाद और चेहरे की स्याही को मुफीद है, इसकी जड़ का छिलका लौंग व काली जीरी एक ५ तोला व लहसुन १ जवा, पानी या सिर्के में पीसकर लगाना दाद या काले दाग के लिये अजमाया हुआ है।

(जहरीली नहीं है)

१६४--पान

प्र०-पान। सं०-ताम्बूल। फा०-तम्बूल। अ०-तान। रंग-हरा। स्वाद-कुछ कड़वा व तेज। पहि०-एक पत्ता है बेल में लगता है व कई किस्म का होता है, नर्म व मादा भी है। स्व०-दिसावरी मातदिल व बंगला गर्म खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों को और निहार मुंह। दप०-छोटी इलायची व कत्था व चूना। प्रति०-लौंग। मात्रा-७ माशे एक बार।

गुण व कार्य—तबिअत को फहरत देता है, दिल व जिगर व मेदे व दिमाग और हाफिजे व बुद्धी को कवी करता है और खुशी (प्रसन्नता) लाता है, मसाम सुद्दा खोलता है, पेशाब लाता है, फजलात को छांटता है, झूठी प्यास को तस्कीन देता है, आवाज व गले को साफ करता है, इसको चबाने से दांत का दर्द और मुंह की बदबू छांटता है, बाह को कुव्वत देता और भूख लाता है।

(जहरीली नहीं)

१६५---पाह

प्र०-पाह। रंग-कई रंग स्याह व सफेद। स्वाद-फीका प०-एक काली चीज पत्थर की किस्म से गुजरात में उम्दा व जियादा होती है। स्व०-गर्म व खुश्क ३।

गुण व कार्य---औरतों की अन्दामनिहानी (योनि) की रतूबत को दूर करती है, हैज के खून को बन्द करती है, इसका लेप आंखों की बीमारी को मुफीद है।

(करीब वसम)

१६६---प्यूइन

प्र०-प्यूइन। रंग-हरी। स्वाद-कड़वा। प०-हिन्दी में एक मशहूर घास है। स्व०-गर्म व खुश्क।

गुण व कार्य---इसके पत्ते वरमों को तहलील करते हैं, इसकी जड़ पानी में पीस के लगाना जख्म और नासूर को फायदेमन्द है।

(जहरीलीनहीं है)

१६७---पपली व पपल

प्र०-पीपली व पीपल। सं०-पिप्पली। फा०-फिलफिलदराज। अ०-दारफिलफिल। रंग-भूरी। स्वाद-कुछ कड़वी व खूब तेज।प०-सहतूतकी शक्ल का एक फल है। स्व०-गर्म व खुश्क२। हानि-शिर को और सिर दर्द लाता है। द०-समगर्वी व सन्दल। प्र०-सोंठ व नरकचूर। मात्रा—४॥ मा०

गुण व कार्य---सर्द मवाद और रियाह को तहलील करती है,जिगर व तिहाल का सुद्दा तोड़ती है, खाना हजम करती है, मेदे व कमर को ताकत देती है, पेट में गर्मी पैदा करती है, बाह को हरकत देती है, पेशाब व हैज को जारी करती और हमल को गिराती है। (जहरीली नहीं)

१६८---पीपलामूल

प्र०-पीपल मूल। सं०-पिप्पली मूलम्। फा०-फिलफिल मोया। अ०-अस्लुल फिलफिल। रंग-स्याह व भूरी। स्वाद-कुछ कड़वी व तेज। प०-पीपल की एक गिरहदार जड़ है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालोंको बीनाई व मनी को कम करती है।द०-समगर्वी व शहद। प्र०-सोरंजान शीरीं व मगज तुख्म कर्तुम। मात्रा-४ मा०।

गुण व कार्य---इसका चबाना मुंह की रतूबत छांटता है और बलगम को दूर करता है, हाजिम है व भूख लाता है। मेदेकी गर्मीको उभारता है,कुलंज व शतलुंज और तिहाल व सर्दी के वरमों को नफा देता है। वरमों को तहलील करती है, सुद्दा खोलती है और बावजूद मनी कम करने के बाह जियादा करती है। (जहरीला नहीं)

१६९---पपीता व अंडखबूंजा

प्र० नाम-पपीता व अंडखबूंजा। सं०अंड खबूंजा। रंग-हरा पीला व सुर्ख। स्वाद-कच्चा कड़ुवा व पक्का मीठा व कुछ बदमजा। प०-खबूंजे के बराबर एक पेड़ का फल है, इसके पत्ते अंड के से होते हैं। स्व०-सर्द तर २। हानि-सर्द व बलगमी मिजाजवालों को। दर्पघ्न-शकर। प्रति०-अंजीर हिन्दी। मात्रा-४ माशे।

गुण व कार्य---मुंह से खून आने व गर्मी की बवासीर और दिल व मेदे की सोजिश को मुफीद है। इसका दूध दाद पर लगाना नफा करता है, इसका फल आतशक को मुफीद है। इसका पक्का फल खाना या कच्चे का अचार तिहाल की बीमारी को फायदेमन्द है।

(जहरीला नहीं)

१७०---पपीता

प्र० नाम-पपीता। फ़ा०-पपीता। रंग-भूरा स्याह। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक फल के बीज हैं वह फल पीले आलू की बराबर होता है व फल बीज मिला है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-गर्म मिजाज वालों को और तशंनुज लाता है। दर्पघ्न-हरी काशनी। प्रति०-दरियाई नारियल। मात्रा-एक हब्बा (रत्ती)।

गुण व कार्य—जहरों को मारता है, हैज़े को बहुत फ़ायदेमन्द है और मुजरब है और अगर गुलाब के साथ पीस कर दिया जाय तो फौरन क़ै व दस्त बन्द हो जाते हैं। हैज़ को जारी करता है। दमे व जलंधर व रियाह और गठिया को नफा देता है। (क़रीब व सम)

१७१—परवल

प्र० नाम-परवल। सं०-पटोल। रंग-हरा। स्वाद-कुछ कड़वा व फीका। पहि०-एक फल जो तरकारी में काम आता है, जिसकी बेल खारदार होती है। स्व०-गर्म १ तर २। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्पघ्न-धनियां। प्रति०-खीरा ककड़ी।

गुण व कार्य—जल्द हजम होता है, वाहलाता है, भूख बढ़ाता है, दिल व मेदे को कुव्वत देता है। खांसी व खून के फिसाद व सफ़रा व बुखार और फोड़े फुन्सी को नफा करता है, पेट के कीड़े मारता है और गोश्त के साथ मजेदार होता है। (जहरीला नहीं है)

१७२—पन्ना

प्र०-पन्ना। सं०-पन्ना या गारुत्मत। फा०-जमुर्रद। अ०-जमुर्रद। रंग-सब्ज बुर्राक। स्वाद-फीका। पहि०-एक जवाहिरात व खान की चीज़ मशहूर है। स्व०-सर्द २, ख़ुश्क३। हानि-मसाना को। दर्पघ्न-मुश्क। प्रति०-मूंगा व जबरजद।

मात्रा-२ रत्ती।

गुण व कार्य—फ़रहतदेता है, असली हरारत व अर्वाह व दिल और दिमाग़ व जिगर और मेदे को कुव्वत बख्शता है, मिर्गी व जनून और खफ़क़ान व जलंधर और यर्कान व पेशाब देर में आने और कोढ़ को दूर करता है। इसका सुर्मा बीनाई को कुव्वत देता है और कीड़ों के जहर को मारने वाला है। सुर्ख चौंटली से ज्यादा सम है।

१७३---पिधारा (विधारा)

प्र०-विधारा। सं०-बृद्धदारुक। रंग-भूरी। स्वाद-कड़वी व बकटी। पहि०-एक बड़ी जड़ है। स्व०-गर्म व खुश्क। प्रति०-असगंध। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—तबियत को नर्म करती है, और वाह लाती है, बलग़म के फिसाद व खून और जिर्यान और अक्सर ऐजा के वरम व गठिया व अर्कुलनिसा को दफै करती है। (जहरीली नहीं)

१७४—पिस्ता

प्र० नाम-पिस्ता। फा०-पिस्ता। अ०-फ़ितक। रंग-भीतरी हरा बाहर कुछ सुर्ख। स्वाद-फीका व कुछ मीठा और खुशमजा। पहि०-एक विलायती मशहूर मेवा है, जो किशमिश से सख्त है। स्व०-गर्म १, खुश्क २, मयै कुछ रतूवत। दर्पघ्न-सिकंजबीन व आलू। प्रति०-बादाम।

गुण व कार्य—ज़हन व हाफ़िजे व दिल और दिमाग़ व मेदे और बाह को कुव्वत देता है।

खफकान व क़ै और मितली को खोता है, जिगर के सुद्दे को खोलता है, बदन को फ़रबा करता है। गुर्दे की कमजोरी और जिगर की सर्दी को दूर करता है। (जहरीला नहीं)

१७५—पिस्ते का छिलका

प्र०-पिस्तेका छिलका। फा०-पोस्तपिस्ता। अ०-कसरुल फितक। रंग-कुछ सुर्ख व मैला। स्वाद-फीका व बकटा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द व खुश्क २। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—क़ाबिज है, मुंह आने को नफा करता है, क़ै और हिचकी को दूर करता है। सुद्दे व आंतों व मसूढ़ों व दिल और दिमाग को कुव्वत देता है और मुंह को खुशबूदार करता है। (जहरीला नहीं)

७६—पखान वेद

प्र० नाम-पाखान वेद। सं०-पाषाण भेद। फा०-गोशाह। अ०-जन्तियाना। रंग-सुर्ख व कुछ स्याह। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक बालिस्त के बराबर एक जड़ है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-सीने व गर्म मिजाज वालों को। दर्पघ्न-अक़ जू कुन्दरयून। प्रति०-असारून व जराबन्द मदहरज। मात्रा—३॥ माशा।

गुण व कार्य—क़ाबिज़ है और लताफत करता है। जिला करता है, वरम वगैरह को तहलील करता है। सुद्दा खोलता है, बाह को पाक करता है, सर्दी व पसली और मेदे के दर्दों को तस्कीन देता है, पेशाब जारी करता है, यरकां व प्रमेह और जिर्यान को मुफीद है और मुक़व्वी बाह है। सिरके के साथ इसका लेप यरकांको नफा करता है और बावले कुत्ते के जहर और दूसरे जहरों को मारने वाला है। (जहरीला नहीं)

१७७—पित्तपापड़ा

प्र० नाम-पित्तपापड़ा। सं०-पर्पटक। फा० शातरा। अ०-शाहतरज। रंग-हरा और स्याही मायल। स्वाद-कड़वा व कुछ तेज। पहि०-एक घास मशहूर है। स्व०-मुग्क़त्र लकवी व शेख के मत से सर्द तर १ है। हानि-फेफड़े को। दर्पघ्न-कासनी। प्रति०-बड़ी हरड़ व सनाय।

गुण व कार्य—जिगर व तिहाल का सुद्दा खोलता है, और जिगर व मेदे को कुव्वत देता है, सफरा व सौदा और बलगम को दस्तों की राह निकालता है, खून को साफ करता है। सूखा शाहतरा तपे कोहना सौदावी मरजों को मुफीद है। यरकां को खोता है, इसके पत्तों का आब मरूक (अर्क) मेदे और भूख को कुव्वत देता है और तबियत को नर्म करता है। (जहरीला नहीं)

१७८—पित्तपापड़े के बीज

प्र०-पित्तपापड़े केबीज। सं०-पर्पटक बीजम्। फा०-तुख्म शाहतरा। अ०-बजर शाहतरज। रंग-स्याह। स्वाद-कड़वा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-मातदिल व हरारत मायल। हानि-तिहाल को। दर्पघ्न-कासनी व बड़ी हरड़। प्रति०-सनाय मकी मात्रा-७ माशे से ६ माशे तक।

गुण व कार्य—मेदे और आंतोंको पाक करता है, बन्द फुजले को निकालता है, खून व सफरा और सौदा को साफ करता है, भूख लाता है। यरकां को नफा करता है, और अक्सर सौदा की बीमारियों को फायदा करता है।

१७९---पतंग (लाल चंदन)

प्र०-पतंग । सं०-रक्त चंदनम् । फा०-बक्कम । अ०-बक़म । रंग-खूब सुर्ख । स्वाद-कड़वा व मीठा व तेज बू । पहि०-एक पेड़ की लाल लकड़ी है, जिससे कपड़े रँगते हैं। स्व०-गर्म व खुश्क २ वैद्यों के मत से सर्द और खुश्क है । हानि-१ तोला क़ातिल है । दर्पहर-सर्द चीजें और कै । मात्रा—५ माशे ।

गुण व कार्य—इसकी बुरकी लगाना ज़ख्मों और पुराने फोड़ों को भर लाती है और बहते खून को बन्द करती है और बहते हुए ज़ख्मों की रतूबत को खुश्क करती है, गालों का रंग साफ करता है, इसका पीना बलगम व खून और फोड़े फुन्सी के फिसाद को दूर करता है, इसके रंगे हुए कपड़े पहनना वाह लाता है ।

(सम क़ातिल है)

१८०—पथर

प्र० नाम-पथरी । फा०-संगदान व चुनियादान । अ०-क़ाबिज़ा । रंग-सुर्ख व अन्दर पीला । प०-चिड़ियों का मेदा है । स्व०-गर्म । हानि-कुलंज लाता है और देर हजम है । दर्प०-सिकों व नमक । प्रति०-मस्तगी । मात्रा-२ माशे ।

गुण व कार्य—अक्सीर गिज़ा है, खफकान को खोती है, जिगर को कुव्वत देती है, अच्छा खून पैदा करती है, इसके अन्दर का पोस्त (चमड़ा) मेदे के दर्द और मेदे की गुड़गुड़ाहट और मरोड़ को मुफीद है ।

(जहरीली नहीं)

१८१- पथरी भूरी

प्र० नाम-पथरी भूरी । रंग-हरी । स्वाद-कुछ कड़वी । पहि०-एक घास है जो पत्थर पर उगती है । स्व०-गर्म खुश्क । मात्रा-१ तोला ।

गुण व कार्य—गुर्दे व मशाने की पथरी को तोड़ती है और पेशाब खूब जारी करती है ।

(जहरीली नहीं)

१८२---पवार (चकौंड़)

प्र०-पवांर व चकवड़ । सं०-चक्रमर्द । रंग-पत्ते हरे व फूल पीला स्वाद-तेज । पहि०-एक घास है जिसके बीज मोंठ के बराबर होते हैं । स्वभाव-गर्म व खुश्क । हानि-अंतड़ियों को । दर्पहर-दोग़ (मट्ठा) छाछ । प्रतिनिधि-बाबची । मात्रा—२ माशा ।

गुण व कार्य—मोहल्लिल है और रतूबत को जज़ब करता है, नीबू के अर्क के साथ इसका लेप सफेद दाग व दाह व सूखी और तर खुजली को मुफीद है। इसका खाना बबाई बीमारी और बबाई हवा से महफूज रखता है ।

(ज़हरीली नहीं)

१८३---पनीर

प्र०-पनीर । सं०-फांट । फ़ा०-पनीर । अ०-जबन । रंग-सफेद व जर्दी मायल । स्वाद-कुछ शोर (नुनखरा) प०-जानवरों का दूध फाड़कर पनीर बनता है । स्व०-सर्द तर २ । हानि-सर्द मिजाज वालोंको और भूख मारता है । दप०-शहद व पौदीना व सातर ।

गुण व कार्य—मेदे व आंतों और गुर्दे को कुव्वत देता है, तबिअत को नर्म करता है, देर हजम है और अच्छा खिल्त पैदा करता है ।

(जहरीला नहीं)

१८४-- पनीर माया व चुस्तःवचक

प्र० -पनीर व माया व चुस्तः व चाक । फ़ा०-

पनीर माया। अ०-ऑनफः। रंग-सफेद। स्वाद-फीका व कुछ नुनखरा। पहि०-अक्सर जानवरों के मेदे से निकलता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-मेदे व आंतों को। दर्पघ्न-जरिश्क व शहद। मात्रा-१ मा०।

गुण व कार्य—सेरे व गुर्दे को कुव्वत देता है दस्तों को बन्द करता है। नकसीर व रतूबत रहम के बहने को भी रोकता है। लताफत बढ़ाता है। रतूबत को खोता है, पेट व रहम के दर्द को फायदा देता है और जहर से पिघलाई हुई को जमा देता है और जमी हुई को पिघलाती है। जिसने मुर्दा संग खाया हो इसको पिये तो आराम पाता है, हर जानवरों का पनीरमाया वह अपने गुण में उसी जानवर के मुताबिक है। गोश्त के बयान में इसका हाल लिखा जायगा। (जहरीली नहीं)

१८५---पोदीना

प्र०-पोदीना। सं०-पोदीना। फा०-पोदीना। अ०-फोतंज। रंग-हरा। स्वाद-कुछ कड़वा व तेज व तेज बू। प०-एक प्रकार की प्रसिद्ध घास है स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-आंतों व गुर्दे व बाह को। द०-कतीरा व बब्बूल सूस। प्र०-गन्दना। मात्रा-७ माशा।

गुण व कार्य—लताफत करता है, सीने व गुर्दे के फुजलात को पाक करता है। क्व (कै) व हिचकी को मुफीद है। रियाहको तहलील करता है, पेशाब व पसीने को बहाता है, हमल को मदद देता है। इसको सूंघने से गशी दूर होती है। (जहरीला नहीं)

१८६---पहाड़ी पोदीना

प्र०-पहाड़ी पोदीना। सं०-पर्वतीय पौदीना। अ०-पोदीना कोही। फा०-फुदंज जबली। रंग-हरा कुछ सफेद। स्वाद-खूब तेज व तेज बू। प०-पोदीना की तरह की एक पहाड़ी घास है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-फेफड़े को। द०-पौदीना। प्र०-अफतीमून व सातर। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—बदन में गर्मी खूब बढ़ाता है पेशाब व हैज और दूध को खूब जारी करता है, सुद्दे को तोड़ता है। सीने और फेफड़े को पाक करता है। गुर्दे व जिगर व मेदे और तिहाल को कुव्वत देता है, मुंह से खून आने को बन्द करता है। दस्तों के राह बलगम को निकालता है, कुलंज को नफा देता है, सिर्के के साथ इसका लेप बलगमी वरमों को तहलील करता है और फोड़ों को खुश्क करता है। (जहरीली नहीं है)

१८७—बोजीदान

फा०-बोजीदान। अ०-मुस्ता जिला। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ मीठा। प०-एक लम्बी व सख्त जड़ है। जिसके ऊपर रेखा सी होती है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-फोतोंको। द०-शहद व राई। प्र०-बहमन व बज। मात्रा—६ मा०।

गुण व कार्य—बाह लाती है और उसे हरकत देती है, गठिया और नुकरस यानी पैर की उंगली के दर्द को नफा करती है, जिगर व तिहाल का सुद्दा खोलती है, मेदे को रद्दी माद्दे से पाक करती है, हमलों को गिराती है, जलंधर को फायदा करती है, मेदे के कीड़े को व सर्द जहरों को मारती है, बवासीर को नफा देती है और खासकर सफरावी माद्दे को दस्तों के राह निकालती है। (जहरीली नहीं)

१८८—पोस्ता

प्र०—पोस्ता। सं०—अहिफेनफलत्वक्। फा०—पोस्त खशखाश। अ०—नसरूल खशखाश। रंग—सफेद व मटियारा। स्वाद—कड़वा। प०—खशखाशका छिलका है। जिसे कच्चे को गोंदकर अफीम निकालते हैं। स्व०—सर्द २ खुश्क १। हानि—फेफड़े को। द०—शकर व मस्तगी। प्र०—अफयून। मात्रा—६ मा०।

गुण व कार्य—ऐजाको सुस्त करता है, माद्दे को पकाता है व दस्तों को बन्द करता है और खासकर खूनी व सफरावी दस्तों को और मेद व मशाने सोजिशको दूर करता है व नींद लाताहै और खांसी और अक्सर सीने के मर्जों को मुफीद है।

(जहरीला है)

१८९—बूसदरबंदी

अ०—बूस दरबन्दी। रंग—स्याह। स्वाद—कड़वी। प०—अर्मीनियाके मुल्कमें एक घासहै इसीकी टिकिया बनाते हैं। स्व०—गर्म व खुश्क। प्र०—रसौत व शयाफ मामीशा।

गुण व कार्य—सौदा को पकाता है, आंख से पानी जाने को मुफीद है, माद्दे को नर्म करता है, गर्मी के वरम और जोड़ बन्द के दर्द को नफा करता है, गर्मी के दर्द को इसका लेप नफा देता है।

(जहरीला नहीं)

१९०—पोय

प्र०—पोय। सं०—पोतकी। रंग—हरा व ऊदा। स्वाद—तुर्श व थोड़ी तलखा। प०—एक बेलहै। जिसके पत्ते पान से मिलते हैं। स्व०—सर्दतर १। हानि—बलगम पैदा करती है। दर्प०—शकर।

गुण व कार्य—नींद और बाह लाती है, मनीको पैदा करती है। और हलक और आवाज के अलात को नर्म करती है। गर्मी के बुखार को आने नहीं देती और आग के जले को मुफीद है। इसका लेप लिंग पर करना स्तम्भन करता है।

(जहरीली नहीं)

१९१—पोय मादरान

प्र०—पोय मादरान। अ०—सफबिरंजा। रंग—पत्ते हरे, फूल पीला सफेद व भूरा व खुशबूदार। स्वाद—कुछ कड़वा व तेज। पहि०—एक पहाड़ी घास है जिसके फूल सोये कैसे छत्रदार होते हैं। स्व०—गर्म व खुश्क ३। हानि—गुर्दे को। दर्पघ्न—अनीसून। प्रति०—बाबूना अफसन्तीन। मात्रा—६माशे।

गुण व कार्य—लताफत देता है और मसाम खोलता है पेशाब व हैज को जारी करता है। पथरी तोड़ता है, मेदे के कीड़े मारता है। वरमों को तहलील करता है। खासकर रहम के वरम को।

(जहरीली नहीं)

१९२—फालसा

प्र०—फालसा। सं०—परूषक। फा०—फालसा। अ०—फाल्सा। रंग—सुर्ख व स्याह। स्वाद—मीठा व खट्टा। प०—एक फल चौंटलीकी तरह का है, जिसके पत्ते शहतूत के पत्तों के बराबर होते हैं। स्व०—सर्द ३ खुश्क १। हानि—सर्द मिजाज वालों को। द०—अनीसून व गुलकन्द।

गुण व कार्य—दिल व मेदे और जिगर के वर्म को कुव्वत देता है, सफरावी दस्तों व कै व हिचकी और तसुन्नगी का दूर करता है। बुखार की गर्मी और सीने व मेदे व पेशाब की सोजिश और सुजाक को दूर करता है, इसका सतू मेदे को

कुव्वत देता है, खफ़क़ान व इख्तलाज क़लब दिल को दूर करताहै और हरारत व प्यासको तस्कीन देताहै इसकी जड़ व बक्कल कूटकर रात को भिगो सुबह को उसका जलाल (मीठा पानी) शीरे से मतलब है पीवे। यह सुजाक और पेशाबकी सोजिशको दूर करता है। (जहरीली नहीं)

१९३—फिटकरी

प्र०-फिटकरी। सं०-स्फटिका। फ़ा०-जाक सफेद। अ०-जाज अवेज सबैयमानी। रंग-सफेद। स्वाद-कसैला व कुछ नुनखरा। प०-एक खान की नर्म चीज बिल्लौर की सी साफ होती है। स्व०-गर्म १ खुश्क २। हानि-फेफड़े व आंतों को। द०-दूध व घी। प्र०-नौसादर व नमक स्याह। मात्रा-१ मा०।

गुण व कार्य—खुश्की लाती है व काबिज है, जिला करती है। एक माशा यह और ४ माशे मिश्री व पाव भर दूध के साथ पीना गुर्दे के जखम व मसाने और पथरी के तोड़ने को मुफीद है। गन्दना के रस के साथ इसमें कपड़ा भिगोकर रखना जखम से खून आने को मुफीद है। आंख के जाले और पानी जाने को नफा देता है, दूध के साथ पीना चोट के सदमे को दूर करता है।

(जहरीली नहीं है)

१९४—फूलफली

प्र० नाम-फूलफली। सं०-ओड्रपुष्पी। रंग-हरा। स्वाद-कड़वा। प०-एक किस्म की घास है, जो जमीन पर छत्ता मारके उगती है, और पत्ते बारीक होते हैं। स्व०-सर्द व खुश्क। हानि-ऐजाये सीने को। द०-मिश्री।

गुण व कार्य—बाह को कुव्वत देती है और मनी को पैदा करती है, सुजाक और जिर्यान मनी को नफा देती है, पेशाब की सोजिस को नफा करती है। (जहरीला है)

१९५—भूआंवला

प्र० नाम-भू आंबला। सं०-भूम्यामलकी। रंग-हरा जर्दी मायल। स्वाद-कड़वा व कसैला। प०-एक घास बिलकुल आंमले की शकल के है। स्व०-सर्द १। हानि-सर्द मिजाज वालों को। द०-काली मिर्च। मात्रा-४ मा०।

गुण व कार्य—इसका रंग नासूर और बड़े २ जख्मों को भर लाता है, इसका लेप नमक के साथ खारिश को मुफीद है, और अलग चोटको बहुत फायदेमन्द है।

(जहरीली नहीं)

१९६—प्याज

प्र०-प्याज। सं०-पलांडु। फ़ा०-गंठी। अ०-बसल। रंग-सुर्ख व सफेद। स्वाद-फीका व तेज। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क ३ मये रतूबत फुजलियाके। हानि-गर्म मिजाजोंको प्यास व निसियान लाती है। द०-सिर्का व नमक व शहद। प्र०-कौंदर व करास शामी। मात्रा—१ तो० से २ तो० तक।

गुण व कार्य—सुद्दा व मसाम खोलती है और भूख बढ़ाती है व हाजिम है, बाह को कुव्वत देती है, खासकर चिकने गोश्त के साथ पकी हुई और बबाई हवा की खराबी को दूर करती है, तबियत को नर्म करती है, रियाह को तहलील करती है। आंख के मर्जों में मुफीद है, पेशाब व हैज को जारी करती है, इसको पकाकर लेप करना सर्द

वरमों को पकाता है, खट्टी डकार को दूर करती है और खराब पानी और हवा को मुफ़ीद है।

(जहरीली नहीं)

१९७—प्याज के बीज

प्र०-प्याज के बीज। सं०-पलांडु बीजम्। फ़ा०-तुख्म प्याज। अ०-बज़रुलबसल। रंग-स्याह। स्वाद-कुछ कड़वे। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-गर्म मिज़ाजों को। प्र०-तुख्म शलगम। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य—सर्द मिजाज वालों को वाह जियादा करते हैं, और सुद्दा खोलते हैं, भूख लाते हैं इसका लेप (बाल खोरा बाल उड़ाना) और स्याह दाग को मुफ़ीद है।

(जहरीला नहीं)

१९८—पियाबांसा

प्र०-पिया बांसा। सं०-सहचर। रंग-हरा स्वाद-कड़वा व तेज। प०-एक हिन्दी घास है। स्व०-सर्दतर।

गुण व कार्य—बुखार व दमे को दूर करता है, और शहद के साथ खाना नक्सीर और मुंहसे खून आने को बन्द करता है, पेशाब और हैज जारी करता है। बलगम को छांटता है और भूख लाता है, इसकी कुल्ली करना दांतों के दर्द को मुफ़ीद है, इसकी जड़ खांसी में काम आती है।

(जहरीला नहीं)

१९९—पिया रांगा (गुलाबांस)

प्र० नाम-पियारांगा। रंग-पीला सुर्खी मायल। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक जड़ अक्सर हिन्द के पूरब में होती है। स्व०-मये रतूबत फ़ज़ालिया के गर्म खुश्क ३। मात्रा-१ माशा।

गुण व कार्य—वरमों को तहलील करता है, और शिर के दर्द को नफ़ा करता है, अम्मुलसिबियां या रतोंधी व आंखों की सुर्खी व कान का दर्द व दांतों के दर्द और दमे को दूर करता है। इसको पीना सर्द बीमारियों को मुफ़ीद है। कुलंज और पेट के दर्द को नफ़ा करता है।

(जहरीली नहीं)

२००—पेठा

प्र० नाम-पेठा। सं० कूष्मांड। फ़ा०-कदुंरूमी। अ०-महदबा। रंग-बाहर हरा भीतर सफ़ेद। स्वाद-फीका। पहि०-एक तरह का कद्दू है। स्व०-सर्द २, तर १। हानि-सर्द मिजाजवालों को। दर्पघ्न-मिर्च व नमक व शकर। प्रति-लौकी।

गुण व कार्य—अच्छा खिल्त पैदा करता है, दिल व जिगर और मेदे की हरारत को तस्कीन देता है। गर्मी में खफ़कान को मुफ़ीद है, मनी जियादा पैदा करता है और फ़र्बे लाता है। सिल व दिक़ वाले को नफ़ा देता है इसका मुरब्बा दिल व दिमाग़ को कुव्वत देता है, ज्यादा फ़रहत करता है और हरारत को तस्कीन देता है।

(जहरीला नहीं)

२०१—पेठा के बज

प्र०-पेठा के बीज। सं०-कूष्मांड बीजम्। फ़ा०-तुख्म कदुवे रूमी। अ०-बज़रुल मुहदबा रंग-सफ़ेद। स्वाद-कुछ मीठे। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द २, तर १। हानि-सर्द मिज़ाज को। दर्पघ्न-बादियान। प्र०-तुख्म कदू। मात्रा-१तोला।

गुण व कार्य—हरकत में आये हुए खिल्तों को व सफरा व खून के जोश को व जिगर की हरारत को और प्यास को तस्कीन देता है।

पेशाब जारी करता है, खांसी और मशाने की बीमारियों को दफे करता है, सिल व तपेदिक को नाफे है, इसका तेल दिमाग़ की खुश्की और नींद न आने को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

२०२—पीपल

प्र० नाम-पीपल । सं०-अश्वत्थ । रंग-हरा । स्वाद-बकठा । पहि०-एक बहुत बड़ा पेड़ है, जिसको हिन्दू पूजते हैं। स्व०-पत्ते व छाल सर्द खुश्क व बाज़े गर्म खुश्क कहते हैं।

गुण व कार्य—इसकी छाल का लेप वरमों को तहलील करता है और नासूर को मुफीद है। इसके पत्ते भी मुहल्लिल हैं और जखम को भर लाते हैं और सड़ाते हैं। जो पत्ते सूख कर गिर जाते हैं, उसे गर्म पानीमें डाल कर पीना मितली और क़ै को मुफीद है, इसकी जड़ की छाल स्तम्भन करती है और मनी को गाढ़ा करती है, और कमर को कुव्वत बख़शती है।

(जहरीली नहीं)

२०३—पीलू

प्र० नाम-पीलू । सं०-पीलू । फ़ा०-दरख्तमसवाक । अ०-अराक । रंग-हरा व पीला । स्वाद-कुछ नुनखरा । प०-एक पेड़ है, जिसकी जड़ की दातौन बनाते हैं। स्व०-गर्म खुश्क । हानि-खराश मेदा को । दप०-कतीरा व अस्फगोल । प्र०-केवड़ा व सन्दल । मात्रा-३ माशे ।

गुण व कार्य—जिला करता है, वरमों को तहलील करता है, बलग़म छांटता है, मसाम खोलता है, बाह को कुव्वत देता है, दस्तों को बन्द करता है। रहम के वरम को तहलील करता है, बवासीर व खारिश और कोढ़ को नाफे है। इसकी छाल बलगम व सफरा को दस्तों की राह निकालती है व जलंधरको मुफीद है, इसकी लकड़ी की मसवाक (दातौन) दांतों को जिला करती है और मजबूत करती है, और मसूढ़ों को मज़बूत करती है।

(जहरीला नहीं)

२०४—प्यूसी (गिजरी)

प्र० नाम-प्यूसी । सं०-किलाट । फ़ा०-जवग व कल्ला । अ०-लीबा । रंग-सफेद । स्वाद-फीका। पहि०-जो दूध के जने हुए चौपाये से पहले पहल दुहते हैं। स्व०-सर्द तर १ । हानि-सुद्दा लाती है। दर्पघ्न-शहद व मिठास। प्रति०-पनीर।

गुण व कार्य—बदन को फ़रबे करता है, गर्म मिजाज वालों की बाह को हरकत देता है, क़ब्ज करता है व कुलंज पैदा करता है तथा खराब व ग़लीज़ खिलत पैदा करता है और दूधको जमा देता है।

(जहरीला नहीं)

२०५—पीतल

प्र० नाम-पीतल । सं०-पित्तल । फ़ा०-बरंज । रंग-पीली । स्वाद-फीका । पहि०-एक किस्म की खान की धातु है। स्वभाव-गर्म १, खुश्क २। हानि-पट्ठों को । प्रति०-तांबा ।

गुण व कार्य—रियाह व बलगम के फिसाद को दूर करता है, यरकां को नफ़ा करता है, वरम व तिहाल को मुफीद है। इसके बर्तन खाना पकाने व खाने के काम में लाये जाते हैं। ऐज़ाये दिमागी को मुफीद है और सीनेको मुज़िर (नुकसान) है।

(जहरीली है)

२०६—ताड़

प्र० नाम-ताड़ । सं०-ताल । फा०-ताल ।

अ०-तार। रंग-सुर्ख अंदर सफेद। स्वाद-कुछ मीठा व बदबूदार। पहि०-एक लंम्बा पेड़ है जिसके बीज मिस्ल नारियलके होतेहैं। स्व०-कच्चा सर्द तर १। पक्का सर्द खुश्क ताड़ी मुरक्कबुलक़वी। हानि-देर हज़्म व नफ़ाख़को। दर्पघ्न-कंद व अर्क वेद।

गुण व कार्य—कुव्वत देता है, सफरा व खून के फिसाद को दूर करता है। पेशाब जारी करता है, बदन को फ़रबै करता है और अर्वाह को कुव्वत बख्शता है। इसकी ताड़ी नशा लाती है और बदन को फ़रबै करती है और मुकव्वी है और फिसाद बलगमको दफै करती है। ताड़ी का सिर्का हाज़िम है व मेदे के दर्द और तिहाल को नफा करता है। (ताड़ी नशीली है)

२०७—ताल मखाना

प्र०-ताल मखाना। सं०-कोकिलाक्ष। रंग-भूरा। स्वाद-फीका। पहि०-एक पेड़ का बीज है, जो पानी के किनारे उगता है और मिस्ल तोदरी के होता है। स्व०-गर्म खुश्क १ मये रतूबत फुज़लिया के। हानि-गर्म मिजाज वालों को और नफ़ाख है। दर्पघ्न-सर्द चीजें। प्रति०-सालब मिश्री व मरोड़ फली। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—कुव्वत और फरहत बख्शता है और बदन को फरबै करता है। बाह लाता है, मनी बहुत पैदा करता और उसे गाढ़ा भी करता है और इमसाक करता है सौदा व खूनके फिसादको दूर करता है। जिर्यान मनी को खोता है, जलंधर को भी नफा करता है।

(जहरीला नहीं)

२०८—तांबा

प्र० नाम-तांबा। सं०-ताम्र। फा०-मिस। अ०-नहास। रंग-सुर्ख व भूरा। स्वाद-बहुत कसैला। पहि०-एक खान की किस्म की धातु है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्पघ्न कतीरा।

गुण व कार्य—फ़ालिज व लकवा और सर्दी की बीमारियों को मुफ़ीद है। सिर्क के साथ इसका लेप वरमों को तहलील करता है और खुजली को दूर करता है। सफरा व बलगम के फिसाद को दूर करता है, यरकां व कोढ़ को नफा देता है। खांसी व दमे को भी नाफै है, कै लाता है और फोड़े भर लाता है।

(जहरीली है)

२०९—तांबा जला हुआ

प्र०-तांबा जला हुआ। सं०-ताम्र भस्म। फ़ा०-मिस सोख्ता। अ०-रोस खतज। रंग-मटियाला। स्वाद-फीका। प०-तांबे की राख जो तांबे को जलाकर बनाते हैं। स्व०-गर्म व खुश्क। हानि-कुव्वतों को कवी करती है। द०-कतीरा व समगवी प्रति०-तोवाल मिस। मात्रा-१ माशा।

गुण व कार्य-खुश्की करती है और गोश्त गला देती है और जिला करती है व ज़ख्मोंको पाक करती है, और भर लाती है। और आंख के पर्दे को जिला देती है और बदगोश्तको काटती है, और जलंधर को मुफ़ीद है।

(जहरीला नहीं)

२१०—तारामुखी

प्र०-तारा मुखी। सं०-तारमाक्षिक। फ़ा०-मुक़शीशा व हजरुल नूर। रंग-सुर्ख व जर्द व भूरा। स्वाद-फीका। पहिचान-हरफुल जाति की

खानसे निकलताहै । जिस जातिके खानसे निकलता है उसीके अनुसार गुण रखता है, स्व-गर्म २खुश्क ३। हानि-गर्म मिजाज वालों को और इसकी जियादती क़ातिल है । द०-कतीरा व शहद । प्र०-अक़ली-मिया । मात्रा—४ रत्ती ।

गुण व कार्य—वरमों को तहलील करती है। और जिला करती है, काबिज है, गर्मी पैदा करती है अगर इसको बच्चेके गलेमें लटकायें तो सोते में डरनेसे बचता है, इसका सुर्मा जिला करता है और आंख को कुव्वत देता है, मवाद छांटता है, हरताल के साथ इसका मरहम बद गोश्त को छांटता है। जख्म के मवाद को पाक करता है, और जिला करता है, जख्म को भरता है,इसका कुश्ता सर्दी की बीमारी को मुफीद है । (क़रीब समकातिल)

२११—तिपत्ती

प्रसिद्ध नाम-तिपत्ती । सं०-त्रिपत्री । रंग-हरी स्वाद-खट्टी । पहिचान-एक किस्म की घास है, जो हिन्द में होती है । स्व०-सर्द तर । हानि-फेफड़े को । द०-गोश्त व गर्म मसाला । प्र०-तुरख़ खुर्फ़ा।

गुण व कार्य—गर्मी को दफै करती है। दिमाग पर अबखरे नहीं चढ़ने देती है, जिला करती है, मेदे व जिगर को कुव्वत देती है । लोहार इसके अर्क और कसीस के साथ फौलाद में जौहर उठाते हैं व इसका साग गोश्तके साथ बहुत लज़ीज़ और मुकव्वी होता है ।

(विशेष जहरीला नहीं)

२१२—तंतरीक व तमासीर

प्र०-तंतरीक व तमासीर । सं०-तंतरीक । अ०-समाक़ । रङ्ग-कुछ सुर्ख व भूरी । स्वाद-खट्टी । प०-एक किस्म के पेड़ का फल है, मसूर के दाने कासा होता है । स्व०-सर्द व खुश्क २, बाजे खुश्क ३ कहते हैं । हानि-मेदे और सर्द जिगरको । द०-मस्तगी व अनीसून । प्र०-ज़िरिश्क व जरिश्क व अक़ाकिया । मात्रा-५ मांशा से १ तो० तक ।

गुण व कार्य—मेदे को दिबावत करता है। यानी उसके दांत खुरखुरे कर देता है और काबिज है, कै व मितली व सफ़रावी दस्तों को बन्द करता है । और आंतों की खराश को नफा करता है, मुंह से खून आने व खून बहने को नफा करता है, बहुत पेशाब आने को रोकता है, पेट के पेजा को कुव्वत देता है । और दर्ब यानी उन दस्तों को जो मेदे में खाना जाते ही निकल जाता है, दफै करता है ।

(जहरीला नहीं)

२१३—तितली

प्र०-तितली । सं०-तितिलिकम् । अ०-सुद्दाब । रंग-पत्ते हरे फूल जर्द । स्वाद-कड़वे व बदबूदार । प०-एक किस्म की घास जो गेहूँ के खेत में होती है और खेतको खराब करती है । स्व०-पत्ते गर्मव खुश्क ३। हानि-बाहको व बीनाई को और शिर दर्द लाती है । द०-अनीसून व सिकंजबीन । प्र०-शातर व पौदीना । मात्रा—१०॥ माशे ।

गुण व कार्य—लताफत करती है, रियाह और अफारे को तहलील करती है, दिमाग को कुव्वत देती है, दिमागी मर्जों व सीने के मर्जों व तिहाल व यरकां और रियाही कुलंज को नफा देती है, गुर्दे व मसाने की पथरी तोड़ती है, पेशाब व हैज जारी करती है, पानी में पीसकर इसका लेप खुश्की व तर खुजली को नफा करती है ।

(जहरीली नहीं है)

२१४—तितली के बीज

प्र०-तितली के बीज । सं०-तितिलक बीजम् । अ०-बज़रुल सुद्दाब । रंग-स्याह । स्वाद-कुछ खट्टे । प०-तितली घास के बीज हैं, जो तीन बीज एकमें मिले रहते हैं । स्व०-गर्म व खुश्क २ । हानि-शिर में दर्द पैदा करते और मनी को कम करते हैं द०-कतीरा व शहद । प्र०-वर्ग सुद्दाब । मात्रा—७ माशे ।

गुण व कार्य—शहदके साथ इसका पीना काबूस में सोते में आंय-बांय बकने)को व मिर्गी व जलंधर व रियाही हिचकीको नफा करते हैं,मेदेकी सर्दी और रीही कुलञ्ज को मुफीद है, और बीनाई को कुव्वत देते हैं । (जहरीली नहीं)

२१५—तितली जङ्गली

प्र० नाम-जंगलीतितली । अ०-सुद्दाब हरी । रंग-खूब हरी । स्वाद-कड़वी । पहि०-यह भी एक घास बिलकुल तितली सी है । स्व०-गर्म खुश्क ४ । हानि-क़ै करना । दर्पघ्न-ज़हर ।

गुण व कार्य—सिर्फ इसका मकानों में रखना जमीन के जहरीले कीड़े मकोड़ों से बचाता है । इसका अर्क लोहे के औजारों पर लगाया जावे तो जंग नहीं लगता है । इसके पेड़ की छाल को शराब के साथ पीस कर लेप करना गंज को फायदा करता है ।

(जहरीला नहीं)

२१६—तज

प्र०-तज । सं०-त्वक् । फ़ा०-तज । अ०-क़ुरफा व सलीखा । रंग-कुछ सुर्ख व गुब्बारदार । स्वाद-कुछ मीठी व तेज । पहि०-एक पेड़ की छाल है, बाज बाज दारचीनी को छाल कहते हैं । स्व०-गर्म व खुश्क । हानि-गुर्दे व आंतों को । दर्पघ्न-कतीरा व सपिस्तां । प्रति०-दारचीनी । मात्रा-७ माशे ।

गुण व कार्य—लताफत करता है, गर्मी पैदा करता है । बाह को पुख्ता करता है, सर्दी के रियाह और वरमों को तहलील करता है, ऐजाये रईसा यानी दिल व दिमाग़ व जिगर व अनसीन (फोतों को) कुव्वत देता है, खराब खिलत को छांटता है, पेशाब लाता है, बीनाई को जिला देता है, नजला व जुकाम को दूर करता है । धांस व खांसी को मुफीद है, सिर्के के साथ इसका लेप वरम को तहलील करता है और बलगम को मुंह से छांटता है ।

(जहरीली नहीं)

२१७—तुख्म बिलसां

प्र० नाम-तुख्म बिलसां । फ़ा०-तुख्म बिलसां अ०-हब्बे बिलसां । रंग-स्याह । स्वाद-कड़वा । पहि०-स्याह मिर्च की शकल के बिलसां के बीज हैं । स्व०-गर्म व खुश्क । हानि-मसाने को । दर्प०-कतीरा । प्रति०-ऊद बिलसां व बिलसां के बीज । मात्रा-७ माशे ।

गुण व कार्य—मेदे व हाज़िमे का ताकत को क़वी करता है, मेदे व आंतों की सर्दी व तरी को दूर करता है और खुश्क भी करता है रियाह और अफारे को तहलील करता है । जिगर का सुद्दा खोलता है, कानों के भिनभिनाने व जलंधर व अर्कुलनिसा और अक्सर दिमागी व सौदावी और बलगमी बीमारियों को मुफ़ीद है ।

(जहरीली नहीं)

२१८—तरबूज़

प्र० नाम-तरबूज़ । सं०-कलिन्द । फ़ा०-हिन्दवाना । अ०-बतीख़ हिन्दी । रंग-हरा स्याही मायल, बीज सुर्ख़ व स्याह । स्वाद-एक फल मशहूर व मीठा है । पहि०-एक प्रसिद्ध फल है । स्व०-सर्द तर २ । हानि-मेदे व तिहाल और सर को । दर्पघ्न-शहद व कन्द ।

गुण व कार्य—गर्मी व तेजी सफरा व खून और प्यास को तस्कीन देता है । पेशाब जारी करता है, पतला खून पैदा करता है, बलगम पैदा करता है । गर्मी के बुखार को नफ़ा करता है, सिकञ्जबीन के साथ यरकां को नफ़ा देता है, इसका पानी गर्म मिजाज वालों को फ़रहत देता है, निफ़ाख़ और देर हज़म है, जिस रोज़ तर्बूज खाया जावे उस रोज चावल न खाना चाहिये ।

(जहरीला नहीं)

२१९—तरबूज़ के बीज

प्र० नाम-तर्बूज के बीज । सं०-कलिन्द बीजम् । फ़ा०-तुख्म हिन्दवाना । अ०-बज़रुल बतीख़ हिन्दी । रंग-सुर्ख़ व स्याह । स्वाद-फीका व कुछ मीठा । पहि०-प्रसिद्ध है । स्व०-सर्दतर २ । हानि-सर्द मिजाज वालों को । दर्पघ्न-शहद । प्रति०-तुख्म कदू । मात्रा-६माशा से १तोला तक ।

गुण व कार्य—उखड़े हुए मवाद को मिलाता है, बदन को फरबे करता है, सीने की खुरखुराहट और गर्मी की खांसी और प्यास को दफै करता है, गर्मी के बुखारों और पेशाब व सोजिश को मुफीद है, गुर्दे व मसाने की पथरी निकालता है ।

(जहरीला नहीं)

२२०—तमुर्राह (हालों)

प्र०-तुर्मुराह । सं०-चन्दसुर । फा०-तुरह तेज़क । अ०-जरजीर । रंग-कई किस्मका होता है, बाज़ोंके फूल सुर्ख़, बाजेके पीले फूल । स्वाद-तेज़ । प०-एक पेड़ है कि जिसके पत्ते मूलाके पत्तोंके बराबर होते हैं, व कई तरहके होते हैं । स्वभाव-गर्म ३, खुश्क २ । हानि-शिर दर्द पैदा करता है और नाबीनाई लाता है । दर्पघ्न-कासनी व खुरफा । प्र०-तोदरी । मात्रा-४॥ माशे ।

गुण व कार्य—जिगर का सुद्दा और तिहाल का सुद्दा खोलता है, मनी व दूध पैदा करता है । हाज़िम है, बाह को हरकत देता है, जिला करता है, पेशाब लाता है और रियाह को तहलील करता है ।

(जहरीला नहीं)

२२१—तुमुर्राह के बीज

प्र० नाम-तुर्मुराहके बीज । फ़ा०-तुरह तेज़क अ०-बजरुल जर्जीर । रंग-सफेदी मायल सुर्ख़ । स्वाद-कड़वा । पहि०-एक तरह के बीज हैं जो अलग अलग हब्बुल रसाद के बराबर होते हैं । स्व०-गर्म खुश्क १ । हानि-कोढ़ पैदा करता है । दर्पघ्न-कतीरा और दूध । प्रति०-प्याज के बीज व तोदरी । मात्रा-५ माशे ।

गुण व कार्य—बाह ज्यादा करता है, और बाह को हरकत भी देते हैं, जिस्म को फरबे करते हैं । बलगम को कै के रास्ते से निकालते हैं, पेशाब और दूध को जारी करते हैं, रियाह को तहलील करते हैं । इनका लेप मुंह के मैल व स्याही और दाद को नफ़ा देता है ।

(जहरीला नहीं)

२२२—तुरंजबीन

प्र० नाम—तुरंजबीन। अ०—तुरंजबीन। रंग—सफेद जर्दी मायल। स्वाद—मीठा। पहि०—एक पेड़ मिस्ल जवासा वगैरा की ओस है, जो उसके ऊपर जम कर मीठी हो जाती है। स्व०—गर्म तर १। हानि—तिहाल और गर्म मिजाज वालों को। दर्पध्न—उन्नाब व तमर हिन्दी। प्र०—शीर खिश्त व सुर्ख शकर। मात्रा—३ तोले से ५ तोले तक।

गुण व कार्य—तबिअत और खांसी को नर्म करती और नफा देती है, सफरावी माद्दे को नर्मी के साथ दस्तों की राह निकालती है। खिलतों को हरकत में लाती है, सीने के दर्द, मितली और गर्मी के बुखारों को मुफीद है और जिला करती है, और तीनों खिलतों को निकालती है। (ज़हरीली नहीं)

२२३—तगर व सुगंध वाला

प्र० नाम—तगर व सुगंधवाला। सं०—वालकम्। अ०—असारून। रंग—पीलापन। स्वाद—कड़वा व तेज बू। पहि०—एक क़िस्म की प्रसिद्ध जड़ी है। स्व०—गर्म व खुश्क २। हानि—फेफड़े को। दर्पध्न—मवीज़ मुनक्का। प्रति०—खोलंजान व सोंठ। मात्रा—५ माशा।

गुण व कार्य—लताफत करता है और गर्मी बढ़ाता है। वरमों और रियाह को तहलील करता है, दिमाग व मेदे व जिगर व पट्ठों व तिहाल और गुर्दों को कुव्वत देता है। सफराबी व बलगमी माद्दे को दस्तों की राह निकालता है। पुराने बुखारों को दूर करता है और पेशाब व हैज़ को जारी करता है।

(जहरीली नहीं)

२२४—तुलसी व नाज़बू

प्र० नाम—तुलसी व नाजबू। सं०—तुलसी। फा०—शाह सफरम व रेहां। अ०—शाह शफरम। रंग—हरी जर्दी मायल। स्वाद—तेज व तेज बू। पहि०—एक पेड़ है, जो एक गज का और खुशबूदार और खूबसूरत होता है। स्वभाव—गर्म १ खुश्क २। हानि—दिमाग को। दर्पध्न—धनियां व गुलाब। प्र०—बादरंज बोया। मात्रा—४ तोला।

गुण व कार्य—दिमाग का सुद्दा खोलती है। वरमों को तहलील करती है, रियाह को दूर करती है। खफकान व जोफ मेदे को दफै करती है, खराब खून के फिसाद को दूर करती है, इसका घर में रखना जमीन के जहरीले मच्छरों व कीड़ों का नाश कर खटमल व जूं को दूर करती है, और बबाई हवा से बचाती है।

(जहरीली नहीं)

२२५—तुलसी के बीज

प्र०—तुलसी के बीज। सं०—तुलसी बीजम्। फा०—तुख्म रेहां। अ०—बजारुलरेहाँ। रंग—काला। स्वाद—फीका व लुआबदार। प०—प्रसिद्ध है। स्व०—गर्म खुश्क १। हानि—दिमाग को। द०—गुलाब व मरजंजोश। प्र०—कनोचा। मात्रा—५ माशे।

गुण व कार्य—शकर के साथ पेचिश को बहुत लाभ देती है और सूखी धांस व खांसी और सीने के खुरखुराने को बहुत लाभ देती है, मनी को गाढ़ा करती है।

(जहरीला नहीं)

२२६—तुलसी जंगली

प्र० नाम—तुलसी जंगली। सं०—बन तुलसी व बर्बरी। फा०—रेहांदश्ती। अ०—रेहाँ उलबरी। रंग—

हरी। स्वाद-तेज व कड़वी और तेज बू। पहि०-खस-खस की तरह तुलसी के बराबर घास है। स्वभाव-गर्म खुश्क २। हानि-फेफड़े व दिमाग को मात्रा-६ माशा।

गुण व कार्य—वरमों को खासकर बलगमी वरमों को तहलील करती है, अक्सर सर्दी के मर्जों को फायदामन्द है। इसमें यह एक खास गुण है कि इसका रस कान में डालने से दांत के कीड़े मर कर निकल पड़ते हैं।

(जहरीली

२२७—तिल

प्र०-तिल। सं०-तिल। फा०-कुंदज
समसम। रंग-काला व सफेद। स्वाद-
चिकना। पहिचान-एक प्रकार का अना
है। स्वभाव-गर्म तर १। हानि-देर ह
शिर दर्द लाता है। दर्पघ्न-तिल भुना
शहद। प्रतिनिधि-बजर कतां। मात्रा—
और ६ मा० व १ तोला।

गुण व कार्य—मेदे में पचने वाली
और थोड़ी गिजा है, सुद्दा खोलता है ब
के खुद सुद्दा पैदा करता है, बदन को फ
है, आवाज और हलक को खुरखुराने
करता है, बाह को कुव्वत देता है, वरम
लील करता है, दूध और मनी जियादा
है, और हैज जारी करता है, जिल्द को
है, स्याही के निशान मिटाता है,
आंख के नाखूने के लिये फायदेमन्द है।

(जह

२२८—तमाखू

प्रसिद्ध नाम-तमाखू। सं०-तमालपत्र। फा०-तम्बाकू। अ०-ततन व तम्बाकू। रंग-हरा व सुर्ख स्वाद-तेज व तेज बू। पहिचान-एक पेड़ के पत्ते मशहूर है। स्वभाव-गर्म खुश्क ३। हानि-गर्म मिजाज और दिल व दिमाग को। दर्पघ्न-ताजा दूध।

गुण व कार्य—खुश्की और प्यास लाता है। दिमाग की रतूबतों को पाक करता है। बलगमी धांस व तर और खांसी व दमे और दिमागी
मर्जों
रियाह
ता है,
) को
है)

स्वाद-
नीम से
। स्व०

ह लाता
री है।
नहीं है)

। अ०-
स्वाद-
टिकिया
उलकवी।
-जदवार।

गुण व
क्ता और
तहलील करती है, काबिज़ है, शिरदर्द को नफ़ा

२२२—तुरंजबीन

प्र० नाम—तुरंजबीन। अ०—तुरंजबीन। रंग—सफ़ेद ज़र्दी मायल। स्वाद—मीठा। पहि०—एक पेड़ मिस्ल जवासा वगैरा की ओस है, जो उसके ऊपर जम कर मीठी हो जाती है। स्व०—गर्म तर १।

हानि—
दर्पघ
मुर्ख

करती
नर्मी
खिला
मितल
जिला
लती

प्र
अं०—
तेज बू
स्व०—
मवीज़
५ माश

गुण
बढ़ाता
है, दिमा
और गुर्द

गर्मी माद्दे का दस्तों की राह निकालता है। पुराने बुखारों को दूर करता है और पेशाब व हैज़ को जारी करता है।

(ज़हरीली नहीं)

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

२२४—तुलसी व नाजबू

प्र० नाम—तुलसी व नाजबू। सं०—तुलसी। फा०—शाह सपरम व रेहां। अ०—शाह शफ़रम। रंग—हरी जर्दी मायल। स्वाद—तेज व तेज बू। पहि०—एक पेड़ है, जो एक गज का और खुशबूदार खूबसूरत होता है। स्वभाव—गर्म १ खुश्क २। —दिमाग को। दर्पघ्न—धनियाँ व गुलाब। —दरंज बोया। मात्रा—४ तोला।

—ण व कार्य—दिमाग़ का सुद्दा खोलती है। —को तहलील करती है, रियाह को दूर करती —फकान व ज़ोफ मेदे को दफै करती है, —खून के फिसाद को दूर करती है, इसका —खना जमीन के जहरीले मच्छरों व कीड़ों —कर खटमल व जूं को दूर करती है, —बाई हवा से बचाती है।

(जहरीली नहीं)

२२५—तुलसी के बीज

—तुलसी के बीज। सं०—तुलर्सी बीजम्। —म रेहां। अ०—बजरुलरेहाँ। रंग—काला। —का व लुआबदार। प०—प्रसिद्ध है। स्व०— —क १। हानि—दिमाग को। द०—गुलाब व —। प्र०—कनोचा। मात्रा—५ माशे।

—व कार्य—शकर के साथ पेचिश को —देती है और सूखी घास व खांसी और —खुखराने को बहुत लाभ देती है, मनी को —है।

(जहरीला नहीं)

२२६—तुलसी जंगली

प्र० नाम—तुलसी जंगली। सं०—बन तुलसी व बर्बरी। फा०—रेहांदश्ती। अ०—रेहाँ उलबरी। रंग—

हरी। स्वाद-तेज व कड़वी और तेज बू। पहि०-खस-खस की तरह तुलसी के बराबर घास है। स्वभाव-गर्म खुश्क २। हानि-फेफड़े व दिमाग को मात्रा-६ माशा।

गुण व कार्य—वरमों को खासकर बलगमी वरमों को तहलील करती है, अक्सर सर्दी के मर्जों को फायदामन्द है। इसमें यह एक खास गुण है कि इसका रस कान में डालने से दांत के कीड़े मर कर निकल पड़ते हैं।

(जहरीली नहीं)

२२७—तिल

प्र०-तिल। सं०-तिल। फा०-कुंदज। अ०-समसम। रंग-कला व सफेद। स्वाद-फीका व चिकना। पहिचान-एक प्रकार का अनाज प्रसिद्ध है। स्वभाव-गर्म तर १। हानि-देर हजम और शिर दर्द लाता है। दर्पघ्न-तिल भुना हुआ या शहद। प्रतिनिधि-बजार कतां। मात्रा—५ माशा और ६ मा० व १ तोला।

गुण व कार्य—मेदे में पचने वाली अच्छी और थोड़ी गिज़ा है, सुद्दा खोलता है बसबब लस के खुद सुद्दा पैदा करता है, बदन को फरबै करता है, आवाज और हलक को खुरखुराने को नर्म करता है, बाह को कुव्वत देता है, वरमों को तहलील करता है, दूध और मनी जियादा पैदा करता है, और हैज जारी करता है, जिल्द को नर्म करता है, स्याही के निशान मिटाता है, इसके फूल आंख के नाखूने के लिये फ़ायदेमन्द है।

(जहरीला नहीं)

२२८—तमाखू

प्रसिद्ध नाम-तमाखू। सं०-तमालपत्र। फा०-तम्बाकू। अ०-ततन व तम्बाकू। रंग-हरा व सुर्ख स्वाद-तेज व तेज बू। पहिचान-एक पेड़ के पत्ते मशहूर है। स्वभाव-गर्म खुश्क ३। हानि-गर्म मिजाज और दिल व दिमाग को। दर्पघ्न-ताजा दूध।

गुण व कार्य—खुश्की और प्यास लाता है। दिमाग की रतूबतों को पाक करता है। बलगमी धाँस व तर और खासी व दमे और दिमागी नज़लों को दूर करता है। इसका धुआं बवाई मर्जों को दूर करता है, इसका खाना और पीना रियाह और बलगम को तहलील करता है व छांटता है, इसका हरा पत्ता उनसीन (फोतों के वरम) को तहलील करता है। (जहरीली नहीं है)

२२९—तुन

प्र०-तून। सं०-तुन। रंग-पीला। स्वाद-कड़वा। प०-एक पेड़ है, जिसके फूल नीम से मिलते जुलते हैं और रंगने में काम आते हैं। स्व० सर्द १।

गुण व कार्य—बहुत क़ाबिज़ है, बाह लाता है, फोड़े फुन्सी और चर्म रोग को लाभकारी है।

(जहरीला नहीं है)

२३०—शाह चीनी

फा०-तनज़ूबी खताई व शाहचीनी। अ०-शाहचीनी। रंग-संदली मायल जर्दी। स्वाद-कड़वा। प०-चीना हिना के पत्तों की टिकिया सिर्के में बनी हुई होती है। स्व०-मुरक्कब उलकवी। हानि-फेफड़े को। दर्पघ्न-कतीरा। प्रति०-जदवार। मात्रा—३॥ मा०।

गुण व कार्य—वरम के माद्दे को पोख्ता और तहलील करती है, काबिज़ है, शिरदर्द को नफ़ा

देती है, खून बहने को बन्द करती है, इसकी बारीक चुरी (बुकनी) आंख जखम व लिंग को फायदेमन्द है। (जहरीली नहीं)

२३१—तूतिया

प्र०-तूतिया। सं०-तुत्थम्। फ़ा०-दूदिया। अ०-तूतिया। रंग-जंगाजी स्वाद-तेज खारा। प०-एक पत्थर की किस्म व खान का भी और बनावटीभी है। स्व०-गर्म व खुश्क ४। हानि-के लाता है, अगर हजम हो जावे तो क़ातिल है। द०-शहद व भूनना। प्रति०-नीलाथोथा व शादंज मात्रा-२ माशा।

गुण व कार्य—मांस को काटता और खा जाता है, और बहुत खुश्की करता है, जख्मों को जला देता है और मवाद से पाक करता है, आंखों का जाला काटने में अजीब असर रखता है और हल किया हुआ मसाने के जखम को दूर करता है। (जहरीला है)

२३२—तूत मीठा

प्र०-तूत मीठा। सं०-तूनम्। फ़ा०-तूत शीरीं। अ०-तूत हलू व तूतनब्ती। रंग-सफेद व स्याह। स्वाद-मीठा। प०-एक प्रसिद्ध फल जो उंगली से छोटा लम्बा होता है। स्व०-गर्म व तर। हानि-मेदे को और शिर दर्द लाता है। द०-सिकंजबीन।

गुण व कार्य—अच्छा खून पैदा करता और सुद्दा खोलता है, जिगर और तिहाल को इसहाल करता है, जिस्म को फर्बे करता है, बाह लाता है, गुर्दे की चर्बी को कुव्वत देता है, जीभ और हलक पर मवाद नहीं गिरने देता, इसका शर्बत गले के दर्द को नफ़ा करता है इसके पत्तोंका जोशांदा गलेके दर्द और खुनाक को फायदेमन्द है, इसकी कुल्ली दांतों व मसूड़ों के दर्द को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

२३३—तूत खट्टा

प्र० नाम-तूत खट्टा। सं०-अम्ल तूतम्। फ़ा०-तूत तुर्श शामी। अ०-तूत हामिज़। रंग-सफेद व स्याह। स्वाद-खट्टा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द २ खुश्क १। हानि-सीना। दर्प०-शहद। प्रति०-आलूबुखारा।

गुण व कार्य—तपों को मारता है, प्यास को तस्कीन देता है। खून के जोश को भी तस्कीन देता है, दिमाग पर अबखरे नहीं चढ़ने देता, इसका शर्बत नजले को बहुत मुफीद है। (जहरीला नहीं)

२३४—तोदरी सफेद

प्र० नाम-तोदरी सफेद। फ़ा०-तोदरी सफेद। अ०-बज़रुल हमाहम अबैज़। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ कड़वी। पहि०-मसूर से छोटे और अस्पगोल से चौड़े एक किस्म के बीज हैं। स्व०-गर्म तर १। हानि-पेट के हिस्सों को। दर्प०-ज़रिश्क। प्रति०-बहमन सुर्ख। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—जिस्म को फर्बे करती और वरमों को तहलील करती है। मनी को गाढ़ा करती है, बाह जियादा करके भूख बढ़ाती है। इसकी चटनी शहद के साथ लसदार खिलत को छांटती है। (जहरीली नहीं)

२३५—तोदरी सुर्ख

प्र०-तोदरी सुर्ख। फ़ा०-तोदरी सुर्ख। अ०-बज़रुल हमहम अहमर। रंग-सुर्ख। स्वाद-कड़वी पहि०-यहभी सफेद तोदरी की तरह की है। स्व०-

गर्म तर। हानि-पेट के हिस्सों को। दर्प०-ज़रिश्क। प्र०-बहमन सफेद। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—भूख जियादा करती है, बाह लाती है, कुव्वत बाह को बहुत हरकत देती है। बदन को फरबै करती है, सुद्दा खोलती है। आवाज को जिला देती और साफ करती है और वरमों को तहलील करती है।

(ज़हरीली नहीं है)

३६—तोरई

प्र०-तोरई। सं०-कोशातकी। रंग-हरी। स्वाद-फीकी व कड़वी। पहि०-एक फल खीरे के बराबर लम्बी और तीन तरह की होती है, कड़वी, आरह और घीया। स्व०सद तर २ रतूबत और लस-दार। हानि-नफ़ाक है (अफारा करती है)। दर्प०-गोश्त और सोंठ। प्रति०-चचींडा।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करती है, और मिजाज को गर्मी को दूर करती है, कच्चे बलग़म को पकाती है, बदन के पीलेपन को दूर करती है, जलंधर और तिहाल के वरम को मुफ़ीद है, और अजों को कुव्वत देती है, इसका फल सर्द खुश्क है, तीनों खिलतों व सौदा और बलगम के फिसाद को खोती है।

(जहरीली नहीं)

३७—तूम्बडी व तूम्बा

प्र०-तूम्बड़ी व तूम्बा। सं०-कटु तूंबी। फ़ा०-कदुये तलख़। अ०-किरह अलमर। रंग-हरा व पीला। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक बड़ा फल कदू के (लौकी) की किस्म का है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-मेद को। दर्पघ्न-कै करना और रोगन पीना।

गुण व कार्य—इसको खाकर कै करना दमे और पुरानी खांसी को फायदेमन्द है। इसका सूंघना यरकां को नफा करता है, इसका मंजन दांतों को मज़बूत करता है और दर्द को खोलता है, इसकी जड़ का लेप वरमों को तहलील करता है।

(कुछ जहरीली है)

३८—थूहड़

प्र०-थूहड़। सं०-स्नुही। अ०-ज़क़ूम जहाजी रंग-हरा। स्वाद-बहुत कड़वा। पहि०-एक दूध वाला पेड़ है। स्व०-गर्म ३ खुश्क २। हानि-क़ातिल है गर्म मिज़ाज वालों को। दर्प०-ताजा दूध। प्रति०-नफ़त। मात्रा-४ रत्ती।

गुण व कार्य—रियाह को तहलील करता है, तीनों खिलतों सौदा, सफरा और बलगम को छांटता है और जिला करता है और क़वी दस्ता-वर है। इसका लेप चेचक के निशान मिटाता है, इसका दूध बाह लाता है और फ़रहत देता है।

(जहरीला है)

३९—फिटकरी

प्र० नाम-फिटकरी। सं०-स्फटिक। फा०-सफ़ाल। अ०-खज़फ। रंग-सुर्ख और सफेद। स्वाद-फीका। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्दखुश्क। हानि-काबिज है और पट्ठों को। दर्प०-रोगन बनफशा। प्र०-काफ़ूर। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—इसका जमाद (लेप) वरमों को तहलील करता और इसका मंजन दांतों को साफ करता है, मसूढ़ों को ताक़त देता है, मसूढ़ों के खून को बन्द करता है, अगर कोरी फिटकरी खून निकलने की जगह चिपका दी जावे तो खून बन्द होजाता है।

(जहरीली नहीं)

२४०—तेज़पात

प्र०-तेज़पात । सं०-पत्रज । अ०-साज़ज हिन्दी । रंग-हरा व खुश्क भूरा । स्वाद-तेज़ व तेज बू । पहि०-एक पत्ती चौड़ी व खुशबूदार बाजे लौंग के पत्ते को कहते हैं । स्व०-गर्म ३ खुश्क २। हानि-फेफड़े व मसाने को । दर्पध्न-मस्तगी । प्रति०-सम्बुल हिन्दी व सलीखा । मात्रा—४॥ माशे ।

गुण व कार्य—रूह की हिफ़ाजत (रक्षा) करता है और अखलात (खिलतों) की भी हिफ़ाजत करता है, फ़रहत देता है और फरबही करता है, रियाह को तहलील करता है । मेदे को इसलहा (सही) करता है, पेट के ऐजा ये सीकमी (हिस्सा) को कुव्वत देता है, हवास को भी क़वी करता है, पेशाब खुलकर लाता है, गुर्दे व मसाने की पथरी को तोड़कर बहाता है, वसवास (वहम) व जनून को नफा करता है, थूक बहने को मुफीद है, इसकी धूनी बच्चा जल्द पैदा करती है ।

(जहरीला नहीं)

२४१—टेसू (ढाक के फूल)

प्र०-टेसू । सं०-पलासपुष्प । फा०-गुल पला । रंग-पीला, स्याह व सुर्ख । स्वाद-फीका व कुछ कड़वा । पहि०-ढाक के पेड़ का फूल है । स्व०-सर्द व खुश्क २ । हानि-क़ाबिज़ है । दर्पध्न-खाकसी व नमकशोर । प्रति-गुल बाबूना व नाखूना । मात्रा-१ तोला ।

गुण व कार्य—बलगम व खून और शफरा के फिसाद को दूर करता है, पेशाब जारी करता है, इसके सफेद फूल मुक़व्वी बाह है, इसकी धार व भपारा, दर्द, मसाना व वरम, फोता को नफा करता है । बन्द पेशाब को खोलता है, इसका ख़िशादा (नीर), सोज़ाक व जिर्यान को नफा देता है । इसका रँगा हुआ कपड़ा ओढ़ना यरकां को दूर करता है । (जहरीला नहीं)

२४२—कुड़े की छाल

प्र० नाम-कुड़े की छाल । सं०-कुटजत्वक् । फ़ा०-तीवाज । रंग-पीली । स्वाद-कड़वी । पहि०-इन्दर जौ के पेड़ की छाल है, जो चुनार की छाल की तरह की है ।

गुण व कार्य—शिर दर्द और दांतों के दर्द को नफा देती है । सीने की रतूबत और मरतूब नजले को दूर करती है । नकसीर बन्द करती है इसकी धूनी खून को बन्द कर देती है ।

(जहरीली नहीं)

बाबुलसायउल मसलसता (स)

इसमें १ दवा है ।

२४३—सालबमिश्री

प्र० नाम-सालब मिश्री । फा०-खाया रूबाह । अ०-ख़ुशियाउल सालब । रंग-सफेद । स्वाद-फीका । पहि०-एक किस्म की लसदार होती है, उसकी बू मनी की सी होती है । स्व०-गर्म तर १ । हानि-मेदे के मुंह को । दर्प०-शकर व आमला । प्र०-तुख्म गाजर व शक़ाकुल । मात्रा-६ माशे ।

गुण व कार्य—बाह ज़ियादा करती है और मनी पैदा करती है, बाह को हरकत बहुत देती है, पट्ठों को ताक़त देती है, फ़ालिज व लकवा व कज़ाज़ (गर्दन न मुड़ना) और अक्सर दिमागी बीमारियों को दूर करती है । बाल पैदा करती और उनको गिरनेसे रोकती है । (जहरीली नहीं)

बाब उलज़ीम उलज़ी । इसमें २५ दवाइयां हैं ।

२४४---जारुल नहर

प्र०-जारुल नहर । अ०-जारुल नहर । रंग-हरी । स्वाद-कुछ कड़वी । पहि०-एक घास नीलोफर की तरह की जो पानी में होती है, उसमें फूल फल नहीं होता । स्व०-सर्द व खुश्क २ । हानि-पट्ठोंको । दर्प०-शकर । प्र०-नतवाद । मात्रा२माशे ।

गुण व कार्य—खून बहने को और खूनी दस्तों को बन्द कर देती है । प्यास को तस्कीन देती है, वरमों को तहलील करती है, खुजली और फोड़ों को इसका लेप नफा करता है, जख्म को भर लाती है, फैलने नहीं देती है ।

(जहरीली नहीं)

२४५---जामुन

प्र० नाम-जामुन । सं०-जम्बू । रंग-ऊदा व स्याह । स्वाद-कसैला व कुछ मीठा । पहि०-एक बहुत बड़ा पेड़ का फल है जो काले अंगूर से बड़ा और हिन्द में होता है । स्व०-सर्द २ खुश्क ३, रतूबत फजलिया के साथ । हानि-देर हजम व नफख़ है । दर्प०-नमक ।

गुण व कार्य—सफरावी दस्तों को तस्कीन देती है और बन्द करती है, गर्म मिजाज़ वालों के मेदे और जिगर को कुव्वत देती है, खून के जोश और सफरा को दूर करती है । बाह और भूख को बढ़ाती है, इसके अर्क का सिर्का वरम तिहाल को तहलील करता है और हाजिम है । इसकी गिरी की फंकी मनी को गाढ़ा करती व कुव्वत देता है ।

(जहरीला नहीं)

२४६—जामफल

प्र० नाम-जामफल सफरी अम्बा । रंग-सफेद व सुर्ख । स्वाद-कच्चा कसैला, पका मीठा । पहि०-एक फल सेब व अमरूद की तरह का मुल्क हिन्द में होता है । स्व०-गर्म तर १ । हानि-सर्द व बलग़मी मिजाज वालों को ।

गुण व कार्य—फ़रहत देता है, दिल को कुव्वत देता है, तबियत को नर्म करता है, पेशाब जारी करता है, दस्तों को बन्द करता है, इसका कच्चाफल काबिज है, इसके पेड़ की छाल का खिसान्दा (घोटकर पानी) पीना दस्त बन्द करने में अजीब असर करता है । (जहरीली नहीं)

२४७—जामघास

प्र०-जामघास । रंग-हरी । स्वाद-कड़वी व तेज व कुछ खारी । पहि०-एक घास है जो बंगाल में होती है और बरसात के तराई में होती है । इसकी जड़ सफेद छोटी प्यांज की सी होती है । स्व०-गर्म व खुश्क ।

गुण व कार्य—इसकी डली व पत्तों का इस्तैमाल जलंधर को लाभकारी है । काली मिर्च मिला कर इसकी जड़ को चने के बराबर गोलियां बना कर केले के अन्दर रख कर खायें और ऊपर से २ ग्रास चावल के खावें तो कैसी ही कै आती हो बन्द हो जाती है । इसकी पावभर जड़ बारीक पीस पावभर घी और नीबू का रस मिलावें तो घाव के वास्ते उम्दा मरहम है, एक हफ्ता में घाव भर लाता है ।

(जहरीला नहीं)

२४८—जाहीजुही

प्र०-जाहीजुही। सं०-रक्तगंधा। फ़ा०-यासमन जुही। अ०-खुर्गौसफ़ेद। रंग-सफ़ेद। स्वाद-कुछ कड़वी व कुछ कषली। पहि०-एक फूल खुशबूदार है, जो चमेली की तरह का उससे कुछ छोटा होता है। स्वभाव-गर्म व खुश्क २। बाजों के नजदीक सर्दतर है। हानि-तेजिश पैदा करता है। दर्पघ्न-रोगनगुल। प्रति०-दफ़ली।

गुण व कार्य—आंख की बीमारी को फायदेमन्द है, मुंह आने और मुंह के दानों को इसकी कुल्ली करनी नफा देती है। इसके अर्क का लेप जख़्मों को मुफीद है। इसका इत्र दिमाग़को कुव्वत देता है। (ज़हरीली नहीं)

२४९—जायफल

प्र० नाम-जायफल। जातीफल। फ़ा०-जोज़बुवा। अ०-जोजुबुवा व जोजुलतीब। रंग-भूरा। स्वाद-कुछ कड़वा व खूब तेज। प०-एक पेड़ का फल प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-जिगर व फेफड़े को और गर्म मिजाज वालों को सिर दर्द लाता है। द०-धनियां व शहद व बनफ्शा। प्र०-बसबासा। मात्रा-४ से ६ मा० तक।

गुण व कार्य—फरहत बख्शता है और लताफ़त तबिअत बढ़ाता है। कुछ नशा लाता है। असली हरारत की सिफाजत करता है। हाज़िम है, मेदे और मेदे के मुंह व जिगर और बाह को कुव्वत देता है। जिगर की सख्ती व तिहाल वरम और अक्सर सर्दी के वरमों को फायदा करता है। वहमी इस्तस्का (जलंधर) मांस बढ़ाने वाले को और गठिया को मुफीद है। (ज़हरीला नहीं)

२५०—जरांकस

प्र०-जरांकस। सं०-कुतृणम्। फ़ा०-काह मक्की। अ०-अज़खर। रंग-पीला। स्वाद-तेज व तेज बू। पाह०-एक सुगंधित घास प्रसिद्ध है। स्वभाव-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म मिजाजवाले को, गुर्दे को और शिर दर्द लाता है। दर्प०-गुलाब नीलोफ़र व सन्दल। प्र०-कूट व केशर व चिरायता। मात्रा—२ मा०।

गुण व कार्य—रियाह और वरमों को तहलील करती है। पथरी को तोड़ बहाती है, सुद्दा खोलती है, लसदार खिलतों को पुख्ता यानी रकीक (पतला) करती है और अक्सर दर्दों को तस्कीन देती है, सर्द बीमारियों फ़ालिज व लकवा व तसन्नुज (पट्ठों की ऐठन)को और इस्तरखा(पट्ठे खिचनेको)मुफीद है व मुकव्वी मेदा है और दांत कायम रखती है। (ज़हरीली नहीं)

२५१—जस्त

प्र०-जस्त। सं०-यशद। फ़ा०-रूमी तूतिया। अ०-शबह। रंग-स्याह व शफ्फाफ़। स्वाद-कसैला पहि०-खान की किस्म की मशहूर चीज है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-तिहाल को और कुलंज पैदा करता है। दर्पघ्न-शहद। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—इसके बर्तन में खाना पीना दिल और मेदे को कुव्वत देता है, मकोय या सौंफ के रस में घिसा हुआ वरमों को तहलील करता है, इसका सुर्मा आंखों के जाले और आंखों से पानी जाने को बहुत फायदेमन्द है और पलकों की सुर्खी को दूर करता है।

(ज़हरीली नहीं)

२५२---जाफरी का फूल

प्र० नाम-जाफरी का फूल। रंग-पीला सुर्ख। स्वाद-कुछ कड़वा व फीका। पहि०-एक हिन्दी फूल है जो खुशबूदार होता है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-शिर दर्द लाता है। और मनी कम करता है। दर्पघ्न-काशनी व बादरंजबोया।

गुण व कार्य—गर्मी करता है और रियाह व वरमों को तहलील करता है। हाजिम है और कब्ज करता है, पेशाब जारी करता है। और मसाना के पत्थरों को तोड़ता है।

२५३—जलपीपल

प्र० नाम-जलपीपल। सं०-जलपिप्पली। फा०-पीपल आबी। अ०-फिलफिल उलमाय। रंग-स्याह। स्वाद-तेज व तेज बू। प०-एक पानी के किनारे उगने वाली घास है। इसका फल छोटी पीपल जैसा होता है। स्व०-सर्द व खुश्क १। द०-रोगनजैतून। प्रति०-फिलफिल।

गुण व कार्य—क़ाबिज़ है और दिल व आंतों को कुव्वत देती है, बाह जियादा करती है, खून के फिसाद व फोड़े फुन्सी और सीने की सोजिश को दूर करती है। (जहरीली नहीं)

२५४---जलकुंभी

प्र०-जलकुम्भी। अ०-सतरातयूस। रंग-हरा। स्वाद-कड़वा व तेज। प०-एक किस्म की घास पानी पर बेजड़ उगती है और बादरंजबोया सी होती है। स्व०-सर्दतर।

गुण व कार्य—इसका लेप सिर्के के साथ जख्मों को पैदा नहीं होने देता और गर्मी के वरमों को पुख्ता करती है और उनकी सुर्खी दूर करती और पेशाब की चिनक और गुर्दे के खून बन्द करने को मुफीद है और अक्सर ऐजा के जख्मों में गोश्त (मांस) भर लाता है।

(जहरीली नहीं)

२५५---जलनीम

प्र० नाम-जलनीम। सं०-जलनिम्ब। रंग-हरा। स्वाद-कड़वा व तेज। पहि०-एक घास है जो तराई में उगती है। स्व०-गर्म व खुश्क १। हानि-जख्म डाल देती है। दर्पघ्न-रोगन। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—खून को साफ करती है, और अक्सर जिल्दी मर्जों (चर्म रोगों)को नफा करती है, तर खुजली व आतशक और कोढ़ को मुफीद है, और सौदावी व बलगमी माद्दे को दस्तों की राह निकालती है।

(जहरीली नहीं)

२५६---जमालगोटा

प्र०-जमालगोटा। सं०-जयपाल। फा०-तुख्म बेदअंजीर खताई। अ०-हब्बुल सलातीन। रंग-बाहर स्याह भीतर सफेद। स्वाद-कड़वा। प०-एक बीज है जिसकी गिरी में चिकनाई होती है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-दस्तावर कवी है, गर्म मिजाज वालों को कै लाता है। द०-दूध व मठा। प्रति०-रेंडी। मात्रा-१ अदद।

गुण व कार्य—कवी दस्तावर है, जिला करता है, रतूबत को सोखता है, सुद्दा खोलता है, सर्द बीमारियों को आतशक व कोढ़ और चर्म रोग को नफा करता है, इसका तेल भी दस्तावर है, इसके तेल का जमाद (लेप) करना बाह को बढ़ाता है और कुव्वत देता है और अम्मुल सिबियां व डब्बा में मुनासिब शहद के साथ देना आजमाया हुआ

है, बिला शुद्ध किये हुये इसका इस्तैमाल किसी को मुनासिब नहीं है। (जहरीली है)

१५७---जंगरी

प्र०-जंगरी। रंग-पीलापन। स्वाद-खारा व मीठा व तेज। प०-नींबू से मिलता एक फल है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-सफरा व बलगम जियादा पैदा करता है। दर्पघ्न-सौंफ। प्रति०-मिर्च व कवावा। मात्रा-६ मा०।

गुण व कार्य-खाने की रुचि (ख्वाहिश) पैदा करता है, भूख खूब लगाती है, रियाह को तहलील करती है। (जहरीली नहीं)

१५८---जवासा

प्र०-जवासा। सं०-यावसक। फ़ा०-खारशुतर अ०-जाज। रंग-हरा। स्वाद-कुछ कड़वा व तेज पहि०-एक किस्म की घास है जिसके ऊपर मुल्क खुरासान में तुरंजबीन जम जाती है। स्व०-गर्म व खुश्क १। हानि-शिर और गुर्दे को। दर्पघ्न-कतीरा व गुलनीलोफर। प्रति०-जन्दकोकी व सुन्दरस। मात्रा-१ मा०।

गुण व कार्य—मवाद को पुख्ता करता है, सुद्दा खोलता है, जिला करता है, बाज जहरों को मारने वाला है, गठिया को नफा देता है, पुराने शिरदर्द को नफा देता है, पेशाब लाता है, इसका सुर्मा आंख के जाले को मुफीद है, इसका तेल गठिया के लिये निहायत पुर असर है।

(जहरीला नहीं)

१५९---ज्वार

प्र०-ज्वार। सं०-जवारकी। फ़ा०-दरह मका। अ०-खित्तये रूमियां खन्दरूस। रंग-लाल व पीला स्वाद-फीका। पहि०-एक किस्म का मशहूर अनाज है। स्व०-सर्द व खुश्क १ व हरारत मायल। हानि-सकील व नफाख (अफारा) करती है। द०-गुलकन्द।

गुण व कार्य—क़ाबिज स्वभाव है, दस्तों को बंद करती है, सिल को नफा देती है और बलगम को तहलील करती है, सकील लसदारी है। और इसमें गिज़ाइयत गेहूँ से और चावल से ज्यादा है। (जहरीली नहीं)

१६०---जवाखार

प्र०-जवाखार। सं०-यवक्षार। अ०-नतरून रंग-सफेद। स्वाद-खारा व कड़वा। पहि०-एक तरह का नमक है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-कै को हरकत देता है। द०-बंशलोचन व समगवी प्र०-नमक तलख। मात्रा—४ मा०।

गुण व कार्य—वरम व रियाह और बलगम को तहलील करता है, कुलंज को नफा देता है, मुनासिब दवाइयों के साथ बलगमी खांसी को मुफीद है, सुद्दा खोलता है और हाज़िम है, मसाने की पथरी को दूर करता है।

(जहरीला नहीं है)

१६१--जौ

प्र०नाम-जौ। सं०-यव। फ़ा०-जौ। अ०-शायर। रंग-जर्दी मायल। स्वाद-फीका। पहि०-एक किस्म का मशहूर अनाज है। स्वभाव-सर्द खुश्क १। हानि-मसाने व आंतों को। द०-तैल व गरम मसाला।

गुण व कार्य—क़लीलुल गिज़ा है (थोड़ी गिज़ा है) काबिज है। खुश्की लाता है, मवाद को पुख्ता करता है, खून के जोश को तस्कीन देता है सफ़रा व प्यास और गर्मी के बुखार की हिद्दत

को भी तस्कीन देता है, सिल बद्दिक़ व ज़ातुलजंब और खांसी व गर्मी के दर्द शिर को मुफीद है। पेशाब लाता है, जौ आस (जौ का पानी) बहुत लतीफ है और दवाइयत व गिजाइयत दोनों रखता है। (जहरीला नहीं)

२६२—जौ बरहिना

प्र० नाम—जौ बरहिना। फा०—जौ बरहिना। अ०—शायर उल मरियां। रंग—जर्दी मायल। स्वाद—फीका। पहि०—यह भी एक दाना अनाज का मशहूर है। स्व०—गर्म खुश्क। हानि—निफाख है द०—सौंफ।

गुण व कार्य—इसको दूध के साथ खाना जिस्म और गुर्दों को फरबै व क़वी करता है। इसका हरीरा घी के साथ सीना व गुर्दा व मसाना पाक करती है और कुव्वत देता है इसका लेप वरमों को तहलील करता है।

(जहरीली नहीं)

२६३—जावित्री

प्र०—जावित्री। सं०—जातिपत्री। फ़ा०—बजबाज अ०—बस्बासा। रंग—सुर्ख व जर्दी मायल। स्वाद—कड़वी व तेज बू। प०—जोज़ (जायफल) के ऊपर का छिलका है। स्व०—गर्म व खुश्क १। हानि—शिर दर्द पैदा करती और जिगर को मुज़िर है। द०—सन्दल व गुलाब। प्र०—जायफल। मात्रा—३ मा०।

गुण व कार्य—फरहत देती है मेदे व जिगर और बाह को कुव्वत देती है, कुव्वत बाह लाती है, और फुजलात सुद्दाखोलती है, रतूबतको खुश्क करती है रियाह को और भीतरी सख्तीको तहलील करती है। रहम को कुव्वत देती है मेदे पर गिरने नहीं देतीहै, लताफ़त बखराती है, हाजिम है और मसानेकी पथरी तोड़ती है, इसका तर किया हुआ कपड़ा रखना बाद हैज के हमल कायम होने में मदद देता है। (जहरीली नहीं)

२६४—सरु का फल

प्र० नाम—सरु का फल। अ०—जोजुल सरू। रंग—भूरा। स्वाद—फीका व कुछ कड़वा। पहि०—एक क़िस्म के सरू का फल है महज काठ के ऐसा होता। स्व०—सर्द खुश्क १। हानि—मसाने को और सुद्दा पैदा करताहै। दर्प०—शहद व रोगन बादाम। प्रति०—अंजरूत व अनार के बीज। मात्रा—१ मा०।

गुण व कार्य—काबिज है और खून को बन्द करता है। पट्ठों व मेदे व जिगर व तिहाल और आंतों को कुव्वत देता है, पसीने के जरिये से रतूबत को जजब करता है। औरइमसाक करता है व खून कोसाफ करता है और निसियान (नींद न आने) को नफा देता है और मुंहकी बदबूको दूर करताहै।

(जहरीला नहीं)

२६५—जोज़गन्दम

प्र०—जोज़गन्दम। फ़ा०—गुल गन्दम। अ०—जोज़जुन्दुम सहअतुलअरज। रंग—सफेद। स्वाद—फीका। पहि०—एक रतूबत है जो पत्थर पर पैदा होता है और खाक आलूदा हो जाती है। स्व०—गर्म व खुश्क ३। हानि—सुद्दा पैदा करता है। दर्प०—सिकंजबीन बजूरी व अनार मीठा। मात्रा—१ मा०।

गुण व कार्य—बाह को ताकत देता है, और बदन को मोटा बनाता है और पथरी को तोड़ता है, भूख को मारता है, पेशाब को ज़ारी करता है। और सेब के पानी के साथ मुंह के खून को बन्द

करता है। और इसका लेप शहद के साथ गंज को फायदा करता है। और यदि इसको शहद और थोड़े पानी में मिलाकर धूप में रख दें तो शराब से ज्यादा नशा करता है।

२६६—झाऊ

प्र० नाम-झाऊ। फा० गज। अ०-तरफात असल। रंग-हरा स्याही माईल। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक किस्म का लम्बा दरख्त है। यह अक्सर नदियोंके किनारे होता है। स्व०-सर्द १ व खुश्क २। हानि-सर को। दप०-शहद। प्रति०-गुलनार। मात्रा—७ माशा।

गुण व कार्य—काविज है, मादा को ताकतवर बनाता है। सूजन व रियाह को तहलील करता है। और जिगर के सुद्दे को खोलता है, और सख्त वरम जिगर व तिहाल को नफा करता है। खून को बन्द करता है, और झाऊ की लकड़ी के वर्तन में पानी पीना गंज व तिहाल को फायदेमन्द है। झाऊ का जुसांदा खून को साफ करता है। और खून के जोश को ठीक करता है।

२६७—झरबेरी

प्र० नाम-झरबेरी। फा०-संजर व किनार दस्ती। अ०-नबीरा। रंग-लाल। स्वाद-खट्टा। पहि०-यह जगली बेर प्रसिद्ध हैं, व उन्नाबके समान होता है। स्व०-खुश्क २ व सर्द १। हानि-कुव्वत हाजमाको और खांसी पैदा करता है। द०-शकर। प्रति०-बेर। मात्रा-२० अदद।

गुण व कार्य—फ़हत बढ़ाता है। मादा को कुव्वत देता है। इसका चूर्ण खुश्क क़ाबिज है, और पित्त के क़ै, दस्तों को मुफीद है, इसके दरख्त का बकला दांतों के मर्ज की और मुंह के आने को मुफीद है।

२६८—झींगा

प्र० नाम-झींगा। अ०-समकउलरूबियां। रंग-सफेद व भूरा। स्वाद-फीका। पहि०-बाजों के नजदीक एक किस्म की मछली है। स्व०-सर्द व तर १ मय रतूबत फुजलिया के। हानि-मेदा व आंतों को। दप०-गर्म मशाला व रोगन। प्रति०-मछली।

गुण व कार्य—दिमागी ताकत पैदा करती है, वाह को क़वी करती है। जिस्म को मोटा करती है। ताकत पैदा करती है. गर्म मिजाज वालों के लिये मेदा और जिगर की हरारत को ठीक करती है।

२६९—चाकसू

प्र० नाम-चाकसु। फा०-चश्मीजक चश्मक। अ०-चश्मीजजा व जताउल सौदा। रंग-स्याह। स्वाद-साधारण कड़वा। पहि०-मसूर के मानिन्द एक दाना है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दप०-हरी धनियां। प्रति०-तूतिया। मात्रा-२ माशा।

गुण व कार्य—खून साफ करता है, काविज है। सूजन को कम करता है, बीनाई को कुव्वत देता है। आंख के ढेले के, व जाले को लाभ देता है, जख्मोंमें फायदेमन्द है। खास करके जक़र जख्मोंको और आई हुई आंख में फायदमन्द है। इसको बिना भुलभुलाए न खाना चाहिये।

२७०—चांदी

प्र० नाम-चांदी। सं०-रौप्य। फा०-नुकरा-सीम। अ०-फिजा। रंग-सफेद चमकदार। स्वाद-

कसैला। पहि०-एक मशहूर कीमती धातु है। स्व०-सर्द व खुश्क। हानि-आंतो व मसाने को दर्पघ्न-कतीरा व शहद। प्र०-फीरोजा। मात्रा-२ माशा।

गुण व कार्य—दिल और मेदा को ताकत देती है। कुव्वत हैवानी की रक्षा करने वाली है। मांस व चर्बी मग़ज व हड्डी व वीर्य को बढ़ाती है। कफ के विकार को ठीक करती है। इसकी भस्म बदन के हिस्सों में ताकत पहुँचाती है, और बीमारियों में काम आती है।

२७१—चांदनी के फूल

प्रसिद्ध नाम-चांदनी के फूल। सं०-चंद्रमल्लिका। रंग-श्वेत। स्वाद-फीका। पहि०-एक किस्म की बेल का फूल है, जो अक्सर दरख्तों पर चढ़ती है। स्व०-सर्द तर १। हानि-सर्द मिजाज वालों को। दर्पघ्न-बतासा व शकर। प्र०-गुल सेवती। मात्रा-५ अदद।

गुण व कार्य—दिल को ताकत पहुँचाती है, और फ़रहत लाती है। इसका गुलकन्द खफकान (उन्माद) को ठीक कर हृदय को ठीक करता है।

२७२—चावल

प्र० नाम-चावल। सं०-तन्दुल। फा०-बिरंज अ०-उर्ज। रंग-श्वेत व लाल। स्वाद-फीका। पहि०-यह एक प्रसिद्ध अनाज है। स्व०-सर्द १ व खुश्क २। बाज २ गर्म व खुश्क कहते हैं। हानि-कुलंज पैदा करता व सुद्दा लाता है। दर्प०-शकर व दूध और घी। प्रति०-आरद जौ।

गुण व कार्य—खिलत पैदा करता है, प्यास को रोकता है, मनी पैदा करता है, बदन का मोटा करता है। पेचिस और आंतों के जख्म और खराश और खूनी दस्तों गुर्दा व मसाना के दर्दों में लाभप्रद है। अगर इसको पीसकर मुंह पर लगावें तो दानों आदि को ठीक करता है, यदि धानों को पीस कर मय भूसी के खाया जाय तो मारक है।

(जहरीला नहीं)

२७३—चावल मोंगरा

प्र०-चावल मोगरा। सं०-तुबरक। फा०-बरंज मोगरा। अ०-उजमूजरा। रंग-काला। स्वाद-फीका। प०-एक दरख्त का फल है जिसकी चिकनाई चावल के समान होती है। स्व०-गर्म खुश्क। हानि-गर्म मिजाज वालों को।

गुण व कार्य—सुद्दा को खोलता है और जिला करता है, खून को साफ करता है, इसका तेल कोढ़, खाज, दाद, चर्म रोगोंमें लाभप्रद है।

(जहरीला नहीं)

२७४—चाय

प्र०-चाय। फा०-चाय खताई, रंग-सब्जमाइल व स्याह। स्वाद-कुछ कड़ई। प०-एक घास की पत्ती है, इसकी बहुत सी किस्में हैं। अक्सर पहाड़ी स्थानोंमें होती है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-खुश्की व खुजली पैदा करती है व दमा और सिल पैदा करती है। द०-बादियान खताई व दूध शकर। प्र०-चना के पानी व शहदका शर्बत। मात्रा—३ मा०।

गुण व कार्य—यह सर्द मिजाज वालों को लाभ करती है। फुर्ती लाती है, सुद्दा को खोलती है। और मेदा को पुख्ता करती है। प्यास को बुझाती है। खून के जोशको नाफै है। तबिअतमें गर्मी पैदा करती है। (जहरीली नहीं)

२७५—चचींड़ा

प्र०-चचींड़ा।सं०-चिर्मिटा। रंग-हरापन लिये सफेद। स्वाद-कुछ कड़वा। प०-एक बेल का फल बहुत लम्बा एक से दो गज, तक होता है, इसकी तरकारी बनती है। स्व०-सर्द। हानि-सर्द मिजाज व मेदाको नफख है और जोफ बाह लावाहै। द०-गोश्त व गर्म मसाला। प्र०-परबल।

गुण व कार्य—बदनकी खुश्की व कमजोरी को दूर करता है। हाजिम व बहुत हलका है। पित्त प्रकृतिवालों को लाभप्रद है। भूख को बढ़ाता है। इसकी जड़ दस्तावर है व आतशक व बातरक्त को लाभकारी है। इसके बीज कै लाते हैं और पेट के कीड़े मारकर। निकालते हैं।

(जहरीली नहीं)

२७६—चिरायता

प्र०-चिरायता।सं०-किरातक।फ़ा०-नेहाबन्दी। अ०-किसब उलजरीरा। रंग-हरा सूखने पर काला। स्वाद-कड़वा। प०-एक क़िस्म की घास है, यह छत्तादार नहीं होती। स्व०-गर्म व खुश्क। हानि-कमर की जगहको। द०-अनीसून। प्र०-मुसब्बर, सन्दल, जाफरान। मात्रा-७ मा०।

गुण व कार्य—तबिअत को ठीक करता है। पेशाब लाताहै व वरमोंको तहरीर करता है।बुखार को दूर करता है। खूनको साफ करता है। जिगर व मेदे को लाभप्रद है। मलेरियां ज्वर में बहुत लाभ करता है। खुजली और कोढ़ में फायदेमन्द है। जिगर व दिल को ताकत देता है।

(जहरीला नहीं है)

२७७—चर्बी

प्र०-चर्बी। सं०-मज्जा। फ़ा०-पीया। अ०-शहम। रंग-सफेद। स्वाद-फीकी व चिकनी। स्व०-जानवरों के बदन का जुज़ है। प०-गर्म तर १। हानि-मेदे के मुंहको। द०-नमक व स्याह मिर्च। प्र०-रोग़न ज़ैत।

गुण व कार्य—सख्त वरमों को तहलील करता है। दर्दों को तस्कीन देती है, ऐज़ा को तरी करती है खास कर पट्ठों को और इसका खाना बदन को मजबूत करता है और फरबे करता है, हर जानवर की चर्बी का गुण उसी जानवर के गुण के बराबर है।

(जहरीली नहीं)

२७८—चरस

प्र०-चरस। फ़ा०-शबनम बंग। अ०-रुहउल बंज। रंग-स्याह। स्वाद-कड़वा। पहि०-भांग के पत्तों पर ओस जम जाती है और बनाई भी जाती है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-दिल व दिमाग को जईफ करती है। दर्पघ्न-गाय का दूध।

गुण व कार्य—नशा लाती है, इमसाक करती है, खुश्की करती है। वरम को तहलील करती है, बीनाई को खोती है। हवास बाहरी व भीतरी को मुकद्दर (मैला) करती है।

(जहरीली है)

२७९—चिर्चिरा व चिर्चिटा

प्र० नाम-चर्चिरा व चिचिटा।सं०-अपामार्ग। फा०-खार बाजगोना। अ०-अंकमः। रंग-पत्ते हरे व फूल सुर्ख। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक क़िस्म की घास है। स्व०-सर्द खुश्क १। हानि-इसके बीज भूख को कम और दूर करते है।

गुण व कार्य—बवासीर व दाद व पट्ठों की ऐंठन व स्याह दाग व खुजली व जलंधर व फोड़ों को नफा करता है। इसकी लकड़ी की मसवाक (दातौन) मुंह की गन्दगी को दूर करती है। इसके पत्तों का रस मट्ठे में मिला कर औरतों को पिलावे तो हैज़ का खून बन्द हो जावे और रस इसके पत्तों का आंख में डालने से धुन्ध को को भी दूर करता है।

(जहरीली नहीं)

२८०—चिरौंजी

प्र०–चिरौंजी। सं०–पियाल। फा०–नजल फाजा। अ०–हब्बुल समना। रंग–सुर्ख वसफेद। स्वाद–फीका व चिकना। पहि०–एक पहाड़ी फल की गिरी है, जिसको अचार कहते हैं। स्व०–गर्म खुश्क २ व रतूबत फुजलिया। हानि–सकील और देर हज़म है। दर्प०–सिकंजबीन व शहद। प्रति०–पिस्ता व तिल।

गुण व कार्य—उम्दा गिजा है, बदन को फरवे करती है, बलग़मी माद्दे को दस्तों की राह निकालती है और सफारा को भी निकालती है, कुव्वत बाह ज़ियादा करती है, जिला करती है, चेहरे का रंग निखारती है। पित्त की जियादती व खून के जोश और प्यास को तस्कीन देती है, इसका हरीरा बादाम व शकर के साथ वाह ज्याद बढ़ाता है।

(जहरीली नहीं)

२८१—चुकन्दर

प्र०–चुकन्दर। सं०–ककुन्दर। फा०–चुकन्दर अ०–सलक। रंग–स्याह। स्वाद–कुछ मीठा। पहि०–एक साग की जड़ और मशहूर तरकारी है। स्व०–गर्म तर मुरक्कबुल क़वी है। हानि–मेदे को और कुलंज व पेचिश पैदा करता है। दर्प०–मांस व मसूर व राई। प्र०–शलजम।

गुण व कार्य—जिला करता है, वरम और रियाह को तहलील करता है। तबिअत को नर्म करता है और बलग़मी माद्दे को पुख्ता करता है, अफारा करता है, थोड़ी सी गिजा है, इसका कच्चा खाना तबियत को बन्द कर देता है और पका हुआ वाह को हरकत देता है, दर्द गुर्दा व गठिया और राशा को नफा करता है।

(जहरीला नहीं)

२८२—चुकन्दर के बीज

प्र० नाम–चुकंदर के बीज। फा०–तुख्म चुकंदर। अ०–बज्र लसलक। रंग–स्याही मायल। स्वा०–कड़वा पहि०–प्रसिद्ध है। स्व०–गर्मखुश्क २। हा०–मेदेको। दर्पघ्न–सिकंजबीन। प्रति०–तुख्म शलजम। मात्रा–६ माशे।

गुण व कार्य—पेशाब खूब जारी करता है और हैज खोलता है, बलग़म को छांटता है और रियाह को तहलील करता है।

(जहरीली नहीं)

२८३—चिकनी डली सुपारी

प्र० नाम–चिकनी सुपारी। सं०–दक्षिणात्य पूगफलम्। फ़ा०–पोपल। अ०–फ़ोफ़ल। रंग–सुर्ख सफेद। स्वाद–कषैली। पहि०–एक फल है। स्व०–गर्म खुश्क २। हानि–फेफड़े को। दर्प०–समगर्बी। मात्रा–७ माशे।

गुण व कार्य—काबिज है, मवाद को पुख्ता करता है, पट्ठों व दिल और मेदे को कुव्वत देता

है और अपने कसेलेपन से दस्तावर है।

(जहरीली नहीं)

२८४—चकोतरा

प्र० नाम-चकोतरा। सं०-बीज पूरभेदः। फा०-चकोतरह । रंग-छिलका पीला व गूदा सुर्ख। स्वाद-चाशनीदार। पहि०-एक फल नीबूसे मिलता हुआ छिलका बारीक होता है। स्व०-सर्द तर २। हानि-सीने को। दर्प०-कन्द। प्रति०-अनन्नास।

गुण व कार्य—प्यास और पित्तों को तस्कीन देता है, भूख लाता है, मेदे को ताक़त देता है। गुणों में तुरंज के समान है। इसका छिलका खफकांन और गशी को दूर करता है और चेहरे को रंग साफ करता है।

(जहरीला नहीं)

२८५—चकदाना

प्र० नाम-चकदाना। रंग-भूरा। स्वाद-फीका व कुछ कड़वा। पहि०-एक सख्त बीज हब बिलसां से मिलता हुआ है। स्व०-गर्म खुश्क २।

गुण व कार्य—बच्चों को दस्तावर है, और कुलंज को नफा करता है, रियाह को तहलील करता है। (जहरीली नहीं)

२८६---जुलाफ़ा

प्र०-जुलाफ़ा। । फा०-जलापा। रंग-भूरी। स्वाद-कड़वी व बदबूदार। पहि०-सलगम की बराबर एक जड़ है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों को दर्द सर करता है। दर्प०-खटाई। प्र०-मचूकान। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—दस्त खूब लाती है, इसके सिवाय क़ाबिज भी खूब है। तबिअत को कराहियत भी नहीं करती, गुर्दे के दर्द व पेट के दर्द व अकुलनिसा (चूतड़ों का दद) और गठिया को नफा देती है, कुलंज व जलंधर और यरकां को भी फायदा देती है। (जहरीली नहीं)

२८७---चिलगोजा

प्र० नाम-चिलगोजा। फा०-चिलग़ोज़ा। रंग-छिलका सुर्ख, गिरी सफेद। स्वाद-कुछ मीठा व चिकना स्वादिष्ट। पहि०-एक मेवा मशहूर है। स्व०-गर्म २ तर १। हानि-देर हजम। दर्प०-तुर्श मेवा व सिकंजबीन। प्रति०-बादाम व शकाकुल मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—बाह ज्यादा करता है, भूख बढ़ाता है, दिल व पट्ठों को कुव्वत देता है, सुद्दा खोलता है, मेद व जिगर को और फेफड़े व गुर्दे व मसाने और लिंग को मुफीद है, और बाह को पुख्ता करता है। (जहरीली नहीं)

२८८---चम्पा

प्र० नाम-चम्पा। सं०-चम्पक। फा०-फाखरा अ०-फागरः। रंग-पीला। स्वाद-तेज व तेज बू। पहि०-एक मशहूर फूल है। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-भूख बन्द कर देता है।

गुण व कार्य—इसका सूंघना दिल व दिमाग और सर्द मिजाज वालों को कुव्वत देता है। इसका खाना अक्सर सौदावी और बलगमी मर्जों और रियाह को नफा करता है।

(जहरीली नहीं)

२८९---चना

प्र० नाम-चना। सं०-चणकः। फा०-नखुद। अ०-हमस। रंग-लाल व पीला। स्वाद-फीका व सौंधा। पहि०-एक मशहूर दाना अनाज का है।

स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-अफारा लाता व मसाने को मुजिर है। दर्पघ्न-खशखाश गुलकन्द व सिकंजबीन। प्रति०-लाबिया व बाकला।

गुण व कार्य——बहुत ज्यादा गिजा है बदन से रद्दी माद्दे को दूर करता है, जिगर व तिहाल और गुर्दे का सुद्दा खोलता है, जिला करता है तबिअतको नर्म करता है, असली हरारतको कुव्वत देता है अच्छा खिलत पैदा करता है। बदन को फरबै करता है, और बाह ज्यादा करता है। आवाज और खून को साफ करता है, अक्सर खूनी व सौदावी बीमारियों को मुफीद है, पेशाब खूब लाता है, इसको भिगो कर सिर्फ पानी पी लेना खास कर मुफीद है। (जहरीला नहीं)

२९०—चना पटापर रसभरो

प्र० नाम-चना पटापर रस भरी। रंग-पीला व हरा। स्वाद-जायकेदार। पहि०-एक घास का फल है जो एक गिलाफ में थेलो के भीतर होता है। स्व०-गर्म खुश्क २ व दस्तावर है। हानि-फेफड़े और दिमाग को। दर्पघ्न-सिकंजबीन। प्रति०-झड़बेरी।

गुण व कार्य—कच्चे और खराब बलगम को दस्तों की राह निकालता है, और बलगम को जला देता है और अक्सर सौदावी व सफरावी मर्जों को नफा देता है, तबिअत को फरहत देता है, और नर्म करता है। अपने कुल गुणों में मकोय के बराबर है, बरखिलाफ कुल गुणों के इसके ऊपर पानी पीना इसके फेल (गुण) को मजबूत करता है।

२९१—चुनार

प्र० नाम-चुनार। फा०-चुनार। अ०-दुलब रंग-पत्ते हरे लकड़ी जौहरदार। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक बड़ा पेड़ है, जो सर्द मुल्कों में होता है, पत्ते चौड़े व दनदानेदार होते हैं। स्व०-लकड़ी सर्द तर १। छाल व जौहर सर्द खुश्क। हानि-दमास और आवाज को। दर्पघ्न-ऊद व दारचीनी और ताजा दूध। प्र०-अनारका छिलका।

गुण व कार्य—इसकी जली हुई छाल का लेप जिला करता और खुश्की लाता है, सफेद दाग को नफा करता है। घावों की बदबूदार रतूबत को दूर करता है, इसके ताजे फल का जोशान्दा जहरीले जानवरों के जहर को दूर करता है। (जहरीला नहीं)

२९२—चुम्बक

प्र० नाम-चुम्बक। सं०-अयस्कान्त। अ०-संग आहनरुबा। फा०-हुज्र मकना तीस। रंग-स्याह। स्वाद-बदमजा। पहि०-एक किस्म का पत्थर जो लोहे को अपनी तरफ खींचता है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-सीनाको। दर्पघ्न-मौरेठीका सत्व। प्रति०-कफ दरियां (समुद्रफेन)। मात्रा-१ मा०।

गुण व कार्य—जिला करता है, इसका पीना फालिज व लकवा व गठिया व अकुल निशा और नुकरस (पैर के अंगूठे की बीमारी) को मुफीद है, जिगर व तिहाल को कुव्वत देता है, गुर्दे व मसाने की पथरी तोड़ता है। रेशमी कपड़े में रख कर बांई रान में बांधना खास कर जनने में जल्दी व आसानी करता है, इसकी पिसी हुई चुटकी जखम पर छिड़कना खून को बन्द करती है। व जखम को साफ करके भर लाती है, यह बात तजुर्बे की है कि जब शनि का तारा बुर्ज सम्बुला में हो तो उस वक्त इस पत्थर को एक

आदमी गुलाब में घिसकर आंख में लगावे और दूसरा आदमी लोहे को देर तक देखता रहे तो उन दोनों आदमियों में अज़हद मुहब्बत हो जायगी।

(इसका ज्यादा इस्तैमाल करीब वहम है)

२९३—चम्बेली

प्र०-चम्बेली। सं०-मालती। अ०-यास्मिन। रंग-पत्ते हरे फूल सफेद। स्वाद-खुशबूदार व कुछ कड़वा। प०-एक झाड़ी का खुशबूदार और मशहूर फूल है। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-गर्म मिजाज को सरदर्द लाती है। द०-बनफ्शा व गुल सुर्ख। प्र०-नर्गिस व सोसन। मात्रा—१०॥ मा०।

गुण व कार्य—तबियत को फरहत लाती है, मसाम और सुद्दा खोलती है, बदन को फरबे करती है, इसका पीना बलगमी व सौदावी माद्दे को दस्तों की राह निकालता है, गलीज़ रियाह को तहलील करती है, फालिज व लक़वा व गठिया और खिदर (पट्ठों की सुस्ती) को मुफीद है, पेशाब लाती है, बाह को हरकत देती है, इसकी बू दिमाग को कुव्वत देती है, बालोंको सफेद करती है, इसका लेप लिंग पर मुकव्वी बाह है, इसके पत्तों के जोशांदे से कुल्ली करना दांतों के दर्द और मुंह आने को फायदेमन्द है।

(जहरीला नहीं)

२९४—चन्दन सफेद

प्र० नाम-चन्दन सफेद। सं०-श्वेत चन्दनम्। फा०-सन्दल सफेद। अ०-सन्दल अबेज़। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ कड़वा व खुशबूदार। पहि०-एक बहुत बड़ा पेड़ है, इसकी लकड़ी काम में लाते हैं। स्वभाव-सर्द खुश्क २। हानि-बाह को कम करता है। दपघ्न-शहद व मिश्री। प्र०-सन्दल सुर्ख। मात्रा-४ मा०।

गुण व कार्य—फरहत देता है, दिल व मेदे को कुव्वत देता है, मवाद को पुख्ता करता है, काबिज है, वरमों को तहलील करता है, खून साफ करता है, खफ़कान व मेदे की सोजिश और सफ़रावी दस्तों को दूर करता है, इसका सूंघना बवाई हवा के नुकसान को दूर करता है। इसका लेप करना शिर के दर्द को नफा करता है।

(जहरीली नहीं)

२९५—चन्दन लाल (रक्त चन्दन)

प्र० नाम-चन्दन व रक्त चन्दन। सं०-रक्त चन्दनम्। फा०-सन्दल सुर्ख। अ०-सन्दल अहमर। रंग-सुर्ख। स्वाद-कुछ कड़वा व खुशबूदार। पहि०-यह भी सफेद सन्दल की तरह है। स्व०-सर्द २ व खुश्क ३। हानि-खारिश पैदा करता है। दर्पघ्न-गुलरोग़न व सिर्का। प्र०-सन्दल सफेद। मात्रा-४ मा०।

गुण व कार्य—खूनी दस्तों व बुखार और खफ़क़ान को दूर करता है, सन्दल सुर्ख का लेप अपने गुण में सफेद सन्दल से अधिक है, वरम को तहलील करता है। मवाद को पकाता है, सोज़िश व हरारत को तस्कीन देता है। (ज़हरीला नहीं)

२९६—चन्दरोस

प्र०-चन्दरोस। फा०-चन्दूरस। रंग-पीला व सुर्ख। स्वाद-फीका व कुछ कड़वा। प०-एक खान की चीज है कहरवा की तरह, बाज़ की राय में कच्चा कहरवा है। स्व०-गर्म व खुश्क। हानि-गुर्दे को। द०-समग़ अर्बी। प्र०-कहरवाये शमई। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य—दिमागी ऐजा और आम तौर पर कुल ऐजा की रतूबत को खुश्क करता है। और कुल ऐजाये भीतरी और बाहरी के खून को रोकता व बन्द करता है, मेदे व आंतों के बलग़म को छांटता है, पेट के कीड़े मारता है, इसका मंजन मसूढ़ों और दांतों को ताकत देता है। इसकी धूनी बवासीर को नफा देती है इसका सुर्मा बीनाई को कुव्वत देता है। (जहरीला नहीं)

२९७---चोब बिलसां

प्र० नाम-चोब बिलसां। फ़ा०-चोब गिलसां। अ०-ऊद बिलसां। रंग-गेहुँवां रंग। पहि०-एक खुशबूदार लकड़ी है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-आंतों को। दर्पं०-कतीरा, सन्दल, बंशलोचन। प्रति०-हब्बबिलसां। मात्रा-१० माशे।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलता है, दिमागी रतूबतों को छांटता है, धांस व दमा व मेदे और जिगर की सर्दी को नफा देता है और अक्सर जहरों को मारने वाला है।

(ज़हराला नहीं)

२९८—चोबचीनी

प्र० नाम-चोबचीनी। सं०-चोबचीनी। फा०-चोबचीनी। अ०-खश्बुल सीनी। रंग-गुलाबी। स्वाद-कड़वी व तेज। पहि०-एक पहाड़ी पेड़ की जड़ है। स्व०-मुरक्किबलकवी गर्मी मायल। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्पघ्न-अनार। प्रति०-उश्बा मग़रबी। मात्रा-६ से ६ मा० तक।

गुण व कार्य—लताफत पैदा करता है, रद्दी फुजलात को तहलील करता है। सुद्दों को खोलता है, खून को साफ करता है। अरवाह (रूह) और असली हरारत को ताकत देती है, रद्दी रतूबत को खुश्क करती है। फ़ालिज व लक़वा और दिमागी अक्सर सर्द बीमारियों को और पट्ठों की बीमारियों को रहम (योनि) मिकअद (गुदा) की बीमारियों को मुफीद है। पेशाब व हैज खूब जारी करती है, आतशक व कोढ़ और खुजली को नफा देती है, इसका सेवन करना कई खास तरीकों से है।

(जहरीला नहीं)

२९९—चोब हयात

प्र० नाम-चोबहयात। फ़ा०-चोबहयात। अ०-खश्बुल हयात। रंग-भूरी। स्वाद-कड़वी। पहि०-एक तरह की लकड़ी जो हिन्द में होती है। स्व०-गर्म १, खुश्क २।

गुण व कार्य—मसाम और सुद्दा खोलती है। वरमों को तहलील करती है, दर्दों को तस्कीन देती है। अक्सर जहरों के मारने वाली है, क़ाबिज़ है। हैजे व रतूबती दस्तों को व मितली और भीतरी रियाह को मुफीद है, इसका मरहम जख्मों को भर लाती है। (जहरीली नहीं)

३००—चूक

प्र०-चूक। सं०-चूक्रम्। रंग-स्याही माइल। स्वाद-बहुत खट्टा। पहि०-एक फल का सत है, जिसको पहाड़ी लोग लाते हैं। स्व०-सर्द व खुश्क १। हानि-पट्ठों को। दर्पघ्न-कन्द। प्रति०-नीबू। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—मेदे को कुव्वत देता है। पित्त और खून की सोजिश को दूर करता है। पेट के अफारे को मुफीद है, हाजिम है, खुजली व कोढ़ और अकसर कर चर्म रोगों को नफा

देता है। और जमालगोटे की तेजीको भी दूर करता। (जहरीला नहीं)

३०१—चूके

प्र०—चूके का साग। सं०—चुक्रिका। फ़ा०—तरा खुरासानी। अ०—बक़ला हामिजा। रंग—हरा। स्वाद—खट्टा। पहि०—खट्टे पालक को चूक का साग भी कहते हैं। स्व०—सर्द व खुश्क १। हानि—सर्द मिजाज वालों को और पट्ठों को। द०—शहद व शर्बत अनार। प्र०—जरिश्क व अनार।

गुण व कार्य—जिगर को कुव्वत बख्शता है, तबिअत को नर्म करता है, गर्म मिजाज वालों को सोजिश सीने को और कड़वे पित्तों को दूर करता है, भूख लाता है, पियाह की गर्मीको तहलील करता है और हाजिम है। (जहरीली नहीं)

३०२—चूके के बीज

प्र० नाम—चूक के बीज। सं०—चुक्रिका बीजम् फ़ा०—तुख्म तुर्श। अ०—बज्रुल हमाज। रंग—स्याही मायल व सुर्खी व बुलंक। स्वाद—खट्टा। पहि०—प्रसिद्ध है। स्व०—सर्द व खुश्क २। हानि—तिहाल व गुर्दे को। दपघ्न—सौंफ व कन्द। प्र०—तुख्म बारतंग। मात्रा—२ मा०।

गुण व कार्य—क़ाबिज है, जिगर व दिल व मेदे की बीमारियों व क़ै और यरकां को फ़ायदेमन्द है, खूनी और सफराबी दस्तोंको नफ़ा देता है, कड़वे पित्तों को छांटता है, खूनको साफ करता है, इसकी जड़ खूनी दस्तों और आंतों की खराश व यरकां और सैलान रहम (योनि से पानी जाने) को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

३०३—चूना

प्र०—चूना। सं०—चूर्णकम्। फ़ा०—आहक। अ०—नूरह व कलस। रंग—सफेद। स्वाद—फीका बहुत तेज। प०—पत्थर को जलाकर बनाया जाता है। स्व०—गर्म व खुश्क ४। हानि—मांस को खा जाता और क़ातिल है। दर्प०—रोगन व रोगन बादाम। प्र०—हरताल। मात्रा—१ मा०।

गुण व कार्य—खून बहने को बन्द करता है, इसका लेप मिक़अद (गुदा) पर करना दस्तों को बन्द कर देता है, आग से जले हुये को इसका लेप फ़ायदा करता है और वरम को मुफ़ीद है।

(इसकी ज्यादती क़ातिल है)

३०४—जोंक की पत्ती

प्र० नाम—जोंक की पत्ती। रंग—हरी। स्वाद—कुछ खट्टी। पहि०—एक घास है। जिसकी पत्ती जोंक की तरह होती है। स्व०—सर्द व खुश्क। हानि पट्ठों को। द०—कन्द व शकर।

गुण व कार्य—पित्तों को दूर करती है, प्यास को तस्कीन देती है, दस्तों और हैज को बन्द करती है, बाह लाती है, सूजाक और आतशक को मुफीद है। (जहरीली नहीं)

३०५—चूहा कानी

प्र०—चूहा कानी। सं०—मूसाकर्णी। फ़ा०—गोश मूस। अ०—अज़ानुलफ़ार। रंग—पत्ते हरे। फूल लाल। स्वाद—फीका। प०—एक घास है, जिसके पत्ते चूहे के कान से होते हैं और बीज मिस्ल धनियां के। स्व०—गर्म व खुश्क २। हानि—मसाना। दर्प०—मरजंजोश। प्र०—मरजंजोश। मात्रा—२॥ मा०।

गुण व कार्य—पेशाब खूब जारी करती है, सुद्दा खोलती है, सर्द बीमारियों व लक़वा व फ़ालिज और मिर्गी को मुफ़ीद है, इसका नास लेना खासकर लक़वे को नफ़ा करती है। (जहरीला नहीं)

३०६—चौलाई का साग

प्र० नाम-चौलाई का साग । सं०-तण्डुलीय । फ़ा०-सफ़ेद मरज । अ०-ब काला इमानिया । रंग-हरा । स्वाद-कुछ कड़वा । पहिचान-एक साग प्रसिद्ध है । स्वभाव-सर्द तर २ । हानि-देर हजम और सर्द मिजाज वालों को । दर्पघ्न-गर्म जवारिशें । प्र०-खुरफ़ा (कुलफ़ा) ।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करती है, बदन को तरी देती है, थोड़ी गिजा है, गर्मी को बुझाती है, अच्छा खिलत पैदा करती है, प्यास को तस्कीन देती है, गर्मी की खांसी को मुफ़ीद है और पेशाब खूब लाती है ।

(जहरीली नहीं)

३०७—छाछ

प्र०-मट्ठा । सं०-तक्रम् । फ़ा०-दोग़ । अ०-महीज । रंग-सफ़ेद । स्वा०-खट्टा । प०- मथा हुआ दही है । स्वभाव-सर्द तर २ । हानि-मुरक्कब बुखारों को । दर्प०-सिकंजवीन बजूरी । प्रति०-दही जमा हुआ ।

गुण व कार्य—प्यास को तस्कीन देता है । कच्चा खिलत पैदा करता है, बदन को मोटा करता है, बाह को हरकत देता है, जो लोग गर्म मिजाज के हैं उनकी बाह को जियादा करता है, इसकी कुल्ली मुंह आने और मुंह के जोश को नफ़ा देती है ।

(जहरीला नहीं)

३०८—झालर

प्र०-झालर । फ़ा०-बाक़लाए मिसरी । अ०-तुरमिश । रंग-सफ़ेद व जर्दीमायल । स्वाद-कड़वा व तेज बू । प०-एक गोल बीज बाकला के बीज के बराबर है । स्व०-गर्म व खुश्क । हानि-देर हजम है । द०-नमक व शातर । प्र०-लोबिया व तुख्म खर्बूजा और अफ़सन्तीन । मात्रा—४॥ मा शे ।

गुण व कार्य—जिगर और तिहाल का सुद्दा खोलता है, शक्तियों को तहलील करता है, और जिला करता है, पेशाब व हैज जारी करता है, बच्चे को रहम (योनि) से गिरा देता है, पेट के कीड़े निकालता है, चेहरे की झांई व सफ़ेद दाग व स्याह दाग को मुफ़ीद है, और वरम तिहाल को मुफ़ीद है ।

(जहरीला नहीं)

३०९—छड़ीला

प्र०-छड़ीला । सं०-छाड़छबीला । फ़ा०-दवाली व दवाला । अ०-उश्ना व शीबतोउल अजूज । रंग-भूरा । स्वाद-कुछ कड़वा व खुशबूदार । प०-एक चीज है जो दरख्तों पर पैदा होती है, वे पत्ते रस्सी की तरहकी होतेहैं । स्व०-मौतदिलकेसाथ कुव्वत काबिजा के । हानि-आंतों और पेट के ऐजाये शिकमा को । द०-अनीसून । प्रति०-सम्बुल व अमलतास । मात्रा-१०॥ मा० ।

गुण व कार्य—क़ाबिज है, वरम व रियाह को तहलील करता है और जौहररूह को मुआफ़िक़ है, और उसको कुव्वत देता है, इसका जोशांदा सीने को फ़रहत देता है, खफ़क़ान व मिर्गी और क़ै व मितली व जिगर की बीमारी और रहम को मुफ़ीद है, मेदे को कुव्वत देता है, बाह को जियादा करता है, हैज को जारी करता है ।

(जहरीला नहीं)

३१०—छोहारा व खजूर

प्र०-छोहारा व खजूर । सं०-खर्जूर । फ़ा०-खुर्मा । अ०-तमर । रंग-सुर्ख । स्वाद-मीठा व

कसैला । प०-मशहूर मेवा है । स्व०-गर्म व खुश्क। हानि-शिर दर्द व गर्मी करता है । दर्प०-अनार का पानी व बादाम । प्रति०-मवीज मुनक्का व किशमिश

गुण व कार्य—अच्छा खून पैदा करता है । उम्दा गिजा है, बदन को फरबै करता है, बाह जियादा करता है, गुर्दे व कमर को ताकत देता है, फ़ालिज व लकवे को नफ़ा देता है, पथरी को तोड़ता है, सीने व फेफड़े को मुआफिक है ।

(जहरीली नहीं)

३११—चीत व ज़ैत

प्र०-ज़ैन । सं०-जयन्ति । रंग-पत्ते हरे, फूल सफेद बीज काला । स्वाद-कड़वा । पहि०-एक पेड़ है, जिसके पत्ते इमली से मिलते हैं । स्वभाव-गर्म व खुश्क १ ।

गुण व कार्य—इसके पत्तों का पानी बलग़म को दस्तों की राह से निकालता है और कीड़े मारता है । पत्तों का लेप वरमों को तहलील करता और फोड़ों को पकाता है ।

(ज़हरीला नहीं)

३१२—चीता

प्र० नाम-चीता । सं०-चित्रक । फा०-बेखब-रंदा व शैतरा । अ०-शैतरज हिन्दी । रंग-पत्ते हरे, फूल लाल,जड़ सफेद । स्वाद-कड़वा । प०-एक घासहै जो जंगल व ऊसरमें होती है । स्व०-गर्म व खुश्क ३ । हानि-फेफड़े व जिगर को । दर्प०-सम-गर्वी मस्तगी व गुलसुर्ख । प्रति०-नरकचूर व अंजीर । मात्रा-३ मा० ।

गुण व कार्य—जिला करता है और हाजिम है, जिल्द में जख्म डाल देता है, खाल को जला देता है, कुव्वत बाह लाता है,गन्दे खिलत को दस्तों की राह निकालता है । आवाज को साफ निकालता है । जोड़ अन्दर के बलगमको तहलील करता है,गठिया को खोता है,बाह को हरकत देता है । इसका लेप सफेद दाग को मुफीद है ।

(जहरीली है)

३१३—चैना

प्र०-चैना । सं०-चीनाक । फा०-अर्जन । अ०-बखन । रंग-सुर्खीमायल । स्वाद-फीका । पहि०-एक दाना अनाज है । स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-सुद्दा पैदा करता है । द०-मिश्री दूध, घी। प्र०-काकुन व विरंज ।

गुण व कार्य—थोड़ी गिजा है, खुश्की करता है, पेट को गुंग कर देता है । पेशाब लाता है, मेदे के कुंड में बहुत देर में उतरता है, इसकी सेंक (सेकना) वरम को तहलील करती है. अफारा बहुत करता है ।

(जहरीला नहीं अनाज है)

बाबुल हे (ह)

३१४—हासा

अ०-हासा । रंग-हरा स्याहीमायल । स्वाद-तेज व तेज बू । प०-एक तरह का पहाड़ी पौदा है । स्व०-गर्म व खुश्क २ । हानि-फेफड़े को । द०-बंशलोचन । प्र०-अफ्तीमून । मात्रा-६ माशा

गुण व कार्य—लताफत करता है, रियाह व वरम को तहलील करता है,मसाम व सुद्दा खोलता है, बाह को कम करता है, गर्मी करता है, पेशाब व हैज खूब लाता है, बलगमी माद्दे को दस्तों की राह निकालता है, खून को साफ करता है मिस्ल अफ्तीमूनके । इसका जोशांदा सांस चलने को मुफीद है । (जहरीला नहीं)

३१५—हब्बुल जलम

अ०-हब्बुलजलम। रंग-बाहर पीला अन्दर सफेद। स्वाद-लज़ीज़ व मीठा, चिकना। प०-एक दाना चौड़ा, चिकना, चने से बड़ा है। स्व०-गर्म व तर १। हानि-हलक को और सुद्दा लाता है। द०-बनफशा व गुलकन्द। प्र०-शकाकुल व खशखाश। मात्रा—६ माशा।

गुण व कार्य—बाह को हरकत देता है, बदन को फ़र्बे करता है, जिगर को कुव्वत देता है, सौदावी मर्जों को मुफ़ीद है, सीने की खुरखुराहट और खांसी को नफा देता है।

(जहरीला नहीं)

३१६—हब्बुलसनोबर

अ०-हब्बुल सनोबर। रंग-जर्दी मायल। स्वाद-लज़ीज़ व चिकना। पहि०-मिस्ल बादाम के एक बीज है। स्व०-गर्म २ तर १। हानि-गर्म मिजाज वालों को और दर्द शिर व गशी लाता है, दर्प०-सिकंजबीन व तुर्श मेवा। प्रति०-शकाकुल। मात्रा-७ मा०।

गुण व कार्य—बाह जियादा करता है, भूख बढ़ाता है, पट्ठों को कुव्वत देता है और अक्सर ऐजा को कुव्वत देता व सुद्दा खोलता है, रियाह खादिर करता (उतारता) है। फ़ालिज व लक़वा व ख़िदर (पट्ठों का सुस्त होना) व क़ज़ाज (गदन न मुड़ना) व रांशा और सर्दी की गठिया को मुफ़ीद है, अक्सर जिगर की बीमारियों व यरकां और जलंधर को नफा देता है।

(जहरीला नहीं)

३१७ मग़ज़ हराम

फा०-मग़ज़ हराम। अ०-नफ़ाय। रंग-सफेद। स्वाद-फीका व चिकना। पहिचान-एक चीज जो बदन के हिस्से से और पीठ की गुरियों के अन्दर है। स्व०-गर्म तर १। प्र०-मोम व मग़ज़ शाक।

गुण व कार्य—इसका तेल सख्ती को तहलील करता है, इसका लेप जख्म को साफ करके भर लाता है, इसकी चिकनाई होंठ फटने को मुफ़ीद है, और उन ऐजा को जो खुश्क हो गये हों तर करता है और उसमें आटा गूंद कर रोटी पकी हुई मुकव्वी ऐजा है। (जहरीला नहीं)

३१८—तुख्म किरमली

प्र० नाम-तुख्म किरमली। फ़ा०-हुरनयूसुफ। अ०-हाशीश। रंग-सफेद व सख्त। स्वाद-फीका व तेज व बदमजा। प०-एक दाना खशखाश से छोटा होता है। स्व०-गर्म व खुश्क ४। हानि-दर्द और कै लाता है। दर्पघ्न-ताजा दूध। प्र०-ईसबगोल की भूसी। मात्रा—३ माशे।

गुण व कार्य—जिला करता है, गालों का रंग साफ करता है, खुजली और चेचक वगैरा के दाग मिटाता है। (खाना क़ातिल है)

३१९—हमामा

प्र० नाम-हमामा। अ०-हमामा। रंग-पत्ते हरे व शाखें व फूल लाल। स्वाद-तेज व खुशबूदार। पहि०-एक तरह की घास है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-मेदे को। दर्प०-करफस। प्रति०-असारून। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—मादे को पुख्ता करता है, सुद्दा खोलता है। जिगर को कुव्वत देता है, जिगर के वरम व नुकरस (पैर के अंगूठे की बीमारी)

और रहम को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

बाबुल खे (ख)

३२०— खाया ऊदबिलाव

प्र० नाम-खायः ऊदबिलाव । फा०-आश बचगान । अ०-जुन्दवेदस्तर । रंग-पीला व लाल । स्वाद-फीका खुशबूदार । पहिचान-एक दर्याई जानवर के अंडकोष हैं। स्वभाव-गर्म ३ खुश्क २। हानि०-गर्म मिजाज वालों को। दर्प० शर्बत बनफशा। प्र०-रुज व दार फिल-फिल। मात्रा ३ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दे को खोलता है, रियाह व वरम को तहलील करता है, सर्द व जहरीली दवाओं का मारक है, असली हरारत को हरकत में लाता है और कुव्वत देता है, दिमागी सर्द बीमारियों और पट्ठों के बीमारियों को नफा देता है, हैज व पेशाब जारी करता है, वाहको कुव्वत देता है, रहमको ताकत देता है।

(जहरीला नहीं)

३२१—खर्बूजा

प्र०-खर्बूजा। सं०-वृत्तककर्टी। फा०-खरपजा। अ०-बतीख। रंग-ज़र्दी मायल व हरा। स्वाद-मीठा व फीका। पहि०-एक मशहूर फल है। स्व०-गर्म तर २। हानि-खिलतगालिब को बढ़ाता है। दर्प०-सिकंजबीन व शहद। प्र०-फूट।

गुण व कार्य—जिला करता है और लताफत बख्शाता है। रगों में जल्द प्रवेश करता तरी पैदा करता है, बदन को मोटा करता है, सुद्दा खोलता है, गुर्दे को साफ करता है। पेशाब खूब लाता है, दूध खूब बढ़ाता है, यरकां व जलंधर को नफा देता है, पथरी निकालता है। निहार मुंह खाना सफरावी बुखार लाता है, इसका छिलका कै लाता है, इसके छिलके का लेप झांई खोता है।

(जहरीला नहीं)

३२२—खर्बूजे के बीज

प्र०-खर्बूजे के बीज। सं०-ऋबुजा बीजम्। फा०-तुख्म खर्पजा। अ०-बजरुल बतीख। रंग-सफेद। स्वाद-फीका खुश जायका। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म २ तर १। हानि-तिहाल व पेट के ऐजा को। दर्पघ्न-शहद व बनफशा। प्रति०-चिलगोजा। मात्रा-६ माशा।

गुण व कार्य—जिगर का सुद्दा खोलता है। पेशाब खूब लाता है, गुर्दे व मसाने और आंतों को पाक करता है, तबियत को नर्म करता है। पेशाब की चिनक खोता है, दूध व मनी ज्यादा पैदा करता है। कुव्वत वाह खूब लाता है। इसका लेप व उपटन देह की स्याही को खोता और जिला देता है।

(जहरीली नहीं)

३२३—खुर्फे का साग

प्र०-खुर्फे का साग। सं०-अम्ललोणिका। फा०-तुरह खुर्फा। अ०-बक़्लतः उलहमका। रंग-हरा। स्वाद-कुछ खट्टा। पहि०-एक साग है जो तरी व खार की जगह में उगता है। स्वभाव-सर्द तर २। हानि-नबीनाई लाता है। दर्पघ्न-मस्तगी व गोश्त व करास के बीज। प्रति०-काहू। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—तेजी और हिद्दत सफरावी खून को तस्कीन देता है। जिगर व मेदे की सोजिश को नफा देता है, पेशाब की चिनक और

हिद्दत मसाने को मुफीद है, प्यास को तस्कीन देता है और जिला करता है। (जहरीला नहीं)

३२४—खुर्फे के बीज

प्र०-खुर्फे के बीज। सं०-अम्ललोणिका बीजम्। फा०-तुख्म खुर्फा। अ०-बजरुल हमका बफफंख। रंग-काला। स्वाद-फीका। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द ३ तर २। हानि-बाह व तिहाल व मेदे के वरम को। दर्पघ्न-कन्द। प्रति०-तुख्म कदू मीठा व अस्पगोल। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—गर्मी के बुखार व सफराबी बुखार को मुफीद है। प्यास को तस्कीन देता है। गर्मी के शिर दर्द और मेदे की गर्मी को नफा देता है। रहम की गर्मी और जिगर की गर्मी को भी दूर करता है, गर्मी की खांसी और मुंह से खून आनेको फायदा करताहै और जियाबतीस यानी पानी पीते ही पेशाब आने को नफा देता है।

(जहरीला नहीं)

३२५—खरब

प्र० नाम-खरब। फा०-खर्नू बनबती। अ०-खर्नूम नफती। रंग-कुछ स्याह व भूरा। स्वाद-मीठा। पहि०-एक बड़े पेड़ का बीज है जो बाकला के बराबर होता है। स्व०-गर्म व खुश्क २। बाजों के नजदीक सर्द है। हानि-मेदे व आंतों को। दर्पघ्न-लुआब बेदाना। प्र०-माजू व छोटी माई मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—काबिज है और बदन को कुब्बत देता है, पेशाब लाता है। ऐजा में खुश्की लाता है, दस्तों को बन्द करता है, खून बहने को रोकता है, दर्द को तस्कीन देता है।

(जहरीला नहीं)

३२६—खस

प्र० नाम-खश। सं०-उशीर। फा०-रेशा खसखाना। रं०-पीला सुर्खी मायल। स्वाद-कुछ कड़वा व खुशबूदार। पहि०-एक घास की जड़ है जो बारीक तिनके के बराबर होती है। स्व०-गर्म खुश्क २। बाजोंके नजदीक सर्द है। मात्रा-४माशे।

गुण व कार्य—फरहत देती है, दिल व मेदे और दिमाग को कुब्बत देती है, खफकान व सैलान मनी व सुरअत इंजाल (जल्दी गिरने मनी के) को नफा करती है। खून साफ करती है, इस पर पानी डाल कर सूंघना दिमाग को फरहत देता है, इसका लेप दांतों को मुफीद है। खून के जोश और सोजिश को दूर करता है, इसका इत्र दिल व दिमाग को फरहत देता है और गर्मी के शिर दर्द को खोता है।

(जहरीली नहीं)

३२७—खशखश सफेद

प्र०-खशखश सफेद। सं०-अहिफेन बीजम्। फा०-कोकनार व खशखाश सफेद। अ०-बजरुल खशखाश उल बस्ताने। रंग-सफेद। स्वाद-फीकी व कुछ मीठी। पहि०-पोश्ते का दाना प्रसिद्ध है। स्वभाव-सर्द २ तर १। हानि-फेफड़े व सर्द मिजाज को। दर्पघ्न-शकर व शहद। प्रति०-तुख्म काहू। मात्रा-१ माशे।

गुण व कार्य—ऐजा को सुन्न व सुस्त करती है, नींद लाती है, पतले मवाद को पक्का करती है यानी मकरल उलकुवाम (पाग) करती है। सफराबी मादे को पुख्ता करती है, काबिज है सीने व हलक व फेफड़े की तरफ की खुश्की दूर करती है, गर्म खुश्क खांसी व तपेदिक जोक

जिगर को नफ़ा देता है, बदन को फ़रबे करती और बाह लाती है।

(ज़हरीला नहीं)

३२८—खशखाश स्याह

प्र०-खशखाश स्याह। सं०-कृष्णाहिफेन बीजम्। फ़ा०-खशखाश स्याह व कोकनार। अ०-बज़रुल खशखाश उलवरी। रंग-काला। स्वाद-कुछ कड़वी। पहि०-प्रसिद्ध है। स्वभाव-सर्द तर ३। हानि-दिमाग को। दर्पध्न-सौंफ। प्रति०-तुख्म काहू। मात्रा-४½ माशे।

गुण व कार्य—जिगर की गर्मी और सेलान रहम (योनि से पानी जाना) को नफ़ा करती है, दस्तों को जो कैसे हों पुराने हों बन्द करती है, सीने को पाक करती है और बूदार को सूंघना नींद को उड़ा देती है। (ज़हरीली नहीं)

३२९—खतमी

प्र० नाम-खतमी। फ़ा-तुख्म खतमी। अ०-बज़रुल खतमी। रंग-काला। स्वाद-फीका। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द तर १ हानि-मेदे और फेफड़े को। दर्प०-शहद व सौंफ प्रति०-खुब्बाज़ी व नीलोफर। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—माद्दा को पकाती व वरम को तहलील करती है, और मवाद को पकाती है। अज़ु को ढीला करती है, दर्द को तस्कीन देती है। तबिअत को नर्म करती है और ज़ातुलजम्ब व अलरिया और गर्म खांसी को मुफ़ीद है। इसके पत्ते वरमों को तहलील करते हैं। खास कर पिस्तान (स्तन) और मिक़अद (गुदा) के वरम को और मवाद व वरम को पकाती हैं।

(ज़हरीली नहीं)

३३०—खतमी के फूल

प्र० नाम-खतमी के फूल। फ़ा०-गुल खतमी। अ०-वरद व बवर्द उलजर्मी। रंग-बैंजनी स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द तर १। हानि-मेदे को। दप०-शहद। प्र०-खकसी (खूब कला) मात्रा-२ तोले।

गुण व कार्य—माद्दे को पकाता है और मवाद को पकाता है, वरम को तहलील करता है। दर्द को तस्कीन देता है, और पाशोयामें इसका शरीक करना दिमाग़ पर अबखरे चढ़ने को नफ़ा देता है, और शिर दर्द को नफ़ा देता है।

(ज़हरीली नहीं)

३३१—खतमी की जड़

प्र० नाम-खतमी की जड़। फ़ा०-रेशा खतमी व बेखख़तमी। अ०-असलुल खतमी। रंग-भूरी। स्वाद-फीकी। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द-तर १। हानि-मेदे को। दर्प०-सौंफ। प्रति०-खुब्बाज़ी। मात्रा-५ माशा से ६ माशा तक।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करती है। मरोड़ को तस्कीन देती है, पेचिश को नफ़ा करती है, सफ़रावी दस्तों व पेशाब की सोजिश व चिनक को आंतों की खराश व सोजिश को मुफ़ीद है। गर्मी की खांसी को नफ़ा करती है, पेट को गुंग कर देती है।

(ज़हरीली नहीं)

३३२—खुब्बाज़ी व नानकलाग़

प्र०-खुब्बाज़ी। स०-चांगेरी। फ़ा०-खुब्बाज़ी व नान कलाग़। अ०-खुब्बाज़ी। रंग-पत्ते हरे फूल और बीज भूरा व जड़ पीली। स्वाद-पत्ते

कड़वे फूल व बीज व जड़ फीकी। पहि०-एक घास है जो खतमी से मिलती हुई होती है। स्व०-सर्द तर १। हानि-सर्द तर मिजाज वाले को और मेदे को। दर्प०-तुर्शी। प्र०-खतमी मात्रा-९ माशे।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करती है, और माद्दे को मौतदिल उलक़वाम (पाग) करती है। जिगर का सुद्दा खोलती है। इसका जोशान्दा शकर के साथ खांसी और तंगी आवाज (आवाज पड़ जाने) को नफा देता है और तिहाल के दर्द व वरम और यरकां व खुश्क खुजली और आंतों के जख्म को मुफीद है। पेचिश व मसाने के जख्म और पेशाब की सोजिश को नफा देती है, और अक्सर हैवानों (जानवरों) के जहर को मारने वाली है।

(जहरीली नहीं)

२३३—खूबकलां

प्र० नाम-खूबकलां। फा०-खाकसी। अ०-हब्बह। रंग-भूरी जर्दी मायल। स्वाद-फीका। प०-एक दाना खशखश के बराबर प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म १ व तर १। हानि-शिर दर्द पैदा करती है। द०-कतीरा। प्र०-बाहके लिये तोदरीके बराबर है। मात्रा-६ से ९ माशे तक।

गुण व कार्य—बाह जियादा करती है, भूख बढ़ाती है। वरम व रियाह को तहलील करती है, मेदे को कुव्वत देती है, हाजमे की ताकत को बढ़ाती है, चेचक व खसरा को नफा करती है, सुद्दा खोलती है और मसामात को भी खोलती है, मुंह यानी रंग रुखसार को साफ करती है और किसी मुनासिब खमीरे के साथ पुरानी खांसी व बुखार को मुफीद है और दूध के साथ बदन को फरबे करता है।

(जहरीली नहीं)

२३४—खुबानी

प्र० नाम-खुबानी। फा०-जर्द आलू व शकर बादाम। अ०-मशमश। रंग-पीला। स्वाद-मीठा। पहि०-एक फल आलुबुखारे के बराबर होता है। स्व०-गर्म तर २। हानि-नफाक है जल्द सड़ जाता है। दर्प०-शकर व सिकंजबीन। प्र०-आलू।

गुण व कार्य—सफरा को दस्त की राह निकालती है, प्यास व जोश खून को तस्कीन देती है। और माद्दे को मौतदिल उल क़वाम (पाक) करती है। तबियत को और सख्तियों को नरम करती है। सुद्दा खोलती है। सफरावी व खूनी बुखारों को नफा देती है, इसकी गिरी बवासीर को नाफे है और कुव्वत देती है व पेट के कीड़े मारती है।

(जहरीला नहीं)

बाबुल दाल (द)

२३५—दाब

प्र०-दाब। सं०-दाभ या दर्भ। रंग-पीला। स्वाद-फीका। पहि०-एक तिनका है जो बहुत सख्त और कांटे सा पांव में चुभता है। स्व०-सर्द।

गुण व कार्य—मुश्किल से पेशाब आने को मुफीद है, मसाने की पथरी तोड़ता है, बलगम व सफरा और खून (कफ,वात,पित्त) के फिसाद को दूर करता है—मसाने के दर्द और प्यास को तस्कीन देता है और गुदा के दर्दों को मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

३३६—दातून

प्र० नाम-दातून। सं०-दन्ती। फ़ा०-बेख़ वेद अंजीर खताइ। अ०-असल हब्बुल सलातीन रंग-जर्दी माइल। स्वाद-कड़वा। पहि०-जमाल गोटे की जड़ मशहूर है। स्व०-गर्म खुश्क।

गुण व कार्य—बहुत तेज व गर्म है और हाजिम है व बलगम व खूनके फिसादको दूर करती है, जलंधर और अक्सर वरमों को मुफीद है, पेट के कीड़े मारता है और दस्तावर है।

(जहरीली नहीं)

३३७—दाढ़ी बरगद की

प्र०-डाढ़ी बरगद की। सं०-वट जटा। फ़ा०-रेशशः बरगद। अ०-लएहता उल तर्तास। रंग-जर्दी व सुर्खी मायल। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-बरगद के पेड़ की शाखों से रेशे निकल कर जमीन तक आ जाते हैं। स्व०-सर्द २ व खुश्क १। हानि-गुर्दे को। दर्प०-उन्नाव व वंशलोचन। प्रति०-रसौत व अकाकिया। मात्रा-४ मा०।

गुण व कार्य—काबिज है और खून बन्द कर देती है, सफराबी व खूनी दस्तों को और फेफड़े के जख्म को मुफीद है, मेदे को कुव्वत देती है। इसका खिसांदा पीना नामर्दी पैदा करता है, इसका लेप वरमों को तहलील करता व जख्मों को पाक करता और भर लाता है।

(जहरीला नहीं)

३३८—दालचीनी

प्र० नाम-दालचीनी। सं०-त्वक्। फा०-दारचीनी। अ०-दारसीनी। रंग-सुर्खी मायल। स्वाद-मीठी व तेज बू। पहि०-एक पेड़ की लकड़ी की बकली मशहूर है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-मसाने और शिर दर्द को पैदा करती है। दर्प०-मस्तगी व कतीरा। प्र०-कबाबा व तज। मात्रा-४ से ७ मा० तक।

गुण व कार्य—रूह को लताफ़त बख्शती है, सुद्दा खोलती है, फरहत देती है, और हर खिलत के मौतदिल उलक़ग़ाम (पाग) करने वाली है, अरवाह और कवी की हिफाजत करती है, रियाह को तहलील करती है, पेशाब व हैज को जारी करती है, बाहको कुव्वत देती है, खफ़कान व जलंधर और जनून को मुफीद है, इसका तेल सर्दी की बीमारियों व दर्दों और वरमों व शिर दर्दको मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

३३९—दामन (धामन)

प्र०-दामन व दहामन। सं० धव। रंग-पत्ते सब्ज़ शाखहरी। स्वाद-कड़वा। प०-एक बहुत कांटेदार दरख्त है। स्व०-सर्द।

गुण व कार्य—बलगम व सफ़रा और खून के फिसाद को दूर करता है, बवासीर और बदन की जर्दी को नफा करता है।

(जहरीला नहीं)

३४०—दांत हाथी का

प्र०-दांत हाथी का। सं०-हस्ति दंतम्। फा०-दन्दाँ फील। अ०-आज। रंग-सफेद। स्वाद-फीका व तेज। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द व खुश्क २। हानि-फेफडे को। दर्पघ्न-शीरा व सनोवर। प्र०-शाख बज़। मात्रा—२ मा०।

गुण व कार्य—इसका बुरादा शहद के साथ कुव्वत हाफिज़ा (याददाश्त) व बहम को कुव्वत देता है। दस्तों और खून बहने को बन्द करता है।

इसका तिला बाह को कुव्वत देता है जबकि और मुनासिब दवायें उसमें मिली होवे। हैज के बाद इसको मिश्री के साथ खाना हमल रहने में मदद करता है, इसका मुहरा गले में लटकाना सरअ (मृगी) और अम्मुल सिबिया को मुफीद है। इसका सुर्मा आंखों को जिला देता है और बीनाई को क़वी करता है।

(जहरीला नहीं)

३४१—दिरमनः

प्र० नाम-दरमनः। फा०-दिरमनः। अ०-खशरक व शीह। रंग-पत्ते भूरे जर्दी मायल, फूल सुर्ख व जर्द। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक घास सोये के बराबर पत्ते सुद्दावके से है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-शिर व मेदे और पट्ठोंको। दर्पघ्न-मस्तगी व वनफ्शा। प्र०-अफ़संतीन व बायविडंग। मात्रा-१ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलती है और बलग़म को छांटती है, वरमों को तहलील करती है। पेशाब व हैज को जारी करती है, पेट के कीड़े मार कर निकालती है, फासिद खिलतों को दस्त की राह निकालती है, तबियत को लताफत देती है। माद्दे को मौतदिल उलकवाम (पाग) करती है, बाह लाती है, कूल्ज के दर्द और मुरक्कब बुखार को व पेशाब बन्द हो जाने और हिचकी को नफा देती है। इसकी चुटकी मुंह की खुजली को मुफीद है। (ग़ैरसमी क़र्बउल जरर है)

३४२—दरूनज

प्र० नाम-दरवंज। फा०-दरूनज। अ०-दरूनज अकरबी। रंग-कुछभूरा। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-बिच्छू की तरह एक गिरहदार जड़ है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वाले को और दर्द सर पैदा करती है। दर्पघ्न-सोंफ और बसबासा। प्रति०-नरकचूर व लौंग। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—बलग़म व सौदा और ग़लीज रियाह को तहलील करती है, हवास व दिल को कुव्वत देती है, मेदे व तिहाल और कुव्वत हाजमे को ताकत देती है, तबियत को तस्कीन देती है, शकर के साथ, बलग़म, शिरदर्द व सीने के दर्द को और अक्सर बलग़मी व सौदावी मर्जों को नफा देती है, सुद्दा खोलती है, अक्सर जहरों के मारने वाली है, हमल की हिफाजत करती है।

(जहरीली नहीं है)

३४३—दंदाद

प्र० नाम-दन्दाद। रंग-कुछ पीला व लाल। स्वाद-कड़वा व कुछ मीठा। पहि०-एक घास का दाना है, जिसके पत्ते कोकनार के से होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क२। हानि-सीना को। दर्पघ्न-समगर्बी। प्र०-रेंडी। मात्रा-१ रत्ती।

गुण व कार्य—बलग़मी माद्दे को दस्तों की राह निकालता है, बच्चों की सर्द बीमारियों को मुफीद है। (ज़हरीली नहीं है)

४४—दूब

प्र०-दूब। सं०-दूर्वा। फा०-मुर्ग व फरेफ। अ०-आव व अशव। रंग-हरी व व.जी सफेद। स्वाद-कुछ कड़वी व कषैली। पहि०-एक मशहूर घास है जिसमें फल फूल नहीं होता। स्व०-सर्द। हानि-कै लाती है।

गुण व कार्य—मुंह के जोश व दांतों व बलगम व सफ़रा और खून के फिसाद को दफै करती

है, पेशाब को जारी करती है, हैजे को नफा देती है, गर्मी के वरमों को तहलील करती है, इसका लेप वरमों और खुजलीको मुफीद है, इसकेजोशान्दे की कुल्ली कराना मुंहां आने को मुफीद है। माथे पर इसका लेप करने से नकसीर को बन्द करती है। (जहरीली नहीं)

६४५—दूधी

प्र०-दूधी। स०-दुग्धी। फ़ा०-शीर ग्याह व गोस्पंद। रंग-हरी। स्वाद-कड़वी। पहि०-एक घास है,जिसमेंसे दूध निकलता है। स्व०-गर्म१ खुश्क२। हानि-फेफड़े को।

गुण व कार्य—बलगमके फिसादको दूर करती है, जुजाम यानी कोढ़ व बवासीर, सोजाक और जिर्यान को फ़ायदेमन्द है, व पेट के कीड़े मारती है खांसी को नफा देती है।

(जहरीली नहीं)

६४६—दूध उँटनी का

प्र० नाम-दूध ऊंटनी। सं०-उष्ट्रिका दुग्धम्। फा०-शीर शुतर। अ०-जवन उललुक़ाह। रंग-सफेद स्याही मायल। स्वाद-कुछ खारा पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म मायल व खुश्की। हानि-मेदे में देर में उतरता है और प्यास लाता है। दर्पघ्न-शकर। प्रति०-गाय का दूध। मात्रा-आध पाव।

गुण व कार्य—जिला करता है, माद्दे को पाग करता है, जिस्म को ताकत देता है, सुद्दा खालता है। बातनी (भीतरी) वरमों को तहलील करता है, जलंधर व क़ै व दमें और घासको फायदेमद है।

(जहरीला नहीं)

६४६—दूध बकरी का

प्र०-दूध बकरीका। सं०-अजा दुग्धम्। फा०-शीर बुज़। अ०-लवन उलमाग़ार। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ मीठा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्दतर मायल व कुछ हरारत। हानि-नफ़ाक़ और सर्द मिज़ाज वालों को। दर्प०-शहद व सौंफ। प्रति०-गाय का दूध। मात्रा-पाव भर।

गुण व कार्य—लताफत देता है, जिला करता है, मुंह से खून आने व खांसी, सिल, फेफड़े के जख्म, हलक की खराश, मसाने के जख्म और खुनाक़ (हलक का रोग) को मुफीद है, पेशाब लाता है। पेट को नर्म व मौतदिल करता है, इसका ग़रग़रा हलक की बीमारी को खास तौर पर मुफीद है, गर्म मिजाज वालों को ताक़त है और अक्सर गर्मी की बीमारी को फायदेमन्द है।

(जहरीला नहीं)

६४८—दूध भैंस का

प्र०-दूध भैंस का। सं०-महषी दुग्धम्। फ़ा०-शीर गाव मैश। अ०-लवन उल जामूश। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ मीठा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-मातदिल साथ ग़लज़त व रतूबत के। हानि-देर हजम व सकील है। द०-शकर। प्र०-गाय का दूध। मात्रा-ऽ॥।

गुण व कार्य—बदन को फरबे करता है और अक्सर ऐजा को ताकत देता है व फरहत देता है, खून बहुत पैदा करता है और जो खिलत बदन में ग़ालिब हो उसकी तरफ मायल हो जाता है, अगर इसमें कंघी की लकड़ी की जोश करके दही जमाकर मिश्री के साथ खावें तो बवासीर को नफा देता है।

(जहरीला नहीं)

३४९---दूध भेड़ का

प्र०-दूध भेड़का। सं०-आविका दुग्धं। फ़ा०-शीर मैश व शीरगोशफ़न्द। अ०-लवन उलजान। रंग-सफेद व कुछ स्याह। स्वाद-फीका व बूदार। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्मतर। हानि-आंतों में गुड़गुड़ाहट व कुलंज पैदा करता है। दर्प०-रोगन बादाम और शहद। प्रति०-औरत का दूध। मात्रा १ तो०।

गुण व कार्य—जौहर दिमाग व हराम मग़ज़ और बाह को कुव्वत देता है, आंतों के जख्म व मुंह से खून आने को और पेचिश को मुफीद है, सभी (जहरीली) दवाइयों के नुकसान को दूर करता है, जमाअ (सुहबत) के नुकसान का इसलाह करता है, बादाम रोग़न और बबूल के गोंद के साथ खांसी और सुहबत के नुकसान को मुफीद और मुजर्रब है।

(जहरीला नहीं)

३५०---दूध चिमगादर का

प्र०-दूध चिमगादर का। सं०-निशाचर दुग्धं फ़ा०-शीरसब परह। अ०-लबन उलखफ़ाश रग-सफेद व जर्दीमायल। स्वाद-तेज व कुछ कड़वा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्दतर। हानि-फेफड़े व तिहाल को। दर्प०-रोगन बादाम। प्र०-शेरनी का दूध। मात्रा-६ मा०।

गुण व कार्य—पेशाब खूब लाता है, निहायत जिला करता है, बदन में जल्द जारी होता है इसीलिये इसका खाना जायज़ है, इसका तिला लिंग और बाह को कुव्वत देता है।

(जहरीला नहीं)

३५१---दूध सूरनी का

प्र० नाम-दूध सूरनी का। सं०-सूकरीदुग्धं फ़ा०-शीर खोक। अ०-लबन उलखंजीर। रंग-सफेद जर्दी मायल। स्वाद-कुछ मीठा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्दतर१। हानि-नफ़ाख व देरहजम है व सफेद दाग पैदा करता है। दर्प०-कन्द। प्र०-गधी का दूध।

गुण व कार्य—बदनको फरबै और कवीकरता है, सिल व दिक को नफ़ा देता है, अकसर चर्मरोग पैदा करता है, फिरंगी लोग उसकी बहुत तारीफ करते हैं और अक्सर इस्तैमाल करते हैं, दिमाग़ को कुव्वत देने वाला बताते हैं, किसी कदर सही और आजमूदा है।

(जहरीला नहीं)

३५२---शेरनी का दूध

प्र०-दूध शेरनी का। सं०-सिंहिनी दुग्धं। फ़ा०-शीर शेर। अ०-लबन उलअसद। रंग-जर्दी मायल। स्वाद-तेज व खट्टा। प०-प्रसिद्धहै। स्व०-गर्म ३। हानि-जख्म डाल देता है।

गुण व कार्य—निहायत जिला करता है और बहुत जल्द हजम होता है, और शिर व दिमाग की बाज़ी बीमारियों को मुफीद है।

(जहरीला है)

५३—दूध औरत का

प्र०-दूध औरत का। सं०-स्त्री दुग्धम्। फ़ा०-शीरजन। अ०-लबन उलनिशा। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ मीठा। प०-प्रसिद्धहै। स्व०-लड़की वाली कागर्मतर व लड़के वालीका सर्दतर। हानि-जल्दसड़ जाता है। द०-शकर व शहद। प्र०-गधीका दूध।

गुण व कार्य—रतूबत लाता है, दिमाग व बाह को कुव्वत देता है, पेशाब लाता है। पेशानी(माथे) का सुद्दा खोलता है, तबिअत को नर्म करता है, सीने की खुश्की व खुश्क खांसी को फायदमन्द है, उसका नाक में सुड़कना बेख्वाबी (नींद न आने) और दिमाग की खुश्की को नफा करता है, और अक्सर दिमागी बीमारी मसलन जनून व मालीखोलिया व सरसाम वगैरा व सिल और दिक़ को नफा देता है। (जहरीला नहीं)

३५४—दूध गाय का

प्र०-दूध गाय का। सं०-गोदुग्धं। फ़ा०-शीर गाव। अ०-लबन उलबक़र। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ मीठा। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-मातदिल रतूबत फुजलिया के साथ। हानि-तिहाल व पेट के ऐजा को। दर्पघ्न-शकर व शहद। प्र०-बकरी का दूध मात्रा-आध पाव से ६ छटांक तक।

गुण व कार्य—उम्दागिज़ा है और जल्द हजम होता है, मनी पैदा करता है, दिल व दिमाग को कुव्वत देता है, तबिअत को नर्म करता है, बदन को फरबे करता है, जिला करता है, सुद्दा खोलता है, बाह लाता है. गम व वसवास (वहम) को दूर करता है, खफकान को नफा देता है, सिल व दिक़ और फेफड़े के जख्म को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

३५५—दूध गधी का

प्र०-दूध गधी का। सं०-गर्दभी दुग्धं। फ़ा०-शीर खर। अ०-लबन उल अतान। रंग-सफेद। स्वाद-मीठा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द २, तर ३। हानि-सर्द व बलगमी मिजाज को। दर्प०-गुलकन्द। प्र०-गाय या बकरी का दूध। मात्रा-ऽ- से ऽ= तक।

गुण व कार्य—तरी व सर्दी पैदा करता है, फरहत देता है, जिला करता है, सुद्दा व मसाम खोलता है। गर्म मिजाज वाले के दिल व दिमाग को ताकत देता है। दिल व दिक़ और फेफड़े के जख्म को बहुत मुफीद है। गर्मी के बुखारों व गर्मी की खांसी को नफा करता है। मुंहसे खून आने व सांस चलने और खफ़क़ान को मुफीद है, जलंधर और लागरी (कमजोरी) को दूर करता है। फिरंगी लोग इसके बहुत गुण बयान करते हैं और अक्सर इस्तैमाल में भी लाते हैं। (जहरीला नहीं)

३५६—दूध घोड़ी का

प्र०-दूध घोड़ी का। सं०-अश्वी दुग्धं। फ़ा०-शीर अस्प। अ०-लबन उलरमाक। रंग-सफेद स्वाद-कुछ खारा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म तर। हानि-नफ़ाक है और पेटमें गुड़गुड़ाहट लाता है। दर्प०-सौंफ व शहद। प्रति०-दूध ऊंटनी का। मात्रा-छटांक भर।

गुण व कार्य—जिला करता व सुद्दा खोलता है फरहत देता है, भूख व बाह जियादा करता है। पेशाब लाताहै। मसानेके जख्म और मुजारी पेशाब (पेशाब की जहग) को मुफीद है। हैजको जारी करता है। रहमके जख्मको नफा देता है। इसकलत्ता तर किया हुआ रखना हमल कायम होने के लिये ठीक २ मदद देता है। उसका पीना चेचक नहीं होने देता। (जहरीला नहीं)

३५७—दूध गोरखर का

प्र०-दूध गोरखरका। सं०-गर्दभभेदः(खिच्चरेतिलेके) दुग्धं। फ़ा०-शीर गोरखर। अ०-लबन उलजमार

उलवशी।रंग-सफेद ।स्वाद-फीका।प०-प्रसिद्ध है।स्व०-गर्मतर १ । हानि-नफ़ाख़ (अफारा करने वाला) है ।दर्पघ्न-सौंफ व शहद । प्रति०-घोड़ी का दूध । मात्रा ऽ-

गुण व कार्य—मुक़व्वी बाह है व लताफ़त बख़्शता है, पेशाब लाता है, जिला करता है, अपने गुणों में घोड़ी के दूध के क़रीब २ बराबर है,उससे अधिक गर्म है । (जहरीला नहीं)

३५८—दूध हरिनी का

प्र०-हरिनी का दूध । सं०-मृगी दुग्ध । फा०-शीर आहू । अ०-लबनउलग़ज़ाल । रंग-सफेद स्वाद-फीका । पहि०-प्रसिद्ध है । स्व०-गर्मतर २ । हानि-नफ़ाख़ है । दर्पघ्न-सौंफ व शहद । प्र०-दूध गोरखर । मात्रा-१ छटांक ।

गुण व कार्य—इसके गुण करीब २ गोरखर के दूध के बराबर है । (जहरीला नहीं)

३५९—दोनामरुवा

प्र०-दोना मरुवा । सं०-मरुवक । फा०-मर्ज़ंजोश । अ०-मर्ज़न जूश । रंग-फूल सफेद । बीज काले, पत्ते हरे । स्वाद-कड़वा। प०-एक घास खुशबूदार है जो तुलसी की जात की है । स्व०-गर्म २ खुश्क १ । हानि-गुर्दे और मसाने को । दप०-कासनी और खुरफा । प्र०-अफ० सन्तीन व कलौंजी । मात्रा-६ माशे ।

गुण व कार्य—लताफ़त करता है वरमोंको तहलील करता है । सुद्दा खालता है जिला करता है । रतूबत को जज़्ब करता है, मसाने व गुर्दे की पथरी तोड़ता है, लकुवा व रीढ़दर्द व सरको मुफीद है, दिमाग़ी रतूबत को छांटता है, छीनेके दर्द व दमे व रियाही कुलंज व जिगर व तिहाल के सुद्दे को और जलंधर को मुफीद है, दिमाग को पाक करता है, इसका सूंघना जुकाम व फ़ालिज और सुबात यानी बहुत सोने को मुफीद है ।

(जहरीला नहीं)

३६०—ढाक का पत्ता

प्र०-ढाक का पत्ता । सं०-पलास पत्रम् । फा०-बर्ग पला । रंग-हरा । स्वाद-फीका । पहि०-एक जंगली पेड़ का बड़ा और गोल पत्ता है । स्व०-पत्ते व फूल गर्म तर १ ।

गुण व कार्य—भूख खूब लाता है, फोड़े फुन्सी और रियाह को तहलील करता है, कुलंज व बवासीर और पेट के कीड़ों को मुफीद है, इसके फूल क़ाबिज हैं । बलग़म को दूर करता है, पेशाब जारी करते हैं । पालोदा में शरीक करने से दिमाग पर अबख़रे नहीं चढ़ने देता, वरमों को तहलील करते हैं । फूल का क़तूर (बूंद) टपकाना आंख के जाले को फ़ायदा करता है । फूल के तरेड़ा और सेंकना फोतों के बढ़ जाने को फायदेमन्द है ।

(जहरीली नहीं)

३६१—ढाक का गोंद व चुनिया गोंद

प्र०-ढाक का गोंद व चुनियां गोंद । सं०-पलाश निर्यासम् । फा०-हुक्म-कवाच पला । रंग-सुर्ख व सफेद । स्वाद-फीका व लसदार । प०-एक तरह का रेजा रेजा गोंद है । स्व०-गर्म तर १ । दर्प०-भूनना । प्र०-बबूल का गोंद ।

गुण व कार्य—गुर्दे की बीमारी और बवासीर को नफा देता है, मनी को गाढ़ा करता है, काबिज है सौदा व बलग़मको कम करता है । इसकी राख का घुला हुवा पानी वरम तिहाल और अफारे के लिए आज़मूदा है । (जहरीला नहीं)

३६२—ढांक के बीज

प्र०-ढांकके बीज । सं०-पलास पापड़ा । फा०-तुख्म पला । रंग-बाहर का छिलका भूरा अंदर स्याह । स्वा०-कुछ कड़वा । प०-ढांक का बीज है। स्व०-गर्म खुश्क २ । हानि-फेफड़े को । मात्रा—३ माशे ।

गुण व कार्य—इसके पीने से बबासीर और पेट के कीड़े दूर होते हैं । इसका तेल बाह को हरकत देता है । (जहरीले नहीं)

३६३---धावा) धाय)

प्र०-धावा । सं०-धातकी रंग-पीला स्वाद-कुछ कसैला। पहि०-एक पेड़ हिन्दी जिसके फूल काम में आते हैं । स्व०-सर्द २ खुश्क ३ । मात्रा-४ माशे ।

गुण व कार्य—काबिज है, पेट के कीड़ों को मारता है । भूख लाता है, दस्तों को बन्द करता है । इसके जोशान्दे में बैठना खराज मिक़अद (गुदा का बाहर निकलना कांच निकलना) को मुफीद है, जिर्यान और शीघ्रपतन को नफा करता है । (जहरीला नहीं)

३६४---धावे के फूल

प्र०-धावे के फूल । सं०-धातकी पुष्पम् । रंग-लाल । स्वाद-कड़वा । प०-प्रसिद्ध है । स्व०-सर्द व खुश्क ३ । हानि-बलगम पैदा करता है ।

गुण व कार्य—इसके फूल सब तरह के दस्तों को मुफीद है और भूख को नफा देते हैं ।

(जहरीला नहीं)

३६५---धतूरा

प्र० नाम-धतूरा । सं०-कितव । फा०-नातूरा अ०-जोज़ल मासल । रंग-हरा व काला । स्वाद-कड़वा । पहि०-एक बहुत छोटे पेड़ का कांटेदार फल है, जिसका पेड़ बैंगन के पेड़ सा और उसके बराबर होता है । स्व०-सर्द व खुश्क ४। हानि-नशा बहुत लाता व जनून और फिक्र पैदा करता है । दर्पघ्न-सौंफ व स्याह मिर्च व शहद। प्र०-सेव व बजरुल बंज । मात्रा-३ रत्ती ।

गुण व कार्य—ऐजा में खासकर दिमाग़ में बहुत सुस्ती लाता है, नशा बहुत करता है, नींद खूब लाता है । शिर दर्द जो सफरा या खूनकी सिद्दत से हो तस्कीन देता है, मादे के वरम को पुख्ता करता है, रतूबत फुज़ालियाको खुश्क करता है, इमसाक लाता है । इसके पत्तों का लेप ऐजा के ऐंठन को मुफीद है । (३ रत्ती से ज्यादा क़ातिल है)

३६६---धमासा

प्र०-धमासा । रंग-हरा । स्वाद-कड़वा व तेज। प०-तरकारी के तौर की एक घास है । स्व०-मातदिल । हानि-फेफड़े को । दर्प०-अफसंतीन ।

गुण व कार्य—बुखार की गर्मी व शिर घूमने को व जलंधर और जिर्यानमनी को नफा देता है। खून साफ करता है, और दमेको मुफीद है । प्यास को तस्कीन देता है,मेदे और जिगर को कुव्वत देता है । (जहरीला नहीं)

३६७---धनिया

प्र०-धनिया । सं०-धान्यक । फा०-कशनीज। अ०-कजबरा । रंग-दाना भूरा साग हरा । स्वाद-फीका व खुशबूदार । प०-प्रसिद्ध है । स्व०-सर्द खुश्क २ । हानि-मनी को कम करता व निसीयान व सदर पैदा करता है । दर्पघ्न-सिकंजबीन व शहद

व सफरजल। प्र०-तुख्मकाहू व खशखाश। मात्रा-६ मा० से १ तोला तक।

गुण व कार्य—फरहत लाता है और दिल व दिमाग को कुव्वत देता है। दिमाग पर अवखरे चढ़ने से रोकता है, खफकान व विशवास (वहम) को मुफीद है। मेदे को कुव्वत देता है, दस्तों को बन्द करता है, जिर्यान व मनी को लाभ देता है। नींद लाता है, ताजा धनियां रद्दी माद्दे को पकाता है, और सफरा को तस्कीन देता है, इसकी कुल्ली मुंह के जोश और गले के दर्द को नफा करती है, अक्सर दिमागी बीमारियों को नफा करती है।

(जहरीली नहीं)

३६८---दहानाफरंग

फा०-दहना फरंग। अ०-धंज। रंग-हरा व ताऊसी व बुर्राक़। स्वाद-फीका। प०-एक मशहूर पत्थर है, जिसके नग बनते हैं। स्व०-गर्म खुश्क ४ हानि-आंतों में जख्म डालता है। दर्पघ्न-घी। प्र०-फ़ीरोजा।

गुण व कार्य—अक्सर जहरों को मारने वाला है. इसका सुर्मा बीनाई को कुव्वत देता है, इसका नाक में सुड़कना मृगी को मुफीद है, सिर्के के साथ इसका लेप दाद व सफेद और काले दाग को नफा देता है। (सम क़ातिल है, खाना जायज नहीं)

३६९—ढेंडस

प्र०-ढेंडस। सं०-ढिंढसा। रंग-हरा जर्दी मायल। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक फल तरकारी की किस्म का खिद्दी के बराबर होता है। स्व०-गर्म। हानि-अफ़ारा करता है। दर्प०-गर्म मसाला। प्र०-अम्बा हल्दी।

गुण व कार्य—सफरा को नफा करता है। व बलगम पैदा करता है देर हजम है, गोश्त के साथ बुखार को नफा देता है। जमीअ अफ़आल (कुल गुणों) में लौकी की तरह है, दिमागको कुव्वत देता है।

(जहरीला नहीं)

३७०---दही

प्र०-दही। सं०-दधि। फा०-जागरात व मासत अ०-लबन उल हामिज। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ खट्टा। पहि०-दूध में जामन देके जमाते हैं, मशहूर है। स्व०-सर्द तर २। हानि-सर्द मिजाज वालों को और मेदे को। दर्प०-नमक व सोंठ व पौदीना व जीरा। प्र०-पनीर।

गुण व कार्य—रतूबत बढ़ता है, प्यास को तस्कीन देता है। गर्म मिजाज वालों के बाह को कुव्वत देता है। इसमें मट्ठे से बहुत आहारत्व है। देर हजम है, सुद्दा लाता है, दहीके ऊपर की मलाई शिरपर मलना रोगनमगजकद्दूके बराबर गुण करता है और अगर चेहरे पर मलें तो खुश्की व स्याही और झाँई को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

३७१--देवदारु व चीड़

प्र०-देवदारु। सं०-देवदारु। फा०-देवदार। अ०-शजरतुः उलजन। रंग-लकड़ी कुछ लाल व पत्ते हरे। स्व०-कड़वा व तेज और तेज बू। प०-एक बहुत बड़ा व लम्बा व सीधा पेड़ है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-फेफड़े को। दर्प०-कतीरा व रोगन बादाम।

गुण व कार्य—मवाद को पकाता है। रियाह व वरमों को तहलील करता है जो सर्दी से हों, दर्दों को तस्कीन देता है। गुर्दे व मसाने की पथरी को

तोड़ता है। फालिज व लकुवा व सकता और इस तरखा (बदन ढीला होना) को मुफीद है, इसकी लकड़ी के जोशान्दे में बैठना गुदा के जख्मों को मुफीद है। (जहरीली नहीं)

३७२—देगचून (ताम्र चूर्ण)

प्र०-देगचून। सं०-ताम्र चूर्ण। फ़ा०-सफ़ाल मिस। अ०-क़तूबाल उलख़ास। रंग-सुर्ख व बुर्राक स्वाद-कसैला। पहि०-तांबे के चूरे को कहते हैं। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-आंतों में जख्म डालता है, खराश पैदा करता है। मात्रा-$1\frac{3}{4}$ माशे।

गुण व कार्य जिला करता है और लताफत बढ़ाता है। पेचिश को मुफीद है, जख्मों के फैलने को रोकता है। तर व खुश्क खुजली को नफा देता है। और जरक और आंखके जाले को मुफीद है व रद्दी मवाद को छांटता है, और माद्दा बलगमी के बराह दस्त निकालता है। बिना भस्म किये या शुद्ध किये खाना जायज़ नहीं।

(जहरीला नहीं)

बाबुल रे (र)

३७३—राब

प्र०-राब। सं०-मत्स्यंडिका। फ़ा०-अफ़शरदह मकूम नेशकर। रंग-सुर्ख। स्वाद-मीठा। प०-गन्ने के रस को पकाकर बनाते हैं, कुछ गलीज़ होता है। स्व०-गर्म तर। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्प०-खटाई। प्र०-गुड़।

गुण व कार्य—अक्सर ऐज़ा को कुव्वत देती है और तीनों खिलतों यानी सफ़रा व सौदा व खून को साफ करती है और पसीना खूब लाती है।

(जहरीली नहीं)

३७४—रातिंज

अ०-रातिंज। रंग-सफेदी मायल व जर्दी व स्याह जर्दी मायल। स्वाद-कड़वा। प०-सरु यानी सनोबर का गोंद है जो तीन तरह का यानी पतला व जमा हुआ और जमाया हुआ होता है। स्व०-गर्म व खुश्क। हानि-वरम पैदा करता है। दर्प०-कुलफे का रस। प्र०-अलकुल बतम। मात्रा-$1\frac{1}{4}$ मा०।

गुण व कार्य—अंडेकी जर्दी के साथ दमे और खुश्क खांसको मुफीद है, जियाबतमनी (क्षीणता) को दूर करता है, दाढ़ के तले इसका दबाना तर खांसी को नफा देता है, तमाखू की तरह हुक्के में पीना फेफड़े के जख्म व खांसी व घाँव के लिये अजीब नफा देता है। (जहरीला नहीं)

७५—राज अम्बर

प्र०-राज अम्बर। स्वाद-मीठा। पहि०-एक हिन्दुस्तानी मेवा है। स्व०-सर्दतर। हानि-क़ाबिज है।

गुण व कार्य—बलग़म व सफ़रा के फ़िसाद को दूर करता है। (जहरीली नहीं)

३७६—रासना

प्र०-रासना फ़ा०-रासन। अ०-जंजबील शामी रंग-खूब सुर्ख व बुर्राक। स्वाद-तेज व तेज बू। पहि०-एक घास की जड़ सूंठके मानिन्द है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। द०-खट्टा अनार व खमीरे व बनफशा। हानि-ऐरसा व बच। मात्रा-५ मा०।

गुण व कार्य—फरहत लाती है, दिल व फम मेदा व कुव्वत हाजिमे व बाह और मसाने को क़वी करती है। मिराक़ी मालिखौलिया व वहशत और ग़म को दफै करती है, जिगर का सुद्दा खोलती

है, रियाह को तहलील करती है।

(जहरीली नहीं)

३७७—राल

प्र०-राल। सं०-सालनिर्यास। फा०-लालमग़रवी। अ०-कैर व कीकहर। रंग-सफेद जर्दीमायल व स्याह। स्वाद-कड़वा व बदबूदार। प०-राल दो तरह की है, एक तो साल के पेड़का गोंद है, दूसरी खान से आती है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-फेफड़े व मेदे को। दर्पघ्न-शहद व खशखाश। मात्रा-६ मा०।

गुण व कार्य—वरम को तहलील करती है। जिला करती है, जख़म को भरती है और मवाद से पाक करती है व मवाद को पक्का करती है। मिर्गी व खुश्क खाँस और दमे को नफा देती व जलंधर को मुफ़ीद है, इसका मरहम पुराने फोड़ोंको मुफीद है, इसका लेप जख्मों और खुजली के निशानों को फ़ायदामन्द है।

(जहरीला नहीं)

३७८—राम तुलसी

प्र०-राम तुलसी। सं०-राम तुलसी। फा०-पलंग मुश्क। अ०-फ़रंज मुश्क। रंग-स्याह। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक किस्म की हिन्दी तुलसी है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-गर्म मिजाज वालों को शिर दर्द लाती है। द०-बनफसा व सिकंजबीन। प्र०-लौंग व बादरंज बोया। मात्रा-७ मा०।

गुण व कार्य—दिमाग़ का सुद्दा खोलती है। नाक के नथनोंको साफ़ करती है, दिल व जिगर को कुव्वत देती है। हाजिम है वरमों को तहलील करती है, खफ़कान व वहम सौदावी व बलग़मी

को नफ़ा देती है। भूख बढ़ाती है, पेचिश और मसूढ़ों के दर्द को तस्कीन देती है और दाँतों को मजबूत करती है।

(जहरीली नहीं)

३७९—रांगा

प्र० नाम-रांगा। सं०-बंग। फा०-अरज़ीर। अ०-रसासुल अबीज़। रंग-सफेद व बुर्राक़। स्वाद-कसैला व फीका। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द व खुश्क ३। हानि-क़ातिल है। दर्प०-कै करना व शहद। प्रति०-सुर्मा। मात्रा-१ रत्ती।

गुण व कार्य—इसका सुर्मा आँख की सुर्खी और पलकों की गन्दगी को दूर करता है, रोग़न गुल के साथ गुदा के वरम व बवासीर औरखुजली को नफ़ा करता है। इसका कुश्ता सोज़ाक को मुफीद है।

(सम क़ातल है)

३८०—राई

प्र०-राई। सं०-राजिका। अ०-खर्दल। रंग-सफेद व स्याह व सुर्ख। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक बहुत छोटा व बारीक दाना है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-नशा लाती है और जिल्द में जख्म करती है। दर्प०-काशनी व रोग़न बादाम प्र०-तुख्म सलजम व स्पन्द। मात्रा-६॥ मा०।

गुण व कार्य—बाह लाती है और कुव्वत देती है। निशात (खुशी) बख्शती है। मेदे के कीड़े मारकर निकालती है, जिला करती है, खून साफ करती है, सर्दी के नजलों को तस्कीन देती है। मेदे व कुव्वत हाजमा को कुव्वत देती है, रियाह को निकालती और तहलील करती है, पेशाब लाती है बलग़मी सरसाम व फ़ालिज व इस्तरखा (अंग ढीला होना) व रासा व सकता को मुफीद है, तेल के साथ इसका लेप इन्द्री पर करना बाह

को हरकत देता है और शहद के साथ घाँस और जिगर के दर्द को नफ़ा देती है।

(जहरीला नहीं)

३८१---राइफल व मोतिया व मोंगरा

प्र०-राइफल व मोतिया व मोंगरा। सं०-मौक्तिक पुष्पम्। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ कड़वा व खुशबूदार। प०-एक फूल है जो कई किस्मका होता है। स्व०-गर्मतर १।

गुण व कार्य—सफ़रा व तपेदिक की हरारत को तस्कीन देता है। हिचकी को दूर करता है, इसका सूंघना दिल व दिमाग को ताक़त देता है, इसका तेल पानी में डालकर बदन पर मलना खारिश व खुश्की दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

३८२---रतालू

प्र०-रतालू। सं०-रक्तालुकम्। रंग-भूराजर्दी मायल। स्वाद-फीका व कुछ मीठा। पहि०-जिमीकन्द की तरह एक जड़ है। स्व०-सर्दतर। हानि-देर हज़म। दर्पघ्न-गोश्त व गर्म मसाला।

गुण व कार्य—सफ़रा और हरारत को दूर करता है—मनी व कुव्वत बदन और बाह को जियादा करता है, फ़रबही लाता है, तबियत को नर्म करता है, सिवाय इसके कुव्वत क़ाबिज़ा के और गलीज़ रियाह पैदा करता है।

(ज़हरीला नहीं)

३८३---रतनजोत

प्र०-रतनजोत। सं०-रत्नजोत। फ़ा०-शंकार व धोचोवा। अ०-अबूल खसाय। रंग-पत्ते स्याह जड़ सुर्ख। स्वाद-कड़वा। प०-एक घास है जिसके पत्ते काहू के पत्तों कैसे होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-दिमाग़ को और शिर दर्द करता है। द०-रोग़न बनफशा व रोग़न कद्दू। प्र०-अक़ाक़वान। मात्रा-७ माशा।

गुण व कार्य—सफ़रावी व क़ड़वे खिलतों को तहलील करता है। फ़ालिज को नफ़ा देता है, दस्तों को बन्द करता है, हैज को जारी करता है। पथरी को तोड़ बहाता है। यरकां और तपे कोहना को मुफ़ीद है, इसका लेप वरम तिहाल को मुफ़ीद है और सफेद दाग़ व झाँई व चेहरे की स्याही और कंठमाला को नफ़ा देता है।

(जहरीला नहीं)

३८४---रुदराछ (रुद्राक्ष)

प्र० नाम-रुद्राक्ष। रंग-पत्ते हरे फूल भूरा। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक पेड़ है। जिसके सूखे फल की हिन्दूलोग माला बनाते हैं। स्वभाव-गर्मतर बाज़ों के नज़दीक सर्द है।

गुण व कार्य—ऐज़ा को कुव्वत बख्शता है। खिलतों के फिसाद को दूर करता है। बाह लाता है, कीड़ों को मारता है बच्चों की बीमारियों को और बलग़म व खांसी और प्रसूत को नफा देता है।

(जहरीला नहीं)

३८५---रुन्दती

प्र०-रुदन्ती। सं०-रुद्रवन्ती। रंग-हरा व भूरा। स्वाद-कुछ कड़वा। प०-एक घास है जिसके पत्ते चने के पत्ते से होते हैं। उस पर चींटियां रहती है और तराई में होती है। स्व०-गर्म व खुश्क १। हानि-नफाख है यानी अफारा करता है प्र०-नबात। मात्रा-३॥ माशे।

गुण व कार्य—बदन को कुव्वत देती है और फ़रबही लाती है व भूख बढ़ाती है। कुव्वत हाजिम

व बाह को कुव्वत देती है ऐजाये दिमागी और शिकमी को मुजिर है।

(जहरीली नहीं)

३८६--रस गन्ना

प्र०-रसगन्ना ।सं०-इक्षुरसम्। अ -अफ़सुर्दह नैशकर फ़ा०-उसारह कसाबुल सकर। रंग-सफेद गंदला। स्वाद-खूब मीठा। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म तर। हानि-नफ़ाख़ है और सफ़रा व बलगमको उभारता है। द०-दूध। प्र०-उसारह खजूर।

गुण व कार्य—खाने को हजम करता है और तबिअत को नर्म करता है। इसमें पके हुए चावल यानी रसाबल बदन को फ़रबे करता है और तबिअत को फ़रहत देता है और अगर रसमें एक पत्ती जौ की मल दें तो बेशुमार दस्त आते हैं।

(जहरीली नहीं)

३८७--रसकपूर

प्र०-रसकपूर। सं०-रस कर्पूरम्। रंग-सफेद। प०-यह दो तरह का होता है, एक कृत्रिम, एक अकृत्रिम। व पारद का मिश्रण है। जमी हुई मिश्ल शंजरफ के बल्कि सफेद शंजरफ है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-ऐजाये रईसा को। दर्पघ्न-गाय का दूध। प्र०-जमालगोटा मात्रा-एक हब्बा (रत्ती)।

गुण व कार्य—चेचक व सिद्दतकी खुजली और आतशक को मुफीद है, शहद के साथ सरअत इंजाल यानी जल्द मनी गिरने को नफा देता है। बगैर धोये हुये (शुद्ध बिना किये हुए) खाना ठीक नहीं है, तेल के साथ इसका लेप चर्म रोगों को दूर करता है। (जहरीली नहीं ज्यादा मात्रा में जहर है)।

३८८--रसौत

प्र०-रसवत। सं०-रसांजनम्। अ०-हजज हिन्दी। रंग-पीला। स्वाद-बहुत कड़वा। प०-दारुहल्दी का सत्व है। स्व०-मातदिलहै,बाजोंके नजदीक गर्म और सर्द खुश्क२है। हानि-तिहाल को। दर्पघ्न-अनीसून व मस्तगी। प्र०-फोफल व संदल। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—काबिज है मवाद को पुख्ता करती है,सर्द वर्मों और भीतरी वरमों को तहलील करती है- दस्तों और रतूबत के बहने व पसीना बहने को रोकती है। मुंह से खून आने व पेशाब के रास्ते के जख्म को व यर्कां और असूद यानी स्याह कांवर व वरम तिहाल और दर्द जिगर को मुफीद है। इसका लेप वरम को तहलील करता है। और आशोव चश्म (आंख से पानी जाने) को मुफीद है। (जहरीली नहीं)

३८९--- रूपा मक्खी

प्र०-रूपामाखी। सं०-रौप्य माक्षिक। फा०-चोक नुकरा। अ०-मियाये फंजा व खबसुल। रंग-सफेद स्याही मायल। स्वाद-कसैला। पहि०-चांदी का मैल है जो मिश्र वगैरा मुल्कों में बड़ी भट्ठियों से निकलता है। स्व०-सर्द खुश्क। हानि-सुद्दा लाती है। दर्पघ्न-बादाम रोगन। प्र०-मुर्दार संग। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—रतूबत को खुश्क करती है, कुव्वत बीनाई को कुव्वत देती है सबल व आंख के जख्म व नाखूना व आंख के नजूल को मुफीद है, और तिहाल की सख्ती को तहलील करती है।

(जहरीली नहीं)

३९०---रोगन बादाम

प्र०-रोगन बादाम। सं०-वातादं तैलम्। फा०-दहन उललोज़। रंग-सफेद। स्वाद-कुछमीठा पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-मातदिल। हानि-जईफ अंतड़ियों को। दर्पध्न-मस्तगी। प्र०-रोगन खश-खाश। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य---नीन्द लाता है। तबिअत को नर्म करता है, दिमाग को तरी देता है। आवाज को साफ करता है, दस्तावर दवाइयों के नुकसान को दूर करता है, मेदे और पट्ठों को कुव्वत देता है। (जहरीली नहीं)

३९१---रोगन बिलसां

प्र०-रोगन बिलसां। फा०-रोगन बिलसां। अ०-दहन उलबिलसां। रंग-सफेद। स्वाद-बद-मज़ा व कड़वा। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्प०-दूध। प्र०-नारजील व रोगन जैतून। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य---दिमाग़ व पट्ठों और मेदे व रहम को कुव्वत देता है, मेदे व जिगर की सख्ती को नर्म करता है। गुर्दे व मसाने की पथरी को तोड़ बहाता है और दिमागी सर्द बीमारियों को मुफीद है। (जहरीली नहीं)

३२९---रोगन भिलावा

प्र०-रोगन भिलावा। सं०-भल्लातक तैलम्। फा०-रोगन बिलादर। अ०-दहन हबुल फहम। रंग-स्याहीमायल। स्वाद-कड़वा। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-जिल्द को। दर्प०-जैतून।

गुण व कार्य---तीनों खिलतों (सफरा सौदा और बलगम) को छांटता है, कोढ़ को मुफीद है। पेट और गुदा के कीड़े मार निकालता है। जिल्द में जख्म करता है। और दाग पैदा करता है, अक्सर सर्दी के दर्दों को मुफीद है। खासकर जोड़ों के दर्द को बहुत मुफीद है। (जहरीली नहीं)

३९३---रोगन रेंडी

प्र०-रोगन रेंडी। सं०-एरंड तैलम्। फा०-रोगन बेदअंजीर। अ०-दहन उल खरुअ। रंग-सफेद। स्वाद-फीका व बदमजा। स्व०-गर्म तर। हानि-मेदे के मुंह को। दर्पध्न-भुना चना। प्र०-रोगन जैतून। मात्रा-१ तोला से ३ तोला तक।

गुण व कार्य---मेदे को जिला देता है। ऐज़ा को कुव्वत बख्शता है। और सेहत का निगह-बान है, खुशी पैदा करता है। आंतों के सुद्दे फिसलाकर निकालता है। दस्त लाता है जलंधर को मुफीद है, फोतों के वरम व कमर व गुर्दे और कुलंज को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

३९४---रोगन ख़शखाश

प्र०-रोगनखशखाश। सं०-अहिफेनबीजतैलम्। फा०-रोगन खशखाश। अ०-दहनउल खशखाश। रंग-सफेद। स्वाद-फीका। प०-मशहूर है। स्व०-सर्द तर २। हानि-सुद्दा पैदा करता है।

गुण व कार्य---नींद लाता है, शिर के दर्द को तस्कीन देता है, दिमाग को कुव्वत देता है, गर्म तर खांसी को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

३९५---रोगन अलसी

प्र०-रोगन अलसी। सं०-अतसी तैलम्। फा०-रोगन कतां। अ०-दहन उलकतां। रंग-कुछ पीला। स्वाद-कुछ कड़वा व हीकदार। स्व०-गर्म तर।

गुण व कार्य—भूख लाता है—ऐज़ा को कुव्वत बख्शता है, फिसाद बलगम को दूर करता है, पेशाब लाता है, बीनाई को कुव्वत देता है, आंतों के जख्म और खराश को मुफीद है, इसकी मालिश दाद और बदन की खुश्की को दफै करती है। (जहरीला नहीं)

३९६—रोगन चीड़

प्र०-रोगन चीड़। सं०-देवदारु तैलम्। फा०-रोगन देवदार। अ०-दहन उलजीन सजरह। रंग-सुर्ख। स्वाद-कड़वा व बूदार। पहि०-मशहूर है। स्व०-गर्म व खुश्क २।

गुण व कार्य—फोड़े फुन्सी और सुर्ख व गठिया व खुजली और कोढ़ को नफा देता है।

(जहरीला नहीं)

३९७—रोगन जैतून

प्र०-रोगन जैतून। फा०-रोगन जैतून। अ०-दहन उलजैत। रंग-सफेद। स्वाद-कड़वा। स्व०-गर्मतर ३। हानि-गर्म मिज़ाज वालों को। द०-दूध व शहद। प्र०-रोगन वेद अंजीर। मात्रा-३ से ४ तो० तक।

गुण व कार्य—पट्ठों की सर्दी को दूर करता है और कुव्वत बख्शता है और अक्सर ऐज़ा को कुव्वत बख्शता है, वरमों को तहलील करता है, पेट के कीड़े मार कर निकालता है। आंतों की मरोड़ को मुफीद है, इसका लेप व मालिश सर्दी के दर्दों को नफा देता है व जख्मों को जल्द भरता है।

(जहरीला नहीं)

३९८—रोगन सरसों

प्र०-रोगन सरसों। सं०-सर्षप तैलम्। फा०-रोगन सर्षप। अ०-दहन उल हफ। रंग-जर्दी मायल। स्वाद-कड़वा। स्व०-गर्मतर २। हानि-मेदे को। द०-दही व खटाई। प्र०-रोगन कुंजद सफेद।

गुण व कार्य—पट्ठों को कुव्वत देता है। बदन को फावे और कवी करता है। सर्द व बलगमी मिज़ाज को मुफीद है और पट्ठों की ऐंठन को मुफीद है, व इसकी मालिश व लेप सर्दी मवाद को तहलील करता है।

(जहरीला नहीं)

३९९—रोगन चमेली

प्र०-रोगन चमेली। सं०-मालती तैलम्। फा०-रोगन यास्मीन्। अ०-दहन यास्मीन। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ कड़वा। स्व०-सर्दतर। हानि-गर्म मिज़ाज वालों को। दर्पध्न-मस्का (मक्खन)। प्र०-रोगन जैतून। मात्रा—२ मा०।

गुण व कार्य—पेट के कीड़े मारता है और गुदा के कीड़े भी मारता है। कोढ़ और खुजली को नाफै है। कान की बीमारियों को मुफीद है। चमेली का बना हुआ तैल शिर में डालना ऐजाये दिमागी को ताकत देता है।

(जहरीला नहीं)

४००—रोगन काहू

प्र०-रोगन काहू। सं०-काहु तैलम्। फा०-रोगन काहू। अ०-दहन उलखस। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ कड़वा। स्व०-सर्दतर। हानि-सर्द मिज़ाज वालों को। द०-रोगन बादाम।

गुण व कार्य—सख्तियों को नर्म करता है। दिमाग को तर रखता है, नींद लाता है, मालिखोलिया और मृगी को फायदा करता है। शराब की

मस्ती को दफै करता है, और अक्सर गर्म पट्ठों की बीमारियों को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

४०१—रोग़न कड़

प्र०-रोग़न कड़। सं०-कुसुम तैलम्। फ़ा०-रोग़न तुख्म मासफर। अ०-दहन हब्बुल करतुम। रंग-सफेद। स्वा०-कड़वा व तेज। स्व०-गर्म तर। हानि-गर्म मिज़ाज वालों को और बीनाई को। प्र०-रोग़न ज़ैतून।

गुण व कार्य—रियाह के फ़िसाद और बलगम को दफै करता है और ऐज़ा को कुव्वत पहुँचाता है तीनों ख़िल्तों सफ़रा व सौदा और बलग़म को ज़ियादा करता है और मेद की सोज़िश को मुफ़ीद है। (ज़हरीला नहीं)

४०२—रोग़न अख़रोट

प्र०-रोग़न अख़रोट। सं०-अक्षोट तैलम। फ़ा०-रोग़न चहारमग़ज़। अ०-दहनउल जोज़। रंग-सफेद। स्वाद-मीठा। स्व०-गर्म तर। हानि-गर्म मिज़ाज वालों को शक़ील (गरिष्ट) है। प्र०-रोग़न बादाम।

गुण व कार्य—बलग़म व सफ़रा और रियाह के फ़िसाद को दूर करता है, बाहको कुव्वत देता है। और बालों को भी कुव्वत देता है, बलग़म जियादा पैदा करता है और अक्सर ऐज़ा को कुव्वत देता है तबियत को नर्म करता और फ़रहत लाता है।

(जहरीला नहीं)

४०३—रोग़न अगर

प्र०-रोग़न अगर। सं०-अगर तैलम्। फ़ा०-रोग़न अगर हिन्दी। अ०-दहन उल ऊद। रंग-सुर्ख। स्वा०-कुछ कड़वा व खुशबूदार। स्व०-गर्म व खुश्क। प्र०-रोग़न देवदारु।

गुण व कार्य—इसकी मालिश पट्ठों को क़वी (मजबूत) करती है, गठिया और खुजलीको मुफ़ीद है पेट के कीड़े मारता है, इसका तिला तहरीक बाह (बाह की हरकत) करता है और कुव्वत बाह ज्यादा करता है।

४०४—रोग़न पलास

प्र०-रोग़न पलास। सं०-पलास तैलम्। फ़ा०-रोग़न तुख्म पला। रंग-स्याह। स्वा०-कड़वा व कसैला। प०-प्रसिद्ध। स्व०-गर्म। प्र०-रोग़न महुवा व गुलो।

गुण व कार्य—बलग़म व सफ़रा के फ़िसाद को दूर करता है, पेट के कीड़े मारता है, इसकी मालिश ऐज़ा की सोज़िस को दूर करती है। बाज सर्दी के वरमों को तहलील करता है।

(ज़हरीला नहीं)

४०५—रोग़न तुख्म खीरा व ककड़ी

प्र०-रोग़न तुख्म खीरा व ककड़ी। सं०-त्रपुषी कर्कटी बीज तैलम्। फ़ा०-रोग़न तुख्म ख़्यारैन। अ०-दहन वज़रुल क़सा। रंग-सफेद। स्वा०-फीका। प०-प्रसिद्ध है। स्व० सर्द तर। हानि-पट्ठों को। प्र०-रोग़न काहू।

गुण व कार्य—फ़रहत लाता है, बदनको फ़रबे करता है, गर्मी के दर्दों को तहलील करता है, अक्सर गर्मी की बीमारियों को मुफीद है, ऐजाये दिमाग़ी के बहुत मुआफिक है और बलग़म पैदा करता है।

४०६—रोग़न तुख्म पेठा

प्र०-रोग़न तुख्म पेठा। सं०-कूष्मांड बीज तैलम्। फ़ा०-रोग़न तुख्म कदुवे रूमी। अ०-दहन

बजरुलहदवा। रंग-सफेद। स्वा०-कुछ मीठा। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्दतर। दर्प०-रोग़न काहू। प्र० रोग़न मग़ज़ कदू।

गुण व कार्य—दिमाग़ में तरी पैदा करता है और बदन को तर रखता है, खुश्की दूर करता है, बदन को फरबै करता है, नींद लाताहै, मालिख़ोलिया व बेख़्वाबी यानी नींद न आने और पट्ठों की ऐंठन को मुफीद है, और नथनों की खुश्की दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

४०७—रोगन मग़ज कदू

प्र०-रोग़न मग़ज कदू। सं०-तुम्बी बीज तैलम्। फा०-रोग़न मगज कदुये शीरीं। अ०-दहनहब्बुल कुरअ। रंग-सफेद। स्वा०-मीठा। प०-प्रसिद्ध है. स्व०-सर्द तर। दर्प०-रोग़न काहू। प्र०-रोगन काहू।

गुण व कार्य—बदन को तर रखता है, दिमाग़ में तरी पैदा करता है, और कुव्वत देता है, बदन व दोनों नथनों और कान की खुश्की दूर करता है, नींद लाता है, बदन को फरबै करता है, मालखोलिया व नींद बहुत कम आने व पट्ठों की ऐंठन व कान के दर्द और खुश्क खांसी व पेदिकको मुफीद है, पीने व सुड़कने व मालिश और टपकाने से अक्सर सख्तियां को नर्म करता है, और वरमों को तहलील करता है, और बाह लाता है।

(जहरीला नहीं)

४०८—रोगन तिली व मीठा तैल

प्र०-रोग़न तिली व मीठा तेल। सं०-तिल तैलम्। फा०-रोग़न कुंजद। अ०-दहन उलसमसम। रंग-सफेद ज़र्दीमायल। स्वा०-मीठा। प०-मशहूर है। स्व०-मातदिल। वाजों के नजदीक गर्म तर अव्वल है। हानि-मेदको और सफरा पैदा करता है। दर्पघ्न-कन्द। प्र०-रोग़न काहू व बादाम।

गुण व कार्य—कुल ऐज़ा को कुव्वत देता है और सेहत का निगहबान है। तबियत को नर्म करता है, बाह जियादा करता है, बदन को नर्म करता है, और जिला देता है, बदन व पुट्ठों की खुश्की दूर करता है, बलगम के फिसाद को दूर करता है। मनी बहुत करता है, भूख बढ़ाता है, पेशाब जारी करता है, कान के दर्द व जख़म व घाव और चोट के दर्द को मुफीद है, और आग मे जले को नफा करता है. लिंग के जख़म को मुफीद है। यह सब रोगनों से अच्छा है।

(जहरीलो नहीं)

४०९—रोगन गुलू (महुवे का तैल)

प्र०—रोगन गुलू। सं०-मधूक तैलम्। फा०-रोगन महुवा। रंग-सफेद। स्वाद-फीका व कसैला। प०-महुवे के फल की गिरी का जमा हुवा तेल है। स्व०-सर्द तर। हानि-आंखों व नजलों को। दर्पघ्न-शहद। प्र०-रोग़न नारियल।

गुण व कार्य—सफरा व बलग़म के फिसादको दूर करता है और ऐज़ा की सोजिश को नफा देता है और फ़र बही लाता है, जिल्द की खुश्की को दूर करता है अक्सर दिमागी ऐज़ा को मुफीद है।

४१०—रोगन मालकांगनी

प्र०-रोग़न माल कांगनी। सं०-ज्योतिष्मती तैलम्। रंग-लाल। स्वाद-कड़वा व बदबूदार। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म तर। हानि-गर्म मिजाज वालों को। प्र०-रोगन तिल।

गुण व कार्य—बाह व दिमाग व याददाश्त को कुव्वत देता है। गठिया व कमर और कूल्हेके दर्दको

नफ़ा करता है, इसकी मालिश मुकव्वी और मुहरक (हरकत) बाह है। पट्ठों की ऐंठन और अक्सर दिमागी बीमारियों जैसे लकवा व फालिज को नफ़ा देता है, हाथ की हथेली में इसका मालिश कुव्वत बीनाई को कमी करती है। (जहरीला नहीं)

४११—रोगन गिरी अम्बा (आम का तैल)

प्र० नाम-रोग़न गिरी आम का। सं०-आम्र मज्जा तैलम्। फा०-रोग़न तुख्म अम्बा वरोग़न खस्तः अम्बा। अ०-दहन हब अम्बज। रंग०-स्याही मायल। स्वाद-कसैला। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द तर बाज़ों के नजदीक खुश्क है। हानि-सुद्दा पैदा करता है। द०-नमक। प्र०-रोग़न तिल।

गुण व कार्य—मेदे को कवी करता है, सफ़रा को पैदा करता है, बलगम व रियाह के फ़िसाद को दूर करता है और अक्सर ऐज़ा को कुव्वत देता है, आग के जले हुये पर लगाना खास तौर पर मुफ़ीद है।

(जहरीला नहीं)

४१२—रोगन नीम

प्र०-रोग़न नीम। सं०-निम्ब तैलम्। फा०-रोग़न खस्तः नीब। अ०-दहन उलनीब। रंग-स्याह मायल। स्वा०-कड़वा। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क। हानि-मेदे व जिगर को।

गुण व कार्य—हाजिम है और तबियत को नर्म करता है, फिसाद, रियाह व बलग़म को दफ़े करता है, पेट के कीड़े मार निकालता है, बेहोशी को दूर करता है, कोढ़ व दर्द कमर और गठिया को मुफ़ीद है नासूर को भर लाता है और अक्सर ऐज़ा को कुव्वत देता है, जख़्मों को मुफ़ीद है, कुव्वत बीनाई और बाह जियादा करता है। (जहरीला नहीं)

४१३—रोग़न नारियल

प्र०-रोग़न नारियल। सं०-नरीकेल तैलम्। अ०-दहन उलनारजील। रंग-सफ़ेद जमा हुआ। स्वा०-फीका कुछ कड़वा। प०-प्रसिद्ध है। स्वभाव-सर्द तर। हानि-मेदे को। प्रति०-रोग़न महुवा।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करता है और अक्सर ऐज़ा को कुव्वत देता है, दिमागी मर्जों में मुफ़ीद है। बदन की खुश्की को दूर करता है और बदन को फ़रबै करता है, बालों को बढ़ाता है और स्याह रखता है। (जहरीला नहीं)

४१४—रोगन बाबूना

प्र० नाम-रोग़न बाबूना। फा०-रोग़न बाबूना। अ०-दहन उलबाबूनज। रंग-कुछ लाल। स्वाद-कसैला व कड़वा। पहिचान-प्रसिद्ध है। स्वभाव-गर्मतर। हानि-शिर दर्द पैदा करता है। दर्पघ्न-रोग़न नीलोफ़र। प्र०-रोग़न मालकांगनी।

गुण व कार्य—वरमों को तहलील करता है, चोट और दर्दों को मुफ़ीद है, कमर के दर्द व गठिया व कूल्हे के दर्द और अर्कुलनिसां को मुफ़ीद है, खासकर फोतों के वरम को नफ़ा करता है और अक्सर मर्जों को फ़ायदेमन्द है।

(जहरीला नहीं)

४१५—रोग़न गर्जन

प्र०-रोग़न गर्जन। अ०-दहन उल गर्जन। रंग-लाल। स्वाद-कड़वा। प०-हिन्द में बंगाल की तरफ़ एक पेड़ होता है उसका तैल निकालते हैं। स्व०-गर्म व खुश्क। हानि-शिर दर्द पैदा करता और मेदे को। प्रति०-रोग़न देवदार।

गुण व कार्य—सिर्फ वरमों को तहलील करता है दाद के लिए मुफीद है. मकानों के रंग करने में काम आता है, इसको खाते नहीं, इसको चोट वगैरा में भी लगाते हैं।

(जहरीला नहीं)

४१६—रोहनी

प्र०-रोहनी । सं०-रोहणी । रंग-हरी । स्वाद-कड़वी । प०-एक हिन्दी घास मशहूर है। स्व०-गर्म तर ।

गुण व कार्य—मेदे के कीड़े निकालती है, गले और नखरह (कंठ नलका) की बीमारियों को मुफीद है खफ़क़ान व इखतलाज क़लब (दिल का हिलना) और अक्सर दिलकी बीमारियों को नफा देती है, बलग़म व सफ़रा के फ़िसाद को दूर करती है, खांसी व दमे को और तप को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

४१७—रोहिस (गधेंल)

प्र०-रोहिस । सं०-रोहिषतृण । रंग-हरा । स्वाद-कड़वा । प०-एक घास अजखर की तरह की मशहूर है। स्व०-सर्द ।

गुण व कार्य—दिल की गर्मी और मेदे की सोजिश दूर करता है और अक्सर ऐजाकी सोजिश को नफै है, तंगी सांस और खांसी को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

४१८—रहीरा

प्र०-रहीरा । प०-एक हिन्दी दवा है,स्व०-गर्म

गुण व कार्य—दस्तावर है, रियाह को दूर करती है, जिगर व तिहाल और जलंधर को मुफीद है,

(जहरीली नहीं)

४१९—रीठा

प्र०-रीठा । सं०-अरिष्टक । फ़ा०-फिंदक हिन्दी । अ०-बन्दक हिन्दी । रंग-भूरा बीज स्याह । स्वाद-कड़वा व कसैला व तेज । प०-एक पेड़ का मशहूर फल है। जिससे ऊनी व रेशमी कपड़े धोये जाते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २ । हानि-गिरानी पैदा करता और कै लाता है। दर्प०-सिकंजबीन व बादाम रोगन । प्र०-खबूर्ज की जड़ । मात्रा ३ माशे ।

गुण व कार्य—मेदे और कुव्वत हाजमा को कुव्वत देता है, पुट्ठों को कुव्वत बख्शता है, ऐजाके ऐंठने व लक़वा व फ़ालिज यानी झोला मारजाने और मृगीको मुफीद है,बाह लाता है, रहमके दर्दको दूर करता है,और अगर इसको पानी में घिस करके नाकमें सुड़कें तो आधासीसीके दर्दको नफा करताहै।

(जहरीला नहीं)

४२०—रेशा

फा०-रेशा वाला । रंग-भूरा जर्दी मायल स्वाद-कुछ कड़वा व तेज व खुशबूदार । प०-एक घास की जड़ है जिसके पत्ते व शाखें सोये के पत्ते और शाखों के बराबर मिलते होते हैं। स्व०-गर्म २ खुश्क ३ रतूबत नफ़ाखा के साथ। हानि-तिहाल को। दर्प०-अजमोद व शहद। प्र०-जोज बवा व बालछड़। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—काबिजहै गर्मी बढ़ाती है,रूहको लताफत देती है, सुद्दा व मसाम को खोलती है, नींद लाती है, इसको पका कर पीना नजला बन्द करने और नजला गिरने के वास्ते फायदेमन्द है, आवाज को साफ करती है-पट्ठों की बीमारी और जोड़ों के दर्द व जोफ मेदा व जिगर व तिहाल व

गुर्दा मसाना को और दर्द मेदे व जिगर व तिहाल व गुर्दे और मसाने को मुफीदहै, रियाह व मेदे और रहम के नफ़ख (अफारे) को तहलील करता है।

(जहरीला नहा)

४२१—रेवास

प्र०-रेवास। फा०-रेवास। अ-रेवास। रंग-पत्ते हरे फूल लाल। स्वाद-खट्टा व कुछ मीठा प०-एक घास चुकन्दर के पेड़ से मिलती हुई है। स्व०-सर्द व खुश्क २। हानि-सीने व वाहको और कुलंज लाता है। दर्पघ्न-शहद और तुरंज का मुरब्बा। प्र०-हमांज़ व तुरंज। मात्रा-९ माशे।

गुण व कार्य—तेजी सफरा को तोड़ता है। लताफत बख्शता है, मेदे व जिगर व ऐज़ाये शिकमी व गर्म मिजाज वालों को कुव्वत देता है, पित्तों की सोजिश और सफरावी कै को तस्कीन देता है। इसका शर्बत जुनून और बहशत व सोजिश को नाफै और गमा के बुखार को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

२२— रेवन्द चीनी

प्र०-रेवन्द चीनी। फा०-वेख रेवांस। अ०-रावन्द। रंग-सुर्ख स्याही मायल स्वाद-तेज़ वू व कड़वी। प०-रेवांसकी जड़ मिस्ल सलजम के है। स्व०-गर्म खुश्क २ रतूबत फुज़लियों के साथ। हानि-लड़कों और ज़ईफों को और बदन के नीचे के हिस्से को। दर्पघ्न-उन्नाब व समगर्बी। प्र०-गुलसुर्ख व संबुल। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—खुश्की लातीहै, जिला करती है मादे को (पाक) करती है, गाढ़े पतले खिलतों को निचोड़कर दस्तों की राह निकालती है, पेशाब व हैज़ जारी करती है, सुद्दा खोलती है। दांतों को रद्दी फ़ज़ूलात से पाक करती है। नफ़ख व रियाह को तहलील करती है, सर्द बीमारियोंको मुफीद है। और वरमों व सुद्दा खोलती है।

(जहरीला नहीं)

बबुल ज़ (ज)

४२३--ज़रावन्द दराज़

फा-ज़रावन्द दराज़। अ०-ज़रावन्द तबील। रंग-सुर्ख स्याही माइल व जर्द। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक पेड़ की जड़ है। स्व०-गर्म ३, खुश्क २। हानि-जिगर व तिहाल को। दर्प-शहद व जरिश्क प्र०-ज़रावन्द गर्द। मात्रा-७ मा०।

गुण व कार्य—अक्सर नवाती व हैवानी जहरों को मारक है और जिला करता है, रतूबतको जज़ब करती। सर्द वरमों व रियाह को तहलील करती है। बलग़म को छांटती है सुद्दा खोलती है। पथरी को तोड़ती है, पेशाब व हैज जारी करती है। सीने व जिगर को साफ करती है। बलग़मी मादे को दस्तों की राह निकालती है। पेट के कड़े निकालती है और मृगीको नाफ़ै है और बच्चा आसानी से पैदा करती है। (जहरीला नहीं)

४२४—ज़रावन्द ग़र्द

फ़ा०-ज़रावन्द गर्द। अ०-ज़रावन्द मद हरज रंग-बाहर पीला अन्दर सुर्खीमाइल। स्वाद-कड़वा पहि०-यह भी एक जड़ गोल और लम्बी है जिसके ऊपर का बक्कल बहुत मोटा होता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-ऐजा व तिहाल में खुश्की पैदा करता है। दर्प०-शहद व रोगन कद्दू। प्रति०-ज़रावन्द तबील। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—रियाह और वरमों को तहलील करती है। लताफ़त बख्शती है। सीने व फेफड़े के तरफ़ को पाक करती है, मेदे और दिमाग को कुव्वत देती है। दमे व पुरानी खांसी व सीने के दर्द व फ़ालिज और गठिया को मुफीद है, बलगमी माद्दे को दस्तों की राह निकालती है और बलग़म को छांटती है। (जहरीला नहीं)

४२५—ज़रिश्क

प्र० नाम-ज़रिश्क। फ़ा०-ज़रिश्क वेदाना। अ०-अम्बर बारीस। रंग-बैजनी व लाल। स्वाद-रसदार। पहि०-एक कांटेदार पेड़ का फल प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द खुश्क कुव्वत क़ब्ज़ा के। हानि-सर्द मिजाज व कुलंज वाले को। द०-लौंग व शक्कर। प्र०-जरदरू व सन्दल। मात्रा-१ तो०।

गुण व कार्य—सफ़रा की तेजी को तोड़ती है। प्यास को तस्कीन देती है, मेदे व जिगर की जर्दी और खून के जोश को तस्कीन देती है, दिल व जिगर और गर्म खुश्क मेदे को कुव्वत देती है। सफ़रावी दस्तों को बन्द करती है। रद्दी माद्दे को ऐज़ा पर नहीं गिरने देती, जिगर व मेदी दस्तों को मुफीद है। हैज़ा की ज़ियादती को बन्द करती है। (जहरीली नहीं)

४२६—ज़ुत्फरतवरूमी

अ०-ज़ुफ्तरतवरूमी। रंग-स्याह। स्वाद-कड़वा प०-सरू के पेड़ से एक रतूबत बहती है, इसकी कई किस्में हैं। स्व०-गम ३ खुश्क २। हानि-फेफड़े व तिहाल को। द०-कतीरा व बनफशा व काफूर। प्र०-जावशीर व मोम। मात्रा-७ मा०।

गुण व कार्य—वरम व रियाह को तहलील करती है। जोड़बन्द को कुव्वत देती है। फ़ालिज व नुक़रस व अर्कुत्तनिसां व सर्दी के रियाह और जानू के दर्द को मुफ़ीद है। गाढ़े ख़िल्तों को पाक करती है सीना व हलक को पाक व साफ़ करती है और मुंजम व मतूल कज़ी (इन्द्री को बड़ा व मोटा करती) है और खून को जिल्द की तरफ़ जज़्ब कर लाती है। गुदा के फट जाने को मुफ़ीद है इसका ज़माद (लेप) बाह को ज़ियादा करती है। (जहरीला नहीं)

४२७—जिमीकन्द व सूरन

प्र०-जिमीकन्द व सूरन। सं०-सूरण। फ़ा०-ज़िमीकन्द। रंग-सुर्खी माइल भूरा। स्वाद-फीका भुर्भुरा। पहि०-एक पेड़ की जड़ आलू व अर्वी और बंडे की तरह की है। स्व०-गर्म। हानि-नफ़ाख़ है और गर्म मिजाज वालों को मुजिर है। द०-गोश्त व दही व सिर्का।

गुण व कार्य—खाना खूब खिलता है, फ़िसाद बलगम को दूर करता है। कुलंज व पेट के दर्द को मुफ़ीद है, थोड़ी गिज़ा है, सुद्दा पैदा करता है। क़ाबिज़ है, हिन्द के लोग इसका अचार डालते हैं। (जहरीली नहीं)

४२८—जंगी दारू

फा०-जंगी दारू। अ०-रसक़ूज़ा क़न्द रेवन। रंग-हरी सुर्खी मायल। स्वाद-कड़वी। पहि०-बेशाख व वेफल के एक घास है, जिसके पत्ते जड़ से लगे होते हैं। स्व०-गर्म १ खुश्क २। हानि-सुद्दा पैदा करती है। दर्प०-बर्द व मस्तगी प्र०-ग़ाफ़िस। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य—तविअ़त को नर्म करती व जिला करती है और सुद्दा खोलती है। पेशाब व हैज को जारी करती है। (जहरीला नहीं)

४२९—जंगाल

प्र० नाम-जंगाल । फा०-जंगार । अ०-जंगार । रंग-हरी व आबी । स्वाद-कसैला व बकठा । पहि०-एक चीज़ है जो सिर्के और तांबे से बनाई जाती है । स्व०-गर्म व खुश्क ४ । हानि-जंग है और कै वहुत लाता है । द०-दूध व घी और लुआब की चीजें । प्र०-सिंगरफ । मात्रा-खाते नहीं हैं ।

गुण व कार्य—शरीर का मांस खा जाता है । खराश पैदा करता है, आंतों को छील डालता है और जख्म पैदा करता है । जख्म को जला देता है । और शहद के साथ इसका सुर्मा पलकों की गंदगी को दूर करता है और काट बहाता है । अगर मोम रोग़न में शामिल करके घाव पर लगावें, तो खराब मांस काट कर नफ़ा करता है ।

(जहरीला नहीं है)

४३०—जूफाये खुश्क

फा०-ज़ूफ़ाये खुश्क । अ०-जूफ़ाये याबस । रंग-हरा स्याही मायल । स्वाद-कड़वा । प०-एक घास है । स्व०-गर्म खुश्क २ । हानि-जिगर को दर्प०-उन्नाव समगर्बी व अनार तुर्श । प्रति०-सातर व परसियावशान । मात्रा-६ माशे से १ तोला तक ।

गुण व कार्य—ताक़त करती है बलगम को दस्तों की राह निकालती है, ग़लीज रियाह को बाहर निकालती है । मेदे के कीड़े भी निकालती है वरमों को तहलील करती है । फालिज व पुरानी खांसी और सूखी खांस को मुफीद है । फेफड़े की सूजन व दर्द सीना व पहलू व मेदे के दर्द और कुलंज को मुफीद है । जलंधर को नफा करती है, बलगम को खुश्क कर देती है । (जहरीला नहीं)

४३१—ज़हर मुहरा

प्र० नाम-ज़हरमुहरा । फ़ा०-ज़हर मुहरा । अ०-फ़ाद जहर मारनी । रंग-सफेदी मायल साथ जर्दी के । पहि०-एक बहुत हलका पत्थर प्रसिद्ध है । स्व०-मातदिल है । प्र०-जमुर्रद व जबरजद । मात्रा-१ माशा ।

गुण व कार्य—कुल मिज़ाजों के मुआफिक है, अक्सर जहरों को मारता है । खिलत की बदबूई को दूर करता है, बाह लाता है, और रूह व ऐजाये रईसा और पट्ठों को कुव्वत देता है । सेहत का निगहबान है । बबाई हवा को नफा देता है । खफकान व ग़म और दस्तों व कै और हैजे को मुफीद है । बच्चों के हरे दस्तों को नफा देता है और मुजर्रब है । (जहरीला नहीं)

४३२—जैतून

प्र०-जैतून । अ०-जैतून । रंग-हरा । स्वाद-कसैला व कड़वा । पहि०-एक पेड़ पश्चिम में होता है और हजार बरस तक रहता है । स्व०-गर्म व खुश्क २ । दर्प०-रेंडी का तैल । मात्रा-१ तोला ।

गुण व कार्य—बदन में गर्मी पैदा करता है । पेशाब लाता है, पथरी को तोड़ बहाता है, और मसूढ़ों को कुव्वत देता है, पेजाको कुव्वत देता है । पसीना बन्द हो जाने को बहुत मुफीद है, यानी पसीना जारी करता है । (जहरीला नहीं)

४३३—जीरा सफेद

प्र०-ज़ीरा सफेद । सं०-श्वेतजीरकम् । फा०-जीरा सफेद । अ०-कमून अबैज । रंग-सफेद । स्वाद-तेज व तेज बू । पहि०-सौंफ की बराबर एक पेड़ का बीज है जिसका पेड़ सोये का सा होता है । स्व०-गर्म २ खुश्क ३ । हानि-फेफड़े को । दर्प०-

कतीरा। प्र०-अजवायन व जीरा स्याह । मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—मेदे व जिगर और आंतों को कुव्वत बख्शता है। गुर्दे को कवी करता है, गर्मी पैदा करता है। रियाह व वरमों को तहलील करता है। बलगम को छांटता है, बाह ज्यादा करता है। इसका खिसान्दा रतौंधे व आंख के जख्म व धुनगेपन व नाखूना और सबल को नफा देता है। और हर तरहके प्रमेहको मुफीद है। (जहरीली नहीं)

४३४—जीरा स्याह

प्र०-जीरा स्याह। सं०-कृष्ण जीरकम्। फा०-जीरा स्याह। अ०-कमून असवद। रंग-स्याह। स्वाद-तेज व तेज बू। पहि०-मशहूर है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-फेफड़े को। दर्प०-कतीरा। प्र०-जीरा सफेद। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—गर्मी करता है, तबियत को लताफत देता है। बलगम को छांटता है, रियाह और वरमों को तहलील करता है, रतूबत को खुश्क करता है। और उसे बहने से रोकता है, मेदे की रतूबत को दूर करता है, भूख खोलता है, पेशाब व हैज खूब जारी करता है और दस्तावर से है। (जहरीली नहीं)

बाब उलसीन (स)

४३५—सागूदान। साबूदाना

प्र०-सागूदाना व साबूदाना। रंग-सफेद। स्वाद-फीका। पहि०-एक दाना है एक पेड़ की गूदे या लकड़ी से बनाया जाता है, वह पेड़ टापू में होता है। स्व०-गर्म तर।

गुण व कार्य—कुल बदनको मुकव्वी है। बाह ज्यादा करता है, तहरीक बाह खूब करता है व बदन को फरबे करता है। तबियत को नर्म करता है अगर ताजे दूध के साथ खीर इसकी पकाकर खावें और अगर दूध न हो तो पानी में पका मीठा डाल कर खावें तो बीमार की सेहत को बहुत नफा करता है। क्योंकि यह बहुत हल्की चीज है। (जहरीला नहीं)

४३६—सातर

प्र०-सातर। फा०-ऐशन व ऊशन। अ०-सअतर। रंग-पत्ते हरे फूल नीला। स्वाद-तेज व तेज बू खुशबूदार। पहि०-एक मशहूर घास है जो कई तरह की होती है। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-फेफड़े को। दर्प०-सिर्का। प्रति० पहाड़ी पोदीना। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—बलगम और रियाहको छांटता है और तहलील करता है। सुद्दा खोलता है, रद्दी बलगमी मादे को दूर करता है, लताफत करता है, खुश्की लाता है। बाह ज्यादा करताहै, भूख लाता है, मेदे को बालाई रतूबत से पाक करता है। दिमाग पर अबखरे नहीं चढ़ने देता और अक्सर दिमागी मर्जों को मुफीद है। (जहरीली नहीं)

४३७—साखू

प्र०-साखू। सं०-शालः। फा०-शाल। अ०-साज। रंग-लकड़ी लाल पत्ते हरे फल स्याह। स्वाद-कड़वा व कसैला। पहि०-एक जंगली बड़ा पेड़ है जिसके फल सुपारी के बराबर होता है। स्व०-सर्द व खुश्क। हानि-जिगरको। द०-उन्नाब। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—इसका बुरादा प्यासको तस्कीन देता है और मेदे की सोजिश को नाफे है, शहद के साथ सफरावी व बलगमी मादे को निकालता है,

इसका लेप वरमों को तहलील करता है। इसका बक्क़ा पेट में क़ब्ज करता है। इसके बुरादे की धूनी बवाई हवा को साफ करती है और मच्छर वग़ैरा को मारती है। (ज़हरीला नहीं)

४३८—सांप की केंचुली

प्र०-सांप की केंचुली। सं०-सर्प कंचुकी। फा०-पोस्तमार। अ०-सलख़ उलहय्यां। रंग-सफेद व जालीदार। स्वाद-फीका। पहि०-प्रसिद्ध है कि सांप हर साल खुद गिराता है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-आंख में धुंध लाती है। और जिल्द के छिलके उतारती है। दर्प०-धनिया व घी। प्र०-भिलावा। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—चने और घी के साथ खाना कोढ़ को मुफीद है। बच्चा जनते इसकी धूनी देना आसानी करता है, मुजर्रब है. धूनी बवासीर के मस्से भी गिरा देती है। कपड़े और किताबों में इसका रखना कीड़ों से बचाता है, जहां सांप केंचुली गिरा जाता है, वहां फिर नहीं आता है।

(जहरीली नहीं)

४३९—सांवां (सामां)

प्र०-सांवां। सं०-सामक। फा०-शामाख़। रंग-भूरा सफेद। स्वाद-फीका। पहि०-एक अन्न मशहूर है। स्व०-सर्द व खुश्क। हानि-रियाह पैदा करता है और खुश्की पैदा करता है। दर्प०-घी।

गुण व कार्य—बलग़म व सफरा के फिसाद को दूर करता है और सातों धातुओं को खुश्क करने वाला है। (जहरीला नहीं)

४४०—सुपारी

प्र० नाम-सुपारी। पुंगीफल। फा०-पोपल। अ०-फ़ोफल। रंग-भूरी। स्वा०-कसैला। प०-एक गोल फल बेर के बराबर कई तरह का होता है जो टापुओं और मुल्क बंगाल में बहुत पैदा होता है। स्व०-सर्द खुश्क। हानि-सीने को खुरखुरी करती है और मसाने और कुलंज वाले को। दर्प०-कतीरा। प्र०-लाल चन्दन व धनियां। मात्रा-४ माशे।

गुण व कार्य—क़ाबिज है और मवाद को पुख्त करती है. दिमाग़ पर अबख़रे नहीं चढ़ने देती है, मुंह को रतूबत और दांतों की सुस्ती को दूर करती है दिल व बाह और ढीले ऐजा को कुव्वत देती है, पेशाब जारी करती है और मनी को गाढ़ा करती है,दस्तोंको बंद करती है,गर्मीके दर्दोंको मुफीद है, इसके जोश का पानी निचोड़कर ज्यादा दस्त लाने वाला है, इसके फूल बच्चों के दस्त बन्द करने में मुजर्रब हैं। (जहरीली नहीं)

४४१—सतावर

प्र०-सतावर। सं०-शतावरी। रंग-सफेद। स्वाद-फीकी। पहि०-एक बहुत रेशदार जड़ प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २ साथ रतूबत फ़ुज़लिया के। हानि-सिर दर्द लाती है। दर्प०-शहद। प्रति०-बहमन सफेद। मात्रा-७ मा०।

गुण व कार्य—लताफत करती है, बाह ज्यादा पैदा करती है। मेदे व जिगर और गुर्दे को गर्म करती है। बलग़म और मनी गाढ़ा करती है और दूध ज्यादा पैदा करती और गाढ़ा करती है। हर तरह के जिरयान (प्रमेह) और सोज़ाक को मुफ़ीद है, नुक़रस, गठिया और बवासीर को नफा देती है। (ज़हरीला नहीं)

४४२—सज्जी खार

प्र०-सज्जी खार। सं०-स्वर्जिका क्षार। फा०-

दरखार । अ०-कली मअस्फर व सब । रंग-भूरी व सफेद । स्वाद-खारी । प०-एक खार है जो बाज चीजों की राख से बनाते हैं । स्व०-गर्म खुश्क ४ साथ नशे व जहर के । हानि-फेफड़े को । दर्प०-घी व दूध और कै करना । मात्रा-एक जौ ।

गुण व कार्य—जिला करती है, खिलतों को जला देती है । गोश्त को खा जाती है, अपने फेल (गुण) में नमक से बहुत ही कवी है और धोई हुई सज्जी मेदे को कुव्वत देती है । हाजिम है भूख को बढ़ाती है, बलगम खूब छांटती है, कै को बन्द कर देती है (जब कि किसी तरह बन्द न होती हो) तिहाल के वरम को तहलील करती है । सुर्मे के साथ जाले को काट बहाती है ।

४४३—सदा सुहागन

प्र० नाम-सदा सुहागन । रंग-पत्ते हरे फूल लाल । स्वाद-कड़वा व तेज । पहिचान-एक पेड़ अक्लीक उल बर की तरहका है ।

गुण व कार्य—जहर व सफरा और खून के फिसाद को दूर करता है । जलंधर को नफा देता है और अगर ४ माशे, इसकी पत्ती पानी में भिगोकर पियें तो सोजाक को मुफीद है । लुआब होने के सबब आंतो में फिसलन पैदा करता है इसके पत्तों का रस कान के दर्द को नफा देता है ।

(जहरीली नहीं)

४४४—सरफोंका

प्र०-सरफोंका । सं०-सरपुंखा । रंग-हरा । स्वाद-कड़वा व तेज । प०-चिरायते की तरह एक घास है । स्व०-गर्म तर २ । प्र०-मुंडी । मात्रा-१ माशे ।

गुण व काय—खून को साफ करता है, माद्दा को खालता है । पेशाब लाता है । सोदावी बुखारों व जिगर, व तिहाल की बीमारियों और फोड़े फुन्सी को नफा देता है । सरतान (पीठ के फोड़े) और आतशकको मुफीद है । इसका अर्क अक्सर जहरों को मारता है ।

(जहरीली नहीं)

४४५—सरसों

प्र०-सरसों । सं०-क्षषप । फा०-सर्षफ । अ०-हर्फ । रंग-लाल, स्याह व पीली । स्वाद—कड़वी व तेज । पहि०-एक तरह के अनाज का दाना जो बराबर राइ के जिसका तेल निकालते हैं । स्व०-गर्म खुश्क २ । हानि-मेदे और गुर्दे को । द०-काश्नी व शहद । प्र०-अलसी व राई । मात्रा-६ माशे ।

गुण व कार्य—रतूबत बलाई को खूब जज्ब करती है, रियाह का खूब तहलील करती है, पेट के कीड़े मार कर निकालती है, बलगम के फिसाद को दूर करती है, खुजली और अर्कुलनिशा को मुफीद है, बाह को हरकत देती है । पेशाब जारी करती है, माद्दे को पाक करती है, वर्मों को तहलील करती है, इसका उबटन मैल व गर्दन की स्याही और झाईं को खूब साफ करता है, इसके पत्ते पेशाब बन्द करने और खुजली को मुफीद हैं ।

(जहरीला नहीं)

४४६—सिरस

प्र०-सिरस । सं०-शिरीष: । फा०-दरख्त जिकरियां । अ०-सुल्तान उल अशजार । रंग-पत्ते हरे, फूल लाल बीज काले । स्वाद-कड़वा । पहि०-एक बहुत बड़ा पेड़ है जिसके पत्ते इमली के से

फूल खुशबूदार और फली लम्बी होती है। स्व०-सर्द खुश्क २। द०-बंशलोचन व सोंफ। प्र०-बतम व सरफोंका। मात्रा-१ तोला।

गुण व कार्य—इसकी छाल की कुल्ली दांतों व मसूड़ों को मजबूत करती है। इसका अर्क व रस चर्म रोग जैसे कोढ़ वगैरा को मुफीद है, पेट के कीड़े मारता है, इसका फूल सूंघना आधाशीशी को नफा करता है। (जहरीला नहीं)

४४७—सिर्स के बीज

प्र०-सिर्स के बीज। सं०-शिरिष बीजम्। फा०-तुख्म दरख्त जकरिया। अ०-हुबसुल्तान उल असजार। रंग-भूरे सुर्खीमायल। स्वाद-कड़वा व कसैला। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म।

गुण व कार्य—इसका सुर्मा आंख के जाले को मुफीद है। बाह को कुव्वत देता है, मनी को गाढ़ा करता है, अगर इसको पानी में जोश देके नाक में सुड़कें तो नजले को नफा करता है, इसका तेल सफेद दाग को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

४४८—सिर्का

प्र०-सिर्का। सं०-शुक्तम्। फा०-सिर्का। अ०-खल। रंग-लाल व सफेद। स्वाद-बहुत खट्टा व तीक्ष्ण। पहि०-अंगूर, खजूर या गन्ने के रस का धूप में पकाकर बनाते हैं। स्व०-सर्द खुश्क साथ लतीफ हरारत के। हानि-पट्ठों व फेफड़े और बाह को। दर्प०-मिठाई व मीठी चीजें व हलुआ। प्र०-कागजी नीबू का रस। मात्रा-१ तोला।

गुण व कार्य—काबिज है और रतूबत को खुश्क करता है। रगों में व मसाम में जल्द प्रवेश करता है और तबिअत को लताफत करता है, गाढ़े खिलतों को छांटता है। पेट के कीड़े मारकर निकालता है, हाजिम है, भूख खूब लाता और सुद्दा खूब खोलता है, जामन व ताड़ी का सिर्का तिहाल के वरम को और पेट के नफाख (अफारे) को बहुत मुफीद है। (जहरीली नहीं)

४४९—सरंची

प्र०-सरंची। रंग-हरा। स्वाद-खट्टा व कुछ कड़वा। पहि०-एक घास है जिसके पत्ते खुर्फ के से और शाखें गिरहदार और बीज अलग अलग होते हैं। स्व०-गर्म तर।

गुण व कार्य—इसके पत्ते खाना कमर के दर्द व जोड़ों के और तमाम बदन के दर्द को मुफीद है। इसकी जड़ पीपलामूल के साथ गर्मी के बुखारों में जो कई तरह से मिले हों नफा करता है। इसके पत्ते कत्थे और सोंठ के साथ कैसा ही जखम हो जो न भरता हो भर लाता है, मुजरब (तजुर्बेकार है)। (जहरीला नहीं)

४५०—सिवार व सिवाल

प्र०-सिवार व सिबाल। सं०-सैवाल। फा०-जगराना। रंग-हरा काही। स्वाद-कड़वा व तेज। पहि०-एक घास है जो पानी के अन्दर लंबे और रेशे २ पैदा होती है। स्व०-सर्द ३ तर ३। हानि-सर्द मिजाज वालों को। दर्प०-रेहां का पानी प्रति०-कुलफा।

गुण व कार्य—मवाद को पुख्ता करती है। वरम को तहलील करती है, सोजाक के लिये मुजरब है (तजुर्बेकार है) इसका लेप खून बहने को बन्द करता है और ताजी पेट पर रखना प्यास को तस्कीन देती है।

(जहरीली नहीं)

४५१—सरु

प्र०नाम-सरु । फा०-सरु । अ०-अर्अर रंग-हरा । स्वाद-पत्ते कड़वे व तेज । पहि०-एक मशहूर पेड़ कई तरह का होता है बाज बेफल और फलदार । गर्म १ खुश्क २ । फूल गर्मतर । हानि-फेफड़े को । दर्प०-कतीरा । प्रति०-अंजरूत । मात्रा-२। माशा ।

गुण व कार्य—क़ाबिज़ है, वरम व रियाह को तहलील करता है, खून बहने को बन्द कर देता है, ख़िलत की बदबू को दूर करता है, इसका जोशान्दा पेशाब दिक्कत से आने और आंतों के जख्म और मसाने से फिजूल मवाद बहने को मुफीद है, इसकी चटनी पुरानी खांसी को मुजर्रब है और मेदे को ताकत देती है । (जहरीली नहीं)

४५२—सिर्वाली (सिलमिली)

प्र०-सिर्वाली । सं०-सिनीवाली । अ०-बर्तानो क़ी । रंग-फल लाल पत्ते हरे । स्वाद-कुछ कड़वा । पहि०-एक पेड़ गज भर का होता है, जिसके फूल और शाखें लाल पत्ते खट्टे पालक के बराबर होते हैं । स्व०-मुरक्कबुलक़वी साथ कुव्वत काबिज़ा के । हानि-मितली लाती है । दर्प०-उन्नाब । प्र०-तोदरी मात्रा-५ माशे ।

गुण व कार्य—इसका लेप बरमों को तहलील करता है, इसके पत्तों का पीना तप को नफ़ा करता है । बाह को क़वी करती है, मनी पैदा करता है । इसको जलाकर खाना इस्तहाज़ा (खून बहने) को बन्द कर देता है । (जहरीला नहीं)

४५३—सिर्वाली के बीज

प्र०-सिर्वालीके बीज ।सं०-सिनीवाली बीजम् । अ०-बजर बर्तानै की । रंग-स्याह व बुर्राक । स्वाद-कुछ कड़वा । प०-एक बीज बहुत छोटा और जर्द २ भर । स्व०-मुरक्कबुलक़वी १ । हानि-मितली लाते हैं । द०-उन्नाब । प्र०-तोदरी । मात्रा-१मा० ।

गुण व कार्य—बाह को क़वी करते हैं, मनी को गाढ़ा करते हैं, सूजाक और आतशक को नफ़ा देते हैं, खून के फ़िसाद को दूर करते हैं । प्रमेह को मुफीद हैं । (जहरीले नहीं)

४५४—सरेश

प्र० नाम-सरेश । फ़ा०-सरेशम । अ०-ग़ारी । रंग-स्याह । स्वाद-बदमजा व बदबूदार । प०-लहसदार चीज है जो चमड़े और गोंद को पका कर बनाते हैं । स्व०-गर्म १ खुश्क २ । हानि-सुद्दा लाता है ।द०-सिकंजबीन व मायउल असूल ।प्र०-मछली का सरेश । मात्रा-२ मा० ।

गुण व कार्य—रगों के मुंह पर चिपक कर सुद्दा लाता है और खुश्की पैदा करता है, सिल और अन्दरूनी जखमों को नफ़ा देता है, खून को बन्द करता है, इसका लेप बरमों को तहलील करता है । (जहरीली नहीं)

४५५—सरेश मछली का

प्र० नाम-सरेश मछली का । फ़ा०-सरेशम माही । अ०-ग़ारीउल समक । रंग-सफेद व स्याह । स्वाद-कड़वा व बदमजा व बदबूदार । प०-यह भी लहसदार चीज है जो मछली के छतों से बनाते हैं । स्व०-गर्म १ खुश्क २ । हानि-सुद्दा लाता है । द०-शहद का शर्बत । प्र०-जुफ्त रूमी । मात्रा—२ माशे ।

गुण व कार्य—सिल को नाफै है, इसका लेप गाल फटने और सफेद दाग को मुफीद है, खुजली व दाद और फोतों के वरम को मुफीद है, सिर्के के

साथ नाखून के फट जाने और सफेद हो जाने को नफ़ा करता है। (जहरीला नहीं)

४५६—सफ़ैद: काशग़री

प्र०—सफैद: काशग़री। सं०—यशद भस्म भेद:। फ़ा०—सफेद आब।अ०—सफेदाज।रंग—सफेद।स्वाद—खारा व कसैला। प०—एक जस्म है मिस्ल जस्ते के और जस्ते का कुश्ता भी है। स्व०—सर्द २ खुश्क२। हानि—खुनाक़ पैदा करना और कातिल है। द०—क़ै करना और खूब ताजा शोरबा पीना।प्र०—मुर्दासंग। मात्रा—३ माशा।

गुण व कार्य—लतीफ है और पुराने से पुराने जख्मों को खुश्क करता है, तर व खुश्क खुजलीको नफा देता है,अंडे की सफेदी के साथ गुदा फट जाने को मुफीद है, खराब मांस को काट डालता है, जख्म को भर लाता है। आंख के दर्द और आंख से पानी जाने को इसका सुर्मा मुफीद है।

(जहरीला है)

४५७—सक़मूनियां

प्र०—सक़मूनियां।अ०—सक़मूनियां व महमूदह। रंग—भूरा व पिंगला सफेद। स्वा०—कड़वा। प०—एक घास का जमा हुआ दूध है कुछ स्याह रंग का। स्व०—गर्म ३ खुश्क १। हानि—दिल व मेदे और जिगर को ग़शी लाता है। दर्प०—कतीरा व सेब व बादाम रोग़न। प्र० एलुवा जर्द व हलैला जर्द। मात्रा—● रत्ती।

गुण व कार्य—जिला करती है और वरम व रियाह को तहलील करती है, पेशाब लाती है, सुद्दा खोलती है, सफरावी माद्दे को खास तौर पर दस्तों के राह निकालती है, हर दस्तावर दवाई को क़वी करती और गुणदायक करती है, मेदे और आंतों के कीड़े निकालती है, सौदावी मर्जों का नफा करती है, इसका इस्तैमाल बिना अमरूद या बिही में सुलमुलाये नहीं करना चाहिये। (जहरीला नही)

४५८—सक़न क़ूर

फ़ा०—सक़न कूर। अ०—असक़न कूर। रंग—सुर्ख व ज़र्द। स्वा०—फीका व खारा। प०—एक जानवर है जो नील नदी के किनारे पर रहता है हिन्दी में बनरेहू कहते हैं। स्व०—ताजा गर्म तर २ और खुश्क गर्म खुश्क २। हानि—दिमाग़ को।दर्प०—शहद व मसूर।प्र०—सालब मिश्री व गाजर।मात्रा—२ तो० से ३ तोला तक।

गुण व कार्य—इसका मांस बाह को कुव्वत देता है, तहरीक बाह खूब करता है, मनी को खूब पैदा करता है, फालिज व लकवा व राशा व खिदर (पट्ठों का सुस्त होना) व नुक़रस (पैर के अंगूठे की बीमारी) और वजअ़ उलमफ़ासल (गठिया) को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

४५९—स्क़न्द फला

प्र०—सकन्द फला। रंग—जर्द। स्वाद—कड़वा प०—प्रसिद्ध है। स्व०—गर्म खुश्क ४। हानि—क़ातिल है। दप०—कै करना।

गुण व कार्य—वरमों को तहलील करता है, जख्मों को भर लाता है और खुजली को नफा देता है। (जहरीला है)

४६०—शिलाजीत

प्र०—शिलाजीत। सं०—शिलाजतु। रंग—काला सुर्खी मायल। स्वा०—फीका व कुछ कड़वा। प०—मोमियाई सी एक चीज है जो पहाड़ों पर मिलती है। स्व०—गर्म खुश्क २। हानि—गर्म मिजाज वालों को। दर्प०—रोगन। मात्रा—४रत्ती।

गुण व कार्य—खिलतों के फिसाद को दूर करती है, दमे व जिर्यानमनी और जलंधरको नाफैहै, सख्त से सख्त वरमों व दिक़ और इल्लत शेख़ोख़त (बुढ़ापे) को मुफ़ीद है, पेट के कीड़े मारती है।

(जहरीला नहीं)

४६१—शिलाजीत का सत

प्र०-सिलाजीत का सत। सं०-सत्व शिलाजतु रंग-सफेद। स्वा०-फीका व कुछ कड़वा। प०-सिलाजीत का जौहर है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्प०-रोग़न। प्र०-इत्र नागेश्वर। मात्रा-१ रत्ती।

गुण व कार्य—बाह व गुर्दे व मसाने को कुव्वत देता है सूजाक व जिर्यान को मुफ़ीद है, बदन को क़वी करता है। (जहरीला नहीं)

४६२—सिलारस

प्र०-सिलारस। सं०-सिल्हकः। अ०-मीआ सायला। रंग-भूरा जर्दी मायल। स्वा०-फीका व खुशबूदार। प०-एक पेड़ का गोंद या दूध है, जिसका पेड़ बिही के पेड़ से मिलता है, इसे स्याम के मुल्क में अवह० कहते हैं। स्व०-गर्म ३ खुश्क ४। हानि-फेफड़े को। दर्प०-मस्तंगी। प्र०-जन्दबेदस्तर व रोगन चमेली। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—रियाह को तहलील करता है, ऐज़ा को कुव्वत देता है, माद्दे को मौतदिल उलअ-क़वाम (पाक) करता है, बलग़मी माद्दे को दस्तों की राह निकालता है, खांसी व जुकाम व दर्द सीना व फेफड़े को और दर्द गुर्दे को व कमर को और जलंधर को नफा देता है, मसाने की पथरी तोड़ता है, जोड़ों के दर्द और गठिया को मुफ़ीद है। (जहरीली नहीं)

४६३—समुन्दर फल

प्र०-समुन्दर फल। सं०-समुद्र फलम्। रंग-स्याह व सुर्खी मायल। स्वाद-कसैला व कड़वा। प०-एक हिन्दी फल हड़ की तरह व उसके बराबर और उससे कालाहै। स्व०-गर्म व खुश्क२। मात्रा-आधा फल।

गुण व कार्य—प्रमेह व जिर्यान मनी को नाफ़ै है, अगर शकर या नमक व अजवायन के साथ सफूफ बनाके गुनगुने पानी के साथ खावें तो पेट के दर्द को मुफ़ीद है, अगर दही के साथ खावें तो दस्त बन्द करता है, अगर लड़के वाली औरत के दूध में घिसकर नाक में सुड़कें तो दिमागका तमाम बलग़म बहा देवे, अगर पानी में घिसकर नाक में डालें तो शिरदर्द व आधा शीशी को फ़ायदा करे, अगर इसके छिलके व जड़ का लेप लगावें तो हाथ पैर के वरम को नफ़ा करता है।

(जहरीला नहीं)

४६४—समुद्रफेन

प्र० नाम-समुद्रफेन। सं०-समुद्रफेनम्। फ़ा०-कफे दरिया। अ०-ज़बरउलजर। रंग-सफेद जालदार। स्वाद-फीका व तेज व खारा। पहि०-एक चीज जालीदार और खार दरिया का दरियाये कुलज़म के किनारे पर मिलता है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-फेफड़े व आवाज को। दर्प०-लुआब समेग़र्बी। प्र०-बोरह अर्मनी। मात्रा-खाया नहीं जाता।

गुण व कार्य—इसका लेप स्याह दाग़ व चेहरे की स्याही और झाईं को दूर करता है, बलग़मी वरमों को तहलील करता है, तबली जलंधर को नफा करता है, पथरी को तोड़ बहाता है और कै

बन्द कर देता है, आंख के जाले को काटता है, बीनाई और दांतों को जिला देता है, सिर्के के साथ खुजली को नाफे है, इसका कुश्ता कम होता है, इसका इस्तैमाल जायज है।

(जहरीला है)

४६५—समुद्र सोख

प्र०-समुद्र सोख। सं०-समुद्र शोष्ठ। रंग-सफेद। स्वाद-फीका। पहि०-राई के बराबर एक बीज है। स्व०-सर्द तर १। हानि-अफ़ारा करता है। दर्प०-दूध व शकर। प्रति०-तुख्म खिर्बाली। मात्रा-२ मा०।

गुण व कार्य—पेशाब की सोजिस व सूजाक और मनी की रिकत को नफ़ा करता है, बाह व दिमाग़ को कुव्वत देता है, मनी पैदा करता है, इमसाक पैदा करता है और जलाया हुआ नासूर को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

४६६—समुद्र नोन

प्र०-समुद्र नोन। सं०-समुद्र लवण। फ़ा०-नमक दरिया। अ०-मलहुल मुहीत। रंग-सफेद। स्वाद-खारा। पहि०-अक्सर रूम व ऐराक़ व अरब व जहाज में समुद्र के खारी पानी से बनाते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। प्र०-खारी नमक।

गुण व कार्य—खाने की भूख बढ़ाता है और हाज़िम है, रियाह खूब तोड़ना व बाहर निकालता है, दस्तावर भी है, और मसामात (रोमावली में) बहुत उतरने वाला है और खार की जगह भी है। (ज़हरीला नहीं)

४६७—सम्भालू

प्र०-सम्भालू। सं०-सिन्दुवारम्। फ़ा०-फ़िंजन क़िश्त। अ०-असलक़। रंग-हरा व पीला। स्वाद-कड़वा व कसैला। पहि०-एक पेड़ ३ व ४ गज का जिसके पत्ते अन्नासे के से होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गुर्दे व बाह को। दर्पघ्न-तुख्म करफ़स। प्रति०-गुलनार। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य—क़ाबिज है और वरम व रियाह को तहलील करता है, लताफ़त बख्शता है, तिहाल का सुद्दा खोलता है, वरम व हैज के बन्द हो जाने और दाहइल कलब को मुफीद है, कुत्ते के काटे हुये के लिये मुफीद है, इसका बीज नस्ल व बच्चे जनने को दूर करता है, इस वास्ते अरब के लोग इसका नाम उल्टा हबुल नस्ल रखते हैं।

(जहरीला नहीं)

४६८—सम्भालू के बीज

प्र० नाम-सम्भालू के बीज। सं०-सिन्दुवार बीजम्। फ़ा०-तुख्म फ़िंजन क़िश्त। अ०-बज़रुल असलक व हबुल फ़िक़द व हबुलनसल। रंग-स्याह व सफेद। स्वाद-तेज बू व कड़वा। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गुर्दे व बाहको। दर्पघ्न-समैग़र्बी व बकरी का दूध। प्र०-शाह दाना। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य—जिगर का सुद्दा खोलता है और दिमाग़ी सुद्दे को भी खोलता है, वर्म दिमाग़ व यशर गुस को नफ़ा देता है और बच्चा पैदा होने को दूर करता है। (जहरीला नहीं)

४६९—संखिया

प्र०-संखिया। सं०-मल्लः। फ़ा०-मर्गमूस। अ०-समउल फार व क़रून उल सम्बुल। रंग-जर्द व सफेद व सुर्ख व स्याह। स्वाद-जहर। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क ४।

गुण व कार्य—मुहल्लिल (हलाल करने वाला) है, सर्दी के जख्मों में गोश्त भर लाता है, इसका तेल के साथ मलना तर व खुश्क खुजली और सर्दी के वरमों को मुफीद है और जलंधर को फायदेमन्द है। (जहरीली है)

४७०---संतरा

प्र०-संतरा। सं०-नारंजफलम्। रंग-सुर्ख। स्वाद-मीठा। पहि०-एक हिन्दी मेवा नारंगी की किस्म से है। स्व०-सर्द १ तर २। हानि-पट्ठों को और नरखरे को। दर्पघ्न-कन्द व शहद। प्र०-नारंगी।

गुण व कार्य—दिल और मेदे को कुव्वत बख्शता है और फरहत लाता है, अक्सर ऐज़ा को कुव्वत देता है, गर्मी व प्यास को तस्कीन देता है, बबाई हवा की खराबी को दूर करता है सफरा को छांटता है,सफरावी मिजाजोंको बहुत मुआफिक है, खफकान और बहशतको बहुत मुफीद है, इसका उबटन चेहरे की स्याही व झांई और मैल को दूर करता है। (जहरीला नहीं है)

४७१---सिंघाड़ा

प्र०-सिंघाड़ा। सं०-शृंगाटकम्। रंग-बाहर हरा भीतर सफेद। स्वाद-फीका व कुछ मीठा। प०-एक कांटेदार फलहै,जिसके दोनों ओर २ कांटे होते हैं। इसका पेड़ पानी में जमता और फैलता है। स्व०-ताजा सर्दतर और सूखा व सर्द खुश्क। हानि-सुद्दा पैदा करता है व सक़ील और देर हज़्म है। दर्प०-नमक व गर्म जीज़।

गुण व कार्य—गर्म मिजाज वालों की बाह को कुव्वत देता है, तप और गुर्दे की खांसी और खून व दिल की सोजिश को मुफीद है, दांतों को जिला देता है, मसूढ़ों को कवी करता है, दही के साथ दस्तों को बन्द करता है मुंह से खून आने को मुफीद है और मुजर्रब है।

(जहरीला नहीं)

४७२--संगजराहत (सेलखड़ी)

प्र०-संगजराहत।सं०-खटिकाभेदः।फा०-संगजराहत। अ०-हुजरुल ऐराबी। रंग-सफेद।स्वाद-नर्म व फीका। पहि०-एक तरह का प्रसिद्ध पत्थर है। स्व०-सर्द १ खुश्क २। हानि-मसाने को। दर्प०-मस्का व शक्कर। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—सब ऐज़ा से खून बहने को बन्द करता है, जख्मों से भी खून बहने को बन्द करता है, सीने के और खूनी दस्तों को बन्द कर देता है, दांतों को जिला देता है। मसूढ़ों को मजबूत करता है, दही के साथ खूनी दस्तों को बन्द करता है मुंह से खून आने को नफा करता है, ठीक तजुर्बा किया गया है। (जहरीला नहीं)

४७३---चकमक पत्थर (चुम्बक पत्थर)

प्र० नाम-चकमक पत्थर। सं०-अयस्कान्त। फा०-संग चकमाक व संग आतिश। अ०-हुज्रुल नार। रंग-भूरा व स्याह। स्वाद-फीका। पहि०-एक तरह का सख्त पत्थर है जिसको फौलाद लोह के साथ रगड़ने से आग निकलती है। स्व०-सर्द १ खुश्क २।

गुण व कार्य—इसकी पिसीहुई,चुटकी(बुकनी) कंठमाला को नफा देती है, जख्मों के मुंह में लगाने से जख्मों को भर लाती है, जो जख्म किसी तरह खुश्क नहीं होते हों तो उनको मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

४७४---संग सरमाही

प्र०-संग सरमाही। फा०-संग सरमाही। अ०-हुजर उल समक व हुजर उल हूत (हवत) रंग-सफेद व भूरा। स्वाद-फीका। पहि०-एक तरह का तिकोना पत्थर है, जो मछली के शिर से निकलता है। स्व०-गर्म खुश्क।

गुण व कार्य—गुर्दे व मसाने की पथरी तोड़ता है, बहुत गुणदायक है, बच्चों के पसली के मर्ज को नफा करती है। और उनकी प्यास की हिद्दत को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

४७५---संग यहुदान (बेर पत्थड़)

फा०-संग यहुदान। अ०-हुजरुल उल यहूद। रंग-सफेद। स्वाद-फीका। पहि०-एक गोल व बेर के बराबर पत्थर है; स्व०-गर्म १ खुश्क २। हानि-जिगर को। दर्प०-गोंद व करफस। प्रति०-करफस। मात्रा-२ माशा।

गुण व कार्य—पेशाब खूब लाताहै,गुर्दे व मसाने की पथरी को तोड़ बहाता है। और पथरी को पैदा नहीं होने देता और अगर मसाने में खून जम जाय तो उसको कड़वे बादाम पानी के साथ पिलाने से खून को पिघला कर पेशाब की राह बहा देता है, मुजरंब है।

(ज़हरीला नहीं)

४७६—सन

प्र०-सन। सं०-सण। फा०-जादनः। रंग-सफ़ेद व भूरा। स्वाद-फीका। पहि०-मशहूर है। एक घास की बारीक छाल है। स्व०-सर्द। हानि-देर हजम नफ़ाख है।

गुण व कार्य—इसका साग शकील (गरिष्ट) व काबिज है। इसके फूल खून नफ़ास (जच्चा औरत के खून) को बन्द कर देते हैं। इसके रेशे का बना हुआ कपड़ा पहनना खुश्की करता है। और खुश्की लाता है। (जहरीली नहीं)

४७७---सूरजमुखी

प्र०-सूरजमुखी। सं०-सूर्य मुखी। फा०-गुल आफ़ताब परस्त। अ०-आजर यून। रंग-पत्ते हरे फूल खूब पीला। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक घास है जिसका फूल बड़ा व चोड़ा और सुनहरा और सूरज की तरफ को रहता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों और तिहाल को। दर्पध्न-सिकंजबीन व शहद। प्र०-तज व जाफ़रान। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—वरम को तहलील करता है व जिला देता है। दिमाग व जिगरका सुद्दा खोलता है, दिमागको पाक करता है। मेदे व जिगर और बाहको कुव्वत बख्शता है, ख्वाहिश नफ्सानी को मुहरक है, बवासीर व कांवर व जलंधर और कुलंज (वायशूल) को मुफीद है, पथरी तोड़ता है इसका लेप नुकरस के दर्द को मुफीद है।

४७८—सोरंजान मीठा

प्र०-सोरंजान मीठा। फ़ा०-सोरंजान शीरी। अ०-सोरंजान हलू। रंग-जर्दी सुर्खी मायल। स्वाद-मीठा व बूदार। पहि०-एक जड़ जंगली लहसुन की तरह की मशहूर है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-मेदे व जिगर को। दर्प०-कतीरा व जाफ़रान प्र०-तुबुंद व सोंठ। मात्रा ३ माशे।

गुण व कार्य—बदन के अन्दर से हर किस्म के बलग़म को दस्तों की राह निकालता है, सुद्दा खोलता है, लसदार रतूबत को बदन के अन्दर से खींच लाता है बाह को कुव्वत देता है, अकूलनिशां

और नुक़रस (पांव की उंगली के दर्द) को मुफ़ीद है और गठियाको नफा करता है।

(कुछ जहरीला है)

४७९—सोरंजान कड़वा

प्र०-सोरंजान कड़वा। फा०-सोरंजान तलख़ अ०-सोरंजान मर। रंग-पीला। स्वाद-कड़वा। पहि०-यह भी एक तरह का सोरंजान है। स्व०-गर्म ३ खुश्क ३। प्र०-कुस्त तलख। मात्रा-३मांशे। इसको खाते नहीं हैं।

गुण व कार्य—वरमों को तहलील करता और माद्दे को मौतदिल उल क़वाम (पाक) करता है, जिला करता है, रोग़न गुल के साथ इसकी मालिश जोड़ों के दर्द और गांठया को मुफीद है. गाय के घो के साथ इसका तर किया हुआ लत्ता (कपड़ा) धरना बवासीर के मस्सों को गिरा देता है, इसका खाना किसी तरह पर जायज नहीं है, और मस्तगी के साथ पट्ठों को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

४८०—सोसन

प्र०-सोसन।फा०-सोसन आस्मानगोन। अ०-सोसन आस्मान जून। रंग-पत्ते हरे फू नीला। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक पेड़ है जिसकी कई किस्म है यानी बस्तीका और जंगली का। स्व०-गर्म खुश्क १, बाजों के नजदीक मौतदिल है। हानि-फेफड़े को। दर्प०-शहद व नीलोफर। प्र०-माजार-यून। मात्रा-६ माशे।

गुण—मेदे व आंतों और जिगर व गुर्दों को कुव्वत देती है, गर्मी करती है, वरम व रियाह को तहलील करती है, हर किस्म के बलग़म को छांटती है, और अगर इनके पत्ते चबा कर रस निकाल लें तो वह रतौंधी व आंख के जखम व आंखकी सुर्खी को छांटता और नाखूना व सबल को मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

४८१—सोसन की जड़

प्र०-सोसन की जड़। फा०-बेख़ सोसन,अ०-असलउल सोसन। रंग-भूरी। स्वाद-कुछ कड़वी व खुशबूदार। प०-टेढ़ी बंकी और गिरहदार सोसन की जड़ है, जिसमें बनफ्शाकी खुशबू आती है,अक्सर लोग इसको बेखबनफ्शा जानतेहैं। स्व०-गर्म व खुश्क बाजोंके नजदीक मौतदिल है। हानि-फेफड़े को। द०-शहद। प्र०-असलुल सोसन। मात्रा—६ माशे।

गुण व कार्य—लताफ़त बख्शती और गर्मी पैदा करती है, माद्दे को मौतदिल उलकवाम करती है, जिला करती है, मवाद से पाक करतीहै,सफरावी व सौदावी और बलग़मी माद्दे को दस्तों की राह निकालती है, इस्तलाई तशन्नुज व फालिज व सक्ता और बच्चोंके नींद से चौंक पड़नेको मुफीद है, इसका लेप पुराने शिर के दर्द को खोता है।

(जहरीला नहीं)

४८२—सोसन आजाद

फा०-सोसन आजाद। अ०-जम्बक़। रंग-फूल सफेद। स्वाद-कुछ कड़वा। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-यर्का (कांवर) पैदा करता है। द०-तुर्ब(मूली)। प्र०-ऐरसा व नर्गिस। मात्रा-१ माशा।

गुण व कार्य—लताफत पैदा करता व दिमाग को कुव्वत देता है व पेशाब लाती है, इसका तेल ऐजा को मजबूत करता है और सफ़रा को दस्तों की राह निकालता है। (जहरीला नहीं)

४८३—सोना

प्र०-सोना। सं०-सुवर्ण फा०-ज़र व तिला। अ०-ज़हब। रंग-पीला व बुर्राक (चमकदार) स्वाद-फीका व कसैला। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-मातदिल व गर्मी मायल। हानि-मसाने व आलात व पेशाब की कमी को। द०-शहद व मुश्क। प्र०-जाकूत। मात्रा-१ से २ रत्ती तक।

गुण व कार्य—रूह को लताफ़त और तबिअत को फ़रहत देता है, दिल व दिमाग और असिल हरारत को क़वी करता है, फ़िक्र व ग़म और खफ़कान को खोता है, हर प्रकार की बवासीर व ज़ोफ़ गुर्दा को नफ़ा देता है, बाह को ताक़त देता है, इसका सुर्मा बीनाई को मज़बूत करता है।

(जहरीली नहीं)

४८४—सोना मक्खी

प्र०-सोनामक्खी। सं०-सुवर्णमाक्षीक। फा०-चर्क तिला। अ०-ख़बसुल ज़हब व अक़लीमियाये उल जहब। रंग-पीला। स्वाद-कसैला। पहि०-सेने की भट्टी का मैल मशहूर है और खान से भी लाते हैं। स्व०-गर्म खुश्क२। हानि-फेफड़ेको। द०-बादाम रोग़न। प्रति-तूतया। मात्रा-एक जौ।

गुण व कार्य—आंख की रद्दी रतूबत को खुश्क करती है, बीनाई को ताकत देती है, आंख के जाले व माड़े व नाखूना और सबल को दूर करती है, दिल को कुव्वत देती है, खफकान को नफा करती और तिहाल के वरम और सख्ती को तहलील करती है।

(जहरीली नहीं)

४८५—सोंठ

प्र०-सोंठ। सं०-शुन्ठी। अ०-जंजबील। रंग-मटियाला। स्वाद-तेज व तेज़ बू। प०-एक घास की जड़है जो चौड़ी व गिरहदार होतीहै मशहूर है। स्व०-गर्म ३खुश्क १। हानि-हलक़को। द०-शहद व रोगनबादाम प्र०-दार फ़िलफ़िल। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—याददाश्त व पाचन शक्ति व मेदे और जिगर को कुव्वत देती है, जिगरका सुद्दा खोलती है, बाह ज्यादा करती है, रियाह को तहलील करती है, बलग़म को छांटती है, गाढ़े खिलतों को निकालती है, तबिअतको नर्म करती है, फ़ालिज और सर्दी के कुल दर्दों को इसकी धूग बहुत मुफीद है, पेट के कीड़े और बलग़मी प्यास को तस्कीन देती है, खोलंजान और पिस्ते बराबरके साथ बाह के लिये मुजर्रब है, मछली के ऊपर प्यास को मना है।

(जहरीली नहीं)

४८६—सौंफ

प्र०-सौंफ। सं०-शतपुष्पा। फा०-बादियान व राजयाना। अ०-राजयानज। रंग-पीली सब्जी मायल। स्वाद-कुछ मीठी व तेज व तेज बू। प०-एक घास का मशहूर बीज है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-गर्म मिज़ाज वालों को। दर्प०-सन्दल व काफूर व सिकंजबीन। प्र०-अजमोद के बीज। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—सीने को मजारी व जिगर व तिहाल व गुर्दे और मसाने के सुद्दे खोलती है, पेट के दर्द को तस्कीन देती है, बीनाई और मेदे को ताकत देती है, रियाहको तहलील करती है, बलग़म को छांटती है, तबख़ीर के अबख़रे चढ़ने को नफा देती है, पेशाब लाती है, सिकंजबीन के साथ पुराने बुखार को नफा करती है, माहे को मजबूत करती है, दूध पैदा करती है, कुलंज व दस्तों और खांसी को मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

४८७—सौंफ की जड़

प्र०—सौंफ की जड़ । सं०—शतपुष्पा मूलम् । फ़ा०—बेखबादियान । अ०—असल उल राजायानज रंग—पीली । स्वाद—मीठी व तेज । प०—प्रसिद्ध है । स्व०—गर्म खुश्क २ । हानि—गर्म मिज़ाज वालों को दर्प०—कतीरा व धनियां व सन्दल । प्रति०—बेख करफ्स (अजमोदकी जड़) । मात्रा—६ माशे ।

गुण व कार्य—वरम व रियाह को तहलील करती है, रियाह को निकालती है, हाज़िम है । सुद्दा खोलती है, पेशाब लाती है, हैज जारी करती है दर्दों को तस्कीन देती है, बाह को ठीक (पाग) करती है, कुलशूल व पहलू और रीढ़ के दर्द को नफा देती है. शहद के साथ इसका लेप कुत्ते के काटे को मुफीद और मुजरब (आजमाया) है ।

(जहरीला नहीं)

४८८—सोया

प्र०—सोया । सं०—मिश्रेया । फ़ा०—शोवत । अ०—शबत । रंग—हरा व खुशबूदार । स्वाद—तेज व कड़वा । पहि०—एक मशहूर साग है, जिसके पत्ते छोटे बारीक और फूल छतरदार होता है । स्व०—गर्म खुश्क २ । बाज़ों के नजदीक खुश्क १ । द०—दिमाग को जईफ और नशा पैदा करता है । प्र०—खटाई व सिकंजबीन । प्र०—सोये के बीज । मात्रा—१ माशे ।

गुण व कार्य—रियाह को तहलील करता है । माहे को क़वीउल कवाम (पाग) करता है, सुद्दा तोड़ता है, हाजिम है, पेचिश को तस्कीन देता है । सर्दी के दर्दों व सूखी खांसी को मुफीद है, मसाने व गुर्दे की पथरी तोड़ता है, कुलंज को नफा देता है, मेदे से लसदार और गाढ़े खिलत को छांटकर निकालता है ।

(जहरीली नहीं)

४८९—सोये के बीज

प्र०—सोये के बीज । सं०—मिश्रेया बीजम् । फा०—तुख्म शबत । अ०—बजरउल शबत । रंग—पीला व सवज़ी मायल । स्वाद—तेज व कुछ कड़वे । पहि०—सौंफ से छोटे बीज हैं । स्व०—गर्म खुश्क २ । हानि—मनी को खराब करते हैं और बीनाई व गर्म मिज़ाज वालों को । दर्प०—खटाई व शहद । प्र०—सौंफ । मात्रा—७ माशे ।

गुण व कार्य—रियाह को तहलील करते हैं, पेशाब व हैज और दूध खूब जारी करते हैं, अक्सर रहम (योनि) के मर्जों में फायदेमन्द है, मसाने व फोतों की अक्सीर बीमारियों को नफा देते हैं, बलगमी हिचकी व कमर और तिहाल के दर्द को मुफीद है ।

(जहरीला नहीं)

४९०—सुहागा

प्र०—सुहागा । सं०—टंकण । फा०—तंकार । रंग—सफेद । स्वाद—खारा व तेज । हानि—एक मादनी चीज़ है जो दो तरह का होता है । स्व—गर्म खुश्क ३ । हानि—ऐजाये रईसा को व बदनके नाजुक हिस्सों को । दर्प०—समग़अर्बी व सिर्का । प्र०—बूरह अर्मनी । मात्रा—१ माशा ।

गुण व कार्य—लतीफ है, रियाह व वरम को तहलील करता है । जिला करता है, बवासीर का मस्सा काटकर गिरा देता है, बुरे मांस को काटकर बहाता है, भुना हुआ मेदे के दर्द और पेट के कब्ज को नफा करता है ।

(जहरीला नहीं)

४९१—सहदेई

प्र०—सहदेई । सं०—सहदेवी । रंग—हरा । स्वाद

कड़वी। पहि०-एक घास है जिसके पत्ते तुलसी के से होते हैं। स्व०-सर्द तर १।

गुण व कार्य—मुश्किल से पेशाब आने को दूर करती है। कालीमिर्च के साथ पुराने ठहरे हुए बुखार को नफा करती है, हाथ पैर में मलने से सुर्ख व सफेद हो जाते हैं। इसकी जड़ को पीस कर अगर तिला करें तो मुलज़िज़ है (लज़्ज़त या मजा देती है) इससे पारे का कुश्ता उम्दा बनता है। (जहरीली नहीं)

४९२—सहजना

प्र०-सहंजना। सं०-शोभाञ्जनम्। रंग-हरा। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक बड़ा पेड़ है जिसके पत्ते अलग २ और फली लम्बी होती है। स्व०-गर्म व खुश्क ३। हानि-सफ़राबी मिजाजों को। मात्र—१ माशे।

गुण व कार्य—जल्द असर करता है, बलग़म को दूर करता है, वर्मों को तहलील करता है, बाह को कुव्वत देता है, भूख जियादा लाता है, रियाह व खून के विकार को दूर करता है, पेशाब को जारी करता है, मसाने की पथरी तोड़ता है, गठिया व पेट के दर्द को मुफ़ीद है, इसके फूल गरिष्ठ व क़ाबिज हैं और बलग़म के फिसाद को दूर करते हैं। (जहरीला नहीं)

४९३—सहोड़ा

प्र०-सहोड़ा। सं०-शाखोटक। रंग-हरा। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक पेड़ है जिसके पत्ते छोटे व फल चने के बराबर होते हैं, हिन्दू इसकी लकड़ीकी दातौन बनाते हैं। स्व०-गर्म खुश्क।

गुण व कार्य—खून के फिसाद व रियाह व बलग़म को दूर करता है। खूनी दस्तों को बन्द करता है, इसकी लकड़ी की दातौन दांतों व मसूढ़ों को मजबूत करती है, इसके पत्ते काली मिर्च के साथ पिसे हुये कुत्ते के काटे हुये को नफा करते हैं। (जहरीली नहीं)

४९४—सेब

प्र०-सेब। सं०-सेवम्। फ़ा०-सेब। अ०-तफ़ाह रंग-पीला व लाल। स्वाद-मीठा व खट्टा। पहि०-एक विलायती प्रसिद्ध मेवा है। स्व०-मीठा व गर्म १ व खट्टा सर्द खुश्क २। हानि-सीने व को रियाह को पैदा करता है। दर्प०-दारचीनी व शहद व गुलकन्द। प्र०-बिही। मात्रा-१ तोला।

गुण व कार्य—फ़रहत देता है, दिल व दिमाग़ व जिगर व मेदे और फम मेदे (मेदे के मुंह) को कुव्वत देता है, रुह हैवानी को लतीफ़ करता है गर्मी को तस्कीन देता है, ख़फ़क़ान व हांपने को मुफीद है, भूख बढ़ाता है, खून जल्द बनाता है, गालों का रंग साफ़ करता है। इसका मुरब्बा बहुत लतीफ़ व बहुत लजीज और बहुत क़वी है और तबिअत को फ़रहत देता है। (जहरीला नहीं)

४९५—सीप

प्र०-सीप। सं०-शुक्ति। फा०-गोश माही। अ०-सदफ़। रंग-सफेद बुर्राक। स्वाद-फीका। पहि०-सीप से मतलब हकीमों की राय में सदफ़ मरवारीद (मोतीसीप) से है। स्व०-सर्द १ खुश्क २। हानि-जिगर व सीने को। दर्प०-उन्नाव व शहद। प्र०-पहाड़ी गायका सींग व कहरवा समई। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—रुहको लतीफ करती है। दस्त व खून बहने और नकसीर को बन्द कर देता है,

जली हुई को जिला करती है, दिल के दर्द को दूर करती है, खास कर मसूढ़ों को मजबूत करती है और दांतों को जिला देती है, सुर्मा की हुई पिसी हुई अक्सर मर्जों को नफा देती है।

(जाहरीली नहीं)

४९६—सेंठा (मूंज)

प्र०—सेंठा। सं०—मुञ्ज। फ़ा०—अज जिंसने। अ०—क़सब। रंग—पीला व सुनहरा। स्वाद—फीका। प०—नकुल की किस्म से है भीतर से ठोस इसकी पत्ती पतावर है। स्व०—सर्द खुश्क १। हानि—फेफड़े को। दर्पघ्न—कतीरा।

गुण व कार्य—इसकी जड़ जिला करने वाली है। वरम को तहलील करती है, सिर के दर्द और गंज को मुफीद है। इसके जले हुये का मंजन दांतों को जिला करता है और मजबूत करता है। मसूड़ों से खून बहने को बन्द करता है, जले हुये का लेप सूखी व तर खुजली और पीपदार जख्मों को मुफीद है, नमक के साथ जले हुये की चुटकी खांसी को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

४९७—सीसा

प्र०—सीसा। सं०—नाग। फ़ा०—सर्ब। अ०—रुसास उलअसूद। रंग—स्याह। स्वाद—कसैला व खुश्क। प०—एक खान की चीज प्रसिद्ध है। स्व०—सर्द तर २।

गुण व कार्य—काबिज है, मवाद को पुख्ता करता है, इसको रोगन गुल में हिल करके मलना सोजिश यानी जलन को तस्कीन देता है। इसके कुश्ते का सुर्मा जाले व माडे और आंखों से पानी जाने को यशद भस्म की तरह से मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

४९८—सिन्दूर

प्र०—सिन्दूर। सं०—सिन्दूरम्। अ०—असरंज। रंग—सुर्ख। स्वाद—बदमजा व बदबूदार। प०—एक पिसी हुई लाल चीज है जो रांगा व सफेदा और सिंगरफ से बनाई जाती है। स्व०—सर्द २ खुश्क ३। हानि—क़ातिल है। द०—शोरबा खूब चर्ब। प्र०—मुर्दार संग।

गुण व कार्य—वरम व फोड़े को तहलील करता है, जख्मों को जिला देता है जख्मों को मवाद से पाक करके मांस भर लाता है, जखम की बदबू दूर करता है, दाद व तर खुजली को मुजरब है यदि धोये हुये घी के साथ लगाया जावे।

(सम कातिल है)

४९९—सेंढ

प्र०—सेंढ। सं०—सेंहुड़। फ़ा०—जक़ूम साम। रंग—हरा व सफेद। स्वा०—खूब कड़वा। प०—एक बड़ा दरख्त कांटेदार व दूधवाला अक्सर बंगाले में होता है। स्व०—गर्म व खुश्क ३। हानि—शराब की तरह अजू को जला और खा जाता है। द०—ताजा दूध। प्र०—थूहर।

गुण व कार्य—दस्तावर है, बाद व बलगम के फिसाद को दूर करता है, भूख लाता है, जलंधर व कोढ़ और बदन की जर्दी को दूर करता है मसाने की पथरी तोड़ बहाता है।

(करीब वह सम है)

५००—सींघ

प्र०—सींघ। सं०—शृंगम्। फ़ा०—शरून व शाख। अ०—करन व आज। रंग—सफेद व काला व पीला स्वा०—फीका व कड़वा। प०—अक्सर चौपायों के शिर पर दो जियादतियां होती हैं। स्व०—गर्म १।

खुश्क ३। हानि-सुद्दाव को। दर्प०-खुर। मात्रा—१ माशा।

गुण व कार्य—खुश्की लाता है, जलाया हुआ खून बहते को बन्द करता है अक्सर दवा में बारह सिंघा का सींघ बहुत काम में लाते हैं वह जातुल अम्द (बच्चों की पसली चलने) को लगाने और काली मिर्च के साथ पिलाने से मुफीद है, जलाया हुआ बारहसिंघा दमे के लिये मुजर्रब है।

(गोश्त समी और बाज सम्मी है)

५०१---सेम्भल (सिमर) कन्द

प्र०-सेम्भलका मुसला। सं०-शालमली मूलम्। रंग-सफेद व भूरा। स्वाद-कुछ कड़वा व लसदार प०-एक हिन्दी पेड़ है जिसके फल में से चिकनी रुई निकलती है, उसकी जड़ है। स्व०-गर्म तर रतूबत फुजलिया के साथ। हानि-रियाह पैदा करता है। प्र०-सतावर। मात्रा-१ तो०।

गुण व कार्य—बाह जियादा पैदा करता है, बदन को फरबै करता, खून के फिसाद और कोढ़ को दूर करता है, बाहको कुव्वत देता है, मेदे को ताकत देता है। तबिअत को नर्म करता और असली हरारत बढ़ाता है। (जहरीली नहीं)

५०२---सेम

प्र०—सेम। सं०-शिम्बी। फा०—गिलाफ उल गोल। रंग-हरी व सफेद। स्वाद-कुछ कसैला। प०-एक बेलकी फलियां हैं जो तरकारीका किस्म से मशहूर हैं।। स्व०-सर्द खुश्क १। हानि-नफाख़ व देर में हजम है। दर्पघ्न-मांस व गर्म मसाला।

गुण व कार्य—बलगम व बाह के फिसाद को दूर करता है, सफरा के फिसाद को भी दूर करता है, इसको गोश्त के साथ पकाना लज़ीज कर देता है, अक्सर चर्म रोग व बवाई बीमारियों को नफा देती है, इसके पत्तों का रस दाद पर लगाना अच्छा है और मुजर्रब है, इसके पत्तों को कड़वे तेल में जलाकर लोहे के बर्तन में हिला करके लगाना गंज व नासूर को मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

५०३---सेम के बीज

प्र०-सेम के बीज। सं०-शिम्बा बीजम्। अ०-गाल। रंग-हरे व सफेद व लाल। स्वाद-फीका। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द खुश्क। हानि-नफाख व देर हजम है। प्र०-मांस व गर्म मसाला।

गुण व कार्य—बलगम व सफरा के फिसाद को दूर करता है, मेदे व बाह को मजबूत करता है, इसकी मैदा का हलवा बाह को जियादा करता है, इसकी सूखी चुटकी खून बहने और नक्सीर को बन्द करती है। (जहरीला नहीं)

५०४---सेवती

प्र०-सेवती। सं०-सेवन्तिका। फा०-गुलमिश्कीन। अ०-बर्द सीनी व नसरीन। रंग-सफेद। स्वाद-फीका व खुशबूदार। प०-एक फूल प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-दिमागको। द०-काफूर। प्र०-चम्बेली। मात्रा-४ से ५ मा० तक।

गुण व कार्य—लताफत देती है, रियाह व वरम को तहलील करती है सीना को पाक करती है। सीने के वरम व हलक के दर्द व वरम को मुफीद है, दिल व दिमाग और जिगर को कुव्वत देती है, शिर को गर्म करती है, हैज को जारी करती है, बलगम व सौदाको दस्तोंकी राह निकालती है, इसका सूंघना ऐजाये रईसा को कुव्वत देता है।

(जहरीला नहीं)

बाबउल शीन (श)

इसमें १८ दवाइयां हैं

५०५—(शादाना) भंग के बीज

सं०-विजया बीजम् । फा०-शाहदाना व शादना अ०-शादनज व मुजरउलदम । रंग-बरंग । स्वा०-फीका । प०-छोटे २ कंकर के मसूर के बराबर दाने होते हैं ।स्व०-धोये सर्द खुश्क२,वे धोये गर्म१ खुश्क खुश्क २ । हानि-मसाने और मेदे को ।दर्प०-कतीरा व जरिश्क । प्र०-रसौत व दम्मुल अखवीन व मक़नातीस । मात्रा-१ मा० ।

गुण व कार्य—खुश्की करताहै,काबिज है,मवाद को पका लाता है, लतीफ़ है, जख़म को भर लाता है बीनाईको कुव्वत देताहै,बुद्धीको तेज करता है,पेशाब बन्द हो जाने को नफा करता है' खून रोकता है, गुदा फट जाने को मुफीद है ।

(जहरीला नहीं)

५०६—साल व सालोन

प्र०-साल व सालोन । सं०-शाल । रंग हरा । स्वाद-कड़वा । प०-एक हिन्दुस्तानी बड़ा पेड़ है । स्व०-गर्म ।

गुण व कार्य—तप व सांसकी तंगी और तीनों खिलतों(सफरा व सौदा और बलग़म)के फ़िसाद को दूर करता है, मितली को रोकता है, दस्तों को बन्द कर देता है, बाह को जियादा करता और खुश्की को नफ़ा देता है, ऐजा को कुव्वत देता है, पुराने बुखारों और वरमो को मुफीद है ।

(जहरीला नहीं)

५०७—शाह पसन्द

प्र०-शाहपसन्द ।फा०-शाह पसन्द । रंग-पीला व भूरा । स्वाद-कुछ खट्टा । प०-एक दाना मेवा की किस्म से मशहूर है । स्व०-गर्म खुश्क २ । हानि-शिर दर्द पैदा करता और कै लाता है । दर्प०-आलूबुखारा । प्र०-जुलाका । मात्रा-१ मा० ।

गुण व कार्य—बड़ा दस्तावर है, तीनों खिलतें (सफरा, सौदा, बलग़म) को निकालता है और पेट के कीड़े मारता है ।

(ज़हरीली नहीं)

५०८—शबरम

अ०-शबरम । रंग-हरा व लाल । स्वाद-कुछ कड़ुवा । प -एक घास गिरहदार मिस्ल नेजा के इसमें से दूध निकलता और दाना मसूर सा होता है स्व०-गर्म ३ खुश्क २ । हानि-मेदे व जिगर को । दर्प०-मस्का व गौ घृत । प्र०-माजरयून । मात्रा-२ मा० ।

गुण व कार्य—बलग़म व सौदा के दस्तों को बढ़ाता है और हर ख़िलत को बदन के अन्दर से खींचकर पेशाब की राह बहा देता है, इस वास्ते इसके इस्तेमाल में सावधानी चाहिये ।

(जहरीला है)

५०९—शबोई

फा०-शबोइ । अ०-खैरी खरामी । रंग-सफेद व पीला व बैंगनी । स्वाद-फीका व कड़वा। प०-एक खुशबूदार फूल है उसकी पहचान में फ़र्क (भेद) है । स्व०-गर्म खुश्क २ । हानि-काबिज है व शिरदर्द लाता है । द०-बादाम रोगन व सिर्का व गुलरोग़न । प्र०-नर्गिस । मात्रा-६ मा०

गुण व कार्य—वरम व रियाह को तहलील करता लताफ़त देता व जिला करता है, खूब जज़्ब करने वाला रतूबत का है, हिचकी को तस्कीन देता है, पेशाब व हैज को जारी करता है,

मरे हुये बच्चेको झिल्ली समेत निकालता है, इसका लेप आंख के जाले को मुफीद है, इसका सूंघना बलग़म व ग़लीज रियाह को दिमाग़ से तहलील करता है, इसका तेल सर्द मिज़ाज वाले के दिमाग़ को कुव्वत देता और पाक करता है।

(ज़हरीला नहीं)

५१०—शरीफ़ा व सीताफल

प्र०-शरीफ़ा व सीताफल। सं०-सीताफलम्। रंग-बाहर हरा व सफेद, अन्दर सफेद। स्वाद-मीठा। पहिचान-एक हिन्दी व पहाड़ी फल मेवे की क़िस्म से है, जिसके ऊपर गोल २ उभरे हुये होते हैं। स्व०-गर्म तर साथ रतूबत फुजलिया के। हानि-नफाख़ है, देर हजम है और फोड़े पैदा करता है। दर्प०-खटाई।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करता है, बलग़मी व लसदार और सौदावी खून पैदा करता है, गर्मी करता है, मेदे को फासिद और गर्म कर देता है, मनी पैदा करता है, बाह व दिलको कुव्वत देता है, खफक़ान को नाफै है, इसके बीज पेट के कीड़े मारते हैं, मट्ठे के साथ इसका लेप दाद को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

५११—शकायी

प्र०-सीकाकाई। अ०-शकायी। रंग-पीला। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक पेड़के फलहै जिसका फूल बैंगिनी बज़र्दी मायल होताहै। स्व०-गर्म १ खुश्क २। हानि-फेफड़े को। दर्प०-समगर्बी व शहद। प्र०-बादाव रद। मात्रा-० माशे।

गुण व कार्य—बलग़म को ठीक हालत पर करती है, बलग़मी सुद्दा खोलती है सीने से खून बहने को बन्द कर देती है, मेदे व जिगर की सर्दी की बीमारियोंको नफा देतीहै, पुरानेसे पुराने बुखारों को मुफीद है, रहम (योनि) से रतूबत बहने को रोकती है, फ़ालिज यानी (झोला मारने) लकवा यानी (मुंह टेढ़ा हो जाने) को और राशा व कोढ़ को मुफीद हैं। (जहरीली नहीं)

५१२—शकर तेगाल

फा०-शकर तिगाल व फान ग़िज़ाक हैवान। अ०-शकर तिगाल। रंग-सफेद। स्वाद-मीठा। प०-एक कीड़े का जाला है, रेशम की तरह कीड़ा अपने ऊपर तनाता है और उसमें सूराख करके चला जाता है। स्व०-गर्मी व तरी में मातदिल है। हानि-इसकी ज्यादती ग़शी पैदा करती है। दर्प०-शकर व तुरंजबीन। प्र०-मिश्री। मात्रा-८ माशे।

गुण व कार्य—सदर (सीने) को नर्म करती है, सीने की खुर्खुराहट को नफा देती है. अखलात (खिलतों) की हिद्दत (तेजी) व सोजिस को तस्कीन देती है व गले की सोजिश व खुश्की व सूखी खांसी व आवाज के भरभरान को नफा करती है व गले की खुश्की और मेदे के दर्द व खुश्की को दूर करती है। (जहरीली नहीं)

५१३—शकर सफेद

प्र०-शकर सफेद। सं०-शर्करा। फा०-शकर। अ०-सकर अबैज़। रंग-सफेद। स्वाद-मीठा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-सिल और गर्म मिज़ाज वालों को।

गुण व कार्य—तबिअत व हलक और सीने को नर्म करती है, सीने की रतूबतों को जिला देती है, रगों के अन्दर जल्द घुसकर गुण करती है। खून खूब पैदा करती है, बाह को कुव्वत देती है, इसकी धूनी जुकाम को दूर करती है, दिमाग़

का सुद्दा खोलती है।

(जहरीला नहीं)

५१४—शकर कन्द

प्र०-शकर कन्द। सं०-शर्कराकन्दम्। रंग-सफेद व लाल। स्वाद-कुछ मीठी व स्वादिष्ट। पहि०-एक चीज रतालू की तरह से है जो ताज़ीको उबाल के खाते हैं। स्व०-गर्म तर रतूबत फुज़लिया के साथ। हानि-क़ाविज व नफाख़ है व सुद्दा लाती है। दर्प०-कन्द।

गुण व कार्य—फरबही लाती है, रगों के मुंह पर चिपक कर सुद्दा पैदा करती है, खासकर सीने व क़स्बैरिया (फेफड़े) में और मनी पैदा करती है और उसे गाढ़ा करती है, दिमाग़ को कुव्वत देती है बाजों ने बाह को हरकत देने वाली भी कहा है। (जहरीला नहीं)

५१५—शलजम

प्र०-शलजम। फा०-शलजग़। अ०-शलजम। रंग-सफेद व लाल। स्वाद-कुछ फीका व तेज़। पहि०-एक जड़ तरकारी की किस्म से मशहूर है। स्व०-गर्म तर १। हानि-नफाख़ और देर हजम है। दर्प०-मांस व खटाई। प्र०-चुकन्दर व गजर।

गुण व कार्य—अक्सीरुल ग़िज़ा है, खांसी को दूर करती है, सीने को नर्म करती है और चिपक कर सुद्दा लाती है, और पेट को नरम करती है बीनाई को ताकत देती है, भूख बढ़ाती है, बाह लाती है, पथरी तोड़ती है, पेशाब खूब लाती है।

५१६—शलजम के बीज

प्र०-शलजम के बीज। फा०-तुख्म शलजम। अ०-बजार उल शलजम। रंग-काले व लाल। स्वाद-कुछ कड़वे व तेज। पहि०-बीज मूली के बीजों के बराबर होते हैं। स्व०-गर्म ३ तर २। हानि-गर्म मिजाज वालों को दर्द शिर लाता है। दर्प०-सिकंजबीन। प्र०-गाजर के बीज। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—बाह जियादा करते हैं, भूखखूब बढ़ाते हैं। पेशाब जारी करते हैं, अपने गुण में शलगम से भी जियादा ताकतवर है।

(जहरीला नहीं है)

५१७—शमशाद

फा०-शमशाद। अ०-वक़्स। रंग-पत्ते हरे फूल सफेद बीज काले। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक पेड़ है जिसके पत्ते अनार के बराबर होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क १। मात्रा-३ माशे से ५ माशे तक।

गुण व कार्य—इसके पत्ते का लेप मेंहदी के साथ सिर के बालों को कुव्वत देता है, शिर के दर्द को दूर करता है, इसके पत्तों का जोशान्दा की धार कांच निकलने को मुफ़ीद है। बीज काविज है' मेदे व आंतों की रतूबत को खुश्क करते हैं, मुंह से झाग बहने को रोकते हैं, फूलों का अर्क दिल व दिमाग़ को कुव्वत देता है। सफ़रा की हिद्दत को (तेजी को) तस्कीन देता है।

(जहरीली नहीं)

५१८—शोरा

प्र०-शोरा। सं०-शोरव। फा०-शोरा। अ०-अबक़र। रंग-सफेद। स्वाद-खारा व खुश्क। पहि०-एक प्रसिद्ध वस्तु है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-गुर्दे व गले को। दर्प०-कतीरा व शहद। प्र०-नमक इन्द्रानी। मात्रा-१½ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलता है, बलग़म को छांटता है, बदन से रद्दी मवाद को छांटता है। दस्तावर है, बहुत हिद्दत व तेजी में नमक से ज्यादा है, शकरके साथ तह पेशाब व हैज खूब लाता है, तिहाल व कमर के दर्द व कुलंज और रियाह को मुफीद है। केले के साथ लगातार ३ रोज १ माशा खाना तिहाल के वरम को नफ़ा करता है, तजुर्बा किया हुआ है। (करीब व सम है)

५१९—शूक़रान

फ़ा०-बाजों के नज़दीक वेखनफ़्त। अ०-शूक़रान। रंग-भूरी। स्वाद-क़ड़वा व तेज। पहि०-एक घास की जड़ है जिसके फूल छत्रदार सोये कैसे होते हैं। जो बाजों के नजदीक मोठ की जड़ है। स्व०-सर्द ४ खुश्क ३। हानि-जहर है। दर्प०-क़ै करना। प्र०-वज्रउलबंज। मात्रा-१ माशा। खाते नहीं हैं।

गुण व कार्य—ऐजा को सुस्त और ढीला करता है और सकून (ठहरा) देती है, नींद लाती है, इसका लेप गर्मी के दर्दों व वरमों पर व नमलः (सफरावी फुन्सियों) व सुर्ख वादह (लालफुंसी) और आतशक को मुफीद है, इसके पत्तों और बीज का लेप पिस्तां (छातियां) को बड़ा और ऊंचा नहीं होने देता है।

(सम कातिल है)

५२०—शहद

प्र०-शहद। सं०-मधु। फ़ा०-शहद। अ०-असल। रंग-पीला व सफेद व लाल। स्वाद-बहुत मीठा। पहि०-एक किस्म की नेशदार (नोकदार फूलों) का चुआव (कफ)प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म २ खुश्क१। हानि-दिमाग व गर्म मिजाज वालों को व शिर दर्द लाता है। दर्प०-अनार व सिर्का व धनियां। प्र०-अंगूर का रस व बड़ाछुहारा मात्रा-३ तोले।

गुण व कार्य—जिला करता व दस्तों को खोलता है, लसदार बलगम को छांटता है, रद्दी रतूबत को दूर करता है। जलंधर व इस्तस्खा (बदन के ढीलेपन को) हर किस्म के रियाह को खोता है, पेशाब व हैज और दूध को खूब जारी करता है, मसाने व गुर्दे की पथरी तोड़ता है, मेदा व जिगर को ताकत देता है, सदर व सीने को पाक करता है, जालीनूस के नजदीक सर्द बीमारियों के वास्ते इससे बेहतर कोई चीज नहीं है, शहद में थोड़ी बूंदें पानी की और जरा सा कलमी शोरा मिला कर कान में डालें तो कान के भिनभिनाने और धमधमाने में बहुत मुफीद है, तजुर्बा किया गया है।

(गैर समी बल्कि महज शफ़ा)

५२१—शीरखिश्त

प्र०-शीरखिश्त। फ़ा०-शीरखिश्त। अ०-शीरखिश्त। रंग-सफेद। स्वाद-मीठी। पहि०-एक विलायती पेड़ का गोंद है जिस पर ओस पड़ने से सफेद व मीठा हो जाता है, बाजों के नजदीक खुद ओस ही है। स्व०-गर्म १ व मातदिल २। हानि-रियाह व आंतोंमें गुड़गुड़ाहट व अफ़रा पैदा करती है। द०-सोंफ व बादाम रोग़न। प्र०-तुरंजबीन। मात्रा-५ तोला।

गुण व कार्य—जिला करती है, तबिअत को नर्म करती है, तीनों खिलतों सफरा व सौदा और बलगम व खासकर सफरा को दस्तों की राह निकालती है, जिगर व मेदे को ताकत देती है, दिल

व मेदे और जिगर की गर्मी को तस्कीन देती है। खांसी व लहक और सीने के खुरखुराने को मुफीद है और अक्सर बुखार को भी नफा देती है, मनी को पैदा करती है। (जहरीली नहीं)

५२२—शीशम

प्र०-शीशम। सं०-शिंशपा। अ०-सासम। रंग-खूब सुर्ख। स्वा०-कुछ कड़वा। प०-एक पेड़ है जिसकी लकड़ी बहुत भारी और पुरकार (उम्दा) होती है, सन्दूकचे वगैरा बनते हैं। स्व०-गर्म खुश्क। मात्रा-६ मा०।

गुण व कार्य—खून को साफ करता है, कोढ़ और सफेद दाग को दूर करता है, चर्म रोगों व दांतों और फेफड़ों को मुफीद है, ऐजा की सोजिश और खानशक को नफा देता है, पेट के कीड़े मारता है। इसकी बालियां (फली) कत्थे के साथ मुंह के आने को मुफीद है। (जहरीली नहीं)

बाबउल (स)

इसमें २ दवाइयां हैं।

५२३—साबुन

प्र० नाम-साबुन। फा०-साबुन। अ०-साबुन। रंग-सफेद व पीला। स्वाद-खारा। पहि०-एक चीज है जो मैल काटने के लिये सज्जी, चूने और तेल व चर्बी से बनाते हैं। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-कातिल है। दर्प०-शोरबाये तर व बादाम रोगन। प्र०-नूरह व अशनान। मात्रा-खाया नहीं जाता, लेप ६ मा०।

गुण व कार्य—वरमों को नर्म करता है और पका लाता है, मांस वगैरह को खा जाता है, जिला करता है, मरोड़ों को दूर करता है, हमल नहीं रहने देता, मशीमः (बच्चेदानी) से बच्चों को गिरा देता है, इसका तर किया हुआ कपड़ा योनि में रखना हैज जारी करता है और इसका शाफा (बत्ती) कुलंज व कद्दूदाना (पेट के कीड़े) को मुफीद है, मेंहदी के साथ इसका लेप जानू (जंघा) के दर्द व अर्कुल निसाँ यानी रानके दर्द और चेहरेकी स्याही व झांई को दूर करता है। दाद और जोड़ों के दर्द व गठिया को मुफीद है, जिल्द व चेहरे के दाग मिटाता है। (समकातिल है)

५२४—सनोवर

अ०-सनोवर। रंग-हरा। स्वाद-कड़वा। प०-एक बहुत खुशनुमा पेड़ सरु की किस्म से है जिसके फल छोटे और बड़े भी होते हैं। स्व०-गर्म व खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज व हैज व आंतों की ऐंठन को। द०-कतीरा व रोगन कुजंद व गर्म पानी। मात्रा-२$\frac{3}{4}$ माशे।

गुण व कार्य—इसके पत्ते व छाल पीना गले के दर्द और फेफड़े के जख्म को नफा करता है नकसीर व जख्म के खून को बन्द करता है अगर ताजा जख्म हो और शहद के साथ जिगर की बीमारियों और वरम और जिगर की गलीजत को मुफीद है। और खुश्क चूरन सर्द पानी के साथ दस्तों को बन्द करता है व पेट को गुंग करता है और इसकी सूखी चुटकी छिड़कना चोट के जख्म को जल्द भर लाता है इसकी धूनी लेना बच्चे को मय झिल्ली के गिरा देता है और हैज जारी करता है।

(जहरीला नहीं)

बावउलतोय (त)
इसमें १ दवाई है

५२५—तालीसपत्र

प्र० नाम-तालीसपत्र। सं०-तालीसपत्रम्। अ०-तालीसफ़र। रंग-नीला व सुर्खी मायल व पुराना स्याह। स्वाद-कसैला व तेज। पहि०-एक पेड़ का बारीक पत्ता होता है, जिसकी बू ज़ाफ़रान की सी होती है व बाज़ों के नजदीक बारीक छाल होती है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-फेफड़े को द०-शहद। प्र०-ज़ीरा। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य—लकवा व फ़ालिज व मुंह से खून आने और बहने को मुफ़ीद है और अक्सर ऐज़ा से रतूबत बहने को व दस्त आने को और बवासीर को मुफ़ीद है आंतों के जख्म के लिये नफ़ा देता है। इसके जोशान्दे की कुल्ली सिर्के में मिलाकर दांतों के दर्द को नफ़ा देती है, इसको मुंह में रखना सफेद मुँह आने को मुफ़ीद है।

(ज़हरीला नहीं)

बावउल ऐन (अ)
इसमें १० दवाइयां हैं

५२६—अब्बासी के फूल

प्र० नाम-अब्बासी का फूल। फा०-गुल अब्बासी। रंग-लाल पीला व सफेद। स्वाद-फीका व कुछ कड़वा। प०-एक घासका फूल है जिसका पेड़ गज भर का होता है। और पत्ते चौड़े होते हैं। स्व०-फूल गर्म बीज खुश्क जड़ सर्द-तर व गर्म तर।

गुण व कार्य—इसके पत्ते फोड़े फुन्सी को पकाते हैं। नमक के साथ दाद को मुफ़ीद है इसके बीज क़ाबिज और फूल बाह लाता है जड़ मनी को गाढ़ा करती और हरकत देती है व खून को साफ करती है और कमर के दर्द को नफा देती है।

(ज़हरीला नहीं)

५२७—पच्छिमी उसवा

प्र० नाम-पच्छिमी उसवा। अ०-उसवा मग़रबिया। रंग-ज़ाहिर सुर्ख अन्दर सफेद। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक पश्चिमी घास की शाखें खुशबूदार होती है। स्व०-गर्म २ खुश्क ३। हानि-जवान और गर्म मिजाज वालों को। दर्प०-बादाम रोग़न। प्र०-चोबचीनी। मात्रा ६ मा०।

गुण व कार्य—वरम व रियाह को तहलील करता है। मादे मनी को पतला करता है और तबिअत को लतीफ करता है, पसीना और पेशाब जारी करता है, अक्सर सर्द तर बीमारियों दिमागी को और सीने व मेदे व जिगर की बीमारियों को और गुर्दे व मसाना व जिगर की बीमारियों को मुफीद है और हर खिलत को दस्तों की राह निकालता है चर्म रोग और कोढ़को नाफै है,और गठिया के वास्ते अक्सीर का हुक्म रखता है।

(जहरीला नहीं)

५२८—इश्कपेचा

प्र० नाम-इश्कपेचा। फा०-आशिक उलशिजर। अ०-लवलाव। रंग-पत्ते हरे। फूल लाल। स्वाद-कड़वा। पहिचान-एक घास की बेल है जो दरख्तों पर चढ़ती है, जिसके पत्ते व फूल बारीक होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-मेदे व मसाने को। दर्प०-क़न्द व इमली। प्र०-शातरा व खतमी व खुब्बाजी। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलता और तबियत व वरम को नर्म करता है, रियाह को तहलील करता और सफरा को दस्त की राह निकालता है, इसका लेप वरमों को तहलील करता है और दर्द को तस्कीन देता है, शहद के साथ इसका सुड़कना शिर दर्द को नफा करता है, इसका लेप बड़ी किताबों से है। (जहरीली नहीं है)

५२९—उशसारह रेवन

अ०-उसारह रेवन। अ०-उसारह रेवन। रंग-पीला। स्वाद-कड़वा। पहिचान-रावन्दकी जड़ का रस खुश्क किया होता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-आंतों और गुदा को। दर्प०-रोगन बादाम व रोगन गुल। मात्रा-१ माशा, १॥ माशा, २ माशा पर्यन्त है।

गुण व कार्य—सब खिल्तों को दस्तों की राह निकालता है, सुद्दा खोलता है, पेट के कीड़ों को निकालता है, पेशाब जारी करता है, लकवे व फालिज व इस्तरखा व तशन्नुज इमालाई को और दमे व बलगमी खांसी को और जनून को मुफीद है, अगर किसी मुसहिल (जुलाब) में दस्त न हो तो १ माशा दूध में मिला करके देवे तो फौरन दस्त आवेंगे। (जहरीला नहीं है)

५३०—सत्व मौरेठी

सं०-मधुयष्टीका सत्वम्। फा०-उसारहमहक। अ०-रुबुल सूस। रंग-काला। स्वाद-कड़वा। पहि०-मुलहटी का उसारह रस खुश्क किया हुआ यानी चुआव जोश किया हुआ है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गुर्दे को। दर्प०-कतीरा। प्र०-सोसन। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—दमे और हलक के खुरखुराने और सीने की खुश्की और खरखुराने को और मेदे की सोजिश व प्यास को और सूखी धांस को व खांसी को और मुंह से खून आने और बहने को मुफीद है, बहुत दस्तावर और खराश करने वाली दवाइयों के नुकसान को दूर करता है।

(जहरीली नहीं है)

५३१—अक़ीक़

फा०-अक़ीक़। अ०-अक़ीक़। रंग-सफेद व सुर्ख बुर्राक, नीला व पीला। स्वाद-फीका। पहि०-एक रंग का चमकदार पत्थर मशहूर है। स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-गुर्दे व हलक को। दर्प०-कतीरा व तुख्म कद्दू। प्र०-बुसद (मूंगा) व कहरवा। मात्रा-१॥ माशे।

गुण व कार्य—दिल को कुव्वत देता है, खफकान को मुफीद है, मुंह से खून आने और खून बहने को और खास कर हैज के खूनको बन्द करता है, बीनाई को कुव्वत देता है, इसको अपने पास रखनेसे गजब व गुस्सेकी हिद्दत व तेजी को तस्कीन देता है। खफकान व गम को दूर करता है। (जहरीला नहीं है)

५३२—उन्नाव

प्र०-उन्नाव। फा०-जैलान व सैलान। अ०-उन्नाव। रंग-लाल। स्वाद-मीठा। पहि०-एक फल है जो झड़बेरी के बेर की तरह का होता है। स्व०-सर्द १। हानि-सर्द मेदे को नफाख है और बाह को जईफ करता है। दर्प०-शक्कर व मवीज मुनक्का। प्र०-सपिस्ता व मवीज मुनक्का। मात्रा-१० अदद से १२ अदद तक।

गुण व कार्य—गाढ़ेसे गाढ़े खिलतोंको नर्म और मातदिल उल क़वाम (पाग)करता है सदर(सीने) और तबियत को नर्म करता है, कुल खिलतों को दस्तों की राह निकालता है, सीने व हलक के खरखराने और आवाज के भरभराने को दूर करता है, खून को साफ करता है, सोजिसव प्यास को तस्कीन देता है, खून को लतीफ (पतला) करता है, सूखी खांसी और धांस को नफा देता है, जिगर व सदर (सीने) और कमर के दर्द को मुफीद है. (जहरीली नहीं)

२३३—अम्बर

प्र०—अम्बर । सं०—अग्निजार । अ०—अम्बरअस हब । रंग—काला व चिकना । स्वाद—कुछ कड़वा व खुशबूदार । पहि०—बाजों के नजदीक एक पेड़ का गोंद है, और बाजों के नजदीक एक दर्याई जानवर का गोबर है । स्व०—गर्म २ । खुश्क १ । हानि—आंतों को और पित्ती उछाल देता है । दर्प०—समगारबी व काफूर । प्र०—मुश्क व जाफरान । मात्रा—३ रत्ती ।

गुण व कार्य—रूहको लाभदायक है और तीनों कुव्वतों को कवी करता है, तबिअत को फ़रहत देता है, और असली हरारत व हवास (इन्द्रियों के काम) जाहिरी व बातिनी (भीतरी) को कवी करता है, बुड्ढों को बहुत गुण करता है, दिमागी मर्जों और दिल के मर्जों व जिगर के मर्जों को बहुत लाभदायक है,खफ़कान व वबा को दूर करता है, सुद्दा खोलता है, बाह लाता है, अजू मखसूस यानी लिंग पर इसका लेप करना बाह ज्यादा लाता है और लज्जत देता है । (जहरीला नहीं)

२३४—अंबर वेद

फ़ा०—अम्बर वेद । अ०—जादह । रंग—पत्ते हरे काले, फूल सफेद व पीले । स्वा०—कड़वा व खुशबूदार व तेज । प०—एक घास है जो दरिया के किनारे होती है, जिसकी टहनियों से रेशे बारीक बाल कैसे निकलते हैं । स्व०—गर्म ३ । खुश्क २ । हानि—शिरदर्द लाता है और मेदेको मुजिर है । द०—धनियां । प्र०—पहाड़ी पोदीना । मात्रा—४ माशा ।

गुण व कार्य—कुव्वत तिर्याकिया (जहरीली) रखता है, दस्तावर है, कुल ऐजा के सुद्दे खोल देता है, खिलतों को पतला करता है । पेशाब लाता है, पेट के कीड़े मार निकालता है, रियाह को तहलील करता है खून को साफ करता है, जहन को कवी करता है, बिच्छू के जहर को मारने वाला है । (जहरीली नहीं)

२३५—ऊदसलीब

अ०—ऊदसलीब व फावानियां । रंग—बाहर लाल भीतर ऊदा । स्वाद—कड़वा व कसैला । प०—एक छिलका बादाम के छिलके का सा है और इसमें बड़ा फर्क है । स्व०—गर्म खुश्क २ । हानि—मेदे को दर्प०—कतीरा । प्र०—गारीकून व अफसन्तीन । मात्रा ३ माशा ।

गुण व काय—नुकरस व दर्द मेदा व गुर्दा व मसाने को मुफीद है, दर्द रहम और यर्का व मिर्गी और काबूस (सोते में दिल का घबड़ाना व चिल्लाना) को नफा करता है, पथरी को तोड़ता है काबिज है, खुश्की करता है, पेशाब व हैज को जारी करता है, दिल को कुव्वत देता है, खून बहने को बन्द कर देता है । (जहरीला नहीं)

बाब उलगैन (ग़)

इसमें ४ दवाइयां हैं

२३६—गार

प्र०—ग़ार । रंग—दाना लाल व भूरा । स्वाद

कड़वा व तेज व खुशबूदार। पहि०-एक पेड़ जो मुल्क श्याम की तरफ होता है, यूनानी इसको बहुत इज्जत करते हैं। इसकी उम्र हजार वर्ष की होती है, स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-जिगर को। दर्प०-जरिश्क व कतीरा व बंसलोचन। प्र०-कलौंजी। मात्रा-२ माशा।

गुण व कार्य—इसके दाने वरम रियाह को तहलील करते हैं, तबिअत को लतीफ (नर्म) करते हैं, दर्द गुर्दा व रहम और बिच्छू के काटे को मुफीद है, पेशाब व हैज खूब लाता है, पीने की चीज़ों के जहर को मारने वाले हैं, बच्चे को हमल में मार डालता है, धाँस व दमे व खाँसी और जिगर व मसाने की बीमारियों को नफा देता है, और पथरी को तोड़ता है।

(जहरीला नहीं)

५३७—ग़ारीक़ून

प्र०-गारीकून। फा०-माहशमान। अ०-ग़ारीकून। रंग-सफेद। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक चीज जो अंजीर के पेड़ में से सड़ा गला मिलता है। स्व०-गर्म १ खुश्क १। हानि-करब और खुनाक पैदा करती है। दर्पध्न-दूध और जन्दवेदस्तर। प्र०-निशोथ व इन्द्रायन का गूदा। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—बलगम व सौदा और सफरा को दस्तों की राह निकालती है, तबिअत को नर्म करती है, गाढ़े खिलतों को पतला व लतीफ करती है, उभरे हुये मवाद को छांटती है। रियाह व वरम और कुलंज को तहलील करती है। पेशाब व हैज़ को जारी करती है। पट्ठों व दिल और दिमाग़ को कुव्वत देती है। जहरों की मारक है, बलगमी बुखारों को नफा देती है। बिना छाने अच्छी और जायज़ नहीं है। इसमें एक चीज़ मिस्ल नाखून के है वह क़ातिल है।

(जहरीली नहीं)

५३८—ग़ालयून

अ०-ग़ालयून। रंग-फूल पीले। स्वाद-कड़वा व तेज व खुशबूदार। पहि०-एक घास है। जो तालाबों के किनारे खड़ी हुई होती है, जिसके पत्ते लम्बे होते हैं। स्व०-गर्म १ खुश्क २। हानि-जिगर व तिहाल को। दर्प०-अनीसून। प्र०-ग़ाफ़िस।

गुण व कार्य—खून के बहने को बन्द कर देती है। इसके फूल का लेप आग के जले हुये को मुफीद है, जख्मों के खून व पीप बहने को नफा देती है। मोम रोगन या गुलरोगन के साथ सिद्दत के दर्द को नफा देती है। इसकी जड़ बाह को खूब हरकत देती है, तजुर्बा किया हुवा है।

(जहरीला नहीं)

५३९—ग़ाफ़िस

अ०-ग़ाफ़िस। रंग-ऊदा स्याहीमाइल। स्वाद-बहुत कड़वा। पहि०-एक घास है, जिसके पत्ते बड़े और लम्बे व खुरखुरे होते हैं, पेड़ कांटे वाला है। स्व०-गर्म १ खुश्क २। हानि-तिहाल को। दर्प०-अनीसून व कद्द। प्र०-उसारह रेवन्द व अफसंतीन। मात्रा—५ माशे से ६ माशे तक।

गुण व कार्य—खिलतों और तबिअत को नर्म करती है। माद्दे को छांटती है, जिला करती है, रतूबत को जज़्ब करती है, जिगर व तिहाल का सुद्दा खोलती है, बदन को मुरक्कब बुखारों से पाक करती है। लसदार खिलतों को छांटती है। जले हुये को मुफीद है। जलंधर व वरमों को तहलील करती है। पेशाब व हैज़ और दूध को जारी करती है

इसका चुआव रस हर तरह इससे क़वी है।

(जहरीली नहीं)

बाबउलफ़ाय (फ)

इसमें चार दवाइयां हैं

५४०---फ़र्फ़ियून व फ़र्बियून

फा०-फ़र्फ़ियून व फ़र्बियून । अ०-लबन बनफ्सा व हाफ़िज़ अनफाल। रंग-भूरी व जर्दी मायल। स्वाद-कड़वी तेज़ व तेज़ बू। पहि०-एक घास का दूध है अक्सर मुल्क बरबर के पहाड़ों पर से जमा हुआ लाते हैं। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-गर्म मिज़ाज वालों को और फोतों को।प्र०-जन्दवेदस्तर व माज़रयून। द०-खबुलसूरु व समगर्बी रुगनह। मात्रा-४ रत्ती।

गुण व कार्य—जिला व लताफ़त करती है। बलगम के दस्तों की राह निकालता है। पट्ठों से बलगमी फ़जूल को दूर करता है और पाक करता है। लक़वा व फ़ालिज और इस्तरखा व राशा और खिदर व मिरगी व सीना और काबूस व जलंधर और कुलंज को नफ़ा करता है। हैज़ जारी करता है। लड़के वाली के दूध में घिस कर नाक में सुड़कना खासकर लक़वे को मुफ़ीद है।

(जहरीली नहीं)

५४१—फिन्दक

प्र०-फिन्दक। फा०-फिन्दक। अ०-बन्दक। रंग-बाहर भूरा भीतर सफेद व पीला। स्वाद-मीठा व चिकना। पहि०-एक पहाड़ी पेड़ का फल है, जिसकी गिरी बादाम की तरह खाते हैं। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-मेदे को व रियाह पैदा करता है। दर्प०-सिकंजबीन व शकर। प्र०-अखरोट व हब्बुल सनोबर। मात्रा-१० माशे।

गुण व कार्य—बाह लाता है और आंतों को कुव्वत देता है, जौहर दिमाग को ज्यादा करता है, शहद के साथ खाना खांसी को नफ़ा करता है। गुर्दे के दुबलेपन को खोता है, सर्द नज़ला को पकाता है, सुज़ाक को नफ़ा देता है और बालखोरह (गंज) के लिये मुफ़ीद है, इसका तेल सर्दी की खांसी व सीने और जिगर के दर्द को नफ़ा करता है।

(जहरीली नहीं)

५४२—फ़ीरोज़ह

प्र० नाम-फ़ीरोज़ह । सं०-फीरोज़कम् । अ०-फ़ीरोज़ह । फा०-फ़ीरोज़ज़ा । रंग-हरी व आबी बुर्राक़। स्वाद-फीका। प०-एक पत्थर है। अक्सर जिसके नगीने (नग) बनाये जाते हैं। स्व०-सर्द १ खुश्क २। हानि-गुर्दे को। दर्प०-कतीरा। प्र०-ज़मुर्रद। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—फ़रहत बख्शता है और रियाह को कुव्वत देता है। रूह व बीनाई व दिल और दिमाग व मेदे को भी कुव्वत देता है, दस्तों व आंतों के जख्म को दूर करता है। खफ़कान को मुफ़ीद है, गुर्दे की पथरी तोड़ता है, आंखों की बीमारियों को नफ़ा देता है, इसको गले में डालना खास कर कुव्वत देता है और खौफ (डर) को दूर करता है, दुश्मन के ऊपर फ़तहमन्दी कराता है।

(जहरीला नहीं)

५४३—फ़ीलगोश

फा०-फ़ीलगोश । अ०-फ़ीलजोस व अज़न उलफ़ील। रंग-हरा। स्वाद-कड़वा व कसैला। प०-एक घास है जिसका रस पकाया और खुश्क किया हुआ रसौत है। स्व०-गर्म खुश्क २ जौहर

अरजी के साथ। हानि-जिगर को और ग़लीज़ खिल्लत पैदा करता है। दर्प०-समगर्बी। प्रति०-अफसन्तीन। मात्रा-१ माशे

गुण व कार्य—लताफत देती है, लसदार गाढ़े खिल्तों को छांटती है, व निकालती है, सुद्दे खोलती है, जिला करती है, आंखों को जिला देती व नफा करती है, इसका चुआब आंखों के मांड़े को मुफीद है, क़रहा पैदा करता है, इसके खोशे (फल) का अर्क इन्द्री के मुंह पर टपकाना पेशाब लाता है, पेशाब बन्द हो जाने को नफा देता है, पथरी तोड़ता है, शहद के साथ इसका लेप बाह को हरकत देता है। (जहरीली नहीं)

बाबउल काफ (क)

इसमें ४ दवाइयां हैं

५४४—क़दम

प्र०-क़दम। सं०-कदम्ब। अ०-क़दम। रंग-पीला व सफेद। स्वाद-खट्टा व फीका। पहि०-एक बड़ा पेड़ है, जिसके पत्ते अखरोट के से और फल धतूरे का सा होता है खारदार। स्व०-सर्द। हानि-नफ़ाख़ व बलग़म पैदा करता है। द०-मांस व गर्म मसाला।

गुण व कार्य—फ़िसाद बलग़म व सफरा को दूर करता है, खून को गाढ़ा करता है, और स्त्रियों व हिजड़ों की छातियां (चूचियां) बड़ी व ऊंची करता है, मांस के साथ लज़ीज (स्वादिष्ट) होता है। (जहरीला नहीं)

५४५—किर्दमाना

अ०-क़िर्दमाना। रंग-फूल सफेद व ऊदा बीज भूरा। स्वाद-कड़वा व तेज। पहि०-एक घास मिस्ल बाबूने के है, बीज जीरे व काली जीरी की तरह का। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-तिहाल को। दर्प०-अनीसून व सन्दल। प्र०-गाई मुश्कतरा मसीह। मात्रा-१ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दा व मसाम खोलती है, लताफत बख्शती है, पेशाब लाती है, पथरी तोड़ती है। सर्दी की बीमारियों को मुफीद है। पेट के कीड़े मारती है, सीने को पाक करती है, कुलंज व रियाह को दूर करती है, हिचकी व खांसी और दमा को नफा देती है, अर्कुलनिसा व फालिजको मुफीद है। (जहरीला नहीं)

५४६—क़न्तुर यून सग़ीर

अ०-क़न्तर यून सग़ीर। रंग-हरा फूललाल। स्वाद-तेज व तेज बू। पहि०-एक घास है, जो पानी के किनारे उगती है, पत्ते मिस्ल तितली कैसे। होते हैं स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-आंतोंको। दर्प०-समगर्बी। प्र०-पर्सियां वसान व जराबन्द मदहरज। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—बलग़म व लसदार खिलतों को छांटता है, बलग़मी व सफरावी माद्दे को दस्तों की राह निकालता है, वरम व सख्ती को तहलील करता है, जिगर का सुद्दा खोलता है, पेशाब व हैज को जारी करता है। (जहरीला नहीं)

५४७—कन्तूर यून कबीर

अ०-कन्तूरयून कबीर। रंग-हरा। स्वाद-कुछ खट्टा व तेज व कड़वा। पहि०-एक घास है जिसके पत्ते चूक कैसे दंदानेदार होते हैं। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-दिमाग़ को। दर्प०-समगर्बी व कतीरा। प्र०-साअद व सोरंजान व रसौत। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—पेशाब व हैज़ लाता है, वरम व रियाह को तहलील करता है, क़ाबिज़ है, जिला करना है, दिमाग़ को पाक करता है, जिगर व तिहाल का सुद्दा खोलता है, बलगमी कुलंज को नफा देता है। (जहरीला नहीं)

बाबउल काफ (क)

इसमें १०८दवायें हैं

५४८—काजल

प्र०—काजल। सं०—कज्जलम्। फा०—दूदह। रंग—खूब स्याह। स्वाद—फीका। पहि०—चिराग की बत्ती का धुंआ जमाया हुआ है। स्व०—गर्म खुश्क १। हानि—हलक व फेफड़े को। प्र०—सुर्मा।

गुण व कार्य—आंख का नजला और मैल खूब छांटता है, आंख व बीनाई को कुव्वत देता है, गोंद के साथ आग से जले हुये को नफा देता है, इसका रंगा हुआ कपड़ा सूरज की गर्मी (तेजी) को जज्ब करता है। (जहरीला नहीं)

५४९—कासनी सब्ज

प्र०—कासनी सब्ज। सं०—काशनी। फा०—कासनी। अ०—हिन्दबाय। रंग—हरी। स्वाद—कुछ कड़वी। पहि०—एक मशहूर घास है। स्व०—सर्द तर। हानि—खांसी वाले को। दर्प०—शर्बत बनफ्सा प्र०—शाहतरा। मात्रा—५ तोले।

गुण व कार्य—सुद्दे व मसाम खोलती है, गर्मी व तेजी व सफरा और खून और प्यास को तस्कीन देती है, इसका फाड़ा हुआ रस बांबर व जिगर और तिहाल के सुद्दे को बहुत नफा देता है, गर्मी वाले जलंधर व गर्मी वाले खून सफरावी बुखारों को बहुत नफा करता है, इसके बिन धोये पत्ते पीना तबिअत को नर्म करते है और बहुत नफा देते हैं। धोये हुये काबिज और हानिकारक हो जाते हैं। (जहरीला नहीं)

५५०—काशनी के बीज

प्र० नाम—काशनी के बीज। फा०—तुख्म कासनी। अ०—बज्रउल हिन्दबाय। रंग—मटियाले सफेद। स्वाद—फीके। पहि०—एक मशहूर बीज है, जो सफेद जीरे से छोटे होते हैं। स्व०—सर्द खुश्क २। हानि—तिहाल को। दर्प०—सिकंजबीन व अनीसून। प्र०—तुख्म शाहतरा व तुख्म कसूस। मात्रा—६ माशे से ९ माशे तक।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलते और पेशाब खूब लाते हैं। शिर दर्द व खफकान और जलंधर व कांवर के लिये मुफीद है, जिगर की गर्मी व प्यास और बुखारों व गुर्दे और तिहाल के जोफ को नफा देते हैं। मुंह से खून आने को नाफे हैं, भूख को बढ़ाते हैं। (जहरीली नहीं)

५५१—कासनी की जड़

प्र०—कासनी की जड़। फा०—बेख कासनी। अ०—असल उल हिन्दबाय। रंग—गुब्बारी (मटियाली)। स्वाद—फीकी व कुछ कड़वी। पहिचान—प्रसिद्ध है। स्वभाव—गर्म १ खुश्क २। हानि—ग़सी लाती है। दर्प०—सिकंजबीन। प्र०—सौंफ की जड़। मात्रा—७ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलती है, खिलतों को पतला करती है, गिजा के आने जाने के रास्ते को साफ करती है, पेशाब जारी करती है, खून को साफ करती है, पेट के भीतर के वरम को दूर करती है। जलंधर को मुफीद है, मवाद को तहलील करती है, मिले हुए और पुराने बुखारों को

नफा देती है, गठिया के लिये फायदेमन्द है, मुंह व हाथ पैर की भरभराहट को दूर करती है।

(जहरीला नहीं)

५५२—कासनी जङ्गली

प्र० नाम-कासनी जंगली । फा०-कासनी दश्ती । अ०-तर खुश्क़ । रंग-हरी स्वाद-कड़वी । पहि०-कासनी की तरह है लेकिन इसके पत्ते छोटे होते हैं । स्व०-गर्म खुश्क बाज़ों के नज़दीक सर्द खुश्क । दर्प०-सिकंजबीन । प्र०-जराबन्द मदहरज । मात्रा-३ माशे ।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलती है और मेदे को ताकत देती है, काबिज है, खून बहने को बन्द करती है, हैज जारी करती है, इसके बीज व जड़ बस्ती की कासनी के बीज और जड़ से गुण में कवीतर है और कांच के लिये बहुत गुणदाई है।

५५३—काशम

अ०-काशम । रंग-पीला व हरा । स्वा०-कुछ कड़वा व तेज खुशबूदार । प०-एक घास अंजदान से मिलती हुई है । स्व०-गर्म खुश्क ३ । हानि-गर्म मिजाज वाले और मसाने को । दर्प०-सौंफ व सिका । प्र०-सफेद जीरा व करफस । मात्रा-३ मा०

गुण व कार्य—जिगर का सुद्दा खोलती और रियाह को तहलील करती है, गाढ़े खिलतों को पतला और मातदिल उलक़वाम (पाक) करती है मेदे को ताक़त देती है, हाजिम है, रियाह को खुब निकालती है, जलंधर और सर्दी के दर्द को मुफीद है, मेदे के कीड़े मारती है।

(जहरीली नहीं)

५५४—काग़ज़

प्र०-काग़ज़ । सं०-कागद । फा०-काग़ज़ । अ०-क़र्तास । रंग-कुल रंग असिल सफेद । स्वाद-फीका व बवजह रंग के कड़वा । पहि०-मशहूर है। वैद्यक में थोड़ा सा बांस का काग़ज़ लिया है। स्व०-सर्द खुश्क, जला हुआ नर्म खुश्क । हानि-गुर्दे को । दर्प०-कहरबाये समई । प्र०-दम्मूल अख़वीन । मात्रा-२ माशा ।

गुण व कार्य—फेफड़े के जख्म को दूर करता है, मेदेकी सोजिश को नफा करता है,आंतोंके जख्म व ख़राश और सोजिश को मुफीद है, मुंह से खून आने और दस्तों को बन्द करता है, जला हुआ काग़ज़ मक्खन घी के साथ जख्म को भर लाता है और नासूर को फायदामन्द है।

(जहरीला नहीं)

५५५—काकजंकी

प्र०-काकजंकी । सं०-काकजंघा । फा०-तुख़्मख़ाकरोब ।अ०-आतरीलाल व रजलउल ग़राब व हुब्ब उलश्यातीन ।रंग-भूरा ।स्वाद-फीका । प०-एक बीज है जो सोये के बीज और सफेद जीरे की तरह का होता है। स्व०-गर्म खुश्क ३ । हानि-जिगर और गुर्दे को । दर्प०-कतीरा व सिकंजबीन प्र०-कुन्दश । मात्रा-३ माशा ।

गुण व कार्य—जिगर का सुद्दा खोलता है, रियाह को तहलील करता है, जिला करता है, पेशाब लाता है, रद्दी फुज़लात को पेशाब की राह निकालता है, पेट के कीडे मारता है, मेदे की गिरानी को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

५५६—काकड़ासींगी

प्र०-काकड़ासींगी । सं०-कर्कटश्रृंगी । रंग-लाल स्याही मायल । स्वाद-कड़वी व कसैली ।

प०-एक पेड़ का फल है, एक छिलके के भीतर होता है, जो देखने में बिलकुल सींग के होता है इसका पेड़ केले के पेड़ का सा होता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-जिगर और गुर्दे को। दर्प०-कतीरा व सिकंजबीन।

गुण व कार्य—सर्दी की खांसी व दमे को तर खांसी और खासकर बच्चों की खांसी को नफ़ा करती है, हिचकी व कै और खूनी दस्तों को मुफ़ीद है, प्यास को दूर करती है, बलग़म के फ़िसाद को खोती है, भूख खूब लाती है, इसका लेप स्याह दाग़ को नफ़ा करता है।

(ज्यादा जहरीली है)

५५७--काकुन

प्र०-काकन। सं०-क़ुनी। फ़ा०-किस्म खुर्द अर्जन। अ०-दकन्। रंग-जर्दी मायल भूरी। स्वाद-फ़ीकी। पहि०-एक तरह के अनाज का दाना है जो बहुत छोटा और मशहूर है। स्व०-सर्द १ खुश्क २। हानि-फ़ेफड़े को और गुर्दे में पथरी पैदा करता है। दर्पघ्न-शहद व मस्तगी। प्र०-चावल।

गुण व कार्य—थोड़ी गिजा है, काबिज है, खुश्की करती है, पेशाब लाती है, सफराबी दस्तों को बन्द करती है, ताजे घी के साथ सीने को नर्म करने वाली है, मनी पैदा करती है, दर्द की जगह पर गर्म करके टकोर करना नफ़ा देती है।

(जहरीला नहीं है)

५५८---पटकौवां

फ़ा०-काकनः व अरुसक इस्परदः। अ०-काकनज। रंग-काला व जर्द। स्वाद-कुछ मीठा। प०-मकोय की तरह और उससे मिलता हुआ होता है, कान में फल व दाना आता है स्व०-सर्द खुश्क। हानि-अजू को निहायत सुस्त करता और नींद लाता है। दर्पघ्न-गुलसुर्ख व गुलकन्द। प्र०-मकोय। मात्रा-६ अदद से ७ अदद तक।

गुण व कार्य—खांस और सांस बन्द हो जाने को मुफीद है, गुर्दे व मसाने की बीमारियों व बावर और खांसी को नफा करता है, बहुत प्यास को मुफीद है, पेशाब लाता है और पेट के कीड़ों को मार निकालता है।

(जहरीला नहीं)

५५६---कालादाना

प्र०-कालादाना। सं०-कृष्णदाना। अ०-हब्बुलनील। रंग-काला व तिकौना। स्वाद-कड़वा पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-कै लाता मरोड़ व आंतों में ख़राश पैदा करता है। दर्प०-हलैले या रोग़न बादाम में भूनना। प्र०-इन्द्रायण की जड़। मात्रा-३ माशा।

गुण व कार्य—सौदा व बलग़म को अगर ग़लीज़ हो तो दस्तों की राह निकाल बहाता है, बदन को पाक करता है, जिगर व तिहाल का सुद्दा खोलता है, पेट और जख़म के कीड़े निकालता है, नुक़रस व जोड़ों के दर्द को और तर खुजली पुरानेसे पुराने ख़राब जख़मोंको नफ़ा करता है और स्याह और सफेद दाग को भी मुफ़ीद है।

(जहरीला नहीं)

५६०---कालीजीरी

प्र०-कालीज़ीरा। सं०-कारबी। अ०-कमूनरूमी। रंग-पीला व सफेद व हरा। स्वाद-कुछ कड़वा व तेज़ व तेज़ बू। पहि०-एक घास का

दाना है जो मिस्ल जीरे के और सौंफ से छोटा होता है। स्वा०-गर्म खुश्क ३। हानि-गुर्दे व फेफड़े व गर्म मिजाज वाले को। दर्प०-पहाड़ी पोदीना। प्रति०-जीरा अनीसून व सौंफ। मात्रा-५ मा०।

गुण व कार्य—मवाद बलग़मी को खूब छांटता है, मेदे से हर किस्म के कीड़े और कद्दूदाना व आंतों के कीड़े निकालता है, इसका लेप सर्दी के वरम को तहलील करता है, हाज़िम है, भूख लाता है, रियाह खूब जारी करता है, भुने हुये सुहागे की खील एक माशा से ४ माशा तक के साथ इसको कूट कर दूध में फंकी लें तो बवासीर को मुफीद है नजुर्बा किया हुआ है, इसका सुर्मा आंख को जिला देता है। (जहरीला नहीं)

५६१—कालीसर व कलीसर

प्र०—कालीसर व कलीसर। रंग पीला। स्वाद कड़वा। प०-एक पेड़ का फल है, जो बेर व उन्नाव के बराबर होता है, पेड़ छोटा व पत्ते बारीक होते हैं। स्वा०-गर्म खुश्क।

गुण व कार्य—पेट को कब्ज करता है, जलंधर को मुफीद है। मनी बहुत करता है, सफ़रा व सौदा और बलग़म को तहलील करता है। तप को नफा देता है, स्त्रियों की योनि के रोगों व ज़ख़्म जो बहुत खून आने से हो जाता है दूर करता है।

(जहरीली नहीं)

५६२—कांच

प्र०-कांच। सं०-काच। फ़ा०-आबगीना। अ०-ज़ज़ाज। रंग-कई तरह का। स्वाद-फीका। प०-एक चीज खान की और बनाई भी जाती है। स्वा०-गर्म १ खुश्क १। हानि-आंतों और नसों को दर्प०-कतीरा। प्र०-जबरजद। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—रूह और ख़िलतों को पतला करता और जिला भी देता है, फोड़े व फुन्सी को दूर करता है। आंख को कुव्वत देता है, गुर्दे व मसाने को नफ़ा देता और पथरी तोड़ता है।

(अधिक जहरीला नहीं है)

५६३—कान्दा

प्र०-कान्दा। सं०-बनपलांडु। फ़ा०-प्याजदश्ती। अ०-बसलउलफ़ार व बसलउलगुसल व अस्क़ील। रंग-सफेद। स्वा०-कड़वा व तेज। प०-प्याज की तरह व उससे बड़ी एक जंगली जड़ मशहूर है। स्व-गर्म खुश्क २। हानि-क़ै लाती व शिर दर्द पैदा करती है। दर्प०-कन्द व सिकंजबीन। प्र०-लहसुन। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—मिर्गी व मालिख़ौलिया व सदर (चलते हुये आंखों में अंधेरा हो) व फ़ालिज़ व लक़वा व सूखी खांस और पुरानी खांसी को मुफीद है, तिहाल की सख्ती व जलंधर और कांवर को मुफीद है, बाहर चमड़े में खून को छड़छड़ा लाती है, क़ै लाती है, भुलभुलाकर इसको काम में लाना बेख़ौफ है।

(जहरीली नहीं, एक तोला से ज्यादा क़ातिल है)

५६४—कान्दर

प्र०-कान्दर। सं०-कुन्दर। फ़ा०-ऊशा। अ० उरक़ व लजाक़ उलजहब। रंग काला व पीला। स्वा०-बहुत कड़वा। प०-एक पेड़ का गोंद है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-मेदे व गुर्दे को। दर्प०-अनीसून व जूफ़ा व बादाम। प्र०-सफेदराई व जावशीर। मात्रा-१॥ माशे।

गुण व कार्य—वरम व रियाह को तहलील करता है, खुश्की लाता है, तबियत को नर्म करता

है व जिला करता है, बदन की रतूबत को जज़्ब करता है, जिगर व सुद्दा खोलता है, शहद के साथ इसका पीना मिर्गी व फ़ालिज और ख़िदर को मुफ़ीद है, इसका लेप तिहाल के वरम की सख्ती को नर्म करता है, जोड़ों के वरम व सख्ती को भी नफ़ा देता है। (जहरीली नहीं)

५६५—कांडल का साग

प्र०-कांडल का साग। सं०-सर्षप शाकम्। फ़ा०-तुख्म सर्सप। अ०-बक़लता उल दफ़। रंग-हरा। स्वा०-तेज व कुछ कड़वा। प०-सरसों का साग प्रसिद्ध है। स्व०गम ख़ुश्क २। हानि-मेदे को और पेशाब बन्द कर देता है। दर्प०-कासनी व शहद।

गुण व कार्य—तबियत को नर्म करता है, रियाह खूब जारी करता है, थोड़ी सी गिज़ा है, गाढ़ा खून पैदा करता है, बलगम के फिसाद को खोता है, भूख खूब लाता है, इसका पानी तर खुजली को मुफीद है, फुन्सियों को नफ़ा करता है।

(जहरीली नहीं)

५६६—कास

प्र०-कास। सं०-कास। रंग-काला व पीला। स्वा०-कसैला। प०-एक घास है हिन्द के लोग जिसकी रस्सी बनाते हैं। स्व०-सर्द खुश्क।

गुण व कार्य—कठिनाई से पेशाब आने और मसाने की पथरी को मुफीद है, खून व सफरा के फिसाद और ऐज़ा की सोज़िश को नफ़ा करती है, खासकर बवासीर का खून बन्द कर देती है।

(जहरीली नहीं)

५६७—कांसा

प्र०-कांसा। सं०-कास्य। फ़ा०-रुईन। अ०-तालीकून। रंग-ज़र्द व बुर्राक़। स्वा०-कसैला। पहि०-एक मिश्रित धातु मशहूर है। स्व०-गर्म खुश्क २।

गुण व कार्य—कै बंद कर देता है, बाज़ ऐज़ा के आमासको दूर करता है, ज़हन को क़वी करता है, सूंघने की ताक़त को नफ़ा करता है। इसमें समियत (जहरीलापन भी है) (जहरीला है) (गौसमी व कसरत करीब बसम है)

५६८—काहू

प्र० नाम-काहू। फ़ा०-काहू। अ०-खस। रंग-पत्ते हरे बीज सफेद। स्वाद फीका व मीठा। प०-एक मशहूर घास है जो दो तरह की यानी बग्ती व जंगली का होता है। स्व०-सर्द तर २। हानि-बाह को और सिल व सूखी घास वाले को। दर्प०-पौदीना व करफ़्स। प्र०-खुर्फा।

गुण व कार्य—अच्छा खिलत पैदा करता है और उसे पतला करता है, सफ़राबी तेज़ीको तस्कीन देता है खून को साफ करता है, बवाई दवाको शुद्ध करता है।

(जहरीली नहीं)

५६९-काहू के बीज

प्रसिद्ध नाम-काहू के बीज। फारसी नाम-तुख्म काहू। अ०-बज़्र खस। रंग-सफेद। स्वाद-फीका। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द तर २। हानि-बाह को और दिलियाने पैदा करता है (भूख करता है) दर्प०-मस्तगी। प्र०-ख़शख़ाश। मात्रा-७ माशे से ९ माशे तक।

गुण व कार्य—सफरा व खून की तेजी और प्यास को तस्कीन देता है, दिमाग पर अबखरें नहीं चढ़ने देता, मेदे की सोज़िश को नाफ़े है, पेट को

नर्म करता है, पेशाब लाता है, नींद लाता है, वरम के मांदे को पुख्ता करता है, खुश्की लाता है, अजू को सुस्त करता है, खून को साफ करता और स्वप्रदोष को लाभदायक है।

(जहरीला नहीं)

५७०---काई

प्र०-काई। सं०-नीलिका। फा०-चश्म व ज़ग़ व इजाफ्अजाव। अ०-तुहलब। रंग-खूब हरी। स्वाद-कुछ कड़वी; पहि०-एक तरह की हरी, ठहरे हुये पानी में पैदा होकर पानी को खराब कर देती है। स्व०-सर्द तर २। हानि-सर्द मिजाज वाले को। दर्प०-शहद शफ़रम। प्र०-कुलफा।

गुण व कार्य—इसका लेप खूनको बन्द करता है, सख्त वरमों और सुख वादह (छोटी व लाल फुन्सी) को तहलील करती है, सूखी काई पीना हरे और सफ़रावी दस्तों को बन्द करती है।

(जहरीली नहीं)

५७१---कायफल

प्र०-कायफल। सं०-कट्फलम्। फा-दार, शीशान। अ०-ऊरदुल बुर्गक़। रंग-लाल। स्वाद-कसैला व खुशबूदार। पहि०-तज की सी एक पेड़ की छाल है। स्व०-गर्म १ खुश्क ३। हानि-जिगर व तिहाल को। दर्प०-मस्तगी। प्रति०-असारून व जराबन्द। मात्रा-७ माशे

गुण व कार्य—वरम व रियाह को तहलील करता है, क़ाबिज है, नजलों को गिरने नहीं देता सौदावी बसवास को नाफै है, रतूबत को खुश्क करता है, पट्ठों को कुव्वत देता है, पेट से बच्चे को गिरा देता है, सुद्दा खोलता है, खांसी व तप और बवासीर को नाफै है, जियानमनी व मेदेके सर्दी के दर्द को नफा देता है, इसका गर्गरा मुंह आने को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

५७२—कबाबचीनी व शीतलचीनी

प्र०-कबाबचीनी व सीतलचीनी। सं०-शीतल-चीनी। रंग-बाहर काली भीतर सफेद। स्वाद-तेज व खुश्क। पहि०-कालीमिर्च से कुछ छोटा एक दाना है, जो हुब्ब विलसां की तरह का होता है। स्व०-गर्म खुश्क। हानि-मसाना को। दर्प०-मस्तगी व सन्दल। प्र०-दारचीनी। मात्रा-४ माशे।

गुण व कार्य—रूह को लतीफ करती है, सुद्दा व मसाम खोलती है, मेदे और मसूड़ों को कुव्वत देती है, पेट के नलों को भी कुव्वत देती है, रियाह को तहलील करती और पेशाब खूबलाती है, गुर्दे व तिहाल की बीमारियों को मुफ़ीद है, इसका चबाना मुंह आने को मुफीद है, इसको चबाने से लज्जत देता है।

(जहरीली नहीं)

५७३—किबर की जड़

प्र०-किबर की जड़। फा०-वेख कबर। अ०-असलुलकबर। रंग-सफेद। स्वाद-कड़वी। पहि०-एक लम्बी जड़ है जिसकी घास जमीन पर फैली हुई और फल खीरेके बराबर होता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गुर्दे व मसाने व मेदे को। दर्प०-सिकंजबीन व शहद व अनीसून। प्र०-हींग व जरावन्द तवील। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दा व मसाम खोलती है, जिला करती है, रियाह व वरम को तहलील करती है, रूह को लताफ़त करती है। बलग़म व सौदा और लसदार खिलतों को छांटती है, पेशाब लाती है,

दिमाग़ी सर्द बीमारियों को नाफ़े है, अक़ुलनिसाँ व बवासीर को मुफ़ीद है, सफ़ेद दाग़ को फ़ायदेमन्द है और पेट के नलों को कुव्वत देती है।

(ज़हरीला है)

५७४---कपूर

प्र०-कपूर। सं०-कर्पूर। फ़ा०-काफ़ूर। अ०-काफ़ूर। रंग-सफ़ेद। स्वाद-कड़वा व खुश्क। पहि०-बाजे एक पेड़ का गोंद जिसकी लकड़ी बिलकुल नर्म होती है, बाजे जमी हुई ओस बताते हैं, और बाजे खान की चीज कहते हैं। स्व०-सर्द व खुश्क ३। साथ कुव्वत आतसी के। हानि-गुर्दे व मसाने और बाह को। दर्पघ्न-एलुवा व मुश्क व जाफ़रान। प्रति०-सफ़ेद चन्दन व बंशलोचन। मात्रा-१॥ रत्ती।

गुण व कार्य—फ़रहत बख़शता है, दिल व दिमाग को कुव्वत देता है, तपेदिक व ज़ातुल जम्ब व सिल और फेफड़े के ज़ख़्म को नफ़ा देता है। प्यास और जिगर की सोज़िश को दूर करता है, नींद लाता है, इसका सूंघना नींदको बढ़ा देता है।

(क़रीब वसम खास कर औरत को)

५७५---कपूर कचरी

प्र० नाम-कपूर कचरी। सं०-शठी। अ०-ज़र्निया व अक़ूल काफ़ूर। रंग-बाहर भूरी अन्दर सफ़ेद। स्वाद-कड़वी व तेज व खुशबूदार। पहि०-सोंठ की तरह की एक जड़ है। स्व०-गर्म खुश्क २ हानि-दिल को और शिर दर्द लाता है। दर्प०-बनफशा व सन्दल व पोदीना। प्र०-ज़ेरोंदान व दरूनज। मात्रा-४ माशा।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलती है, और फ़रहत लाती है, दिल व दिमाग़ और मेदे को कुव्वत देती है, बाह लाती है दस्त और कै बन्द करती है, पेशाब व हैज जारी करती है, सौदावी माद्दे को दस्तों की राह निकालती है, सर्दी की खांसी को नफ़ा देती है, बच्चों की पेचिश को मुफ़ीद है, रियाह खूब निकालती है, हाज़िम है, इसका सूखा धूरा (चूरा) मलना वरमों को तहलील करता और दर्दों को तस्कीन देता है।

(ज़हरीला नहीं)

५७६---कुटकी सफ़ेद

प्र० नाम-कुटकी सफ़ेद। सं०-कटुकी श्वेत। अ०-ख़रबंक़ अबैज़। रंग-सफ़ेद ज़र्दी मायल। स्वाद-कड़वी। पहि०-एक पेड़ की जड़ है जिसके पत्ते बारतंग कैसे होते हैं, जड़ के भीतर मकड़ी के जाले की तरह कुछ होता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-गुर्दे को और खुनाक पैदा करती है। दर्प०-कतीरा व मस्तगी। प्र०-पोहकर मूल। मात्रा-३ माशा।

गुण व कार्य—बलग़म व गाढ़े सफ़रा व लसदार खिलतों को और पीले बलग़म को दस्तों की राह निकालती है, सुद्दे खोलती है मेदे को फ़ासिद मवाद से पाक करती है, पेशाब व हैज जारी करती है. फ़ालिज व सरसाम और बलग़मी मिर्गी और लीशारगुश (बलग़मी सरसाम) व दिमाग़ की सर्द बीमारियों को मुफ़ीद है, गठिया और जोड़ों के दर्द में फ़ायदेमन्द है। (ज़हरीला नहीं)

५७७---कुटकी स्याह

प्र०-कुटकी स्याह। सं०-कृष्ण कटुकी। अ०-ख़रबंक़ असूवद। रंग-काली। स्वाद-कड़वी। प०-एक घास की खोलदार जड़ है, जिसके पत्ते कुसुमके से होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-गर्ममिजाज

बालों को खुनाक पैदा करती है। दर्प०-कतीरा और गाय का घी। प्र०-गारीकून व कुन्दरा। मात्रा-१॥ माशे।

गुण व कार्य—खालिस सौदावी और बलगम को दस्तों की राह निकालती है, बदन में रतूबत को खूब सुखाती है। बरम को तहलील करती है, रूप को लतीफ करती है, अक्सर शरीर के मर्जों को और पुराने नजलों को मुफीद है, स्याह व सफेद दाग को और अकोंता (दाद) और चर्म को नफा करती है। (जहरीली नहीं)

५७८—कबाबः खन्दान व फागरा

फा०-कबाबः खन्दान व फागरा। अ०-फागरः रंग-भूरा अन्दर सफेद। पहिचान-कालीमिर्च की तरह का और मुंह फटा हुआ होता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-शिर दर्द पैदा करता और गर्म मिजाज वालों को। दर्प०-नीलोफर व गुलाब। प्र०-इलायची व दारचीनी। मात्रा-५ माशे।

गुण व काय—मेदे व कुव्वत हाजिमे को व शिर व जिगर को कुव्वत देता है, सुद्दे खोलता है, बलगमी व सौदावी खिलतों को पाक करता है, दिमागी सर्द बीमारियों को मुफीद है, तुन्द रियाह और सर्दी के दस्तों को मुफीद है, खून को साफ करता है। (जहरीली नहीं)

५७९—कत्था सफेद

प्र०-कत्था सफेद। सं०-खदिरसार। अ०-रात रंग-भूरा सुर्खी मायल। स्वाद-कसैला। पहिचान-एक पेड़ की छाल को पका कर जमाते हैं। और हिन्द में होता है। स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-इसकी ज्यादती मसाने में पथरी करती है, और बाह को मुजिर है। दर्प०-मुश्क व अम्बर। प्र०-गेरू। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—काबिज है, खुश्की लाता है, दस्तों को बन्द करता है, बरम के मवाद को पुख्ता करता है, दांतों और मसूढ़ों को मजबूत करता है, इसकी चुटकी मुंह आने को मुफीद है, जिर्यानमनी व स्वप्न दोष को मुफीद है, आंतों की खराश व तप और मरोड़ व आंतोंके जख्म और कांवरको फायदामन्द है। (जहरीला नहीं)

५८०—कटाई

प्र० नाम-कटाई। सं०-कंटकारी। रंग-फूल लाल। स्वाद-कड़वी। पहि०-एक जंगली पेड़ है जिसकी पत्ती और शाखों पर कांटे होते हैं, फल बेर का सा होता है, इसे कटेली भी कहते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २।

गुण व कार्य—कीड़ा और बबाई हवा के नुकसान को दूर करती है। तप और पहलू के दर्द और कठिनता से मूत्र आने को लाभदाई है, सूंघने की ताकत के दूर हो जाने को नफा करती है, पेट के कीड़े मारती है, दिल की बीमारियों को नाफै है और बरम को तहलील करती है।

(जहरीली नहीं)

५८१—कटहल

प्र०-कटहल। सं०-पनस। फा०-चकी। रंग-बाहर हरा भीतर पीला। स्वाद-मीठा व चाशनीदार। पहि०-एक हिन्दुस्तानी बड़ा फल है जो तर्बूज के बराबर होता है जिसके ऊपर कांटे और भीतर दाने होते हैं। स्व०-गर्म २ खुश्क १ रतूबत फुजलिया के साथ। हानि-नफाख है और

ससौदावी बीमारियां पैदा करती हैं। दर्प०-नमक और अलसी के बीज भून कर खाना।

गुण व कार्य—कुव्वत वाह को खूब बढ़ाता है, इमसाक करता है, खून को खराब व फ़िसाद करने वाला करता है, अफ़ारा करता है, खून गाढ़ा और सौदावी पैदा करता है, देर हजम है, इसके बीज वाह को जियादा करते हैं, मनी पैदा करते हैं, अगर कच्चा कटहल पकाकर खावें तो भूख की ज्यादती को नफ़ा देते हैं।

५८२—कठूमर

प्र० नाम-कठूमर । सं०-काष्ठोदुम्बर । फ़ा०-अंजीर दश्ती। अ०-तीन बरसी। रंग-बैंजनी स्वाद-कसैला व खट्टा। पहि०-अंजीर की तरह का एक पेड़ का फल है। स्व०-गर्म खुश्क २।

गुण व कार्य—इसका लेप काले व सफेद दाग और अकौता (दाद) व दाद को मुफीद है, इसकी जड़ का लेप हर एक गुण में इससे बढ़कर गुणदाई है। (ज़हरीला नहीं)

५८३—कतीरा

प्र० नाम-कतीरा । फ़ा०-गून । अ०-कसीरा। रंग-सफेद व पीला। स्वाद-फीका व कुछ खट्टा। पहि०-एक कांटेदार पेड़ का गोंद मशहूर है स्व०-मौतदिल। हानि-बदन के नीचे के हिस्से को। द०-अनीसून। प्र०-समगअर्बी व तुख्म कद्दू मीठा। मात्रा—४ माशा।

गुण व कार्य—अक्सर रगों के मुंह में चिपक कर सुद्दा लाता है, खून को गाढ़ा कर देता है और सख्तियों को नर्म करता है, खराश व खिल्तों की तेजी को तस्कीन देता है, आंतों को ताकत देता है, अन्दरूनी ऐजा के खून बहने को बन्द कर देता है, खांसी और सीने की खुखुराहट और फेफड़े के जख्म को मुफीद है, और अक्सर दवाइयों का विष वगैरा दूर करता है।

५८४—कटेला

प्र०-कटेला। सं०-कंटकारी। रंग-पत्ते हरे फूल बैंजनी। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक कांटेदार घास है इसके फल में भी कांटे होते हैं। इसकी जड़ ली गई है। स्व०-गर्म खुश्क। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्प०-धनियां व काफूर। प्र०-अंजीर। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—कीड़ों और रियाह को दूर करता है, तप और पहलू के दर्द और कठिनता से मूत्र आने को दूर करता है, सूंघने की शक्ति दूर हो जाने को मुफीद है, दिल की बीमारियों को गुणदायक है, खासकर तबिअत को नर्म करती है, भूख लाता है और हाजिम है, खांसी और श्वास चढ़ने को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

५८५—गजपीपल

प्र०-गजपीपल। सं०-गजपिप्पली। रंग-लाल। स्वाद-कड़वी। प०-एक बूटीका फलहै,जो लालमिर्च के बराबर और उसके समान होता है। स्व०-गर्म खुश्क।

गुण व कार्य—हाजिम है, जिगर और मेदे को कुव्वत देती है,इमसाक लातीहै और पुरानीसेपुरानी बीमारियों को खोती है, पेट की बीमारी और बवासीर को नफा देती है, दस्तों को बन्द करती है, पेट के कीड़े मारती है व वाह (बाजीकरण) की बीमारियों में लगाने और मलने के जरिये से मुफीद है। (जहरीला नहीं)

५८६—कचरी

प्र०-कचरी । फा०-दस्त म्बोया। अ०-शमाम । रंग-भूरी । स्वाद-कड़वी व तेज व खुशबूदार। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों को सिर दर्द लाता है। दर्प०-धनियां। प्र०-अंजीर। मात्रा-४ माशे।

गुण व कार्य—पेट के नलों को कुव्वत देती है पट्ठों की सख्तियों को तहलील करती है, फालिज व लक़वा और बलग़मी बीमारियों व बवासीर को नफा देती है। रियाह को तहलील करती है, बालाई खारजी रतूबत को जज्ब करती है, काबिज है, बाह जियादा करती है। (जहरीली नहीं)

५८७—कचूर (नरकचूर)

प्र०-कचूर। सं०-कर्चूरम्। रंग-भूरा। स्वाद-तेज व कड़वा व खुशबूदार। प०-तीन तरह का होता है। नर व मादा और बड़ा,बड़ेको कपूर कचरी कहते हैं। जो एक घास की जड़ है, अदरक व सोंठ की तरह होती है, छोटे से मतलब मादा से है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-दिमाग़ व फेफड़े को और सिर दर्द लाता है। दर्प०-धनियां। प्र०-अंजीर व अदरख मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—खाना खूब पचाता है और भूख बढ़ाता है, कोढ़ को मुफीद है, बवासीर व फोड़े फुन्सियों और जखमों व श्वास चढ़नेको व बायगोले और ग़लीज रियाह को मुफीद है, हवा के फिसाद और बलगम को खोता है, पेट के कीड़े मार निकालता है और दस्तावर है। (जहरीली नहीं)

५८८—कुचला

प्र०-कुचला। सं०-कुपालु। फा०-कुचला। अ०-अजराकी व क़ामहल उलकलब। रंग-स्याहीमाइल व ज़र्द। स्वाद-कड़वा। प०-एक पेड़ के फल का बीज है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-नशा करता है और क़ातिलहै। दर्प०-कै करना और घी व शक्कर। प्र०-भिलावा। मात्रा २ रत्ती।

गुण व कार्य—फ़ालिज व इस्तरखा व गठिया और कमरके दर्द व अकुलनिसां और रियाहीकुलंज को नफा करता है,पट्ठों की कुल बीमारियोंको मुफीद है, तजुर्बा किया हुआ है, पेशाब लाता है,हैज जारी करता है। पथरी को तोड़ बहाता है, इसका लेप चेहरे की स्याही व झांई व तर खुजली और दाद को लाभ देता है। (जहरीला है)

५८९—कचनार

प्र०-कचनार। सं०-कांचनार। रंग हरी व लाल। स्वाद-कसैली। प०-एक पेड़ है। जिसकी कली तरकारी वगैरामें काम आतीहै। और काममें कलियां लाई जाती हैं। स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-अफारा करती है। प्र०-मांस व नमक व गर्म मसाला।

गुण व कार्य—देर हजम और रद्दी गिजा है। काबिज है। खुश्की करती है। मेदे व आंतों को कुव्वत देती है, पेट को गुंग कर देती है। दस्तों को बन्द करती है, पेट के कीड़े मारती है व खून के फिसाद को दूर करती है। इसके फूल मुंह से खून आने को और हैज की ज्यादती को बंद करती है। अन्दरके मेदे और गुदाके जखमको मुफीदहै, इसकी छाल का सफूफ (चूर्ण) जियान को मुफीद है। इसकी छाल का गर्गरा मुंह आने और मुंहकी बीमारियों को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

५९०—कद्दू गोल

प्र०-कद्दू गोल । सं०-अलाबू । फा०-कदुवेशीरीं । अ०-दुबाय यकतीन-हुलू । रंग-हरा व पीला । स्वाद-मीठा । प०-एक तरकारी की किस्म का मशहूर है । स्व०-गर्म तर २ हानि-नफ़ाख है । दर्प०-खटाई व मांस । प्र०-लौकी

गुण व कार्य—थोड़ी गिजा है, गलीज खिलत पैदा करता है, पेट को नर्म करता है, देर हज़म है, मांस के साथ लजीज़ है, इसका हलुवा लजीज़ और मुकव्वी बाह है । (जहरीला नहीं)

५९१—कदूलांवा व लौकी व रामतरोई

प्र०-कदूलावां व लौकी व रमतुरैया । सं०-दीर्घ अलावू । फा०-कदुवे दराज । अ०-क़रअ व यक़तीन । रंग-बाहर हरा भीतर सफेद । स्वाद-फीका । प०-एक बेलदार पेड़ का फल है, जो आधा गज से गज भर तक का होता है और तरकारी की किस्म से मशहूर है । स्व०-सर्द तर २ । हानि-सर्द मिजाजवालों को और मेदे को । दर्प०-मांस व मसाला । प्र०-पालक व खुरफा ।

गुण व कार्य—अच्छा खिलत पैदा करता है थोड़ी गिजा है, पेट को नर्म करता है, पेशाब खूब लाता है, ऐजा को तरी व सर्दी पहुंचाता है, सुद्दा खोलता है, गर्मी के बुखारों को मुफीद है, सफरावी व गर्म मिजाजों के व दिक् वालों के लिये इससे अच्छी और गिजा नहीं है, इसके भुल भुलाये हुये का पानी दिल व जिगर और मेदे की गर्मी और बुखार को तस्कीन देने में बेमिसाल है ।

(जहरीली नहीं)

५९२—कदूलम्वे के बीज

प्र०-कदू लांबेके बीज । सं०-दीर्घअलाबू बीजम् फा०-तुख्म कदुवेदराज़ । अ०-बजरुल करअ । रंग-सफेद व चिकना । स्वाद-मीठा । प०-प्रसिद्ध है । स्व०-सर्द २ तर १ । हानि-सर्द मिजाज वालों को । और मसानाको । दर्प०-सौंफ । प्र०-तुख्म तर्बूज व कतीरा । मात्रा-६ माशे ।

गुण व कार्य—बदन को फरबै करता है, पेशाब लाता है, सीने के खुरखुराने व मुंह से खून आने व गर्मी की खांसी को मुफीद है, प्यास को तस्कीन देता है । पेशाब की चिनक व मसाने की सोजिश को नाफै है और गर्मी के बुखार को व नींद न आने को व दिमाग व दिल को कुव्वत बख्शता है और बलग़म (कफ) को पकाता है । (जहरीला नहीं)

५९३—कड़

प्र०-कड़ । सं०-कुसुमबीजम् । फा०-खुस्कदाना । अ०-हब्बुल कर्तुम व हब्बुल अस्फर । रंग-सफेद । स्वाद-कुछ कड़वा । प०-एक तरह के बीज प्रसिद्ध हैं । स्व०-गर्म १ खुश्क २ साथ कुछ दस्तावर है । हानि-मेदे को । दर्प०-अनीसून व मिठास । प्र०-जताउलखिज़रा । मात्रा-६ से ९ मा० तक ।

गुण व कार्य—बलग़म को छांटता और दस्तों की राह निकालता है, रियाह को तहलील करता है, सीने को पाक करता है, आवाज को साफ करता है, नजलों को पुख्ता व पाग करता है, बाह व बीनाई को कुव्वत देता है, मनी बढ़ाता है, जलंधर व मालिखौलिया व वसवास व खुजली व कोढ़ व कुलंज और खारिश को मुफीद है ।

(ज़हरीला नहीं)

५९४---करफस पहाड़ी

प्र० नाम-करफस पहाड़ी। सं०-प्रजमोदः। फा०-करफस कोही। अ०-कितरास लयून। रंग-काला। स्वाद-कुछ कड़वा व तेज व खुशबूदार। प०-एक लंबे व काले बीजहैं नानखवाह(अजवाइन) की तरहके। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्प०-धनियां। प्र०-तुख्म करफस व शाहबलूत। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य—सुद्दे और मसाने को खोलता है, हैज व पेशाब को खूब लाता है, लसदार रतूबत को छील डालता है, अफारे को तहलील करता है, पहलू के दर्द और रियाही मरोड़ को मुफीद है, इसके शीरे में तर किया हुआ कपडा योनि में रखना बच्चे को मय बच्चेदानी के गिरा देता है, और बाह लाता है। (जहरीला नहीं)

५९५---करमदाना

फा०-किरम दाना। अ०-हब्बुलदूद। रंग-काला। स्वाद-कड़वा। प०-एक दाना है जिसकी दोनों तरफ नोंक होती है। स्व०-गर्म खुश्क २।

गुण व कार्य—सफरावी मादेको दस्तों की राह निकालता है और पेटके कीड़ोंको मारकर निकालता है। योनि में गर्मी पैदा करता है। और उसको रद्दी फुजलात से पाक करता है।

(जहरीला नहीं)

५९६---करमकल्ला

प्र० नाम-करमकल्ला। फा०-करनब व कलम गर्द। अ०-बक़लताउल इनसार। रंग-हरा व सफेद। स्वाद-फीका व कसैला। प०-एक तरह की गोभी की तरह की तरकारी है। स्व०-मातदिल है, बाजे गर्म बाजे सर्द कहते हैं। हानि-दिमाग को। द०-तेल और नमक। प्र०-गोभी।

गुण व कार्य—पेट को नर्म करता है, काबिज और अफारा करता है, बाह को मजबूत करता है, रद्दी माद्दे को पकाकर और मातदिल करता है व बाह को कवी करता है और रद्दी गिजा है, गाढ़ा व सौदावी खून पैदा करता है।

(जहरीला नहीं)

५९७---करनपात

प्र०-करनपात। अ०-अजफार उलजन। रंग-भूरी स्याही मायल। स्वाद-कड़वा। प०-एक घास बे पत्ते और बे फल के कटे हुये नाखून की तरह की है। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-दिमाग को। दर्प०-उन्नाव। प्र०-इन्द्र जौ व गूगल व सुपारी। मात्रा-६॥ मा०।

गुण व कार्य—स्याह कांबर (यर्कान असूद) को नफा देता है, खुश्क खांसी को मुफीद है, नींद कम आने को खास तौर पर दूर करता है, इसका तेल तर खुजली और फोतों के वरम को मुफीद है इसको सिर्के में पकाकर लेप करना वरम को तहलील करता है।

(जहरीला नहीं)

५९८---कुरंड

प्र० नाम-कुरंड। फा०-संवादा। अ०-संवादज। रंग-लाल व सफेद व काला। स्वा०-फीका। प०-एक तरह का पत्थर है जो किसी कदर नर्म होता है, मानों रेत जमी हुई है। स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-पट्ठों को। दर्प०-जाफरान। मात्रा-इसको खाते नहीं हैं।

गुण व कार्य—मसूड़ों को कुव्वत देता है। और उनके ऐंठन को दूर करता है, इसका मंजन दांतों को जिला देता और चमकदार करता है। इसका लेप वरमों को तहलील करता है, सोजिश को तस्कीन देता है, अंडे की सफेदी के साथ आग के जले हुये को मुफीद है, मोम के साथ बवासीर को मुफीद है। जला हुआ बहते हुए खून को रोकता है। पुरानेसे पुराने जख्मों और घावोंको मुफीद है।

(अधिक जहरीला नहीं)

५९९—करंजुवा

प्र० नाम-करंजुवा। सं०- पूतिकरंज। फा०-खाया अब्लीस। अ०-अकन्मुक्त। रंग-आसमानी स्वाद-कड़वा व कसैला। प०-एक कांटेदार पेड़ का फल प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-सीने व हलक को। दर्पघ्न-नमक व तेल।

गुण व कार्य—वरमों को तहलील करता है, बहते हुये खून को रोक देता है, बवाई हवा को दूर करता है, पुराने २ बुखारों को नफा देता है, बच्चे को गर्भाशय में रखता है, और उसकी हिफाजत करता है, मवाद को पकाता है, कुलंजको खोता है।

(जहरीला नहीं)

६००—करौंदा

प्र०-करौंदा। सं०-करमर्दकः। फा०-करौंदा। रंग-सफेद काला व सुर्ख व हरा। स्वाद-खट्टा व मीठा। प०-एक कांटेदार पेड़ का फल है, जो झरबेरी के बेर का सा और पत्ते नीबू के से होते हैं स्व०-सर्द खुश्क। हानि-फेफड़े को। द०-नमक व मिठाई।

गुण व कार्य—भूख खूब लाता है, पित्त को खूब छांटता है, प्यास को तस्कीन देता है, दस्तों को बन्द करता है, खासकर सफरावी दस्तों को बहुत मुफीद है, कच्चा करौंदा शकील (गरिष्ठ) व नफख अफरा करने वाला है, पेट को गुंग कर देता है, इसका अचार हाजिम है, भूख बहुत लाता है, बाह को खराब कर देता है।

(जहरीला नहीं)

६०१—करमरी

प्र०-करमरी। रंग-काला। स्वाद-खट्टा। प०-मकोइया के बराबर एक जंगली फल है, जिसको नमक मिर्च मिलाकर खाते हैं। स्व०-सर्द। हानि-काबिज और गरिष्ठ है। द०-नमक मिर्च।

गुण व कार्य—मनी को गाढ़ा करती है, बाह लाती है, कुव्वत बाह को हरकत देती है व क़ाबिज है, मितली व कै को दूर करती है और प्यास को तसकीन देती है।

(जहरीली नहीं)

६०२—करील व टेंटी

प्र०-करील व टेंटी। सं०-करील। रंग-काला। स्वाद-खट्टा व मीठा। पहि०-करौंदे के बराबर फल है, जिसके पेड़ में पत्ते नहीं होते। स्व०-मातदिल।

गुण व कार्य—फरहत देता और खुशी (प्रसन्नता) करता है, दिल को कुव्वत देता है, खासकर वहशत व जनून को दूर करता है, हवास व जहन को मजबूत करता है, बाह को कुव्वत देता है, मीठे तेल के साथ इसकी राख नासूर को मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

६०३—करेला

प्र०-करेला। सं०-कारवेल्लकम्। अ०-कसायेउल हमार। रंग-हरा व लाल। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक बेलदार पेड़ का फल है, जो खीरे के बराबर और देखने से कांटे की किस्म की सी तरकारी है।

स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वाले को और दस्तलाता है। दर्प०-तेल व प्याज व गुलतमर हिन्दी। प्र०-महूराना।

गुण व कार्य—पेशाब जारी करता है, लताफत देता और जिला करता है, दिमाग़ को रद्दी फजूल से पाक करता है, सफरा व बलग़म को दस्तों की राह निकालता है, सर्द मिजाज वाले के मेदे को बलदायक है, पेट के कीड़े मारता है। फालिज व लक़वा व इस्तरखा व गठिया व जलंधर और कांसर को नफा देता है। पथरी को तोड़ बहाता है, पट्ठों और बाह को कुव्वत देता है वाजियोन मनी को गुणकारी है।

(जहरीला नहीं)

६०४—कस्तूरी

प्र०-कस्तूरी। सं०-कस्तूरी। फा०-मुश्क। अ०-मुश्क। रंग-काली व खुशबूदार। स्वाद-कड़वी पहि०-मशहूर है कि हिरन की नाभि में खून जम जाता है। और परमात्मा की कृपा से खुशबूदार हो जाती है। स्व०-गर्मखुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों को सर दर्द लाता है। दर्प०-वंशलोचन व गुलाब व काफूर। प्र०-साजज़ हिन्दी व जन्दवेदस्तर। मात्रा-१¾ रत्ती।

गुण व कार्य—लताफत देती है, ग़लीज यानी गाढ़े खिलतों को तहलील करती है, खासकर फरहत लाती है, दिल व दिमाग़ व कुल ऐज़ाये रईसा और असली हरारत को ताकत देती है, बाहरी व भीतरी हवास को पाक व साफ करती है। बाह को हरकत देती है, वीर्य (मनी) के जल्दी गिरने को दूर करती है, फ़ालिज व लक़वा व राशा और निसियान (भूलने) को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

६०५—कसर गाजरूनी

प्र०-कसर गाजरूनी। फा०-कसर गाजरूनी। अ०-खरनूबसामी। रंग-फूल पीला व फल भूरा। स्वाद-गिरी मीठी, फूल कड़वा। पहि०-एक बड़ा पेड़ है, जो अखरोट का सा होता है, जिसकी फलियां १ बालिश्त और दाना बाकला की तरह का होता है। स्व०-गर्म २ खुश्क २। हानि-फासिद खिलत पैदा करता है। दर्प०-शहद। प्रति०-शाहबलूत। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—खुश्की करता है, काबिज है। मेदे को कुव्वत देता है, पेशाब लाता है, बदन को फरबे करता है, फोड़ों और मसूड़ों को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

६०६—कसुम

प्र०-कसुम। सं०-कुसुम। फा०-गुलमासफर गुलकाफशां। अ०-अहरीज। रंग-लाल। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक मशहूर फूल है जिसका पेड़ १गज और कांटेदार होता है। स्व०-गर्म२ खुश्क१। हानि-मेदे और तिहाल को नष्ट करता है। दर्प०-शहद। मात्रा-४ माशा।

गुण व कार्य—माद्दे को पुख्ता और पाग करता है, मवाद व वरम को तहलील करता है। इसके सिवाय क़ाबिज होने से नींद लाता है, जिगर को ताकत देता है, जमे हुये खून को पिघला कर पतला कर देता है, शहद के साथ इसका लेप बवासीर व दाद, व खुजली और सफेद दाग को मुफीद है, इसमें रंगे हुये कपड़े की खुशबू बाह ज्यादा करती है, और बाह को हरकत देता है व बदन का

रंग साफ और सुर्ख करता है।

(जहरीला नहीं)

६०७—कसौंदी

प्र०—कसौंजी। सं०—कासमर्द। रंग-हरी। स्वाद-कड़वी व तेज। पहि०-एक घास है जिसके पत्ते सनाय मकी कैसे होते हैं। स्व०—गर्म खुश्क२।

गुण व कार्य—अगर कोई जहरीली चीज पी हो तो उसके जहर को दूर करती है, खिलतों के फिसाद को मौतदिल करती है, खांसी व जलंधर को नफा करती है, वरमों को तहलील करती है। इसकी जड़ का लेप दाद और झाई को मुफीद है।

(ज़हरीला नहीं)

६०८—कसेरू

प्र०—कसेरू। सं०—कसेरुका। रंग-बाहर काला भीतर सफेद। स्वाद-फीका व कुछ मीठा। पहि०-घास की गोल व अंडाकार जड़ है, यही काम में लाते हैं, यह पानी में होता है। स्व०—सर्द तर २। हानि-गरिष्ठ है और बलगम पैदा करता है। दर्प०-शकर और इसी का छिलका। प्रति०-कमल गट्टा।

गुण व कार्य—दिल को कुव्वत देता है, खफकान को दूर करता है, सफरावी व सौदावी और खूनी दस्तों को दूर और बन्द करता है, प्यास को तस्कीन देता है, पेट की गर्मी और सोजिश को नफा देता है। गर्मी करने वाले जहरों को मारने वाला है, अक्सर चीजों के जहरीलेपन को दूर करता है और सोजाक को नफा देता है।

(जहरीली नहीं)

६०९—कसीस

प्र०—कसीस। सं०—कासीसम्। फा०—ज़ाकज़र्द। अ०—ज़ाज अस्फर। रंग-पीला व काला। स्वाद-कड़वा व कसैला व बदबूदार। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क ४। हानि-क़ातिल है। दर्प०-ताजा दूध और कै करना। मात्रा-इसको खाते नहीं हैं।

गुण व कार्य—मेदे के कीड़े निकाल बहाता है, वरमों और तिहाल की सख्ती को दूर करता है। इसका सुरमा बीनाई को कुव्वत देता है, इसका लेप जले हुये को मुफीद है।

(जहरीला है)

६१०—किशमिश

प्र० नाम-किशमिश। सं०—लघु द्राक्षा। फा०-क़िशमिश। अ०—किशमिश। रंग-भूरी सुर्खीमायल स्वाद-मीठा व रसदार। पहिचान-एक काबुली मशहूर मेवा है, जो मुनक्का से छोटी होती है। स्व०-गर्मतर। इसके बीज सर्द खुश्क। हानि-तप पैदा करती है। दर्प०-सिकंजबीन व काहू व खीरा। प्र०—मवीज मुनक्का।

गुण व कार्य—मादे को पुख्ता करती है, सख्ती को नर्म करती है, सुद्दा खोलती है, मीठी किशमिश तबिअत को नर्म करती, खून के जोश को तस्कीन देती है, दमे को दूर करती है, बाह को कुव्वत बख्शती है, बदन को फरबै करती है, सिवाय इसके दस्तावर है और दिमागी ऐजा को ताकत देती है।

(ज़हरीला नहीं)

६११—ककरौंदा

प्र० नाम-ककरौंदा। सं०—कुकुन्दरः। अ०-कमाफितूस। रंग-हरा। स्वाद-कड़वा व तेज। पहि०-एक घास है, जिसके पत्ते काशनी के पत्ते

कैसे होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-फेफड़े को दर्प०-अनीसून। प्र०-सीसा ल्युस।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलता है, वरमों को तहलील करता है, दर्दे गुर्दा व बवासीर और जलंधर को इसका पोना नफा करता है, इसका लेप उसे पाक करता है, और जिला करता है पेशाब लाता है, इसके पत्तों का रस पेट के कीड़े मार निकालता है।

(जहरीला नहीं)

६१२---ककड़ी

प्र०-ककड़ी। सं०-कर्कटी। फा०-खियारजह: खियार दराज। अ०-कसाय। रंग-हरी व सफेद। स्वाद-फीकी। प०-गजभर लम्बी एक फल मशहूर है। स्व०-सर्दतर। हानि-सर्द मिजाज को अफारा और देर हजम है। दर्प०-नमक व अजवायन। प्र०-खीरा।

गुण व कार्य—जिला करती है, प्यास व सफरा की गर्मी व तेजी व शोजिस व खून की सिद्दत और जिगर को तस्कीन देती है, पेशाब खूब लाती है, पुराने बुखारों को उभारती है, रियाह व कुलंज पैदा करती है, व कमर के दर्द को दूर करती है। (जहरीली नहीं)

६१३---ककड़ी के बीज

प्र० नाम-ककड़ी के बीज। सं०-कर्कटी बीजम् फा०-तुख्म खयार दराज। अ०-बज्रउल कसाय। रंग-सफेद। स्वाद-मीठे। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्दतर २। हानि-ठहरे हुये मवाद को उभारते हैं। द०-सिकंजवीन। प्र०-खीरे के बीज। मात्रा-६ माशा।

गुण व कार्य—पेशाब लाते हैं, सुद्दा खोलते हैं, जिला करते हैं, रगों को लसदार मवाद से पाक करते हैं, गर्म बुखारों की गर्मी और खून की सोजिस और प्यास को तस्कीन देते हैं, इसका लेप गालों के रंग को साफ करता है, तबियत को फरहद देते हैं। (ज़हरीले नहीं)

६१४—ककोड़ा

प्र०-ककोड़ा। सं०-कर्कोटकम्। रंग-हरा। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक घास है जिसके फल करेले के से बल्कि उससे छोटे होते हैं। स्व०-सर्द बाजों के नजदीक गर्म।

गुण व कार्य—फोड़े फुन्सियों के लिये मुफीद है, और वरमों को तहलील करता है।

(जहरीला नहीं)

६१५—कुलफा

प्र०-कुलफा। फा०-ताज खरोज व बुस्तान अफरोज। अ०-हमामह वही उलआलम व ज़ंक़ बुस्तानी। रंग-लाल। स्वाद-कुछ मीठा व खारा पहि०-एक तरह की घास है जिसके पत्ते हरे व लाल और फूल लाल खूबसूरत होता है। स्व०-सर्द खुश्क। हानि-मसाने को। दर्प०-गेरू। प्र०-मकोय। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—मवाद को पकाता और तहलील करता है, दिमाग का सुद्दा खोलता और दूर करता है, जुकाम व मेदा व जिगर की गर्मी को मुफीद है। इसके बीज दिलको ताकत देते हैं। रोगन गुल के साथ इसका लेप पुराने दस्तोंको बन्द करता है, और नफा देता है। और आग के जले हुये को भी मुफीद है। (जहरीली नहीं)

६१६—कलौंजी

प्र०-कलौंजी। सं०-कलौंजी। फा०-सोनीज़ा व स्याह दाना। अ०-हब्बुल सौदा। रंग-काला स्वाद-फीका व कुछ कड़वा। पहि०-तिकोना एक काला दाना सौंफ की बराबर प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-खुनाक़ व शिरदर्द पैदा करता है। दर्प०-कतीरा व सिर्का। प्र०-अनीसून। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—गर्मी करती और खुश्की लाती है, रतूबत को सुखाती है, मादे को पुख्ता और पाग करती है। ख़िलतों को छांटती और जिला करती है, पेशाब व हैज़ जारी करती है, सर्द खांसी व सीने के दर्द व जलन्धर और रियाही कुलंज को मुफीद है, इसका जोशान्दा बच्चे को हमल से गिराता है। (जहरीला नहीं)

६१७—कुलींजन

प्र०-कुलींजन। सं०-कुलींजनम्। फा०-ख़रदारु अ०-खोलंजान। रंग-सुर्खी मायल। स्वाद-तेज़ व तेज बू व स्वादिष्ट। पहि०-एक जड़ है वाजों के नजदीक तहक़ीक किया गया है कि पान के पुराने पेड़ की जड़ है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-दिल व पेट व दिमाग के पर्दों और सीने को। दर्प०-कतीरा व बंशलोचन और आबरेशम। प्र०-दारचीनी व कबाबा। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—मेदे और पाचन शक्ति व अंतड़ियों व बाह और भीतरी हिस्सोंको बल करती है, रियाह खूब जारी करती है, आवाज को साफ करती है, तर खांसी को नफा देती है, पेशाब बन्द करती है, कुव्वत बाह को हरकत देती है, कमर गुर्दे के दर्द व और कुलंज को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

६१८—कमाज़र यूस

अ०-कमाज़र यूस। रंग-हरा व काला। स्वाद-कड़वा व तेज व तेजबू। पहि०-एक बालिश्त भर की जड़ है जिसके पत्ते बलूत के पत्ते की बराबर और बीज छोटे-छोटे होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-आंतों और गुर्दे को। दर्पघ्न-कतीरा। प्रत०-सीसा लियूस। मात्रा-३ माशे से ६ माशे तक।

गुण व कार्य—सुद्दा व मसाम खोलती है। गाढ़े ख़िलतों को छांटती है, रूह को लताफत करती है, बदन को गर्म करती है, पेशाब व हैज़ जारी करती है और तिहाल की बीमारी और खांसी को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

६१९—कमरख

प्र० नाम-कमरख। रंग-पीली व हरी। स्वाद-खट्टी व मीठी। पहि०-एक पेड़ का फल लम्बा और छै फांकों वाला होता है। स्व०-सर्द तर। हानि-सर्द मिजाज वालों को। दर्प०-चूना नमक व गर्म दवायें।

गुण व कार्य—क़ाबिज़ है, सफरा की तेजी व प्यास की शिद्दत और सफरावी के दस्तों को तस्कीन देती है और बन्द करती है, मुख का स्वाद ठीक करती है, तमाम गुण व स्वभाव में रेवास की तरह है। (जहरीला नहीं)

६२०—कमीला

प्र०-कमीला। सं०-कम्पिल्लकः। फा०-कमीला। अ०-क़म्बील। रंग-लाल। स्वाद-कड़वा। पहि०-

एक चीज़ रेत की सी लाल होती है, इसकी पहिचान में भेद है बाजे कहते हैं कि किसी मुल्क की ओस है बाजे कहते हैं कि किसी फल का बुरादा है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-मेदे और आंतों को। दर्प०-कतीरा और मस्तगी। प्र०-बाबरंग काबुली व तिर्मिस। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—मेदे और आंतों से हर तरह के कीड़े निकालता है, लसदार रतूबत को दस्तों की राह निकालता है। फ़ासिद खिल्तों को दस्तों की राह निकालता है, नहरू यानी रश्ता की बीमारी को मुफीद है, इसकी चुटकी बहते हुये जख्मों की रतूबत को खुश्क करती है, गुल रोगन के साथ दाद और खुजली और जख्मों को मुफीद है, धोये हुये घी के साथ इसका लेप गंज को नफा देता है। (जहरीली नहीं)

६२१—कुन्दर (लोबान)

प्र०-लोबान। सं०-कुन्दुरुक। फा०-कुन्दर। अ०-कुन्दर जकर। रंग-पीला व लाल व सफेद। स्वाद-कुछ कड़वा व खुशबूदार। पहि०-एक पेड़ का गोंद प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-गर्म मिजाज वालोंको। दर्प०-उन्नाव। प्र०-मस्तगी व बहमन। मात्रा-१ माशा।

गुण व कार्य—रूह हैवानी और नफ़सानी यानी दिमाग़ी और वाह व मसाने और मेदे को कुव्वत देता है, बलगम को खुश्क करता है, हैज़ के खून और बहते खून को बन्द करता है, जख्मों को भर लाता है, इसका क़शार (झाड़न) ग़लीज निहायत काबिज है और ऐजा को खुश्क करता है।

(जहरीली नहीं)

६२२—कुन्दरू

प्र०-कुन्दरू। सं०-बिम्बी। रंग-कच्चा हरा पक्का लाल। स्वाद-कच्चा फीका पक्का खट्टा। पहि०-एक बेलदार पेड़ का फल है जो परवल की तरह होता है। स्व०-सर्द तर। हानि-काबिज और नफाख है। दर्प०-गर्म दवाइयां। प्रति०-लौकी।

गुण व कार्य—सफरा व खून के फिसाद को दूर करता है, खिल्तों को साफ करता है। और ज्यादा मोटाई को इसलाह करता है, इसकी जड़ इमसाक करती है और मेदे को कमज़ोर करती है।

(जहरीला नहीं है)

६२३—कुन्दरी

प्र०-कुन्दरी। रंग-हरी। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक घास है जिसके पत्ते सौंफ के पत्तों से कुछ छोटे होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्प०-उन्नाब। प्र०-कुन्दर मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—पेशाब व हैज लाती है, वरम व रियाह को तहलील करती है, मेदे को पुख्ता और पाग करती है, और अक्सर मौकों में कुन्दर के बराबर गुणदाई है।

(जहरीली नहीं है)

६२४—कन्डल

प्र०-कंडल। फा०-सकबीना। अ०-सकबीनज। रंग-बाहर लाल, भीतर सफेद। स्वाद-कड़वा व बदबूदार। पहि०-एक पेड़ का गोंद है जो बू और देखने में हींग की तरह है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-मसाने व गुर्दे को। दर्प०-कतीरा व मस्तगी प्रति०-जावशीर व कन्द। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—गर्मी पैदा करता है, लताफत करता है, जिला करता है, रियाह को तहलील करता है, कुलंज और तिहाल के सख्त वरम को दूर करता है, सफरावी व बलगमी माद्दे को दस्तों की राह दूर करता है। दस्तावर दवाइयां की इसलाह भी करता है, पेट के कीड़े भी मारता है जलंधर और फालिज को मुफीद है, सीनेकी रतूबत फुजलियाको छांटता है और जोड़ों के दर्द को नाफै है। (जहरीला नहीं)

६२५—कंकरजद

प्र०—ककरजद। अ०—तुराब उलकी। रंग—पीला व सफेद। स्वा०—कड़वा। प०—कंकर के पेड़ का गोंद है। स्व०—गर्म २ खुश्क १। हानि—दिमाग़ को। दर्प०—रोग़न ज़र्द। प्र०—जोज़ उलकी। मात्रा—३ माशे।

गुण व कार्य—सिकंजबीन या शहद के साथ आसानी से बलगमी व सफरावी माद्दे को कै के रास्ते निकालता है, इसका लेप वरमों को तहलील करता है, बाह व हाजमे की कुव्वत को क़वी करता है।

(जहरीली नहीं)

६२६—कंकोल

प्र०—कंकोल। सं०—कंकोल। रं०—भूरा। स्वाद—कड़वा व तेज। प०—पीपल (वृक्ष) के फल के बराबर एक फल है। स्व०—गर्म। हानि—कमजोरी पैदा करता है। दर्प०हड़।

गुण व कार्य—भूख बढ़ाता है। दिल की बीमारियोंको मुफीद है। बलगम और रियाह के फ़िसाद को दूर करता है और काबिज है।

(जहरीला नहीं)

६२७- कघी

प्र०—कंघी। सं०—अतिबला। फा०—दरख्त सान। अ०—मश्त उलगोल। रंग—फूल पीला, पत्ते हरे। स्वाद—कुछ कड़वा। पहिचान—एक घास २ गज के बराबर प्रसिद्ध है। स्व०—गर्म खुश्क २। हानि—नफ़ाख है। दर्प०—शकर। प्रति—ऊंटकटारा। मात्रा—५ माशे।

गुण व कार्य—सीने की बीमारियों व बवासीर व वरमों और पित्तको मुफीद है, पेशाब लाती है। मसाने और पेशाब के रास्ते के जख्मों को नफा देता है इसके बीज बाह लाते हैं काबिज है इसके पत्ते कमर के दर्द और अकसर ऐजा के दर्द को मुफीद है इसकी कुल्ली दांतों के दर्द को नफा देती है।

(जहरीला नहीं)

६२८—कोंच

प्र०—कोंचा। फा०—मदशक। अ०—मरद। रंग—काला। स्वाद—फीका। पहिचान—प्रसिद्ध है। हानि—शिरदर्द पैदा करता है। दर्प०—गुलनार व लाल गुलाब। प्रति०—अस्फगोल व बज्रकतॉ। मात्रा—६ माशे।

गुण व कार्य—लताफत करता है। बलग़म और रियाह को तहलील करता है। नफ़ख (अफारे) को दूर करता है। सुद्दा खोलता है। मेद व आंतों को कुव्वत बख्शता है जलंधर को दूर करता है। पेशाब व पसीना जारी करता है। इसके भुने हुये बीज काबिज है। मरोड़ व आंतों की खराश को नाफै है अगर रोग़न बादाम के साथ दिये जावें।

(जहरीला नहीं)

६२९—कमलगट्टा व कल्हार

प्र०-कमलगट्टा व कल्हार। सं०-कमलबीजम्। रंग-फल बाहर काला भीतर सफेद, फूल लाल व सुन्दर। स्वाद-फीका व स्वादिष्ट। पहि०-कमल बीज है। जिसके फूल की मिसाल हिन्दी में सुन्दरता से देते हैं। स्व०-सद तर। हानि-देर हजम। दर्प०-शहद। प्रति--तुख्म आमला। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—इसका फूल सफरावी बुखारों व कावर और प्यास की अधिकता को मुफीद है। इसकी जड़ बाह लाती है। व दस्तों को बन्द करती है, खून के जोश और सफरा को तस्कीन देती है। इसका खिसादा (भिगो कर मल छान लेना) लड़कों की प्यास को मुजर्रब है, इसकी सब्जी मेदे को कुव्वत देती और दस्तों को बन्द करती है।

(जहरीली नहीं)

६३०—कनैर

प्र०-कनैर। फा०-खरजहरा। अ०-दफ़ली व समुल हमार। रंग-फूल लाल व सफेद। स्वाद-कड़वा व तेज। पहि०-२ गज का एक पेड़ है। इसको गधा हर्गिज नहीं छूता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-फेफड़े को। दर्प०-शहद व रोगन। प्र०-बाबूना व मुनक्का। इसका खाना ठीक नहीं है। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—सख्तसे सख्त वरमोंको तहलील करता है। खुश्क करता है, जिला करता है। पीठ के पुराने दर्द को तस्कीन देता है, अर्कुलनिसा को मुफीद है, बाह को कुव्वत देता है। इसका लेप खुजली और झांई को मुफीद है, इसके सूखे पत्तों की चुटकी (बुकना) जख्मों को भर लाती है। इसका बरतना (स्तेमाल करना) मना है।

(जहरीला है)

६३१—केवांच

प्र०-कवांच। सं०-कपिकच्छबीजम्। रंग-हरा। स्वाद-कड़वा व तेज। पहि०-एक गजभर लंबी घास है। जिसके बीज फली में होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-बवासीर को। द०-रोगन गुल। प्र०-तुख्म उटंगन। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—वरम को तहलील करती है। मनी ज्यादा पैदा करके उसे गाढ़ा करती है। इमसाक लाती और बाह को कुव्वत देती है, इसके बीज बाह लाते हैं। और मनी पतली हो जाने को लाभदायक है। इसके पत्ते कालीमिर्च के साथ पेट के कीड़े मारते हैं। पत्तों का रस आतशक के लिये मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

६३२—कूट कड़वा

प्र०-कूट कड़वा। सं०-कुष्ट। फा०-कोश्नये तलख। अ०-किस्तुल मर। रंग-सफेद जर्दी मायल। स्वाद-कड़वा व खुशबूदार। पहि०-सेव की जड़ की तरह की एक जड़ है। जिसकी घास बिछी होती है। स्व०-गर्म खुश्क ३। प्र०-वच। मात्रा-खाना ठीक नहीं, लेप ३ माशा।

गुण व कार्य—रियाह और वरमों को तहलील करता है, सर्दी के दर्दों और नुक़रस को मुफीद है। और अक्सर दर्दों को तस्कीन देता है। यह क़ातिल है इस लिये इसका खाना ठीक नहीं है।

(जहरीला है)

६३३—कूट मीठा

प्र० नाम-कूठ मीठा। फा०-कोश्नये

शीरी। अ०-बिस्तुल हुलू। रंग-बाहर स्याही मायल भीतर जर्दी मायल। स्वाद-कुछ मीठा। पहि०-यह भी एक जड़ किस्त हिन्दी कड़वी की तरह है। इसको किस्त बहरी भी कहते हैं। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-मसाने और फेफड़े को। दर्प०-अनीसून व गुलकन्द। प्र०-अकरक़रा। मात्रा-१ मा०।

गुण व कार्य—दिमाग को कुव्वत बख्शता है ऐजाये रईसा व बाह व जिगर को कुव्वत देता है। पट्ठों को मजबूत करता है। रियाह को तहलील करता है, दिमागी बीमारियां मसलन फालिज व लकुवा और राशा को मुफीद है। पेट के कीड़े मार निकालता है और पेशाब व हैजको जारी करताहै। (जहरीली नहीं)

६३४—कोदों

प्र०-कोदों। सं०-कोद्रव। फा०-कोदरम्। रंग-जर्दी मायल। स्वाद-फीकी। पहि०-एक हिन्दी अनाज प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द खुश्क बाजों के नजदीक गर्म खुश्क है। हानि-सुद्दा लाती है।

गुण व कार्य—मेदे को गलीज करता है। और कुव्वत देता है। मनी को कम कर देता है। थोड़ी गिजा है, फासिद खिलत पैदा करता है बहुत क़ाबिज है। (जहरीला नहीं)

६३५—कौड़ी

प्र०-कौड़ी। सं०-कपर्दिका। फ़ा०-खारमोहरा। अ०-वूअ। रंग-बड़ी सफेद व नीली जर्दीमायल स्वाद-बदमजा व फीका। पहि०-एक समुद्री कीड़े की हड्डी घोंघे व सीपी की तरह है। स्व०-सर्द खुश्क। हानि-फेफड़े को। द०-शहद। प्र०-सीपी। मात्रा-१ माशा।

गुण व कार्य—खुश्की करती है, जिल्द (चमड़े) को साफ करती है, चर्म रोगको नफा देती है, जली हुई कौड़ी तिहाल के लिये लाभदाई है, पेशाब के रास्ते के जख्मोंको नफा करती है और बहते हुये खून को बन्द करती है। (जहरीली नहीं)

६३६—कोला (संतरा)

प्र० नाम-कोला। रंग-पीला सुर्खी मायल। स्वाद-मीठा व खट्टा। पहि०-एक तरह का रंगतरा व नारंगी (संगतरा या रंगतरा) मशहूर है। स्व०-सर्द तर २। हानि-सर्द व तर मिजाज वालों को। द०-नमक व शकर।

गुण व कार्य—दिल को फरहत देता है, खफकान को दूर करता है, खून व सफरा को तेजी व मेदे और जिगर की सोजिश को तस्कीन देता है, इसका छिलका मेदे को ताकत देता है, पेशाब लाता है, इसके छिलके का उबटन चेहरे की स्याही और झांई को खोता है, इसके बीज अक्सर जहरों को मारते हैं और हैजे (विसूचिका) के लिये अक्सीर है। (जहरीला नहीं)

६३७—खजूर (छुहारा)

प्र० नाम-छुहारा। सं०-खजूरम्। फा०-खुरमाये हिन्दी। अ०-रतब हिन्दी। रंग-स्याह सुर्खीमायल व सुर्ख स्याहीमायल। स्वाद-मीठा। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्मतर १। हानि-खून को जिला देती है। दर्प०-बादाम मीठा। प्र०-किशमिश

गुण व कार्य—रियाह व वरम को तहलील करती है, हाजिम है, बाह लाती है, मेदे व जिगर और बाह को कुव्वत देती है, तेज मिजाजों के लिये खूब मुआफिक है, बदन को फरबै करती है, खून पैदा करती है, इसकी गुठली दस्तों को बन्द करती

है। जली हुई बहते खून को बन्द करती है और जख्मों को साफ करती है, इसका मंजन दांतों को जिला करता है। (जहरीला नहीं)

६३८—खरिया

प्र० नाम-खरिया। सं०-खटिका। फा०-संगबसरी। अ०-तूतयाये किर्मानी। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ खारी। प०-नमक सी एक खान की और बनावटी वस्तु प्रसिद्ध है। स्व०-धोई हुई सर्द खुश्क और बिना धोई गर्म खुश्क है। हानि-सुद्दा लाती है। दर्प०-शहद। प्र०-तूबाल उलखास। मात्रा-२ माशा।

गुण व कार्य—बीनाई को कुव्वत देती है, आंख की तन्दुरुस्ती को कायम रखती है, आंख की तरफ रद्दी मवाद नहीं गिरने देतीहै। आंख व नाक व इन्द्री व पेड़ और गुदाके जख्मोंको नफा देती है, सतीन (पेट के फोड़े) और ऐजा के फोड़ों को भर लाती है और फायदेमन्द है कुल फोड़ों और जख्मों और सिगाफों को मुफीद है। बगल (कांख) की बू दूर करती है। इसकी चुटकी व सुर्मा और लेप फायदेमन्द है।

(जहरीली नहीं)

६३९—खुर

प्र०-खुर। सं०-खुरम्। फा०-कफशातग। अ०-जुल्फ। रंग-काला व सफेद। स्वा०-बदमजा व बदबूदार। पहि०-चौपाये जानवरों के पैरों के सिरो पर एक कड़ा और चिरा हुआ हिस्सा होता है। स्व०-सर्दखुश्क। प्र०-सींग।

गुण व कार्य—कुल पशुओं के जले हुये खुर दस्तावर हैं, शराबके साथ इसका लेप कीड़े मकोड़ों के काटने को नफा करता है और शहद के साथ नुकरस (पैर के अंगूठे के दर्द) को नफा देता है। और बकरी के जले हुये खुर सिर्के के साथ दारुल सलब (गंज) को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

६४०—कहरवा

प्र० नाम-कहरवा। फा०-कहरवा व काहरवा। अ०-कारनउलजर व मसवाह उल रूम। रंग-पीला व लाल। स्वाद-फीका व खुशबूदार। पहिचान-एक पेड़ का गोंद है। बाजों के नजदीक दर्याई चीज है। स्वभाव-मातदिल बाजों की राय में सर्द खुश्क। हानि-शिर को। द०-बनफशा। प्र०-वंश- लोचन व सन्दरूस। मात्रा—१ माशा।

गुण व कार्य—फरहत बख्शता है, दिल को ताकत देता है, खून को हर तरफसे बन्द करता है, यानी खून बहने व मुंह से आने और खूनी दस्त और पेशाबको बंद करताहै व कुल ऐजाये बाहरी व भीतरी के खून को बन्द करता है।मेदे व जिगर और मूत्र की राह को कुव्वत देता है, गुर्दे की कमजोरी व मसाने और ज्वर को नफा देता है खास कर मरोड़ को लाभदाई है, इसको पेट पर लटकाना तुखमा (बदहजमी) को नफा देता है मुकव्वी और खौफ (डर) को दूर करता है।

(जहरीली नहीं)

६४१—खिरनी

प्र०-खिरनी। सं०-क्षीरिणी। रंग-फल पीला। स्वाद-मीठा। प०-एक बड़े पेड़ का फल है जो बिलकुल नीम की निबौली का सा होता है। स्व०-गर्म १ तर २ हानि-कुलंज पैदा करती है। द०-गुलकन्द व दोग।

गुण व कार्य—फ़रहत लाती है और अक्सर ऐज़ा को कुव्वत देती है. सिरकी गिरानी को दूर करती है,तीनों खिलतों सफरा व सौदा और बलगम के उभार को तस्कीन देती है, कै को भी तस्कीन देती है, भूख खूब लाती है बाह लाती है, मनी को गाढ़ा करती है,देर हजमहै,सूजाकको नफा देती है, इसके बीजों का सुरमा अक्सर आंख की बीमारियों को लाभदायक है, इसकी जड़ की छाल मनी को गाढा करती है और बीज की गिरी जूं को मारती है। (जहरीली नहीं)

६४२---खीरा

प्र०-खीरा। सं०-त्रपुषी। फा०-खयारबादरंग अ०-क़सर। रंग-हरा, पीला व सफेद। स्वाद-फीका व कुछ मीठा। पहि०-एक बेलदार पेड़ का बालिश्त भर लम्बा फल मशहूर है। स्व०-सर्दतर२ हानि-बलगम पैदा करता है, निफाख है और सर्द मिजाज वालों को।

गुण व कार्य—सफरा व खून की गर्मी और पेट की अन्तड़ियों की सोजिस को तस्कीन देता है, प्यास को दूर करता है. गर्म दिमागी बीमारियों को और नींद कम आने को और गर्मी के बुखारों को नफा देता है, इसका भुलभुलाया हुआ पानी सफरावी व खूनी बलग़मी तप को मुफीद है। गर्मी के शिर दर्द को इसे तराश कर सुंघाना लाभ देता है।

(जहरीला नहीं)

६४३---खीरे के बीज

प्र०-खीरे के बीज। सं०-त्रपुषी बीजम्। फा०-तुख्म खयार। अ०-बज़्र क़सर। रंग-सफेद। स्वाद-फीका। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द तर २। हानि-सर्द मिजाज वालों को। दर्प०-सौंफ। प्रति०-ककड़ी के बीज। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—मूत्र लाते हैं और जले हुये पित्तोंको छांटते हैं। मूत्र के रास्ते मूत्र की जलन व चिनक और वरम जिगर और तिहाल के वरम को नफा देते है। और गर्मी के बुखारों को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

६४४—खैली व खैला

प्र०-खैली व खैला। फा०-कसैली व कसैला। रंग-काली सुर्खी मायल। स्वाद-कुछ कड़वी व लसदार। पहि०-तज की तरह एक पेड़ की लकड़ी है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्पघ्न-कतीरा। प्रति०-दारचीनी व असारून व कड़वा बादाम। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—खुश्की लाती है, लताफत करती है। मूत्र लाती है, फ़रहत देती है। दिल व मेदे को ताक़त देती है व रगों में चिपक कर सुद्दा लाती है और स्त्रियों की योनि की रतूबत को खुश्क करती है।

(जहरीला नहीं)

६४५---खिवनी

प्र०-खिवनी। फा०-पैवन्द मरीम। अ०-हब्बुल हवल। रंग-बक्कल लाल स्याही मायल व गिरी सफेद। स्वाद-कुछ कड़वी व तेज व खुशबूदार। पहि०-एक पेड़ का दाना है। जो काबुली मटर सा होता है। और टहनी के सिरे पर लगता है। इसका पेड़ हब्बुल खजरा के और पत्ते बेद के से होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-दिमाग

व गर्म अंतड़ियों को। दर्पघ्न-गुलाब व रोग़न बनफ्सा। प्रति०-अखरोट व कड़वा बादाम। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—बावजूद कुव्वत तहलील और क़ब्ज के फ़रहत ज्यादा करती है और हवास को कुव्वत देती है। लहस के सबब से रगों के मुंह में चिपककर सुद्दा पैदा करती है। सीने और फेफड़े से गाढ़ी और लसदार रतूबत को छांटती है, खफकान व दमे और गशी को मुफीद है,जिगर व तिहाल को कुव्वत देती है। खासकर शहद के और पानी के साथ जिगर व तिहाल व गुर्दे व पीठ के भीतरी दर्द और कुलंजको नफा देती है।

(जहरीला नहीं)

६४६—कनखजूरा व कनगूजर

प्र० नाम-कनखजूरा व कनगूजर। फा०-हजारपा। अ०-अरबा: व अरबाईन। रंग-लाल व काला। पहि०-एक काटने वाला कीड़ा है। जो दो बालिश्त का मशहूर है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-कातिल है।

गुण व कार्य—कनखजूरा बड़ा सा पकड़कर सुखाया जावे और एक फतीले (बत्ती) में लपेट के तिल के तेल से काजल पारा जावे और साथ हिफाजत से रक्खें, यह पलकें उखड़ने की बीमारी को नफा देती है।

(जहरीला है)

६४७—केतकी

प्र०-केतकी। सं०-केतकी। फा०-नबई अज़-कावी। रंग-हरा व सफेद। पहि०-केवड़े की किस्म का एक पेड़ है बल्कि केतकी के फूल में सुगंध बहुत है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्पघ्न-लाल चन्दन। प्रति-लाल-चन्दन। मात्रा-९ माशे।

गुण व कार्य—फरहत देती है, दिल व दिमाग व जिगर और तमाम हवासों (इन्द्रियों) को कुव्वत देती है। तेजी व सोजिश खून व सफरा को दूर करती और तस्कीन देती है। खफकान व इख्तलाज क़लब (दिल की धड़कन) को नफा देती है।

६४८—कैथ व कोयवट

प्र० नाम-कैथ व कोयवट। सं०-कपित्थ। रंग-बाहर सफेद भीतर पीला। स्वाद-खट्टा व रसदार। पहि०-एक बड़े ऊंचे हिन्दुस्तानी पेड़ का गोल व सख्त फल है। जो बड़े अनार की बराबर होता है। स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-सीने १। दर्प०-क़न्द।

गुण व कार्य—इसका गूदा फ़रहत लाता है। और काबिज़ है, गर्म मिजाज व दिल व दिमाग और जिगर को कुव्वत देता है, तपों को दूर करता है। जहर रतीला (मकड़ी का जहर) और संग्रहणी को मुफीद है। इसके पत्तों का ग़रगरा गले के दर्द को मुफीद है, पत्तों का रस अफीम जाफ़रान के साथ आबेचश्म (आंखों से पानी जाने) को मुफीद व मुजर्रब है।

(जहरीला नहीं)

६४९—खटमल

प्र०-खटमल। सं०-मत्कुण। फा०-सरखक व सास। अ०-क़ुमास। रंग-लाल वा स्याही

मायल । स्वाद-बदबूदार व बदमज़ा । पहि०-एक छोटा सा कीड़ा है जो अक्सर आदमी का खून पीता है । मच्छर के बराबर मशहूर है । स्व०-गर्म तर १ रतूबत ख़ारिजो के साथ । दर्प०-बादाम रोगन । प्रति०-जोंक । मात्रा-५ माशा ।

गुण व कार्य—अगर हलक में जोंक लटक गईहो तो इसको मलकर सुंघावें या इसके जोशान्दे का गरगरा करावें तो नफा होता है और एक कपड़े पर मल के और जलाके मिर्गी वाले की नाक में धूनी दें तो नफा करे, अगर इसको पी कर इन्द्री के सूराख़ में डाले तो मूत्र बन्द को उतारे और बालखोरा (गंज) पर इसका मलना बाल को जमाता है । सांप के काटे को एक खटमल निगलवा देना मुफीद है और इसका तिला उम्दा बनता है । (ज़हरीली है)

६५०—केंचुवा

प्र० नाम-केंचुवा । फा०-जगाजह । अ०-खरातीन व अमायउल आरज़ । रंग-लाल व सफेद । स्वाद-फीका व खारी । प०-मिट्टी में का एक कीड़ा एक बालिश्त प्रसिद्ध है । स्वा०-गर्म तर १ रतूबत ख़ारिजो के साथ । दर्प०-बादाम रोगन । प्रति०-जोंक । मात्रा-५माशे ।

गुण व कार्य—तीन दिरम का खिसान्दा पीना मूत्र को जारी करता है, और मांस के साथ बाह को कुव्वत देता है, तिल के तैल में जोश किया हुआ खुनाक़ (हलक़ का रोग) और पुरानी खांसी को मुफीद है, बादाम रोगन में हल किया हुआ खास कर आंत उतरने को मुफीद है, इसका तिला बहुत उम्दा बनता है ।

(जहरीला नहीं)

६५१—केसर

प्र० नाम-केसर । सं०-केशर । फा०-करकीमास । अ०-ज़ाफ़रान व करकम । रंग-पीली व सुर्खी मायल । स्वाद-कुछ कड़वी व खुशबूदार । पहि०-एक पेड़ के फूल तार से हैं जिसका पेड़ चमेली कैसा होता है, उत्तम केसर कश्मीरकी होती है । स्व०-गर्म २ खुश्क १ । हानि-इन्द्रियों को मैला करती और खुजली व पट्ठों को । दर्पघ्न-अनीसून व ज़रिश्क व अफ़यून व सिकंजबीन । प्रति०-तज व जाबित्री । मात्रा-३ माशे तक ।

गुण व कार्य—फरहत देती है, इंद्रियों व ताक़त और पेट के हिस्सों और पट्ठों को बल देती है, श्वांस वाली इन्द्री को बल करती है, आंतों व रगों के मुंह पर लस के सबब से चिपक कर सुद्दा पैदा करती है, माद्दे को पक्का और पाग करती है, वरम व रियाह को तहलील करती है, खिलत के सड़ जाने और बदबू करने को इसलाह (ठीक व दुरुस्त) करती है, खुश व हंसी पैदा करती है, गुर्दे व मसाने को पाक करती है, बीनाई को जिला देती है, अगर थैली में बांध कर मेदे पर बाँधे तो मेदे की रतूबत को दूर कर दे, मूत्र लाती है और इसका सुंघना वरसाम (सीने का वरम) और छींक को मुफीद है, गालों के रंग को साफ करती है, अगर इसका एक तार इन्द्री के मुंह में रक्खें तो मूत्र लाती है । (जहरीला नहीं)

६५२—केलदारु

प्र०-केलदारु व सोरा । अ०-सरखस । रंग-स्याह मायल व सुर्खी । स्वाद-कड़वा व कसैला । प०-एक जड़ गिरहदार व रेशेदार और नर व मादा होती है । स्व०-गर्म २ खुश्क १

हानि-फेफड़े को । दर्पघ्न-शीह अरमनी । प्रति०-कतीला । मात्रा-३ माशे से ६ माशे तक ।

गुण व कार्य--मैला करती है, सुद्दा खोलती है, रियाह को तहलील करती है, नफख (अफारे) को दूर करती है, बेखराश के खुश्की पैदा करती है जखम डालती है, जून को दूर करती है, सौदावी बुखारों को नफा देती है, हर तरह के कीड़े पेट और आंतों के निकाल बहाती है, शहद के साथ गर्भ रहने को दूर करती है, और बच्चा गिरा देती है ।

(ज़हरीला नहीं)

६५३—केकड़ा

प्र०-केकड़ा । सं०-कर्कटक । फा०-खरचंग । अ०-सर्तान नहरी । रंग-सफेद व लाल । स्वाद-फीका व कुछ खारा । पहि०-एक पानी का कीड़ा है, मकड़े के बराबर और कुछ चौड़ा होता है । स्व०-सर्दतर २ । हानि-मसाने को । दर्पघ्न-गिल मखतूम । प्रति०-सीपी का कीड़ा । मात्रा-४ तोले सूखा ३ माशे ।

गुण व कार्य--कसीरुल ग़िज़ा है (उत्तम खाना है) देरहज़म है, बाह लाता है, इसकी यखनी (पकी हुई चीज या जोशान्दा) सिल व दिक़ और खांसी व मुंह से खून आने को मुफीद है, पेशाब और हैज जारी करता है और इसकी राख सिल व दिक़ और बड़ी कमजोरी को दूर करता है और पथरी तोड़ती है ।

६५४—केला

प्र०-केला । सं०-कदली फल । अ०-मोजूब तिलख । रंग-बाहर पीला व लाल भीतर सफेद । स्वाद-मीठा । पहि०-एक पेड़ का फल है जो लम्बा एक बालिश्त का जिसके पत्ते बहुत बड़े व लम्बे होते हैं । स्व०-गर्मी व तरी में मौतदिल और कच्चा सर्द है । हानि-रियाह और बलग़म पैदा करता है और नफ़ाख है । दर्पघ्न-नमक व सोंठ व शहद प्रति०-कन्द व शकर ।

गुण व कार्य--कसीरुल गिजा है (अच्छी गिज़ा है) देर हज़म है । हज़म होने पर गाढ़ा खून पैदा करता है, बदन को फरबे करता है । और फ़रहत लाता है, सीने को नर्म करता है । गर्म स्वभाव वालों की बाह को हरकत देता है और जिला करता है । गुर्दे की कमजोरी को दूर करता है, सूखी खांसी व हलक़ के खुरखुराने को गुणदायक है । इसकी जड़ पेट के कीड़े मारती है । और दाय उलकल्ब (कुत्ते के काटे) को मुफीद है, इसके पत्तों की राख हैज बन्द हो जाने को दूर करती है ।

(जहरीला नहीं)

६५५—केवड़ाका अर्क

प्र०-केवड़ा । सं०-केतकीअर्क । फा०-अर्ककेवड़ा अ०-मायउल काज़ी । रंग-पानी की तरह । स्वाद-खुशबूदार पानी की तरह । पहि०-केवड़ा एक पेड़ है जो गन्ने की तरह का होता है । इसके फूल का अर्क खींचा जाता है और यह । अर्क काम में आता है । स्व०-बाजे गर्म और खुश्क बाजे सर्द और खुश्क कहते हैं । हानि-तहाल को । दर्पघ्न-उन्नाव । प्रति०-लाल चन्दन । मात्रा-६ तोले ।

गुण व कार्य--फरहत देता है दिल व दिमाग व कुल इन्द्रियों और कुल बदन के हिस्सों को बल करता है । खफकान व दिल की गर्मी व मेदे की गर्मी और ग़शी को दूर करता है । खुशी करता है

खून को साफ करता है। थकावट व अंगड़ाई को दूर करता है। इसका शर्बत चेचक व खसरा निकलने के पहिले नफा करता है और मुजर्रब है। नजला पैदा करता और सीने को सुगंधित करता है।

(जहरीला नहीं)

६५६—केवड़े की जड़

प्र०-केवड़े की जड़। सं०-केतकी मूलम्। फ़ा०-बेख केवड़ा। अ०-असलुल काजमी। रंग-सफेद। स्वाद-फीकी। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म और खुश्क २। हानि-तिहाल को। दर्पघ्न-उन्नाव। प्रति०-शाहतरा। मात्रा-१ तोला।

गुण व कार्य—वरमको तहलील करती व खून को साफ करती है। हवास को कुव्वत बख्शती है। दर्द शदीद (कठिन दर्द) को तस्कीन देती है। रक्त विकार और कोढ़ को नफा करती है।

(जहरीली नहीं)

बाबउल गाफ़ फ़ार्सी
इसमें १२२ दवाईयां हैं

६५७—गाजर

प्र० नाम-गाजर। सं०-गृञ्जन। फा०-ज़रद व गजर। अ०-जज़र। रंग-काला व बैंजनी व सुनहरा। स्वाद-मीठी व फीकी। पहि०-एक घास की जड़ है जो गावदुम १ गिरह की होती है और ताजी काम में आती है। स्व०-गर्म तर २ रतूबत फ़ुजिलिया के साथ। हानि-नफाख और देरहजम है। दर्प०-गर्म दवायें और गुड़। प्र०-सलजम।

गुण व कार्य—लताफत देती है और जिगर का सुद्दा खोलती है, मेदे को कुव्वत देती है, तबिअत को नर्म करती है, बाह बहुत करती है, कुव्वत बाह को हरकत देने वाली है, बलग़म को छांटती है। खांसी व सीने के दर्द को मुफीद है, मूत्र खूब लाती है; मसाने व गुर्दे की पथरी तोड़ बहाती है, जलन्धर को नफा देती है। इसका निचोड़ा हुआ पानी गर्मी के खफकान को बहुत मुफीद है, इसका हलुआ लजीज और मुकव्वी है।

(जहरीली नहीं)

६५८—गाजर के बीज

प्र०-गाजर के बीज। स०-गृञ्जन बीजम्। फ़ा०-तुख्म गजर। अ०-बज्रुलजजर। रंग-लाल व भूरा। स्वाद-फीका व तेज। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि मेदे व हलक और पट्ठों को। दर्पघ्न-अनीसून। प्र०-दोको व अनीसून मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—बाह को कुव्वत देते हैं। मूत्र लाते हैं। बाह लाते हैं। रहम को फिजूल मवाद से पाक करते हैं। सीने के दर्द को नफा करते हैं। जलाये हुये बीज जलंधर व तंगी पेशाबको और पेट फूलने और जख्मों को मुफीद हैं। गुर्दे व मसाने की पथरी तोड़ते हैं। (जहरीले नहीं)

६५९—गाजर जङ्गली

प्र०-गाजर जंगली। सं०-वनगृंजनम्। फ़ा०-गजर दश्ती। अ०-जज़र उलबरी। रंग-सफेद व पीली। स्वाद-कुछ मीठी व लसदार। पहि०-एक जड़ गिरहदार गाजर की सी होती है। स्व०-गर्म तर १। हानि-फेफड़े और भूख को। दर्प०-शहद व आमला। प्रति-हब्बुल सनोबर व बोजीदान व तुख्म गाजर। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—बाह लाती है। सुद्दा खोलती है, पीठ को ताकत देती है। मेदे को गर्मी देती है। जिगर व गुर्दे को भी गर्म करती है। रियाह व बाह को कुव्वत देती है। मनी बहुत पैदा करती और उसे गाढा करती है।

६६०—गाजर जङ्गली के बीज

प्र०-गाजर जंगली के बीज। सं०-बन गृंजन बीजम्। फ़ा०-तुख्म गजर दश्ती। अ०-दोको व बजरुल जजर उलबरी। रंग-स्याहीमायल स्वाद-तेज व खुशबूदार। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-मसाने व बाह और गर्म मिजाज वालों को। दर्प०-कतीरा व मस्तगी। प्रति०-तुख्म गाजर व तुख्म करफस। मात्रा-४ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलते हैं। पेशाब व हैज जारी करते हैं। मेदे व हाजमे की ताकत को मजबूत करते हैं। मनी ज्यादा पैदा करते हैं। रियाह व नफ़ख को तहलील करते हैं। बलगमी व गाढ़े मवाद को दूर करते हैं गुर्दे और मसाने की पथरी को तोड़ते हैं। और बच्चों के घुर्र को नफा करते हैं।

(जहरीले नहीं)

६६१—गांजा

प्र०-गांजा। सं०-संबिदासा। फ़ा०-बंगदश्ती। अ०-क़नब बरी। रंग-हरा। स्वाद-तेज व तेज बू। पहि०-एक घास भंग की किस्म से है जिसको चिलम में रख कर पीते हैं। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-दिमाग को और गशी लाता है। दर्प०-गाय का दूध और खटाई।

गुण व कार्य—नशा करता है। कुल ऐजा (अवयव) को खसूसन् दिमागी ऐजा को सुस्त और बेहिस (बेहोश) करता है। खुश्की बहुत ही करता है। सुस्त व बेहिस करने में अफीम से बढ़कर है।

(लगभग जहरीला है)

६६२—गावरोहन

प्र०-गावरोहन। फा०-संगगाव। अ०-हुज्र उलबकर। रंग-जर्दीमायल। स्वाद-कड़वा व फीका। पहि०-गाय के पित्ते में एक पथरी होती है। स्व०-गर्म खुश्क। बाजोंके नजदीक सर्द खुश्क है। हानि-गर्म मिजाज वालोंको शिर दर्द लाता है। दर्प०-कतीरा। मात्रा-१ जौ भर।

गुण व कार्य—वरम व रियाह को तहलील करता है फरबही लाता है। पेशाब व हैज जारी करता है। गुर्दे व मसाने की पथरी तोड़ता है। इसका लेप चेहरे की झांई व काले दाग को मुफीद है। इसकी चुटकी खून को बन्द करती है और ज़ख़म को भर लाती है।

(जहरीला नहीं)

६६३—गावजवां

प्र०-गावजवां। अ०-लिसान् उलसौर। रंग-सब्जी मायल सफेद बिन्देदार। स्वाद-फीकी व कुछ कड़वी व कसैली। पहि०-एक घास के पत्ते प्रसिद्ध हैं। स्व०-गर्मतर १। हानि-तिहाल को। दर्प०-संदल। प्रति०-आबरेशम खाम व गुल सुर्ख।

गुण व कार्य—फरहत देती है और असली हरारत को कुव्वत देती है। ऐजाये रईसा को भी कुव्वत देती है। तबियत को नर्म करती है। सफरावी खालिस व उन खिलतों को जो सोख्ता से होगये हैं दस्तों की राह निकालती है। सीने के

घुघु राने व खांसी व दमे और सौदावी रोगों को नफा देती है। (जहरीला नहीं)

६६४—गावजवां के फूल

प्र०-गावजुवां के फूल। फा०-गुल गावज़ुबां। अ०-जहरुल लिसान् उलसौर। रंग०-काले व लाजबर्दी। स्वाद-फीके व कसैले। पहि०-अनार के फूल का सा और उससे कुछ छोटा होता है। स्व०-गर्म तर १। हानि-तिहाल को। दर्प०-सन्दल। प्रति०-गावजबां। मात्रा-६ मा०।

गुण व कार्य—फरहत देता है। औरवाह व असली हरारत और ऐज़ाये रईसा को कुव्वत देतेहैं हवासको भी कुव्वत बख्शते हैं व सफरावी खालिस और जले हुये खिलतोंको दस्तोंकी राह निकालते हैं। यरकां को नफा करते हैं। खफ़कान व प्यास को तस्कीन देते हैं। (जहरीला नहीं)

६६५—गावजवां के बीज

प्र०-गावजबां के बीज। फा०-तुख्म गावजुबां। अ०-बज्रूल लिसान उल सौर। रंग-सफेद। स्वाद-फीका लुआबदार। प०-इसके बीज कसूम के से और उनसे कुछ छोटे होते हैं। स्व०-गर्म तर २। हानि-तिहालको। द०-धनियां व संदल। प्र०-गुल गावजुबां। मात्रा-१ माशे।

गुण व कार्य—फरहत बख्शते हैं और मुकव्वी हैं। अपने गुण में बिलकुल गुलगावजवां वगांगाव जबां की तरह है। बल्कि गुलगावजबां से भी अधिक लाभदायक है। (ज़हरीला नहीं)

६६६—गावशीर

प्र०-गावशीर। अ०-जावशीर। रंग-बाहर लाल भीतर सफेद। स्वाद-कड़वा व बदबूदार। पहि०-एक पेड़ का गोंद है जिसके पत्ते अंजीर के पत्ते से होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-फोतों को। दर्प०-मरमाखोर व कांचा। प्रति०-उशक़। मात्रा-४ माशे।

गुण व कार्य—रियाह को तहलील करता है। सुद्दे खोलता है। पट्ठों को कुव्वत देता है। सख्तियों को नर्म करता है। सर्दी की बीमारियां व जलंधर व कांवर और बूंद २ पेशाब आनेको नफा देता है। मसानेकी खारिश और जखमके फूलने को मुफीद है और रीही व बलगमी कुलंजको नफा देता है। बीज शराब के साथ योनि के फट जाने को नफा करते हैं। पट्ठोंकी रतूबतको इसलाह करता है। खिदर व कुलंज बलगमी और रतूबी कुलंजको नफा देता है। (जहरीला नहीं)

६६७—गेरुरः

प्र० नाम-गेरुरः। सं०-गोबरकीट। फा०-जुअल व खरक। अ०-इखतफ़ार। रंग-काला स्वाद-बदबूदार, कड़वा व घिनोंना। पहि०-गोबर का कीड़ा है जो बरसात में होता है। स्व०-गर्म खुश्क २।

गुण व कार्य—इसका खिसान्दा (भिगोया हुआ पानी) मेदे व जिगर और आंतों की खिलतों को दस्तों की राह निकाल बहाता है। जलंधर के लिये तो मुजर्रब है। इसका निचोड़ा हुआ पानी बीनाई को कुव्वत देता है, बिच्छू के काटे पर इसका मल देना मुफीद है और इसके जहर को मारता है, तजुर्बा किया हुआ है। (जहरीला नहीं)

६६८—गुर्च व गिलोय

प्र०-गुर्च व गिलोय। सं०-गुडूचि। फा०-

गिलोय नीम। रंग-हरी। स्वाद-कड़वी। पहि०-एक बेलदार घास है जो बहुत लम्बी होती है और अपने पास के पेड़ वगैरा पर चढ़ती है। स्व०-गर्म खुश्क १। प्रति०-सत गिलोय। मात्रा-४ माशे से ६ माशे तक।

गुण व कार्य—पुराने सफरावी व खूनी बुखारों को नफा देती है, दिल व जिगर और मेदे की सोजिश को दूर करती है, खांसी व यरकान सफरावी, कै व गशी को मुफीद है, बलगम को छांटती है, बाह और भूख को बढ़ाती है, मनी को पैदा और गाढ़ा करती है। (जहरीला नहीं)

६६९—गुर्च का सत

प्र०-गुर्च का सत। सं०-गुडूचि सत्वम्। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-गिलोय का निशास्ता (सत) है। स्व०-सर्द खुश्क। प्रति०-गिलोय। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—सफरावी व खूनी तप को नफा देता है, दिल व जिगर व मेदे की सोजिश को दूर करता है, बलगमी खांसी व सोजाक को दूर करता है, पुराने दस्तों को बन्द करता है, बेजान सफरावी (मरे हुये पित्त) को तस्कीन देता है।

(जहरीला नहीं)

६७०—गर्दआसिया

फा-गर्दआसिया। अ०-गुब्बारउलर है। रंग-गुब्बारी। स्वाद-बदमजा। पहि०-चक्की की उड़न है। स्व०-सर्द खुश्क।

गुण व कार्य—खुश्की लाती है। इसको नाक में सुड़कना नकसीर को बन्द करता है। माथे पर इसका लेप करना आंखों पर मवाद गिरने को रोकता है, और पट्ठों को कुव्वत करता है।

(जहरीला नहीं)

६७१—गुड़

प्र०-गुड़। सं०-गुडम्। फा०-कन्द स्याह। अ०-फानीज। रंग-लाल। स्वाद-मीठा। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्मतर १। हानि-गर्म मिजाज वालों को। द०-खटाई व वंशलोचन। प्रति०-शहद

गुण व कार्य—पेट को नर्म करता है और जिला करता व है आंतों और रहम की सर्दी को मुफीद है। बलगम को छांटता है, हाजिम है, खांसी व दमें और धांस को नफा देता है, सीने के दर्दों को मुफीद है। इसका जलाया हुआ खार नमक के साथ खांसी को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

६७२—गुढ़ल

प्र०-गुढ़ल। स०-जपा। रंग-फूल लाल व गुलाबी। स्वाद-फीके लुआबदार। प०-एक पेड़ है जिसके पत्ते तूनके पत्तों के सदृश होते हैं। स्व०-मात-दिल। हानि-नजले को। द०-मिश्री। प्रति०-गुल-चांदिनी। मात्रा—१ तोला।

गुण व कार्य—दिल को फरहत देता है, नफ्स (मन) को खुश करता है, गर्मी व सर्दी के खफकान को मुफीद है, खासकर दिमाग पर बुखारात (भाफ) चढ़ने को नफा देता है, मिराक़ की बीमारी को नाफै है, पत्ते व फूल और जड़ तीनों (बावलापन) और जनून को मुफीद है और याददाश्त को कुव्वत देता है और बाह लाता है।

(जहरीला नहीं)

६७३—अर्क गुलाब

प्र० नाम-गुलाब। सं०-सहस्रार्क। फा०-अर्क गुलाब। अ०-जलाब व मायउल वर्द। रंग-पानी सा। स्वाद-पानी सा व खुशबूदार। प०-

प्रसिद्ध है। स्व०-मुरक्कबउलकवी व सर्दी मायल। हानि-नज़ले वालों को। द०-गुलाब व मिश्री। प्रति०-अर्क सौंफ। मात्रा-५ तोला से १० तोला तक।

गुण व कार्य—दिमाग व दिल और फ़म मेदे (मेदे के मुंह) को कुव्वत देता है, गर्मी के ख़फ़कान को मुफीद है, फरहत लाता है, हाजिम है, दस्तावर है. इसमें सुर्मा हल किया हुआ आंख की सूजन को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

६७४—गुलाब का फूल

प्र०-गुलाब का फूल। सं०-सहस्रार पुष्पम्। फ़ा०-गुलसुर्ख। अ०-वर्द अहमर। रंग-गुलाबी। स्वाद-फीका व कुछ कषैला व मीठा। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-मुरक्कब उल क़वी। सर्द १ खुश्क २। हानि-बाह को और प्यास लाता है। द०-मजन जोश व अनीसून। प्र०-बनफ्शा। मात्रा-१ तोले।

गुण व कार्य—क़वी और अरवाह को कुव्वत देता है, फरहत देता है, लताफत करता है, दस्तावर है, गियाह के वरम को तहलील करता है, सफरा व बलग़म को तस्कीन देता है, गुर्दे और सिर के दर्दों को और बुखारों को नफ़ा करता है, ख़फ़क़ान और गशी को मुफीद है इसको बू नजला पैदा करती है। इसका लेप रतूबत को सुखाता है।

(जहरीला नहीं)

६७५—गुलाब का जीरा

प्र०-गुलाब का जीरा। सं०-सहस्रार परागः। फ़ा०-जीरह गुलसुर्ख। अ०-जरवर्द। रंग-सुर्खी मायल। स्वाद-कषैला व फीका। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क बाजे सर्द मानते हैं। हानि-फेफड़े को। द०-कतीरा। प्र०-कज़मारज। मात्रा-• मा० तक।

गुण व कार्य—मुंह से खून आने को और खून बहने को बन्द करता है और दस्तों को जो किसी तरह बन्द न होते हों तो बन्द करता है। और मेदा व बीनाई को कुव्वत बख्शता है। बाह लाता है, व रहम को कुव्वत देता है, इसकी गोली रखना मज़ीकात से है।

(जहरीली नहीं)

६७६—गुलाब सदा

प्र०-गुलाब सदा। फ़ा०-सदा गुलाब। अ०-वरदबरी। रंग-गुलाबी। स्वाद-फीका व कुछ मीठा प०-मशहूर है। स्व०-ताकतवर है। हानि-नजला व जुकाम को। द०-अनीसून व मिश्री। प्रति०-बनफ्शा। मात्रा-६ मा०।

गुण व कार्य—क़वी है, जिगर व मेदा व गुर्दा व योनि को कुव्वत बख्शता है। गरम बदहवासी को मुफीद है। इसकी जड़ अकरकरा के समान कफ को जला देती है।

(जहरीली नहीं)

६७७—गुलाबजामन

प्र० नाम-गुलाबजामन। रंग-पीली। स्वाद-मीठी। पहि०-एक फल जो अमरूद के बराबर और बंगाल में होता है और स्वादिष्ट है। स्व०-मौतदिल। हानि-नफ़ाख़ है। द० सेव। प्र० सेब।

गुण व कार्य—फ़रहत देती है शरीफ़ ऐज़ाये रईसा को मजबूत करती है और गाढ़ा खून पैदा करती है। अपने गुण में करीब करीब सेब के बराबर है। (जहरीला नहीं)

६७८—गुलचीन

प्र० नाम-गुलचीन। सं०-गुलाचीन। रंग-

सफेद। स्वाद-फीका। पहि०-एक बड़े पेड़ का फूल है। जिसके पत्ते बहुत गन्दहा होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्प०-दोग़ (मट्ठा)।

गुण व कार्य—इसके पेड़ की जड़ की छाल बहुत दस्तावर है और आतशक और खराब जख्मों को नफा देती है, इसका लेप मादे को पकाता है और सख्त वरमों को तहलील करता है।

६७९—गुलथी (कुल्थी)

प्र०-कुलथी। सं०-कुलत्थ। फ़ा०-माष हिन्दी अ०-हब्बुल क़ुलत। रंग-काला व भूरा। स्वाद-कड़वा व तेज। प०-एकदाना अनाजसे है जो मसूर सा होता है। स्व०-गर्म ३ खुश्क २। हानि-फेफड़े को। दर्प०-शहद। प्रति०-अलसी। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य—गुर्दे की पथरी तोड़ती है, भूख खूब लाती है। हिचकी को खोती है, मूत्र खूब लाती है, तबिअत को नर्म करती है, मनी को सुखाती है। तिहाल का सुद्दा खोलती है, कुलंज को नफा देती है, इसका लेप बवासीर को मुजर्रब है। (जहरीली नहीं)

६८०—गुलदाऊदी

प्र० नाम-गुलदाऊदी। फ़ा०-गुल दाऊदी। अ०-बासेम। रंग-पीला व सफेद। स्वाद-तेज व तेज बू। पहि०-एक खुशबूदार फूल है जिसका पेड़ आध गज का और सुन्दर होता है स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-शिर दर्द करता है। द०-शकर व मस्तगी। मात्रा-६ मा०।

गुण व कार्य—इसका फूल वरम और जमे हुये खून को तहलील करता है जब कि खून मेदे में जम गया हो, गुर्दे व मसाने की पथरी निकलता है। हैज जारी करता है, गुर्दे व मसाने की रियाह को भी तहलील करता है। रहमकी रियाहको तहलील करता है। रियाही कुलंज और सोजाक को नफा देता है, इसका लेप बलगमी वरमों को तहलील करता है। (जहरीला नहीं)

६८१—गुल दुपहरिया

प्र०-गुल दुपहरिया। सं०-बन्धूक पुष्पम् रंग-लाल व सफेद व पीला। स्वाद-फीका व कुछ कड़वा। पहि०-एक छोटा कटोरा सा फूल है जो दोपहरको खिलता है। स्व०-सर्दतर व गर्म, बाज खुश्क भी कहते हैं। हानि-बलगम पैदा करता है। दर्प०-शहद।

गुण व कार्य—सुबक और लतीफ है, काबिज है, बलगम व रियाह के फिसाद को भी दूर करता है, सफरा के फिसाद को भी दूर करता है, अगर इसके फूल का रस निचोड कर नाक में डालें तो आधाशीशी के दर्द को नफा करता है। (जहरीला नहीं)

६८२—गुलरोग़न

प्र० नाम-गुल रोग़न। फ़ा०-रोग़न गुल। अ०-दहन उल वर्द। रंग-सुर्खीमायल स्वाद-बदमजा व चिकना। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-मुरक्कबुलक़ुवा। मात्रा-२ तो०।

गुण व कार्य—मवाद को पका करता है। क़ाबिज है, वरम को तहलील करता है। सुद्दा खोलता है, सर्द व गर्म दोनों मवाद के मुआफ़िक है क्यों कि दस्तावर है और मेदे व गुदा की सोजिश को तस्कीन देता है। (जहरीला नहीं)

६८३---गुलक़न्द व गुलकन्द

प्र०-गुलकन्द व गुलकन्द। सं०-गुलकन्द। फ़ा०-गुलकन्द। अ०-जलंजरीन। रंग-लाल। स्वाद-मीठा। पहि०-शहद या शकर में गुलाब के फूल मिलाकर सूरज की धूप में पकाते हैं। स्व०-शकर का कुव्वत देने वाला और शहद का गर्म खुश्क २। हानि-जिगर को। दर्प०-तुख्म खशखश। मात्रा-१ तोला।

गुण व कार्य—दिमाग़ और मेदे को ताकत देता है, बाहर की खराब रतुबत को सुखाता है। दिमाग़ पर भाफ नहीं चढ़ने देता, यदि खास करके अगर खाना खानेके बाद सेवन किया जाय। शहद का बना गुलकन्द सर्द मिजाजवालों व बूढ़ों और तर दिमाग़ वालों को मुआफिक और लाभदायक है, और फालिज व गठिया और नुकरस को मुफीद है, पथरी को तोड़ता है और सिल को नफा करता है। (जहरीला नहीं)

६८४---गिल मखतूम

फ़ा०-गिल मखतूम। अ०-तीन मक़तूम। रंग लाल। स्वाद-फीका। पहि०-लाल मट्टी की बनी व घुटी हुई टिकिया है। स्व०-सर्द खुश्क और विषघ्न है। हानि-फेफड़े व तिहाल को। दर्प०-कतीरा व शहद। प्र०-गेरू। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य - काबिज है और फरहत लाती है, दिल को ताकत देती है, जख्म को भर लाती है गर्म वर्मों को नफा देती है, मवाद को अवयव यानी अजू पर गिरने नहीं देती है और कुल जहरों को मारने वाली है। बहते हुये खून को बन्द करती है, चाहे वह जाहिर में बहता हो चाहे छिपा हुआ हो, रगों के मुंह और रास्ते को बन्द कर देती है। (जहरीला नहीं)

६८५--गुल मेहदी

प्र०-गुल मेंहदी। रंग-सब रंग। स्वाद-कुछ कड़वी। पहि०-बागों का एक बहार वाला फूल है। स्व०-गर्मतर।

गुण व कार्य—इसके बीज क़लिये के (मांस) के साथ खाना बाह को कुव्वत देता है। इसके पेड का निचोड़ा हुआ पानी ऐज़ा की सोजिश को नफा करता है जबकि पानी गर्म किया हुआ होवे। (जहरीला नहीं)

६८६—गुलनार वेसमर

फ़ा०-गुलनार वेसमर। अ०-जलनार। रंग-बहुत लाल। स्वाद-कड़वा व कषैला। पहि०-एक तरह का वेफल का अनार है। स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-शिर दर्द पैदा करता है। और सुद्दा लाता है। दर्प०-कतीरा। प्र०-जीरा अनार व जुफ्तवलूत। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—काबिज है दस्तों को बन्द करता है। मवाद को पुख्ता करता है खुश्की लाता है। ऐज़ा को कुव्वत देता है। सफ़रावी व खूनी दस्तों को मु..ीद है, इसकी चुटकी मुंह से खून आने और खून बहने को मुफीद है और दांतों को मजबूत करता है।

(जहरीला नहीं)

६८७—गन्दना

प्र० नाम-गन्दना। फ़ा०-गन्दना। अ०-करास। रंग-हरा। स्वाद-तेज व बदबूदार। पहि०-प्याज के साग जैसा एक साग प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म ३ खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों को। दर्प०-धनिया व कासनी। प्र०-प्याज व बाबूना व अफ़संतीन। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलता है और वरम व रियाहको तहलील करता है, वाह लाता है व रद्दी बुखारात पैदा करताहै। हाजिमेकी ताकतको बढ़ाता है। कमर को बल देता है। तवियत को नर्म करता है। कूलंज को दूर करता है। पेशाब व हैज जारी करता है। पेट के कीड़े मारता है। इसका लेप वाह को कुव्वत देता है। और बवासीर को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

६८८—गन्दना के बीज

प्र० नाम–गन्दना के बीज। फा०-तुख्म गन्दना। अ०-वस्रुलकरास। रंग-सुर्खी मायल। स्वा०-कड़वा व तेज। पहि०-प्याज (गांठी) के से बीज प्रसिद्ध हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गुर्दे और फेफड़े को। दर्प०-शहद। प्र०-तुख्म जरजीर। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दा व मसाम को खोलते हैं। रियाह व वरम को तहलील करते हैं। वाह लाते पथरी तोड़ते हैं और जिला करते हैं। सर्दीकी बीमारियों को नफा देते हैं। मुंह से खून आने और खून बहने को बन्द करते हैं। भूख को हरकत देते हैं। और गुर्दे व मसाने को बल देते हैं।

(जहरीले नहीं)

६८९—गंदना पहाड़ी

प्र०-गंदना पहाड़ी। फा०-गन्दनाकोही। अ०-क़रासियून व अलकमा। रंग-हरा। स्वाद-तेज व तेज बू। पहि०-लहसन, की तरह की एक तेज बूदार घास है। स्व०-गर्म २ खुश्क ३। हानि-गुर्दे को। दर्प०-कतीरा व सौंफ व बालछड़। प्र०-अबारून व अनीसून। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—बलग़म व मवाद को छांटता है। रूह व अखलात खिलतों को लतीफ (उम्दा) करता है। मूत्र लाता है। पसीना व दूध और हैज जारी करता है। जिगर व तिहाल का सुद्दा खोलता है। सीने व फेफड़े को पाक करता है। रियाह को तहलील करता है भीतरी व बाहरी ऐज़ा को जिला देता है और बच्चे को गर्भ से निकालता है।

(जहरीला है)

६९०—गंदा विरोजा

प्र० नाम-गन्दा विरोजा। सं०-शिल्हकम् फा०-बारज़द। अ०-क़न। रंग-सफेद। स्वाद-दुर्गंध युक्त। पहि०-एक पेड़ का जमा हुआ दूध है। स्व०-गर्म ३ खुश्क २। हानि-दिमाग़ को दर्प०-रोग़न बनफ्शा व काफूर। प्र०-जावशीर व उश्क।

गुण व कार्य—वरम व सख्तिया और मवाद को नर्म करता है। और तहलील भी करता है। रतूबत को सुखाता है। पुरानी खांसी व धांस व योनि के फटने और बवासीर को नफा करता है। पथरी तोड़ता है। गुर्दे का सुद्दा खोलता है, इसका सत सोजाक और पेशाब के रास्तों के जख्मों को नफा देता है।

(जहरीला है)

६९१—गंधक

प्र०-गंधक। सं०-गिरिजा रज। फा-गोगर्द अ०-कयरीत। रंग-पीला। स्वाद-फीका व दुर्गंध युक्त। पहि-एक खनिज चीज आग को जल्द पकड़ने वाली है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-मेदे व दिमाग़ को। दर्प०-कतीरा व दूध। प्र०-हरताल मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—रूह और खिलतों को उम्दा करता है वरम को तहलील और रतूबत को जज्ब करता है। खुश्की करता है। गर्मी पैदा करता है। खुजली और चर्म रोगियों को खाने और लगाने से लाभ होता है। मिर्गी व आधाशीशी और सकते सुकड़ने (नास लेने) से नफा होता है।

(जहरीली है)

६९२—गोभी

प्र०-गोभी। सं०-गो जिह्वा। फा०-कलीम रूमी अ०-क़म्बीत। रंग-सफेद व पीली। स्वाद-फीकी। पहि०-एक तरकारी फूलों की किस्म से है। स्व०-सर्द खुश्क। हानि-काबिज़ नफाख़ मुसहिल की कुव्वत के साथ। दर्प०-गर्म मसाला। प्र०-करमकल्ला।

गुण व कार्य—ऐज़ा (अवयव) को कुव्वत देती है। सफरा-व बलगम और खून के फिसाद को दूर करती है। प्रमेह और सोजाक को नफा देती है, खांसी व फोड़ा फुन्सी को लाभदायक है। मूत्र लाती है। खुमार (नशे) को तस्कीन देती है इसके पत्ते पानी में पिसे खून आने को नफा देते हैं और पत्तों को जोशान्दे की धार गठिया को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

६९३—गोस्त अबाबील का

प्र० नाम-गोश्त अबाबील का। फा०-गोश्त परस्तोक। अ०-लहम उल खताफ़। रंग-खुद काला य गोश्त कुछ काला। स्वाद-नमकीन। पहि०-एक पत्ती है जो गोरिया के बराबर होता है। और बीरानों (खंडहरों) में रहता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-फेफड़े को। दर्प०-सिकंजबीन। प्र०-ममोला (नीमला)। मात्रा-हलाल योग्य है।

गुण व कार्य- इसका मांस गुर्दे व मसाने की पथरी तोड़ बहाता है। यरकांको मुफीद है। तिहाल की बीमारियों को फायदेमन्द है। इसका ताजा खून गालों के रंग को चमकाता है। और साफ करता है, इसका शिर शहदमें फूंक कर सुर्मा बना लगावे तो आंख की बीनाई को ताक़त देता है। और नज़ल की आंख को नफा करता है।

(जहरीला नहीं)

६९४—गोश्त उल्लू का

प्र०-गोश्त उल्लू का। सं०-उलूक मांस। फा०-गोश्तचुग़द। अ०-लहमउलबूम। रंग-भूरा। स्वाद-नमकीन दुर्गंध युक्त। पहि०-एक पत्ती है जो बीरानों (खंडहरों) में रहता है। और आंख की कमजोरी के सबब दिन को नहीं निकलता है। स्व०-गर्म खुश्क २। पहि०-खाया नहीं जाता। मात्रा-हराम (अयोग्य) है।

गुण व कार्य—इसका मांस खाना कुल कामों में आदमी को अहमक और बेवकूफ कर देता है। इसका खून या पित्ता झाऊ की लकड़ी की राख और शहद के साथ पीना घड़ी घड़ी पेशाब करने चिनक और सोते हुये पेशाब करने को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

६९५—गोश्त ऊँट का

प्र० नाम-गोश्त ऊँट का। सं०-उष्ट्र मांस। फा०-गोश्त शुतर। अ०-लहम उल अबल व जमल। रंग-कुछ नीला व सुर्खी मायल। स्वाद-नमकीन व सख्त। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म

खुश्क ३ । हानि-खिलतों को । दर्प०-गर्म दवायें और नमक व राई । प्रति०-हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—मैला व गरिष्ट और देरहजाम है, सफराबी खून पैदा करता है। बाह को कुव्वत देता है। जूड़ी व बुखार को नफा देता है। अकु-लनिसां और कूले के दर्द और स्याह यरकां और मूत्र की सूजन को लाभदायक है, इसकी चर्बी (मज्जा) का लेप बवासीर में फायदेमन्द है। इसकी नली का गूदा इसी के बालों में लत करके हमूल करना (योनि में रखना) गर्भ रहने को मदद देता है, इसका मूत्र पीना जलंधर को मुफीद है, इसके मैथुन के वक्त का कफ जनून पैदा करता है। (जहरीला नहीं)

६९६—गोश्त बारहसिंग।

प्र०-गोश्त बारहसींगा। सं०-साबर मांस। फा०-गोश्त गोज़न। अ०-लहम उल अयल। प०-खुद भूरा सुर्खी मायल। गोश्त लाल। स्वाद-फीका व खुश्क। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-नफ़ाख है, और गर्म मिजाज को। दर्प०-धनिया और दही व घी। प्रति०-शुतर मुर्ग। मात्र-हलाल (योग्य) है

गुण व कार्य—जल्द पचने वाला है, वाह को कुव्वत देता है। रद्दी गिजा है (अहारत्व नहीं है) इसके आँसू जो आँख के मंडल में जमा (इकट्ठे) होकर जम जाते हैं, वह उत्तम तिरयाक़ (जहर मारने वाला) है। (गैरसमी दुमसम क़ातिल)

६९७—गोश्त बाज का

प्र०नाम-गोश्त बाजा का। सं०-श्येन मांस। फा०-गोश्त बाज़। अ०-लहम उल बाजे। रंग-खुद भूरा व अबलक़, मांस लाल। स्वाद-खारा व बदबूदार। पहि०-एक शिकारी पक्षी है जो कबूतर के बराबर होता है और छोटे २ पक्षियों का शिकार करता है। स्व०-गर्म २ खुश्क ३। हानि-कुलंज को। दर्प०-गर्म चीज। मात्रा-हराम (अयोग्य) है।

गुण व कार्य—देर में पचने वाला और अहारत्व नहीं है, वरमों को तहलील करता है, इसके पंख जलाये हुये घाव को भर लाते हैं। इसकी बीट चर्म के निशानों को प्रकट करता है।

(जहरीला नहीं)

६९८—गोश्त पंडक

प्र० नाम-गोश्त पंडक। सं०-पंडुक मांस। फा०-गोश्त कोको। अ०-लहम उल फाख्ता व हमाम उल मतूका। रंग-खुद भूरा सुर्खी मायल मांस लाल। स्वाद-खारा व दुर्गन्ध युक्त। पहि०-एक पक्षी कबूतर के बराबर और कंठीदार होती है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-देर हजम व नींद दूर करता है। दर्प०-तेल व धनियां व सिर्का प्रति०-गौरैया चिड़िया। मात्रा-हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—रद्दी व फासिद खिलत पैदा करता है, मेदे को रद्दी करता है। पचने के समय खराब है, इसका गाढ़ा शोरबा जिसमें मांस खूब गलाया जावे। राशा व फालिज व खिदर और पट्ठों की बीमारियों को जो सर्दी से हों और गलीज रियाह को मुफीद है। सुद्दा खोलता है, इसकी बींट झांई को नफा करती है, वरमों को तहलील करती है, इसके पंखों की धूनी चौथिये को नफा देती है। (जहरीला नहीं)

६९९—गोश्त बिज्जू का

प्र०-गोश्त बिज्जू का। फा०-गोश्त कुफ़तार। अ०-लहमउल ज़बाअ उरजा।

रंग-खुद भूरा, मांस स्याहीमायल। स्वाद-बदबूदार व बदमजा। पहि०-एक जानवर लोमड़ी का सा जो चलते हुये लँग करता और क़बरस्तान में मुर्दा खाने को रहता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-फेफड़े को। दर्प०-शहद। प्रति०-न्यौला। हर मज़हब में हराम (अयोग्य) है।

गुण व कार्य—इसके मांस का सोये व नमक और तेल के साथ आबजन (पानी में बैठना) गठिया को मुफीद है और क़ज़ाज़ (गर्दन का न मुड़ना) तमद्दुद (खिंचाव) को भी मुफीद है। इस्तरखा (बदन के ढीलेपन को) अर्कुलनिसाँ और नुकरस और गलीज रियाह को नफा देता है। इसका मांस मेदे की सर्दी व बलगमी व सौदावी बुखार को और गालों की जर्दी को और सर्दी के दर्दों को नफा देता है, इसका खून जनून को दूर करता है। इसकी पेख़ाल (पेट के भीतर की पांच चीजें) को खाना जनून पैदा करता है। इसका पित्ता तीनों खिलतोंको दस्तों की राह निकालता है। (करीब व सम)

७००—गोस्त बटेर का

प्र०-गोश्त बटेर का। सं०-वर्त्तकी मांस। अ०-लहम उल सुमानी। रंग-खुद भूरा, मांस गुलाबी। स्वाद-नमकीन व खुश्क। पहि०-एक पहाड़ी पक्षी है जो गौरेया के बराबर मौसम गर्मी व बरसात में बहुतायत से होता है। स्व०-मातदिल व बाजों के नजदीक गर्म खुश्क १। हानि-काबिज है। दर्प०-रोग़न। प्रति०-मुर्ग का बच्चा। हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—तपेदिक और तीनों खिलतों सफरा व सौदा और बलगम के फ़िसाद को दूर करता है, भूख खूब लाता है, मेदे को बलदायक है। कमज़ोर लोगों और कमजोर अंतड़ियों वालों को इसका आहार बहुत ही अच्छा है और योग्य है, बाह और अक्सर ऐजा को ताकत देता है।

(जहरीला नहीं)

७०१—गोश्त बरकील का

प्र०-गोश्त बरकील का। रंग-खुद पीला मांस लाल। स्वाद-फीका। पहि०-गौरैया के बराबर एक पक्षी है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। मात्रा-हलाल योग्य है।

गुण व कार्य—मेदे की थैली में जल्दी उतर जाता है, अच्छा खून पैदा करता है, बुड्ढों के लिये उत्तम आहार है, बाह को कुव्वत देता है, खासकर बलगम व सफरा को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

७०२—गोस्त बतख का

प्र० नाम-गोश्त बतख का। फा०-गोश्त बत व गोश्त आबू। अ०-लहम उल बतम्। रंग-खुद कई किस्म की, मांस सफेदी मायल स्वाद-नमकीन व बदबूदार। पहि०-एक पानी का पक्षी प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-शिर दर्द लाता और जल्द सड़ जाता है। द०-गर्म मसाला। प्र०-फ़ाख्ता, हलाल योग्य है।

गुण व कार्य—अहारत्व अच्छा है, गर्मी की रियाह को दूर करता है बाह को कुव्वत देता है। वीर्य वृद्ध करता है, बदन को फरबह करता है। गुर्दे को भी फरबै करता है, इसके पर व बाल की राख कंठमाला को तहलील करता है, इसकी बींट चेहरे की झांई व स्याही को दूर करती है।

(जहरीला नहीं)

७०३---गोस्त बकरा व बकरी का

प्र०-गोस्त बकरा व बकरीका। सं०-अजामांसं। फ़ा०-गोश्त बज व मेश। अ०-लहम उल मागर। रंग-खुद कई तरह के, मांस गुलाबी व लाल। स्वाद-कुछ नमकीन व फीका। पहि०-एक प्रसिद्ध चौपाया जानवर है। स्व०-गर्मतर २। हानि-सौदावी मिजाजों को। द०-बादाम व नारियल। प्र०-बटेर। मात्रा—हलाल (योग्य)

गुण व कार्य—मेदे में अच्छी तरह हजम होता है। लतीफ़ खून पैदा करता है। गर्म मिजाज वालों के योग्य खाना है। इसके शिर का भेजा बहुत तरी देने वाला है। दिमाग को नर्म करता है, इसका ४० रोज का बच्चा कमजोरों और बूढ़ों के लिये बहुत कुछ नफा देता है। और उनके मुआफ़िक है क्योंकि इसमें हरारत (गर्मी) कम होती है। इसके पित्त का सुर्मा रतौंधी में मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७०४---गोस्त बगले का

प्र०-गोस्त बगले का। सं०-बक मांसं। फ़ा० गोश्त बूतीमार व गुमखोर। अ०-वहम उल मालग उल जरीन व सफनीन उलवरी। रंग-खुद सफेद व भूरा, मांस सफेद व गुलाबी। स्वाद-फीका व बुसान्दा। पहि०-एक पक्षी है जो कबूतर के बराबर होता है। तालाबों के किनारे मछलीमार कर खाया करता है। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-गर्म मिजाज वालों को रियाह पैदा करता है। द०-धनियां। मात्रा—हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—बदन को फरबे करता है। और अच्छा खून पैदा करता है। कुव्वत मास्का (ठहरने की ताकत) और इन्द्रियों को बल पहुँचाता है, कमजोर व झोला मारे रोगी को मुआफिक है और याददास्तको बढ़ाता है व बाह की कुव्वतको हरकत देता है। इसकी चर्बीकी मालिश बवासीरके खून को बन्द करती है।

(जहरीला नहीं)

७०५--गोस्त बुलबुल का

प्र० नाम-गोश्त बुलबुल का। फ़ा०-गोश्त हजार दास्तान। अ०-लहमउल कन्दलीब व अनादल। रंग-भूरा स्याहीमायल। स्वाद-नमकीन। पहिचान एक बहुत उत्तम आवाज का पक्षी है। पहाड़ी मशहूर है। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-गर्म मिजाज को। मात्रा—हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—बाह को हरकत देती है। खास कर इसके अंडे और मगज़ बाह को बढ़ाते हैं, इसकी बीट चमड़ी के निशानों को साफ़ कर देती है। मुंहकी झांई को दूर करती और गालों का रंग साफ़ व अच्छा करती है। पलकों के बढ़े हुये बालों को दूर करती है।

(जहरीला नहीं)

७०६--गोस्त बिल्ली का

प्र०-गोश्त बिल्ली का। सं०-मार्जर मांसं या मंजरी मांसं। फ़ा०-गोश्त गुर्बः। अ०-लहमउल सनूर। रंग-खुद मुख्तलिफ़ मांस गुलाबी। स्वा०-बदमजा व बूदार। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २ रतूबत गलिजः के। हानि-कमजोरी लाता और सित्त पैदा करता है। मात्रा—हराम (अयोग्य) है।

गुण व कार्य—इसका मांस बूढ़ों व तरमिजाज वालों और गठिया वालों को जो तरी से हो मुआफिक है। नुकरस व फतक वालों को मुफीद है। गुर्दे को गर्म कर देता है। बवासीर व पेट के दर्द

को नाफ़े है। इसका चमड़ा गर्म खुश्क है। बदन को गर्म कर देता है। काली बिल्ली का पित्ता रोगन गुलशब्बो के साथ लकवे और बाल काले करने को मुफ़ीद है।

(जहरीला नहीं)

७०७--गोस्त बन्दर का

प्र०-गोस्त बन्दर का। सं०-कपिमांस। फ़ा०-गोश्त बूज़ना। अ०-लहम उल क़िरद। रंग-लाल। स्वाद-बदमज़ा व बदबूदार। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्मखुश्क २। मात्रा-हराम (अयोग्य) है।

गुण व कार्य- इसके खून को मालिश बाल उगने को नाफ़े और मुजर्रब है इसके खून को अगर गर्म २ खाया जावे तो उसी वक्त गूंगाकर देता है, यही हाल मांस का भी है।

(जहरीला है)

७०८--गोस्त बहरी का

प्र० नाम-गोस्त बहरी का। अ०-लहमुल शाहीन। रंग-खुद भूरी। मांस लाल। स्वाद-कड़वेपन से बूदार। पहि०-एक पक्षी चील की बराबर बाज की क़िस्म से मशहूर है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म मिजाज वालों को। मात्रा-हराम (अयोग्य) है।

गुण व कार्य—खुश्की करता है। तर और बल गर्मी मिज़ाज वालों को मुआफ़िक है, सौदा पैदा करता है। क्रोध पैदा करता है, और कमजोरी लाता है। (जहरीला नहीं)

७०९--गोस्त भैंस का

प्र०-गोश्त भैंस का। सं०-महिष मांसं। फ़ा० गोश्त गावमेश। अ०-लहमउल जामूस। रंग-सुर्खी स्याही मायल। स्वाद-नमकीन। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-नफ़ाख़ है और खराब रियाह पैदा करता है। द०-दारचीनी व कबाबचीनी व कडू। मात्रा-हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—ग़लीज और देर हज़म है। रद्दी सफ़रावी खिलत पैदा करता है। मिहनत वाले लोगों को नफ़ा देता है इसके बच्चे का मांस ग़लज़त और नुकसान में कम है।

(जहरीला नहीं)

७१०--गोस्त भेड़ का

प्र०-गोश्त भेड़ का। सं०-मेष मांसं। फ़ा०-गोश्त गोशफ़न्दमेश। अ०-लहमउल सनान। रंग गुलाबी सफ़ेदी मायल। स्वाद-फीका। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्मतर १। हानि-नफ़ाख़ है। द०-दारचीनी व कबाबचीनी। मात्रा—हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—शीघ्र पचता है। आहारत्व उत्तम है। गाढ़ा व संगीन खून पैदा करता है, अवयव को बलवान करता है। बदन को फरबे करता है, इसकी मींगनी वरमों और जलंधर व रियाह को तहलील करती है।

(जहरीला नहीं)

७११--गोश्त भेड़िये का

प्र० नाम-गोश्त भेड़िये का। फ़ा०-गोश्त गुर्ग। अ०-लहम उल जीयः। रंग-गुलाबी। स्वाद-दुर्गन्धिदार। पहि०-एक दरिन्दा (फाड़ खाने वाला) जानवर है जो कुत्ता सा प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २। मात्रा-हराम (अयोग्य) है।

गुण व कार्य—इसका कलेजा जिगर की बीमारियों को लाभदायक है और सिकंजबीन के

साथ यरकां को नफा करता है। करफस के पानी के साथ तिहाल को मुफीद है। इसका पित्ता चने के बेसन के साथ खाना बाह को कुव्वत देता है। इसका लेप बाह लाता है। तशन्नुज व मिर्गी और सर्दी के पट्ठों की ऐंठन को मुफीद है। इसकी हड्डी का चूरा खासतौर से कुलंज को नफा करता है।

(जहरीला नहीं)

७१२---गोस्त टिड्डी का

प्र० नाम-गोश्त टिड्डी का। फा०-गोश्त मलख। अ०-लहम उलजरादउलबर। रंग-लाल। स्वाद-नमकीन। पहि०-एक पंखदार कीड़े की किस्म है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म स्वभाव वालों को। दर्प०-सिकंजबीन व अनार मीठा। मात्रा-हलाल(योग्य) है।

गुण व कार्य—बाह लाता है, गलीज़ खिलतोंको जिला करता है और साफ करता है और फेफड़े व गुर्दे के परदों की बीमारी और बूंद २ मूत्र आनेको मुफीद है, इसकी धूनी बबासीर व तंगी से पेशाब आने को मुफीद है। इसका खाना कोढ को खासकर मुफीद है। (जहरीला नहीं)

७१३—गोस्त तीतर का

प्र० नाम-गोश्त तीतर का। फा०-गोश्त तिहू। अ०-लहम उलदुर्राज। रंग-सफेदी मायल। स्वाद-नमकीन। पहि०-एक पक्षी कबूतर के बराबर और बटेर की शक्ल का है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म स्वभाव वालों को। दर्प०-खटाई। प्र०-बटेर। मात्रा-हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—दिमाग के जौहर व याददाश्त व जहन और हाफिजे को बढ़ाता है और सर्द तर मेदे को कुव्वत देता है, बाह लाता है, मेदे में जल्द उतर जाता है, इसकी बीट आंख की सफेदी को जिला देतीहै और चमड़ी परके निशान मिटाती है।

(जहरीला नहीं)

७१४---गोश्त तेंदुवे का

प्र०-गोश्त तेन्दुवे का। सं०-तेन्दुक मांस। फा०-गोश्त पलंग। अ०-लहम उलमज। रंग-लाल। स्वाद-दुर्गन्ध युक्त। पहि०-एक फाड़ खाने वाला जानवर है जो शेर की तरह व कुत्ते से बड़ा सिर मैला व ताकतवर होता है, इसका मांस कोई जानवर नहीं खाता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। प्र०-शेर। मात्रा-हराम (अयोग्य) है।

गुण व कार्य—इसकी चर्बीकी मालिश फालिज व खिदर व गठिया व नुकरस और सर्दीसे पट्ठोंकी बीमारियों को मुफीद है, इसके खून व सुर्मा नेत्रों की कुल बीमारियों को नफा देता है, खून का लेप खाल के निशानों व काले दाग व भांई और चेहरे की स्याही को दूर करता है।

(जहरीला है)

७१५--गोश्त चिड़िया

प्र० नाम-गोस्त चिड़िया का। फा०-गोश्त कंजिश्क। अ०-लहम उल हस्फोर। रंग-भूरा। स्वाद-फीका। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-गर्म स्वभाव और अंतड़ियों को। दर्प०-अनारका पानी व सिकंजबीन प्र०-बटेर। मात्रा-हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—बाह को हरकत देता है, बदन को फरबह करता है, तबियत को नर्म करता है। अच्छा आहार है, मेदेको बलवान करता है, जलंधर व फालिज जिगर की कमजोरी और कांवर को

नाफे है, इन्द्री के ढीलेपन को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७१६--गोश्त चक्रावक का

प्र० नाम-चकावक। फा०-गोश्त चकावक व क़रकरा। अ०-लहमउल क़रह व अबूउल मलीह। रंग-गुलाबी। स्वाद-नमकीन। पहि०-एक पक्षी सुन्दर व सुन्दर आवाज वाला सिर पर हुदहुद का सा ताज होता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म स्वभाव वालों को। दर्प०-कासनी व खट्टे मेवे और बादाम रोगन। मात्रा-हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—इसके मांस का शोरबा पीना तबियत को नर्म करता है चाहे कैसा ही कब्ज हो इसका कबाम हमेशा खाते रहना अच्छी गिजा है, फालिज व मसाने के दर्द को मुफीद है, यह मानी हुई बात है कि साबित जलाया हुआ जातुलजम्ब और दिल के दर्द को फायदेमन्द है।

(जहरीला नहीं)

७१७--गोश्त चकवी

प्र०-गोश्त चकवा व चकवी। सं०-चक्रवाकी मांस। फा०-गोश्त सुरखाब। अ०-लहमउल खाम। रंग-लाल। स्वाद-फीका बूदार। पहि०-एक पानी का पक्षी है जो अबलक रंग का और राजहंस से छोटा होता है। स्व०-गर्म तर १। हानि-गर्म स्वभाव को और देर हजम है। दर्प०-सिर्का व आस जो। मात्रा-हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—गाढ़ा व संगीन खून पैदा करता है, मनी को पैदा और संगीन करता है, आंखों और बदन को कुव्वत देता है बाह को हरकत देता है।

७१८--गोश्त चकोर का

प्र०-गोश्त चकोर का। सं०-चकोर मांस। फा०-गोश्त कबक व कबज व मुर्ग आतिशख्वार। अ०-लहमउल हजल। रंग-लाल। स्वाद-फीका। पहि०-एक पक्षी कबूतर के बराबर व खूबसूरत और नाजुक चाल वाला है। स्व०-गर्मखुश्क २। हानि-शिर दर्द लाता और मूत्र बन्द कर देता है। दर्प०-सिकंजबीन व खटाई। प्र०-बटेर। मात्रा-हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—अक्सर ऐजा को कुव्वत देता है, शीघ्र पचता है, अहारत्व अच्छा है, अच्छा खून पैदा करता है, बदन को फरबे करता और बाह लाता है, फालिज व लकवा और दिमाग की सर्द बीमारियों को नफा देती है, सीने की सर्द बीमारियों और इस्तस्का (जलंधर) को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७१९--गोश्त चिमगादर

प्र०-गोश्त चिमगादर का। सं०-निशाचर मांस। फा०-गोश्त सब परह। अ०-लहमउल खफाश। रंग-काला। स्वाद-बदबूदार व कड़ुवा। पहि०-एक अजीब पक्षी है जिसके पंख और पत्तियें कैसे नहीं होते, इसकी मादा हैज से होती है व दूध देती है, चारों पांव होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क। मात्रा-हराम (अयोग्य) है।

गुण व कार्य—इसका पका शोरबा रद्दी फुजलात को दस्तो की राह निकालता है और जर्द आब (पीले पानी) को भी दस्तों की राह निकालता है। जलन्धर और पहलू के दर्द को नफा देता है, इसका हरीरा पकाया हुआ जैतून के तेल या चमेली के तेल के साथ फालिज व राशा व गठिया और

पीठ के दर्द को नफा करता है और नुकरस को गुणकारी है, सर्दी के बरमों को तहलील करता है। इसकी जलाई हुई राख बीनाई की हिद्दत और जाले व मांड़े को मुफीद है, इसका बींट बहुत गर्म है, इसका सुर्मा बीनाई को जिला देता है।

(ज़हरीला है)

७२०--गोश्त खिचर का

प्र०-गोश्त खिच्चर का। सं०-अश्व तर। फा०-गोश्त अस्तर। अ०-लह्मउल नजल। रंग-सुर्ख स्याही माइल। स्वा०-नमकीन। पहि०-एक चौपाया जानवर है जो घोड़े से छोटा और गधे से बड़ा जानवर है, स्व०-गर्म खश्क ३।

गुण व कार्य—गठिया को मुफीद है इसकी चर्बी की मालिश नुकरस और अर्कुलनिसाँ को नफा देती है. चर्बी की धूनी रहम को मय बच्चे के गिरा देती है जहां पर धूनी दी जावे वहां के कीड़े मकोड़ों को भगा देती है, इसके मूत्र और कलेजे में तर किया हुआ कपड़ा रखना हमल के लिये मना है। (जहरीला नहीं)

७२१--गोश्त खर्गोश का

प्र०-गोश्त खर्गोश का। सं०-शाशा मांसं। फा०-गोश्तखर्गोश। अ०-लहम उलअरनबउलवरी। रंग-सफेद गुलाबी। स्वाद-स्वादिष्ट। पहि०-एक जानवर है जो बिल्ली से छोटा व नर्म होता है। उसके कान लम्बे होते हैं। स्व०-गर्मतर १। बाजे सर्द कहते हैं। हानि-सौदा पैदा करता है और गर्म स्वभाव वालों को। दर्पघ्न घी व अनार। प्रति०-लोमड़ी। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—फालिज व लकवा और इस्तरखा (बदन के ढीलेपन) को मुफीद है। उस पानी में जिसमें पकाया जावे बैठाना नुकरस और गठिया को नफा देता है। इसकी चर्बी कठिन वरमों को तहलील करती है। इसकी पनीर माया (मेदे का पानी) लड़कों की मिर्गी को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७२२--गोश्त दुम्बे का

प्र० नाम-गोश्त दुम्बे का। फा०-गोश्त दुम्बा। अ०-लहमउल कबश। रंग-गुलाबी। स्वाद-स्वादिष्ट। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क२। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—खराब खून पैदा करता है। मेदे में हज़म होने को अच्छी गिजा है। ऐजा को कुव्वत देता है, बाह लाता है। इसकी चर्बी सख्त से सख्त बरमों को तहलील करती है व बदन और पट्ठों को नर्म करती है।

(जहरीला नहीं)

७२३—गोश्त रीछ का

प्र०-गोश्त रीछ का। सं०-ऋक्ष मांसं। फा०-गोश्त खरस। अ०-लहम उल दब। रंग-काला। स्वाद-बदबूदार। पहि०-एक फाड़ खानेवाला और बलवान जानवर मशहूर है। स्व०-गर्म तर २। मात्रा—हराम है।

गुण व कार्य—इसका पित्त सुद्दा खोलता है। और ऐजा को ताक़त देता है। इसके पित्ते को एक दांग (छै रत्ती) पीना मिर्गी को नफा देता है, पित्त का सुर्मा सौंफ के रस और शहद के साथ बीनाई को क़वी करता है। और आंख के जाले को मुफीद है। और मुर्दा बालों (केशों) को जमाता है।

(जहरीला नहीं)

७२४—गोश्त सारस का

प्र०-गोश्त सारस का। सं०-सारस मांसं। रंग-लाल। स्वाद-फीका। पहि०-एक पक्षी है। जिसके चोंच व गर्दन और पांव लम्बे होते हैं। स्व०-सर्द तर बाजे गर्म तर कहते हैं। हानि-मल व मूत्र बन्द करता है। मात्रा—हलाल है।

गुण व कार्य—ऐज़ा को कुव्वत देता है। सफरा व खून के फिसाद को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

७२५—गोश्त सांप का

प्र०-गोश्त सांप का। सं०-सर्प (अहि) मांसं फा०-गोश्त मार। अ०-लहम उल हया। रंग-काला। स्वाद-बदबूदार। पहि०-एक जहरीला व लम्बा मशहूर कीड़ा है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि गर्म स्वभाव वालों को। मात्रा—हराम है।

गुण व कार्य—इसकी चर्बी का सुर्मा नजूल चश्म को दूर करता है। रोग़न जैतून के साथ कंठमाला को तहलील करती है और सिर्के के साथ बाल बढ़ाने और दायउल हया को मुफीद है, इसके अंडे सिर्के के साथ लगाना सफेद दाग को मुफीद है। (मय मुंह और पूंछ के जहर है)

७२६—गोश्त साही

प्र०-गोश्त साही। सं०-शल्लकी मांसं। फा० गोश्त खार पुश्त। अ०-लहम उल फितना। रंग-लाल स्याही मायल। स्वाद-खराब बदबूदार पहि०-एक चौपाया जानवर है जो लोमड़ी के बराबर और बदन पर बालों के बजाय कांटे बड़े २ होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-जिगर व मेदे को फासिद करता है। द०-रोग़न बादाम व साही का हरीरा पका हुआ। मात्रा—हराम है।

गुण व कार्य—इसका मांस खुश्की करता है। और बड़ा तहलील करने वाला है। मवाद को अंतड़ियों पर गिरने नहीं देता। अगर मुनासिब दवाओं के साथ इसका स्तैमाल किया जावे तो फालिज व राशा व पट्ठों की बीमारियों और फील पांव को नफा करता है और सर्द तर स्वभाव वालों को बाह को कुव्वत देता है।

(जहरीला नहीं)

७२७—गोश्त सुरागाय का

प्र०-गोश्त सुरागाय का। सं०-चामरी मांसं। फा०-गोश्त गुशरगा व। अ०-लहम उल बहलरकर जबली। रंग-लाल। स्वाद-नमकीन। प०-एक पहाड़ी चौपाया भैंस की शक्ल का सा होता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-खून को जला देता है कोढ़ व गलीज व सौदावी खिलत पैदा करता है। द०-सिर्का व मुरब्बा और गर्म मसाला। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—इसमें अहारत्व पूरा है। और ऐज़ा को कुव्वत देने वाला है। खास करके सर्द मिजाज वालों और बुड्ढों को और चर्बी इसकी फालिज और कजाज (गर्दन न मुड़ना) व नुकरस और गठिया को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७२८—गोश्त संजाब

प्र०-गोश्त संजाब। रंग-लाल स्याही मायल। स्वाद-बूदार। पहि०-एक जंगली जानवर है जो चूहे से बहुत बड़ा व छोटी पूंछ वाला और बाल नर्म होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-कुलंज पैदा करता है। द०-रोग़न बादाम। मात्रा-कई तरह का।

गुण व कार्य—इसका मांस गर्मी को तस्कीन देता है। सीने के दर्द व खांसी और कुरहे को मुफीद है। इसका पास्तीन (चमड़े का कपड़ा) पहनना मिज़ाज को मोतदिल करता है और पट्ठे के दर्द को नफा देता है। इसके बालों का पिसी हुई चुटकी जख्मों को भर लाती है। और खून को बन्द करती है।

(जहरीला नहीं)

७२९-गोश्त सुअर का

प्र०-गोश्त सुअर का। सं०-वराह मांस। फा०-गोश्त खोक। अ०-लहम उल खंजीर। रंग लाल व गुलाबी। स्वाद-नमकीन। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्मतर ३। हानि-बुद्धी को। दर्प०-शराब व शकर। मात्रा-हराम है।

गुण व कार्य—सुद्दे (ग्रन्थी) खोलता है व बदन को फरबै करता है। गलीज व लसदार खिलत पैदा करता है। बुद्धी का नुकसान करता है। फील पांव और गठिया पैदा करता है, इसकी चर्बी नमक और मोमियाई के साथ बहरेपन को दूर करती है। इसका खून जमीअ अफआल (कुल गुणों) में आदमी के खून की तरह है। इसकी चर्बी का तिला मुनासिब दवाइयों के साथ बरम को तहलील करता है। (जहरीला नहीं)

७३०—गोश्त शुतर मुर्ग

प्र० नाम-गोश्त शुतर मुर्ग। फा०-गोश्त सुतरमुर्ग। अ०-लहम उल निआमा। रंग-लाल व गुलाबी। स्वाद-नमकीन व खुश्क। पहि०-एक पक्षी है जिसके गर्दन और पांव लम्बे होते हैं। और अकसर बदन के जोड़ उखड़े होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-देर हजम है और गर्म स्वभाव वालों को। द०-घी और सिर्का। प्र०-मीर। मात्रा—हलाल है।

गुण व कार्य—रियाह को तहलील करता है, बलगम छांटता है, फालिज व लकवा व जलंधर व इस्तरखा और नुकरस व गठिया को मुफीद है, इसके खून का लेप वरमों को तहलील करता है, इसका गोबर झाईं और चेचक के दाग को खोता है। इसका संगदाना (पोटा) मेदे को कुव्वत देता है। (जहरीला नहीं)

७३१—गोश्त शुतुरगाव का

प्र०-गोश्त शुतुरगाव का। फा०-गोश्त शुतर गाव। अ०-लहम उल जराफ़ा। रंग-गुलाबी। स्वाद-नमकीन। पहिचान एक चौपाया पशु है जिसकी गर्दन और पांव लम्बे और कद छोटा होता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-सौदावी खिलत पैदा करता है व गर्म मिजाजों को। दर्प०-मय पांवके पकाहुआ हरीसा और खरबूजा। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—मेदे को कुव्वत देता है और इसका पित्ता आंख के नजले को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७३२—गोश्त शेर का या बाघ का

प्र०-गोश्त शेर का या बाघ का। सं०-व्याघ्र मांस। फा०-गोश्त शेर। अ०-लहम उल असद। रंग-लाल। स्वाद-बदबूदार व खुश्क। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क। मात्रा—हराम है।

गुण व कार्य—देर हजम है, बहादुरी पैदा करता है, इसकी चर्बी का लेप करना कमर व चिढ्ढे व इन्द्री (लिंग) व अंडकोषों पर और गुदा पर बाहको कुव्वत देता है, कंठमाला को मुफीद है, बद

व सख्त और खराब बरमों को तहलील करता है, इसकी मूंछ का बाल खाकर कातिल है।

(जहरीला है)

७३३—गोश्त तोते का

प्र०-गोश्त तोते का। सं०-शुक मांसं। फा०-गोश्त तोते का। अ०-लहमउल बबगा। रंग-नीला व लाल। स्वाद-खुश्क व कसैला। पहि०-एक पक्षी हरे रंग का फाखता के बराबर लाल व हरा, नीला और सफेद भी होता है। स्व०-गर्म २, खुश्क १। हानि-देर हजम है। द०-गर्म मसाला। मात्रा-हलाल व कई तरह की।

गुण व कार्य—पेट को गुम करता है और चोट व हमल गिरने को नफा देता है, झांई को खोता है, खांसी को नफा देता है, देर में पचता है, दिलको फरहत देता है, इसकी जीभ अच्छा बोलना पैदा करती है, बच्चों के तुतलाने को भी खोती है। इसकी बीट झांई और स्याही को दूर करती है।

(जहरीला नहीं)

७३४—गोश्त कुमरी का

प्र० नाम-गोश्त कुमरी का। फा०-गोश्त कुमरी। अ०-लहमउल कुमरी। रंग-सफेद व गुलाबी। स्वाद-नमकीन। पहि०—एक पक्षी फाखता के बराबर होती है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-वहम व कोढ़ पैदा करती है। दर्प०-घी व बादाम और लतीफ दवायें। प्रति०-बटेर। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—सर्द स्वभाव वालों के बहुत मुआफिक है और तर व बलगमी स्वभाव वालों को भी मुआफिक है, इसके अंडे बालकों को जल्द बोलने वाला बनानेको पूरा असर करते हैं, मुजर्रब है व फासिद खून पैदा करताहै, इसका निकाला हुआ तेल बच्चों के बदन में मलना बदन को चंचल बनाता है।

(जहरीला नहीं)

७३५—गोश्त गाय का

प्र०-गोश्त गाय का। सं०-गौ मांसं। फा०-गोश्त गाव। अ०-लहमउल बकर। रंग-गुलाबी लाल। स्वाद-कुछ बूदार। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-नफाख है। दर्प०-स्याह मिर्च व दारचीनी। प्रति०-नीलगाय। मात्रा-हराम है।

गुण व कार्य—देर हजम है और खराब खून पैदा करता है। सौदावी बीमारियां पैदा करता है, गठिया व अर्कुलनिसा वालों को हानिकर है, दिमाग पर रद्दी बुखारात चढ़ाता है, मसूड़ों और होठों पर वरम पैदा करता है।

(जहरीला नहीं)

७३६—गोश्त कबूतर का

प्र०-गोश्त कबूतर का। सं०-कपोत मांसं। फा०-गोश्त कबूतर। अ०-लहमउल हमाम। रंग-गुलाबी। स्वाद-स्वादिष्ट। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २, जंगली गर्म खुश्क। हानि-गर्म मिजाजोंको। दर्प०-धनियां व अंगूर। प्र०-तीतर मात्रा-हलाल है।

फालिज व लकवा व राशा व खिदर और इस्तरखाको मुफीद है और अच्छा खून पैदा करता है, बदन को फरबै करता है, गुर्दे व मसाने को ताकत देता है, बाह लाता है, मनी पैदा करता है, और बादमी व आबी जलंधर को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७३७—गोश्त कुत्ते का

प्र०-गोश्त कुत्ते का। सं०-श्वान का मांसं। फ़ा०—गोश्त सग। अ०-लहमउल कल्ब। रंग-सफेदी मायल। स्वाद-दुर्गन्ध युक्त। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २। मात्रा-हराम है।

गुण व कार्य—इसका भुना हुआ कलेजा बावले कुत्ते के जहर को दूर करता है, इसकी जिव्हा की राख सोजाक को मुफीद है और मूत्रके रास्ते का जख्म दूर करती है, इसकी चर्बी कण्ठमाला को नफा करती है। (जहरीला है)

७३८—गोश्त कछुवे का

प्र०-गोश्त कछुवे का। सं०-कच्छप मांस फ़ा०-गोश्त संग पुश्त। अ०-लहमअस लहफात। रंग-सुर्खी व सफेदी मायल। स्वाद-बुसान्दा। प०-पानीका जानवर प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म २ तर१। हानि-आंतों को। दर्प०-शहद। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—बाह और कमर को कुव्वत देता है, इसकी लबाव (मगज) हैज के खून को बन्द करता है, रियाह को तहलील करने और (फतक) चिरे हुये के भर लाने में जुन्दबेदस्तर के बराबर गुणकारी है, इसका लेप वरमों को तहलील करता है, इसका ताजा खूनपीना मिर्गी और तशन्नुज को मुफीद है, इसके पित्ते का लेप गले के खुनाक व रहम के खुनाक और बुरे और खराब जख्मों को नफा देता है, पित्ते का मलना मिर्गी वाले की नाक पर नफा करता है, इसके अन्डे सौंफ के अर्क में फोतों के वरम को नफा देता है, हड्डी की राख कांच निकलने को नफा देती है, हड्डी का चूरा कपड़े में बांध कर योनि में रखना रतूबत को बन्द करता है। मात्रा-(जलाया हुआ १२ माशे और गोश्त १ जो बच्चों के लिये) है।

(जहरीला नहीं)

७३९-गोश्त गधे का

प्र०-गोश्त गधे का। सं०-गर्दभ मांसं। फ़ा०-खरबदरोज गोश्त। लहमउल हमारउलअहली। रंग-लाल नीला। स्वाद-नमकीन। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म१ खुश्क३। मात्रा-हराम है।

गुण व कार्य—गलीज व देर हजमहै, इसके कलेजे का कबाब मिर्गी और तिजारी यानी तीसरे और चौथे रोज की जूड़ी को नफा देता है, इसकी चर्बी का लेप जख्मों के निशान और अन्तड़ियों के जख्म भर लाने को मुफीद है। इसकी लीद कांवर को नफा देती है और मसाने व गुर्दकी पथरी तोड़ती है। और इसके खुर की धूनी बच्चे को मय मशीमा के निकालती है। व हुबाद्दी विलादत को मुफीद है और इसके जलाये हुये खुर का लेप जैतून के तेल के साथ गुदा, कण्ठमाला और गठिया को लाभदायक है।

(जहरीला नहीं)

७४०-गोश्त गिद्ध का

प्र०-गोश्त गिद्ध का। सं०-गृद्ध मांसं। फा०-गोश्त करमस। अ०-लहमउलनसर। रंग-लाल या नीला। स्वाद-बुसान्दा व नमकीन। प०-एक पक्षी मुर्दा खाने वाला व मजबूत बदन का बहुत उड़ने वाला और बड़ी उमर का है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-बुरी व रद्दी गिजा है। दर्प०-दारचीनी व सिर्का। मात्रा-हराम है।

गुण व कार्य—इसका मांस गलीज रियाह व कुलंज और बारीक आंतों के सुद्दे को तहलील करता है और सुद्दा खोलता है और पथरी तोड़

बहाता है व बलगम को छांटता है, इसके अंडे का तिला मुकव्वी बाह है, इसकी बीट झांई और चेहरे की स्याही को दूर करती है और कंठमाला को तहलील करती है, इसके पंखों की राख तेल के साथ तर व खुश्क खुजली और जखमों को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७४१—गोश्त कुलंग

प्र० नाम-गोश्त कुलंग का । फा०-गोश्त कुलंग । अ०-लहमउल करकी । रंग-लाल। स्वाद रूखा व सूखा। पहि०-एक पक्षी जो बराबर और शकल में सारस का सा होता है और पानी के किनारे रहता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-देर हजम और गलीज खिलत पैदा करता है। दर्प०-सिर्का व नमक का पानी। प्रति०-सारस। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलता है और बदन को ताकत देता है, कुलंज को तहलील और नफ़ख़ (अफारा) करता है, इसके सिर का भेजा, सुर्मा बनाकर लगावे तो रतौंधी को नफा देता है। भेजे का लेप सफेद दाग और खुजली को मुफीद है। इसका पित्ता चमेली के तेल में हिल किया हुआ एक जौ भर खाना निसियान को मुफीद है यह सिर के बाल सफेद हो जाने को नफा करता है, इसकी चर्बी सिर्के व प्याज जंगली के साथ खानी तिहाल की सख्ती को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७४२—गोश्त गोरखर का

प्र०-गोश्त गोरखर का। सं०-जंगली गर्दभ मांसं। फा०-गोश्त गोरखर। अ०-लहमउलहमार उलवहश। रंग-गुलाबी। स्वाद-नमकीन। पहि०-एक चौपाया जानवर है, जो गधे की तरह का व उससे कुछ बड़ा होता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गलीज है और खिलत सौदा पैदा करता है। दर्प०-नमक व दारचीनी व सोंठ। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—जमीअ अफआल में (कुल गुणों में) गधे के बराबर है, इसकी चर्बी का लेप दाई के दूध के साथ बच्चों को बहुत रोने को नफा और असर करने वाला है, अकेली चर्बी का लेप मुंह की स्याही और दाद को मुफीद है, इसके पित्त का लेप बालखोर और पिंडली की रगों के फूलने और दर्द करने को नफा देता है। (जहरीली नहीं)

७४३—गोश्त कोकिल वा कोयल का

प्र०-गोश्त कोकिलाका। सं०-पिक मांसं। फा०-कोकिल का मांस। रंग-काला। स्वा०-बुसान्दा व खुश्क। पहि०-एक पक्षी काले रंग का और कौवे के बराबर होता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-सोदा पैदा करता है। प्र०-कौवा। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—इसका मांस कब्ज करता और पेट को गुम करता है, शरीर को बली करता है, रियाह व बलगम के दोष को दूर करता है, इसके जले हुये पंख जखमों को भर लाते और सुखा लाते हैं।

(जहरीली नहीं)

७४४—गोश्त गोह का

प्र०-गोश्त गोह का। स०-गोधा मांसं। फा०-गोश्त सूसमार। अ०-लहमउल जब। रंग-गुलाबी स्वा०-बुसान्दा व कड़वा। पहि०-एक जानवर नौले वगैरा की किस्म से है जो पूंछ वाला और बिल्ली के बराबर होता है, पानी का गोह इससे भी बड़ा होता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-करव

(दर्द) लाती है। दर्प०-गेरू व तेल व सिर्का। प्र०-सांडा। मात्रा-कई किस्म की राय।

गुण व कार्य—इसका मांस गर्मी बहुत करता, व गुस्सा बेगजब पैदा करता है। इसकी बीट का सुर्मा आंख की जाले व मांड़े और नजूल के पानी बहनेको मुफीद है, और इसका लेप झांई और काले दाग को मुफीद है, इसकी चर्बी बाह लाती है, और बाह को तहरीक यानी हरकत लाती है।

(जहरीला नहीं)

७४५—गोश्त घोड़े का

प्र०-गोश्त घोड़े का। सं०-अश्व मांसं। फा०-गोश्त अस्प। अ०-लहम उलफरस। रंग-लाल। स्वाद-नमकीन। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म स्वभाव वालों को। दर्प०-जोश कर लेना व मट्ठा व खट्टे अनार का पानी। मात्रा-मकरूह कई राय।

गुण व कार्य—इसके मांस का खाना बहादुरी व दिलेरी (हिम्मत) पैदा करता है और कड़े व मजबूत दिल वाला करता है, इसके कबाब सर्द स्वभाव वालों की बाह को हरकत देता हैं, इसका जला हुआ मांस मरतूब (आर्द्र) मिजाज वालों के दस्तों को बन्द करता है, इसका खून फोड़े बगैरा को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७४७—गोश्त गैंड़े का

प्र०-गोश्त गैंड़े का। फा०-करगदन। अ०-लहमउल जरबिस। रंग-लाल स्याहीमायल। स्वाद-सख्त व तेज़। पहि०-एक चौपाया जानवर है, जो हाथी से बड़ा सुअर सा होता है, माथे पर एक सींग होता है, इसकी चूतड़ की खाल बहुत सख्त होती है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-कातिल है। मात्रा-हराम है।

गुण व कार्य—पेशा में बहुत ही सुस्ती लाता है, यहां तक कि हलाकत (मौत) का सबब होता है, सींग बवासीर और कठिनाई से बच्चा होने को मुफीद है। इसकी चर्बी का मलना डरावना व बहादुर मालूम पड़ता है, इसकी खाल का निकाला हुआ तेल तिल तेल के साथ फोड़ों और जख्मों को भर लाता है और आराम करता है।

(जहरीला है)

७४७—गोश्त नट्टूरे का

प्र०-गोश्त नट्टूरे का। फा०-गोश्त काबकीना। अ०-लहमउल सकराक। रंग-गुलाबी। स्वाद-नमकीन। पहि०-एक पक्षी है, जो गौरैया से बड़ा होता है और गौरैया का शिकार करता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म स्वभाव वाले को सिरदर्द पैदा करता है। द०-सिकंजबीन। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—गलीज़ रियाह और बलगमी मवाद को खूब तहलील करने वाला है। और देर हजम और बीट का लेप चेहरे की स्याही और झांई को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

७४८—गोश्त लकलक का

प्र०-गोश्त लकलकका। फा०-गोश्त लकलक। अ०-लहमउल लकलक। रंग-सुर्ख स्याही माईल स्वाद-बुसान्दा व बदबूदार। पहि०-एक पानी का पक्षी है जो मजबूत बदन का होता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म स्वभाव

को। दर्पण-घी व धनियां। प्रति०-मोर। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—फालिज व लकवा और खिदर को मुफीद है। गलीज रियाह को तहलील करता है। और जो सर्दी से किसी अंग में पैदा हो गई हो तो उसको दूर करता है। जोफ़ बाहको मुफीद है। इसके अंडे अपने गुण में उसके मांस से अधिक गुणदायक है। इसके खून का मलना काले दाग को मुफीद है। इसकी बीट झांई और खाल के निशानों को खोती है।

(जहरीला नहीं)

७४९—गोश्त लवे का

प्र०-गोश्त लवे का। सं०-लावा मांसं। अ०-लहम उल सलवै। रंग-गुलाबी। स्वाद-नमकीन व खुश्क। पहि०-एक मशहूर पक्षी है जो फ़ाख्ता के बराबर और उसी की तरह का होता है, स्व०-गर्म २ खुश्क ३। हानि-देरहजम और काबिज है। दर्प०-सिर्का और घी। मात्रा हलाल है।

गुण व कार्य—दिमाग और जिगर को ताकत देता है। खाना खूब खिलाता है। दुबले लोगों के वास्ते अच्छा खाना है। सुद्दे खोलता है, जलंधर और खराब रियाहको तहलील करता है और फालिज को मुफीद है। आंतों की सर्दी को दूर करता है व पट्ठों की भी सर्दी को दूर करता है और बाह को हरकत देता है।

(जहरीला नहीं)

७५०—गोस्त लोमड़ी का

प्र०-गोश्त लोमड़ी का। सं०-शिवा मांसं। फ़ा०-गोश्त रोबाह। अ०-लहमउल सालब। रंग-लाल स्याही मायल। स्वाद-बुमान्दा व बदबूदार। पहि०-एक चौपाया और जंगली जानवर बिल्ली के बराबर होता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-खाया नहीं जाता। क्योंकि बाजे के लिये जहर है। दर्प०-सिकंजबीन व मीठा अनार और मठा। प्र०-न्योला। मात्रा-हराम है।

गुण व कार्य—इसको जिन्दा पकड़ कर और हाथ पांव बांध कर पानी में खूब पकावें जब कि गल कर रेशा रेशा हो जाय तब उस पानीसे धारना नुक़रस और गठिया को मुफीद है। इसकी चर्बी रोग़न जैतून के साथ मलना, कान के दर्द और गठिया को मुफीद है। इसकी जली हुई खाल आग के जले और बवासीर और जख्मों को लाभदायक है। इसका मांस खाना आबी जलंधरको मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७५१—गोशृत मुर्गाबी का

प्र०-गोश्त मुर्गाबी का। सं०-जल कुक्कटी मांसं। फा०-गोश्त मुर्गाबी व क़ाज़। अ०—लहम उल औज़ व तैरुल माय। रंग-खूब लाल। स्वाद-बुसान्दा व नमकीन। पहि०-एक पानी का पक्षी है जो कई तरह का होता है। स्व०-गर्म तर। हानि-निफाख और देर हजम है। दर्प०-अनार का पानी व आबकामा। प्रति०-बतख। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—खराब अहारत्व है। बदन को फ़रबे करता है, बाह को हरकत देता है। इसकी चर्बी की मालिश करना कुवाब व तमद्दुद और तशन्नुज इम्तलाइ को मुफीद है। सर्द वरमों और गुदा की सख्ती को तहलील करती है। गुदा के चिरने को नफ़ा देती है, खालके चिह्नोंको दूर करती है। इसके शिर का भेजा लगाना गुदा के वरम को

मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७५२—गोश्त मुर्गा व मुर्गी का

प्र०-गोश्त मुर्गा व मुर्गी का। सं०-कुक्कुट कुक्कुटी मांसं। फा०-गोश्त माकिया व खरोस। अ०-लहम उल दजाज व अल्दीक। रंग-गुलाबी। स्वाद-कुछ बुसान्दा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-जवान गर्म १ व तरी में मातदिल है, बच्चा तर है। हानि-इसका सदा खाना बवासीर व नुकरस पैदा करता है। दर्प०-घी। प्रति०-कबूतर। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—आहारत्व है व बुद्धी को तीव्र करता और बढ़ाता है। वीर्य अधिक पैदा करता है। दिमाग व याद और अदराक (अक्ल) व ज़हन को कुव्वत देता है। बाह जियादा लाता है। कुलंज को नफा देता है। रंग और आवाज को साफ करता है। अगर इसके पेट को फाड़कर और उसका मल साफ करके सांप के काटे हुए पर चिपका दें तो उसके जहर को दूर करता है। इसी तरह लीसर गुस और सरसाम को भी मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७५३—गोश्त ममोला व फितकी

प्र०-गोश्त ममोला व फितकी। फा०-गोश्त सरीचा व सगाना। अ०-लहमउल सफरा गून व सऊह। रंग-गुलाबी। स्वाद-नमकीन। पहि०-एक पक्षी गोरैया से बहुत छोटा होता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म स्वभाव को। प्र०-नटूरा। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—इसको भूनकर शहद के साथ काम में लाना गुर्दे व मसाने की पथरी को तोड़ बहाता है व मूत्र खूब लाता है और कठिनाई से मूत्र आने को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७५४—गोश्त मोर का

प्र० नाम-गोश्त मोर का। सं०-मयूर मांसं फा०-गोश्त ताऊस। अ०-लहमउल ताऊस। रंग-स्याही मायल। स्वाद-बुसान्दा। पहि०-एक पक्षी बहुत सुन्दर और चोटी वाला है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-देर हजम और गलीज़ है। दर्प०-गर्म मसाला। मात्रा—हलाल है।

गुण व कार्य—मेदे को कुव्वत देता है। इसका शोरवा जातुल जम्ब और पहलूके दर्दको मुफीदहै। इसकी चर्बी का तिला बाहको हरकत देताहै,इसकी जलाई हुई हड्डी का मञ्जन दांतों को मजबूत करता है। इसके पित्ते को सिकंजबीनके साथ पीना पुराने से पुराने दस्तो को बन्द करता है व खून का लेप जखमों को भर लाता है। और फायदा करता है, इसकी बींट मलना झांई और मस्सों को खोता है। इसकी पूंछ के पंख निकाले हुए का सुर्मा उत्तम है।

(जहरीला नहीं)

७५५—गोश्त महुवे का

प्र०-गोश्त महुवेका। फा०-गोश्त कालंजिया अ०-लहमउल अक़अक़ व अक़:। रंग-लाल स्याहीमायल। स्वाद-बुसान्दा व बदमजा। प०-काले रंग का है जो कौवे के बराबर होता है। बाजे लोग जंगली कौवा कहते हैं। स्व०-गर्म खश्क २। प्रति०-कौवा। मात्रा-मुख्तालिक राय।

गुण व कार्य—याददाश्त को मजबूत करता है। इसका सिर का भेजा बच्चोंके जहन को मजबूत

करता है। इसके पित्ते का पानी आंखों में डालना दृष्टि को बढ़ाता है। और आँखों के जख़म को मुफीद है। कहते हैं कि इसके पित्ते का सुर्मा लगाने वाला संसार की दृष्टि में प्यारा होता है। इसकी बींट झांई और काले दाग़ को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७५६—गोश्त कव्वे का

प्र०-गोश्त कव्वे का। सं०-वायस मांसं। फा०-गोश्त जाग। अ०-लहमउलगराबउल असूद रंग काला। स्वाद-बुसान्दा व दुर्गन्ध युक्त। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-फेफड़े को व देर हजम है। द०-गर्म मसाला। प्रति०-चील। मात्रा-अयोग्य है।

गुण व कार्य—अहारत्व नहीं है, इसके शोरबे का पीना गलीज रियाह और कुलन्जको दूर करता है। और ऐसाही इसके शोरबेमें बैठनाभी रियाहको तहलील करता है,इसकी बीट बीनाईको जिला देतीहै और झांई को दूर करती है और अगर काले कव्वे को जिन्दा एक बर्तनमें रक्खें और उसपर लोहचूर्ण और खटाई का पानी व तेज सिर्का डालकर बर्तन का मुख बन्द करके लीद में ४० दिन दबावें तो वह तेल हो जावेगा, यह उम्दा खिजाब होगा। मात्रा-खाना अयोग्य है। (जहरीला है)

७५७—गोश्त मगरमच्छ व घड़ियाल का

प्र०-गोश्त मगर मच्छ व घड़ियाल। सं०-मकर मांसं। फा०-गोश्त निहंग। अ०-लहम उल तमसाह। रंग-गुलाबी व सफेद। स्वाद-कड़वा व बुसान्दा। पहि०-एक पानी का जानवर है जो जोरावर और मजबूत पोटे वाला है। स्व०-गर्म २ खुश्क ३। हानि-पचने के समय रद्दी है। मात्रा-कई राय व हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—इसका मांस बाह को मजबूत और हरकत करता है, और दुबले पतले लोगों को फरबे करता है। कुलंज को नफ़ा देता है, इसकी लीद आंख के जाले को नफ़ा करती है, इसकी चर्बी गुलरोगन के साथ सिर के दर्द और आधासीसी को लाभ देती है, कान में डालने से बहरेपन और कान के दर्द को मुफीद है, इसकी मालिश गुर्दे व कमर के दर्द को फायदा करती है इसका दाहिनी ओर का दांत दाहिनी बाजू (भुजा) पर बांधना खासकर कुव्वत बाह को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७५८—गोश्त नीलगाय का

प्र०-गोश्त नीलगाय का। सं०-नील गौ मांसं। फा०-गोश्त नील गाव। अ०-लहमुल बक़र उल-बहस। रंग-गुलाबी स्याहीमायल। स्वाद-नमकीन। प०-एक जंगली चौपाया जानवरहै जो गायके बराबर और मजबूत पोटे वाला है। स्व०-गर्म २ खुश्क ३। हानि-नफ़ाख़ है। दर्पध्न-गर्म मसाला। मात्रा-योग्य है।

गुण व कार्य—शीघ्र पचता है, सौदा पैदा करता है, मूत्र लाता है, ठंडे स्वभाव वालों की बाह को क़वी करता है, इसका जलाया हुआ सींग कतीरे के साथ खून के बहने और योनि से रतूबत और खून जाने को मुफीद है।

(ज़हरीलानहीं)

७५९—गोश्त नीलकण्ठ का

प्र०-गोश्त नीलकण्ठका। सं०-नीलकण्ठमांसं। फा०-गोश्त सबजक। रंग-नीला। स्वाद-बुसान्दा

पहि०-एक पक्षी नीला व स्याही मायल और कबूतर के बराबर है। स्व०-गर्म खुश्क २। मात्रा-प्रत्येक को अयोग्य है।

गुण व कार्य—यह सौदा पैदा करता है और रियाह व बलगम के फिसाद को दूर करता है, खून के जोश को नाफै है। आतशक में इसका मांस खाना फायदेमन्द है। (जहरीला नहीं)

७६०—गोश्त न्योले का

प्र०-गोश्त न्योले का। सं०-नकुल मांसं। फा०-गोश्त रासू। अ०-लहम उल अरसइवन। रंग-गुलाबी। स्वाद-दुर्गन्धयुक्त। प०-एक जानवर चूहे की तरह का उससे लम्बा मोटी पूंछ का होता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-गर्म स्वभाव वालों को। दर्प०-सिर्का। प्र०-गोह। मात्रा-अयोग्य है।

गुण व कार्य—न्योले को मार के और पेट चाक कर भीतर का मल साफ करे, फिर रोगन जेत में इतना पकावे कि बिलकुल गलजाय, उस तेलको साफ और छानकर रख छोड़े तो गठिया व नुकरस पर ऐन फायदामन्द है, और रियाह बवासीरी को नफा देता है, लिंग और उसके चारों तरफ मलना मुजरब है। (आजमाया हुआ है) (जहरीला है)

७६१—गोश्त पोई व नकछिकनी का

प्र०-गोश्त पोई व नकछिकनीका। फा०-गोश्त बाक। रंग-गुलाबी। स्वाद-बुसान्दा। प०-एक पक्षी जो जल के किनारे रहता है, व बालिश्त भर का होता है, उसके सिर के पंख काकुल (जुल्फों) के से होते हैं। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-गर्म स्वभाव को। द०-खट्टी मेवा व सिकंजबीन। मात्रा-योग्य है।

गुण व कार्य—रियाह को तहलील करता है, फालिज के लिये बहुत मुफीद है, इसका निकाला हुआ तेल मलना फालिज के लिये नफा देता है, इसका पित्ता आंख के जाले और काले दाग को मुफीद है और बवासीर के लिये इसका मांस आजमाया हुआ है। (जहरीला नहीं)

७६२—गोश्त हाथी का

प्र०-गोश्त हाथी का। सं०-हस्तिमांसं। फा०-गोश्तपील। अ०-लहमउल फील। रंग-काला सुर्खी मायल। स्वाद-नमकीन बदमजा। पहि०-एक चौपाया जानवर बड़े शरीर और सूंड वाला मशहूर है। स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-खाया नहीं जाता। मात्रा—अयोग्य है।

गुण व कार्य—इसके पित्ते का सुर्मा बीनाई को जिला देता है और कुव्वत देता है, इसका नाखून आंख के जाले और मांड़े को छांटता है, इसका मूत्र पाना स्त्री के गर्भ रहने को आजमाया हुआ है। इसकी लीद का भींगा कपड़ा योनि में रखना गर्भ रहनेको हमेशाके लिये बन्द कर देता है, लीदकी धूनी पुराने बुखारोंको नफा देती है, खालका तावीज बवाई बुखार को मुफीद है, दांत का चूरा रजस्वला (हैज) के बाद गर्भ को मदद देने वाला है। (जहरीला है)

७६३—गोश्त हुदहुद

प्र० नाम-गोश्त हुदहुद। फा०-गोश्त मुर्ग सुलेमान व बूबक। अ०-लहम उल हुदहुद। रंग-गुलाबी। स्वाद-कुछ बुसान्दा। पहि०-एक पक्षी चोटी वाला व सुर्खी मायल और

काले पीले बुन्दे उसपर होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। मात्रा-योग्य है।

गुण व कार्य—सुद्दा खोलता है, कुलंज और पेचिश को मुफीद है, गुर्दे व मसाने में खून जमा हो जाने को तहलील करता है, इसका ताजा दिल घी में तला हुआ शहद के साथ जहन और हाफिजे को पक्का करता है और सुखाया हुआ दिल बाह को कुव्वत करता है, इसके पित्ते का सुर्मा आंख के जाले को नफा देता है, और अगर मारकर दरवाजे पर लटकाया जावे तो शहर को दूर करता और अम्बुलसिबियां को नफा देता है।

(जहरीला नहीं)

७६४—गोश्त हरगीले का

प्र० नाम-गोश्त हरगीले का। फा०-गोश्त मुर्दारख्वार। अ०-लहमउल रहमा। रंग-लाल। स्वाद-दुर्गंध युक्त। प०-एक जानवर है जो गधे के सा और उससे बड़ा उसके गले में एक थैली होती है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-प्यास लाता और खिलतों को जला देता है। मात्रा-हर तरह हराम है।

गुण व कार्य—इसकी सूखी हुई खाल का छिड़कना खून बहने को मुफीद है और जख्मों को भर लाता है, सिर्के के साथ दाद को नफा देता है, इस का पित्ता रोगन बनफ्सा के साथ कान में दूसरी तरफ डालना आधासीसी को खास तौर पर मुफीद है तजुर्बा किया हुआ है, इसकी बींटका हमूल(लत्ता) योनि में रखना बच्चे को गर्भ से गिराता है और हैज जारी करता है, इसका संगदाना सिर्के के साथ सफेद दाग को मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

७६५—गोश्त हिरन का

प्र०-गोश्त हिरन का। सं०-मृग मांसं। फा०-गोश्त आहू। अ०-लहम उल ज़बी व उलग़ज़ाल। स्वाद-रूखा फीका। पहि०-प्रसिद्ध चौपाया जानवर है। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-देर हजम और कुलंज पैदा करता है। दर्प०-सिकन्जबीन व खट्टी मेवा। प्रति०-गौ मांस। मात्रा-हलाल (योग्य) है।

गुण व कार्य—तमाम गुणों में मनुष्य के स्वभाव के मुआफिक है और उम्दा आहार है, खुश्की लाता है फालिज व इस्तरखा (बदन के ढीले होने को) और ठंडी बीमारियों को मुफीद है, इसकी खाल पर बैठना बाह को कम करता है व कीड़े मकोड़ों को भगाता है। (जहरीला नहीं)

७६६—गोश्त हंस का

प्र०-गोश्त हंस का। सं०-हंस मांसं। अ०-लहमउल रीहान। रंग-गुलाबी। स्वाद-कुछ बुसान्दा प०-एक पानी का पक्षी है जो लम्बी गरदन वाला सारस सा व उससे छोटा होता है। स्व०-गर्म तर। हानि०-नफाख और देर हजम है। दर्प०-गर्म मसाला। मात्रा-हलाल है।

गुण व कार्य—इसका मांस बाह (पुंसत्व) लाता है, भूख बढ़ाता है, ऐजा को कुव्वत देता है, सफरा की तेजी को दूर करता है, आवाज को साफ करता है, गालों के रंग को साफ व सुन्दर करता है और सुर्ख बादह (लाल फुंसियां) को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७६७—गोखुरु

प्र०-गोखुरु। सं०-गोक्षुरक। फा०-खारखुश्क। अ०-खुश्क। रंग-हरा पीला। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक घास कांटेदार प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म

खुश्क २। हानि-तिहाल को। दर्प०-बादाम। प्र०-तुख्म खयारैन। मात्रा-३ माशे से ६ माशे तक।

गुण व कार्य—मूत्र लाता है, गुर्दे व मसाने की पथरी को तोड़ बहाता है, तबिअत को नर्म करता है; रियाह को नाश करता है, कमर के दर्द व जलंधर और रियाही कुलंज को मुफीद है, वरम को तहलील करता है हैज जारी करता है।

(जहरीला नहीं)

७६८—गोखुरु का साग

प्र०-गोखुरु का साग। सं०-गोक्षुरक शाकं। फा०-तुरूह खार खुश्क। अ०-बक्लत उलखुश्क। रंग-हरा। स्वाद-कुछ फीका। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-खुश्क २। हानि-तिहाल को। द०-नमक। प्र०-खुर्फ का साग।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करता और पतला खून पैदा करता है, रियाह खूब जारी करता है, पचनेके वक्त रद्दी है और खूनको साफ करता है, और मूत्र व हैज जारी करता है, इसका ताजा रस सोजाक और मूत्रकी सोजिशको नफा देता है, इसका लेप वरम की सोजिश को नफा देता है।

(जहरीला नहीं)

७६९—गूगल

प्र०-गूगल। सं०-गुग्गुल। फा०-बुए जहूदान अ०-मिकल अर्जक। रंग-काला व लाल। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक पेड़ का जमा हुआ गोंद प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म ३ खुश्क २। हानि-फेफड़े और जिगर को। दर्प०-कतीरा व जाफरान। प्रति०-एलुबा और मुरमुकी। मात्रा-३½ माशे।

गुण व कार्य—जिला करता है और तबिअत को नर्म करता है, रियाह को तहलील करता है, बवासीर को नफा देता है, लसदार खिलतों को निकालता है। कजाज (गर्दन न मुड़ना) और गले के दर्द व सिरके दर्द और तर खांसीको मुफीद है, इसकी धूनी कीड़े मकोड़ों को भगाती है।

(जहरीला नहीं)

७७०—गूलर

प्र०-गूलर। सं-उदुम्बर। फा०-समर तुश: व अंजीर आदम। अ०-जमीज। रंग-कच्चा हरा पका लाल। स्वाद-कच्चा फीका पका मीठा। प०-अंजीर के बराबर एक प्रसिद्ध फल है। स्व०-गर्म २ तर १ बाजों के, नजदीक सर्द है। हानि-मेदे को और बुखार पैदा करता है। दर्प०-अनीसून व सिकंजबीन।

गुण व कार्य—इसका फल अफारा करने वाला और रद्दी खाना है व बसवास और सूखी खांसी व सीने के दर्द व तिहाल और गुर्दे के दर्द को मुफीद है, मुंह से खून आने को नफा देता है, नेत्रों की बीमारियों को पका हुआ मय कीड़ों (भुनगों) के खाना खास कर नफा देता है, इसका लऊक घास व दमे और पुरानी खांसी को मुफीद है, इसके पिसे हुये पत्ते दस्तों को बन्द करते हैं, इसकी लकड़ी की राख आतशक की चट्टों के लिये मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७७१—गुम्मा

प्र०-गुम्मा। सं०-द्रोणपुष्पी। रंग-हरी। स्वाद-फीकी। पहि०-एक घास छत्तेदार व गाल पत्ते की व सफेद और सुन्दर फूल वाली है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म स्वभाव को। दर्प०-अनार। प्रति०-कड़ का साग।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करता है, रियाह और बलगम के फिसाद को दूर करता है। कांवर को मुफीद है, ऐजा की सूजनको नफा करता है, पेट के कीड़े मार कर निकालता है, बवासीर को नफा देताहै,इसका साग पकाकर खाना भूखको खूब बढ़ाता है। इसके बीज पीस कर नाफ़ (नाभि) पर लेप करना इमसाक बढ़ाता है।

(जहरीला नहीं)

७७२—गोंद बतम का

प्र०-गोन्द बतम का। फा०-समग़ बतम। अ०-अलक उल बतम। रंग-स्याही मायल।स्वाद-कड़वा। पहि०-बतमके पेड़का गोंद है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-मुंह आजाता है। दर्प०-हब्बुल्लास के पत्तों के पानी से कुल्ली करना। प्रति०-मस्तगी।

गुण व कार्य—माद्दे को पाग करता है, वरम व रियाह को तहलील करता है, बलग़मी खांसी को मुजिर है, सूखी व तर खुजली को नफ़ा देता है, और तबियत को नर्म करता है। (ज़हरीला नहीं)

७७३—गुंडल

प्र० नाम-गुंडल। फा०-बेरजद। अ०-बरदी। रंग-हरी व पीली। स्वाद-कड़वी। पहि०-एक घास है जिसके पत्ते खजूर के पत्ते कैसे होते हैं और इसकी रस्सी बनाते हैं। स्व०-सर्द २ खुश्क १। हानि-पेट के ऐजा को। दप०-शहद।

गुण व कार्य—इसका पानी दांतों को जिला देता है, और खून बहने को बन्द करता है। इसका चबाना मुंह से प्याज की बदबू को दूर करता है, लहसुन और शराब की बदबू भी दूर करता है। इसके पत्तों का लेप बरमों को तहलील करती है, इसके जले हुये पत्ते सिर्क के साथ पीना तिहाल के वरम को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७७४—गोंदनी (प्रियंगु)

प्र०-गोंदनी। सं०-गोन्दनी। रंग-फल कच्चे हरे, पक्के लाल। स्वाद-कच्चा फीका पक्का मीठा। पहि०-एक पेड़ है जिसके फल गोलबराबर फालसे के लसदार होते हैं। स्व०-सर्द तर। हानि-इस पर पानी पीना गशी और मितली लाता है और नफ़ाख है। दप०-कन्द। प्रति०-सपिस्तां।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करती है, माद्दे को पाग करती है, पेट के कीड़े मारती है। खांसी को मुफीद है, आवाज को साफ करती है, बाह को बढ़ाती है, मनी को गाढ़ा करती है, इसके पत्ते व जड़ और टहनी की छाल मुंह आने और मुंह के दांतों को मुफीद है, पत्तों की राख जखम को मुफीद है। (जहरीला नहीं)

७७५—घुंघची

प्र० नाम-घुंघची। सं०-गुञ्जा। फा०-चश्म खरोस। अ०-ऐनउल दीक। रंग-पत्ते हरे, बीज लाल। स्वाद-कड़वा व फीका। पहि०-एक बेलदार प्रसिद्ध घास है,उसका यह फलका बीज है। स्व०-गर्म ३ खुश्क १। हानि-गर्म स्वभाव को और शिर दर्द पैदा करता है। दर्प०-सूखा धनिया और ताजा दूध। मात्रा-१ माशा।

गुण व कार्य—फ़रहत बख़शती है, पट्ठों को कुव्वत बख़शतीहै और कुव्वतों की निगहबानी करती है, बुढ़ापे को नफा देती है, कुव्वत बाह और मनी के बढ़ाने को मुजर्रब (आजमाया हुआ) है, इनमें उम्दा सफेद है।

(जहरीला है)

७७६—घी

प्र०-घी। सं०-घृत। फा०-रोगन जर्द। अ०-समन व जब्द। रंग-सफेद व पीला व चिकना। स्वाद-फीका। पहि०-दूध को जमा के उसकी चिकनाई मथ कर निकालते हैं। स्व०-गर्म तर १। हानि-मेदे में सुस्ती पैदा करता और भूख मारता है। दर्प०-नमक व शहद। प्रति०-ताजा दूध। मात्रा-२ तोले।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करता है, माद्दे को पाग करता है। बदन को फरबै करता है, ऐजा को मजबूत करता है। सुद्दा खोलता है, आवाज को साफ करता है, सीने की खुखुराहट को दूर करता है। हलक़ की खुश्की को दूर करता है। सूखी खांसी को मुफीद है। तबिअत को फरहत देता है, दिमाग को कुव्वत देता है। बच्चों के मसूढ़ों पर मलने से दांत आसानी व जल्दी से निकलते हैं, अक्सर गर्म व खुश्क जहरों का मारने वाला है।

(जहरीला नहीं)

७७७—घी कुवार

प्र०-घी कुवार। सं०-कुमारी। फा०-कैकरा। अ०-इवारा। रंग-बाहर हरा व गूदा सफेद। स्वाद-कड़वा व बदबूदार। पहि०-एक पेड़ है जिस में फ़क़त पत्ते ही होते हैं, शाखा नहीं होती, पत्ते बहुत मोटे जिसके भीतर गूदा लुआबदार होता है, इसी को पकाकर ऐलुवा बनाते। स्व०-गर्म खुश्क१ और बाजे ३ में कहते हैं। हानि-गर्म स्वभाव वालों को। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—सफरावी माद्दे को दस्तोंकी राह निकालता है, अक्सर बलगमी मर्जों को नफा देता है। तिहाल और पेट के दर्द को मुफीद है, खाना खूब हजम करता है। भूख बढ़ाता है, इसके गूदे में ५ तोले बेसन गुन्दे हुए की रोटी बहुत से घी में मल कर शकर से खाना बाह को मजबूत करता है, पत्ते के गूदे को आंबा हल्दी के साथ लेप करना वरम और सख्तियों को तहलील करता है, और इसी तरह आंख की चोट और सुर्खी को फिटकरी के साथ मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७७८—गेरू

प्र०-गेरू। सं०-गैरिक। फा०-गिलसुर्खमिसरी। अ०-तैनउल अमहर मग़रबी। रंग-लाल। स्वाद-फीका। पहि०-एक मिट्टी की डली प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-आंतों व तिहाल को और सुद्दा पैदा करता है। दर्प०-मस्तगी। प्रति०-कतीरा व गिल क़बरसी। मात्रा-५ माशे से माशे तक।

गुण व कार्य—काबिज है, खुश्की लाता है, मवादको पुख्ता करताहै, खूनकोबन्द करताहै, गर्मीको तस्कीन देताहै, अक्सर ऐजाकी गर्मी को दूर करता है। आंतोंकी खराश व ज़ख़म व मसाना की जख्म व बवासीर और जिर्यान को मुफीद है, हैज़ के खून को बन्द करता है और कीड़े मारता है, इसका लेप वरम को तहलील करता है।

(जहरीला नहीं)

७७९—गेंदे का फूल

प्र०-गेंदे का फूल। फा०- गुलसद बर्ग। रंग-लाल पीला, पत्ते हरे। स्वाद-फीका व तेज व तेज बू। पहि०-एक घास का बड़ा फूल है जो सुन्दर होता है और बरसात में जमता है। स्व०-गर्म खुश्क। प्रति०-दौना मरुवा।

गुण व कार्य- इसके पत्तों का रस कान में डालना कान के दर्द को लाभ देता है, छातियों के वरम को तहलील करता है, मूत्र लाता है, इसके पत्तों के जोशान्दे की कुल्ली दांतों के दर्द को दूर करती है। इसके पत्तों का रस नमक व काली मिर्च के साथ पीना बवासीर को नफा देता है। इसके फूल की डोंड़ी का सफूफ शकर और खालिस दही के साथ १ तोला दमे और खांसी के लिये मुजर्रब है, इसमें पानी से बचना चाहिये।

(जहरीला नहीं)

७८०—गेहूँ

प्र०-गेहूँ । सं०-गोधूम । फा०-गन्दुम । अ०-हिंजः। रंग-पीला व सफेद व लाल। स्वाद-कुछ मीठा। पहि०-एक प्रसिद्ध अनाज है। स्व०-गर्म १ मौतदिल। हानि-सुद्दे वालों को व पट्ठों के रोग को। दर्प०-सिर्का व कलौंजी। प्रति०-जौ।

गुण व कार्य—इसकी रोटी सुबह व शाम के लिये सब आहारों से उत्तम आहार है, आहारत्व है, अच्छा खून पैदा करता है। बदन को फरबै करता है, इसके आटे की खमीरी रोटी अफारा लाती है, तबिअत को नर्म करने वाली है, गेहूँ चबा कर गिल्टियां वगैरा पर लेप करना मवाद को पुख्ता व तहलील करता है, इसके आटे की महेरी नीम के पत्तों के रस में पकाई हुई फोड़ों और बद को मुफीद है। इसका तेल दाद, झांई और सफेद दाग को नफा करता है, कच्चे गेहूँ खाना मेदे में कीड़े पैदा करता है।

(जहरीला है)

७८१—गेहूँ जंगली

प्र०-गेहूँ जंगली। सं०-वन गोधूम। फा०-गन्दूमदस्ती। अ०-हीसर। रंग-हरा दाना काला। स्वाद-कुछ कड़वा व फीका। पहि०-एक घास गेहूँ की तरह की होती है जो गेहूँ से लम्बी और सख्त होती है। स्व०-गर्म १ तर २। हानि-फेफड़ों को। दर्प०-गूगल व कतीरा। प्र०-काला दाना। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य—मादे को पक्का और पाग करता है, दस्तावर है, रियाह व वरम को तहलील करता है, खुरका लाता है, सख्त वरमों को नर्म करता है, मेद के कीड़े मारता है, चाकसू और मिश्री के साथ इसका सुर्मा आंख के रोहे और गुहेरी को दूर करता है और मुफीद है, इसका लेप सूखी खुजली और सख्त वरमों को शुरू में और बालखोरह (ऊंदरी) को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

बाब उल लाम (ल)

इसमें २६ दवाइयां हैं

७८२—लाजवर्द

प्र०-लाजवर्द। फा०-राजावर्त्त। अ०-लाजवर्द। रंग-जंगाली व सुनहरी नुकतेदार। स्वाद-फीका। पहि०-एक पत्थर फीरोजई प्रसिद्ध है। स्व०-शुद्ध किया हुआ सर्द खुश्क १। बगैर शुद्ध किया गर्म खुश्क १। हानि-मेदे को व क़ै और ग़शीलाता है। प्रति०-हुज्र अरमनी। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य—जिला करता है, खिलतों को साफ करता है, सौदावी मादे को दस्तों की राह निकालता है, ग़लीज़ खिलतों को भी निकालता है, मालिखौलिया व गुर्दे के दर्द और वहशत व ग़म और मर्ज़ सौदाविया को मुफीद है, क़ाबिज है,

और फरहत देने वाला है, दिल को कुव्वत देता है, नेत्रों की बीमारियों यानी पानी जाना आंसू अधिकतासे निकलना, जाला व माड़े को मुफीदहै, इसकी सलाई मुनासिब दवाइयों के साथ बनी हुई खास कर आंख की बीमारियों को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७८३—दरफ़रंगी लदान

फा०-दरफ़रंगी लदान। अ०-लाजन। रंग-काला सुर्खी मायल। स्वाद-सुगंधित व कुछ कड़वा पहि०-एक पहाड़ी पेड़ की रतूबत लसदार है जो मुल्क फ़िरंगस टिकिया बनकर आतीहैं। स्व०गर्म १ खुश्क ३। हानि-गर्म स्वभाव को और दर्द पैदा करती है। मात्रा—३ मा०।

गुण व कार्य—लताफ़त बख्शाता है, मादों को पुख्ता और पाग करता है, वरम व रियाह को तहलील करता है, मूत्र व हैज और दूध जारी करता है, मेदे व जिगर को कुव्वत देता और हिचकी को दूर करता है, सर्दी के दर्दों को मुफीद है, बच्चे को शीघ्र उत्पन्न कराता है, उन जख्मों को जो किसी तरह न भरें, भरलाता है, इसका हमूल खुनाक़रहम और सख्ती रहम को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७८४—लागिया

अ०-लागिया। रंग-स्याही मायल। स्वाद-कड़वा। पहिचान-एक दूधवाली घास का दूध है जिसके पत्ते गोल पीले और फूल भी पीला होता है स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-आंतों को। दर्प०-कतीरा। प्रति०-फ़रासियून व महमूदा। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—बहुत दस्तावर है, कै बहुत लाती है, इस लिये जक़ी यानी मरक़ी जलंधर को मुफीद है, पीले पित्तों और जले हुये खिलतों को निकालती है, यह अपने गुण में महमूदा के बराबर है, जिस तालाब में मछलियां हों उसमें डालने से मछलियां मर कर ऊपर आ जाती हैं।

(ग़ैरसमी बाजे करीब व़सम कहते हैं)

७८५—लाख

प्र०-लाख। सं०-लाक्षा। फा०-लाक। अ०-लक। रंग-पीली सुर्खीमायल। स्वाद-फीकी। पहि०-कई प्रकार के पुराने पेड़ों में गोंद सा पैदा होता है, जैसे वेरां व पीपल और पाखर में बहुत होता है। स्व०-गर्म २ खुश्क ३। धोया हुआ लतीफ है। हानि-तिहाल और सीने को। द०-मस्तगी। प्रति०-रेवन्द व तवासीर। मात्रा—४ माशे।

गुण व कार्य—जिला करती है, वरम को तहलील करती है, ख़िलतों को पाक करती है, जिगर व तिहाल का सुद्दा खोलती है, फ़ालिज व खांसी व धांस व कांवर और जलंधर को मुफीद है, जोफ़ गुद को नफा और जिगर को बलवान करती है, रियाह को तहलील करती है, शरीर को दुबला करती और बाह को कुव्वत देती और इमसाक (स्तम्भक) लाती है। (जहरीली नहीं)

७८६—लाल

प्र०-लाल। सं०-माणिक्य। फा०-लआल। अ०-लआल बदख्शां। रंग-लाल व चमकदार। स्वाद-फीका। पहि०-एक लाल रङ्ग व रोशन व बुर्राक पत्थर है जो सब पत्थरों से उम्दा और मशहूर है। स्व०-मौतदिल व हरारत मायल। मात्रा—१ जौ से २ जौ तक।

गुण व कार्य—रूह को फ़रहत देता है और दिल व दिमाग व क़वाये तबई व नफ़सानी को और पट्ठों व बीनाई को कुव्वत देता है, और याकूत अहमर से गुण में अधिक है, बहते हुये खून और बवासीर के खून को बन्द करता है। कुल सौदावी बीमारियों को फ़ायदे, मन्द है, अक्सर जहरों को मारने वाला है।

(जहरीला नहीं)

७८७—लाल

प्र० नाम-लाल साग। फ़ा०-किश्तः व हजार दन्दक। अ०-असी उल रायी। रंग-बैंजनी व लाल। स्वा०-कुछ मीठा। पहि०-एक प्रकार का प्रसिद्ध साग है जो कई किस्म का होता है। स्व०-सर्द ३ खुश्क १। हानि-फेफड़े को। द०-सन्दल व अंजीर व शर्बत बनफ्शा। प्रति०-चौलाई।

गुण व कार्य—क़ाबिज है और मवाद को पुख्ता करता है, खून बहने को बन्द करता है, मुंह से खून आने को मुफ़ीद है, सफरावी क़ै और दस्तों को रोकता है, और बहुत पुराने से पुराने सफरावी दस्तों और हैज को बन्द करता है, बाहरी व भीतरी हरारत को तस्कीन देता है, कुलंज को मुफ़ीद है, इसका लेप मेदे की सोजिश को तस्कीन देता है, और सर्द करता है, इसके पत्तों का रस कान के दर्द को तस्कीन देता है।

(जहरीला नहीं)

७८८—लाला

प्र० नाम-लाला। फा०-लाला। अ०-शक़ाइक नअमान। रंग-लाल व पीला भीतर कुछ काला। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक घास जिसके पत्ते और पेड़ बिल्कुल मिलते जुलते अफीम के पेड़से होते हैं और फूल सुन्दर होता है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-गुर्दे व मसाने को मात्रा-३ माशा।

गुण व कार्य—लताफ़त देता है, सुद्दे व मसाम खोलता है। इसका सुखाया हुआ फूल पेट के खाल के दर्द को मुफ़ीद है और अक्सर ऐज़ा के दर्द को मुफ़ीद है, इसका सफ़ूफ़ दूध के साथ पीना मूत्र व हैज और दूध को जारी करता है और बाह लाता है और इमसाक करता है, और किसी क़दर ऐजा को सुस्त करता है।

(जहरीला नहीं)

७८९—लाई

प्र०-लाई। फा०-कुंजदह। अ०-अंजरूत व कुहल वाशी। रंग-लाल व सफेद व जर्दीमायल। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक कांटेदार पेड़ का गोंद है जिसको अर्बी में साइला कहते हैं। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-आंतों को। दर्प०-समैरार्वी व बादाम रोगन। प्रति०-निशास्ता और एलुवा। मात्रा-४ माशे।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म और वरमों को तहलील करता है। रियाह को भी तहलील करता है, सुद्दे को खोलता है, खुश्की लाता है। बलगमी माद्दे को दस्तों की राह निकालता है। जख्मों को भर लाता है, लस के सबब आंतों और रगों के मुंह में चिपक कर सुद्दा पैदा करता है। बच्चे को मियाद से पहिले गिरा देता है, और फ़र-बही लाता है। मेदे के कीड़े मार निकालता है, चमड़े के निशानों को दूर करता है, गठिया और जख्मों से खून बहने को मुफ़ीद है (जहरीला नहीं)

७९०---लैली

प्र०-लैली। रंग-पीली। स्वाद-जड़ खुशबूदार पहि०-एक हिन्दी प्रसिद्ध घास है। स्व०-गर्म तर।

गुण व कार्य—खास कर बवासीर के खून को बन्द करती है, इसके बीज की गिरी आंख की बीमारियों को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७९१---लखोट व लकूट

प्र०-लखोट लकूट। रंग-पीला। रसदार व कच्चा खट्टा। पहि०-एक पेड़ का फल है जो आलू बुखारे की बराबर होता है। इसके भीतर बीज गुलाब जामन के बराबर होता है। स्व०-सर्द तर।

गुण व कार्य—सफरा व खून की तेजी को दूर करता है, और अक्सर सफरावी और खूनी बीमारियों को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

७९२—लजालो व छुईमुई

प्र०-लजालो व छुईमुई। सं०-लज्जावन्ती। रंग-हरी। स्वाद-कसैली व कुछ कड़वी। पहि०-एक घास है जो दो प्रकार की होती है। एक दरिया के किनारे और दूसरी जंगली-एक सायेसे कुम्भला जाती है, दूसरी छूने से, पत्ते इनके बबूल के से होते हैं। स्व०-सर्द तर २। हानि-तिहाल को। दर्प०-शहद। प्रति०-बर्गे दफ़ली। मात्रा-खाते नहीं हैं।

गुण व कार्य—वरम को तहलील करती है, और जिला करती है, बलगम और सौदावी खालिस को दस्तों की राह निकालती है। हैज जारी करती है, जब कि गर्मी से बन्द हो गया होवे, बच्चे को पैदा करती है, गर्मी का सुद्दा खोलती है, आतशक व कोढ़ और फ़ीलपां को व खिलाने और पिलाने से मुफीद है। इसके रस (अर्क) की बूंदें टपकाना पुराने जखमों और नासूर को मुफीद है, इसके रस से पारे का कुश्ता उम्दा तैयार होता है।

(जहरीला नहीं)

७९३---लछमना लछमनी

प्र०-लछमना लछमनी। सं०-लक्ष्मणा। फा०-संगशिकन व मोहरा गयाह। अ०-यबरोजाउल सनम व असतु। लफाहउलबरी। रंग-सफेद और भूरी। स्वाद-कड़वी व तेज बू। पहि०-एक जंगली जड़ है जो सूरत व शक्ल में दो आदमी लिपटे हुए से दो प्रकारकी नर व मादा है। स्व०-सर्द खुश्क२। हानि-रूह नफ्सानी (स्वांस) को। दर्प०-दारचीनी और शहद। प्रति०-धतूरा। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—इसकी जड़ की छाल खुश्की लाती है और: ऐजा को सुस्त और बेहोश करती है। जाफरान के साथ इसको पीना जोड़ों के दर्द को मुफीद है। शहद के साथ सफरा को क़ै की राह निकालती है, इसको गले में लटकाना मिर्गीके लिये लाभदायकहै, इसके आंसूका इस्तैमाल दर्दों को तस्कीन देता है। किसी अजू को आफत के वक्त काटने पर इसको पिलाते हैं, जिससे कि बीमार बेहोश हो जावे और तकलीफ न मालूम हो।

(जहरीला है)

७९४--लोवान व लबान

प्र०-लोबान व लबान। सं०-लोबान। फा०-दरखश खक। अ०-जरू। रंग-पीला व भूरा। स्वाद-सुगंध व कड़वा। पहि०-एक पेड़ का गोंद मस्तगी की तरह सूखा हुआ है। स्व०-गर्म २ खुश्क २। हानि-गर्म स्वभाव वालों को। दर्प०-

काहू का शीरा । प्रति०-हब्बुल वतम व मस्तगी । मात्रा-६ माशे ।

गुण व कार्य--मेदे और बाह को कुव्वत देता है, भूख खोलता है, रियाह को तहलील करता है । आंव व बलगम को छांटता है, पेट को गुम करता है, सर्दी की खांसी को मुफीद है, इसकी कुल्ली और मंजन दांतों के दर्द को मुफीद है, इसकी लकड़ी की बुकनी खून बहने को मुफीद है, इसकी धूनी कमर और जोड़ों के दर्द को मुफीद है और कीड़ों को भगाती है ।

(जहरीला नहीं)

७९५---लोबिया

प्र०-लोबिया । सं०-लोबिया । फा०-लोबिया व लोवह । अ०-फरीका । रंग-जर्दी मायल । स्वाद-फीका । पहि०-एक अनाज है, इसकी फली बाकला की फली से लम्बी होती है । स्व०-गर्म १ तर २ । हानि-नफ्फाख व देर हजम है । दर्प०-सोंठ व जीरा व नमक । प्रति०--बाकला ।

गुण व कार्य--जिला करता है वरम को तहलील करती है, मूत्र लाता है, सीने व फेफड़े को नर्म करती है, मनी और दूध पैदा करती है, बाह जियादा पैदा करती है, बदन को फरबै करता है, खून फिसाद (जच्चा औरत का खून) से पाक करती है, बच्चा शीघ्र पैदा करती है और गुर्दे के दर्द को मुफीद है ।

(जहरीला नहीं)

७९६---लोध पठानी

प्र० नाम-लोध पठानी । सं०--लोध्रम् । रंग-सफेद । स्वाद-कुछ कड़वा । पहि०-एक हिन्दी पेड की छाल प्रसिद्ध है । स्व०-गर्म खुश्क २ । हानि-काबिज है । मात्रा-३ मा० ।

गुण व कार्य-आंख को कुव्वत देती है, बलगम के फिसाद को दूर करती है, हैज के खून को बन्द करती है, मनी को गाढ़ा करती है, बाह को कुव्वत देती है, बाज २ माजूनों में भी शामिल किया जाता है ।

(जहरीला नहीं)

७९७--लौंग

प्र०-लौंग । सं०-लवंग । फा०-मेखक । अ०-करनफल । रंग-काली । स्वाद-तेज व तेज बू । पहि०-एक जंगली पेड़ का फल है । स्व०-गर्म खुश्क २ । हानि-गुर्दे व आंतों को । दर्प०-समगअर्बी प्र०-दारचीनी व जावित्री । मात्रा-१ मा० से ४ माशा तक ।

गुण व कार्य—फरहद लाती है और अरवाह (रूहें) को कुव्वत देती है, और भीतरी ऐजाये रईसा को व दिमाग व जहन और जिगर को कुव्वत देती है, बाह अधिक करती है, सर्दी के सिर दर्द को दूर करती है, फालिज व लकुवा और सकता व नजलों को मुफीद है, कुल दिमागी बीमारियों को नफा करती है, सुद्दे खोलती है इसका सुर्मा आंख को कुव्वत देता है, बीनाई को तेज करता है, आंख के सबल को और नासूर को मुफीद है ।

(जहरीला नहीं)

७९८---लोनिये का साग

प्र०-लोनिये का साग । सं०-अम्ल लोणिका । फा०-लोके का साग । अ०-बक्लतउलहमका । रंग-हरा सुर्खी मायल । स्वाद-खारा व खट्टा । पहि०-एक खारी जमीन का खुदरी साग किस्म खुर्फे की

है। स्व०-ताजा सर्द खुश्क व सूखा गर्म खुश्क। हानि-नफाख है और तिहाल को मुज़िर है। दर्प०-पौदीना व मस्तगी। प्र०-खुर्फा।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करता है, बलगम बढ़ाता है, सफरा व खून के जोश को तस्कीन देता है, प्यास व गर्मी को भी तस्कीन देता है, जिगर व मेदे की गर्मी को दूर करता है, गर्मी के बुखारों को नाफे है, इसके पत्त पीसकर काली मिर्च के साथ पीना नकसीर और मूत्र में खून आने को मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

७९९—लोहा

प्र०- लोहा। सं०-लौहम्। फा०-आहन। अ०-हदीद। रंग-काला व चमकीला। स्वाद-कसैला। पहि०-एक खान की धातु है पहले इसकी खानें हिन्द में थीं। स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-शिर दर्द लाता है। दर्प०-मस्का (नवनीत)। प्रति०-रांगा व जस्ता।

गुण व कार्य—खुश्की लाता है, बवासीर,रियाह को नाफे है, मेदे को कुव्वत देता है, इमसाक करता है, वाह लाता है, इसका खिजाब बालों को खूब काला करता है, फौलादी लोहे का पानी बुझाया हुआ और उसका अर्क ऐजा को करख्तगी (सख्ती) देता है और हिद्दत सफरा व खून के जोश को नाफे है। (जहरीला नहीं)

८००—लोहचून

प्र०-लोह चून। सं०-लोह चूर्णम्। फा०-तफाल आहन। अ०-तराल उल हदीद। रंग-काला। स्वाद-कसैला। प०-लोहे का बुरादा बारीक रेत की तरह है। स्व०-गर्म खुश्क ३।

गुण व कार्य—दस्तों और खून को बन्द करता है, जोफ मेदे के दस्तों को मुफीद है, जोफ बाह को नाफे है, मुनासिब दवाइयों के साथ बवासीर को मुफीद है, इसका खिजाब उम्दा होता है।

(जहरीला नहीं)

८०१—लोहे का मैल

प्र०-लोहे का मैल। सं०-मण्डूरम्। फा०-चरक आहन रेम आहन। अ०-खबसउलहदीद। रंग-काला। स्वाद-बहुत कसैला। प०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म २ खुश्क ३। हानि-फेफड़े को। दर्प०-कतीरा व शहद। प्रति०-अंडे का छिलका। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—बहुत खुश्की करता है, मेदे व दिल और दिमाग़ को कुव्वत देता है, मुख से खून आने को मुफीद है। हैज जारी करता है, बवासीर और तिहाल को नाफे है, वरम को तहलील करता है, बाह जियादा करता है, आवाज को साफ करता है, सुलसुलबोल (बार २ मूत्र) होने को नफा देता है, आंतों व मसाने के जखम को मुफीद है। इसका खिजाब उत्तम होता है। इसका खाना बगैर बरस्ता (बिना भूने) जायज नहीं है।

(जहरीला नहीं)

८०२—लहसन

प्र०-लहसन। सं०-लशुनम्। फा०—सीर। अ०-सौम। रंग-सफेद। स्वाद-कड़वा व तेज। पहि०-एक घास की जड़ प्याज की तरह की है। स्व०-गर्म खुश्क ३ और विषघ्न है। दर्प०-कतीरा व धनियां और बादाम रोगन। प्रति०-प्याज। मात्रा-१ माशा।

गुण व कार्य—रियाह और वरम को तहलील करता है, जिला करता है, मेदे की रतूबत को सुखाता है, मूत्र व हैज जारी करता है, आवाज साफ करता है,हलकको साफ करता है,धांस व दमे और पट्ठों की बीमारियों को नफा देता है। फ़ालिज व लकवा और राशा को मुफीद है, सर्दी से कान के दर्द के लिये इसका कान में रखना नफा देता है, भीतरी और जाहरी जिल्द (खाल) में जखम डाल देता है बाह को कुव्वत देता है और पथरी को तोड़ बहाता है। (जहरीला नहीं)

८०३—लहसोडा (लभेरा)

प्र०-लहसोड़ा। सं०-श्लेष्मातक। फ़ा०-सपिस्तां। अ०-सपिस्तां व दबक। रंग-कच्चा हरा। पक्का गुलाबी। स्वाद-कच्चा फीका व पक्का मीठा। पहि०-एक पेड़ का लसदार व गोल झड़बेरी के बेर की बराबर फल है। स्व०-मौत दिल। हानि-मेदे व जिगर को। दर्प०-उन्नाब व,गुलमुख। प्र०-खतमी। मात्रा- १० दाने।

गुण व कार्य—पेट और सीने को नर्म करता है। हलक के खुरखुराने को और हलक के वरम को नफा करता है, सफ़रावी मवाद को दस्तों की राह निकालता है, बलगमी व खूनी मवाद को छांटता है तेजी सफरा व खून और प्यासको,तस्कीन देता है, मूत्र की चिनक को दूर करता है, आंतों की खराश और गर्मी को तप को मुफीद है, दमे और सूखी खांसी व सीने के दर्द को नफा करता है। इसकी कोंपल बार २ मूत्र आने और सोजाक को नाफै है। (जहरीला नहीं)

८०४—लहसुन जंगली

प्र० नाम-लहसुन जंगली। फ़ा०-सीर दस्ती। अ०-अस्कूर व सूम। रंग-हरा। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक जंगली घास लहसुन कीसी उससे कुछ छोटी होती है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-गर्म स्वभाव और आंतोंको। द०-धनियां व खट्टा अनार। प्रति०-जंगली प्याज। मात्रा-२ माशा।

गुण व कार्य—रियाह व वरम को तहलील करता है, जिला करता है और तिहाल की बीमारियों को नफा देता है, जलंधर को मुफीद है, मूत्र व हैज खूब जारी करता है और चमड़े (खाल) में जखम डालता है।

(जहरीला नहीं)

८०५—लीमू कागजी

प्र०-लीमू कागजी। सं०-निम्बूकः। फ़ा०-लीमू कागजी। अ०-लीमू हामिज। रंग-पीला व कच्चा हरा। स्वाद-खट्टा। पहि०-एक फल है, जिसका रस खट्टा होता है, इसकी कई किस्में हैं स्व०-सर्द ३ तर २ बाजे खुश्क २ कहते हैं। हानि-पट्ठे व सीने व बाह को। दर्प०-उन्नाब व शकर। प्र०-नारंज।

गुण व कार्य—जिगर को कुव्वत देता है, सोजिश व प्यास को,दूर करता है, कांवर व मितली और सफरावी कै को मुफीद है, खिलतों को छांटता है, सफरावी बुखार को नाफै है, वबाई हवा के फिसाद व कीड़े मकोड़े के जहर को दूर करता है, माना गया है कि कालीमिर्च व नमक पिसे हुये के साथ हैज को मुफीद है, इसके अर्क में चाक्सू हल किया हुआ जस्ते के बर्तन में आशोब चश्म को मुफीद है, इसका सूंघना नजले को बन्द करता है और मनै करता है। (जहरीला नहीं)

८०६—लीमू मीठा

प्र०—लीमू मीठा। सं०—मिष्ठ नीम्बू। फा०—लीमू शीरीं। अ०—लीमू हलू। रंग—पीला। स्वाद—मीठा। पहि०—नीबू की तरह और उसके बराबर मीठा फल है। स्व०—गर्म तर। हानि—पित्तों को उभारता है। प्र०—खट्टा लीमू। दर्प०—तुरंज।

गुण व कार्य—गर्मी और प्यास को तस्कीन देता है, मेदे व दिल को कुव्वत देता है, फरहत बख्शता है। खून की हिद्दत व तेजी को दूर करता है खफक्कान और दिल के हिलने को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

८०७—लीमू के बीज

प्र०—लीमू के बीज। सं०—निम्बु बीजम्। फा०—तुख्मलीमू। अ०—बज्रुल् लीमू। रंग—सफेद। स्वाद—मीठा। पहि०—प्रसिद्ध है। स्व०—सर्द खुश्क २। हानि—सदर (सीने) को। द०—सौंफ। प्र०—चारतंग। मात्रा—२ माशा।

गुण व कार्य—काबिज है और दस्तों को बन्द करते हैं, कै को रोकते हैं, खासकर भुने हुये काली मिर्च व नमक के साथ पीसकर पीना प्यास और बच्चोंकी डाँक (पेट बढ़ने)को मुफीद है और तुख्मे (बद हजमी) को नफा देता है।

(जहरीला नहीं)

बाबउल मीम (म)

इसमें ७२ दवाइयाँ हैं

८०८—माईं छोटी

प्र०—माईं छोटी। सं०—लघु माईं। फा०—बारगज व गजबार। अ०—अजबा व समरउल असल। रंग—भूरी सुर्खी मायल। स्वाद—कड़वी। पहि०—झाऊ के पेड़ का फल है, जो चने के बराबर और उससे कुछ बड़ा होता है। स्व०—सर्द २ खुश्क ३। हानि—शिर व सीने को। दर्प०—दोको व तुख्म कदू। प्रति०—माजू व अनार का गूदा। मात्रा—७ माशे तक।

गुण व कार्य—काबिज है, रतूबतों को छांटता है, शकर के साथ हांपने व खांसी को मुफीद है, जोफ जिगर व ज़ोफ़ ऐजाये शिकमी और दस्तों को नफा देता है, मुख से खून आने और खून बहने को मुफीद है, इसका लेप सिर्के के साथ तिहालको नफा देता है, इसका मंजन मसूढ़ों और दांतों को कुव्वत देताहै और मजबूत करता है, मुंहके दानोंको मुफीद है, इसका गगंरा भी दांतों के दर्द को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

८०९—माईं बड़ी

प्र० नाम—माईं बड़ी। फा०—कज्ज बाज़ाज। अ०—समतह उलतुर्फा। रंग—भूरी सुर्खी मायल। स्वाद—कड़वी। पहि०—झाऊ के छोटी किस्म के पेड़ का बड़ा फल जो छोटी माईं से बड़ा व तिकोना होता है। स्व०—सर्द खुश्क २। हानि—शिर को। दर्प०—दोका। प्रति०—माजू। मात्रा—२ माशे तक।

गुण व कार्य—मवाद को पुख्ता करती है, तिहालके वरमको तहलील करती है और काबिज़ है, दस्तों को बन्द करती है, रहमकी रतूबत को छांटती है, फेफड़े के जख्म को मुफीद है, इसका गगंरा हलक व सीने की बीमारियों को मुफीद है, यह जली हुई मुर्दासंग व धोये घी के साथ गंज और शिर के दानों को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

८१०—माजू

प्र० नाम-माजा । सं०-मया फलम् । फ़ा०-माजू । अ०-अफसं । रंग-भूरा स्याही मायल । स्वाद-कड़वा । पहि०-एक पेड़ का फल है जो गोल और चपटा बेर के बराबर होता है । स्व०-सर्द १ खुश्क १ । हानि-सीने व हलक़ को । दर्प०-कतीरा व समग़अर्बी । प्रति०-पीली हैड़ व अनार का छिलका । मात्रा-४माशे ।

गुण व कार्य—पुराने दस्तों को बन्द करता है, रहम की रतूबत को सुखाता है, इसका खिसान्दा नकसीरको बन्द करता है औरआंखकी बीमारियोंको नाफे है, इसका मंजन मसूढ़ों व दांतों को कुव्वत देता है और मुंह आने को मुफीद है, इसका लेप मवाद को पुख्ता करता है, पसली व गुर्दे के दर्द को भी मुफीद है ।

(जहरीला नहीं)

८११—मालकंगनी

प्र०-मालकंगनी । सं०-ज्योतिष्मति। रंग-भूरा सुर्खी मायल । स्वाद-कुछ कड़वा । प०-एक घास के बीज चैना के बराबर व उससे किसी कदर लंबे होतेहैं । स्व०-गर्म ३ खुश्क १ । हानि-जवान आदमी और गर्म स्वभावोंको । प्रति०-काले तिल व शहद ।

गुण व कार्य—दिमाग व कुव्वत हाफ़िज़ा (स्मरण शक्ति) व ज़हन (विचार) व मेदे और बाह को कुव्वत देती है, गठिया को मुफीद है, अर्कुलनिसां व पहलू के दर्द और अक्सर दिमागी बीमारियों व पट्ठों व फालिज और लकवेको इसका तेल मुफीदहै, औररियाह व बलगम के फ़िसाद को दूर करती है, इसका तेल हथेली में मलना बीनाई को तेज करता है और कमर के दर्द को मुफीद है ।

(जहरीला है)

८१२—ममीरा

प्र० नाम-ममीरा । फ़ा०-मामीरानचीनी । रंग-पीला । स्व०-कड़वा । पहि०-एक घास की जड़ हल्दी की किस्म के बारीक व गिरहदार और छोटी होती है । स्व०-गर्म खुश्क २ । हानि-गुर्दे को । दर्प०-शहद । प्रति०-जर्द चोबा । मात्रा-२½ माशे ।

गुण व कार्य—जिला करता है, वरम को तहलील करता है, सुद्दे खोलता है, मूत्र लाता है,दिमाग पाक करता है, जिल्द में जखम डाल देता है, कांवर को मुफीद है, आंख की बीमारियों को नफा देता है, इसका सुर्मा बारीकी और धुन्ध को मुफीद है, सिर्के के साथ सफेद दाग व झांई व चेहरे की स्याही को नफा करता है, आंख का जाला काटता है, इसका जड़ पीना रियाह को तहलील करता है और खास कर कांवर को नफा देता है ।

(जहरीला नहीं)

८१३—मांगसू

प्र०-मांगसू । पहि०-एक घास है । स्व०-गर्म १

गुण व कार्य—इसके पत्ते कड़वे तेल में जलाये हुये गठिया और जोड़ों के दर्द को मुफीद हैं ।

८१४—माहूदाना

प्र०-माहूदाना । फ़ा०-माहूदाना । अ०-कायम बालजात । रंग-फूल पीले पत्ते हरे । स्वाद-कड़वा । पहि०-एक दूध वाली घास है जिसका फल एक झिल्ली में बन्द होता है और ३

दाने होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-फेफड़े व मेदे और गुर्दो को। दर्प०-कतीरा व अनीसून।

गुण व कार्य—बलगमी माद्दे को दस्तों की राह निकालता है, वरम व रियाह को तहलील करता है, कुलंज को नफा देता है, गठियाको मुफीद है और गाढ़े बलगम को छांटता है और खालिस सौदा को भी निकालता है।

(जहरीला नहीं)

८१५—माहियाना

प्र०-माहियाना। फा०-सहनाक। स्व०-गर्म खुश्क हानि-गर्म व सौदावी मिजाज वालों को। दर्प०-सोंठ व तुख्म काहू और तुर्शी।

गुण व कार्य—मेदे की रतूबत को सुखाता है, हर तरह के बलगमों को छांटता है और जिला देता है, मुंह की बदबू को दूर करता है फालिज व सर्द बीमारियों को और दर्द पहलू को नफा करता है, हाजिमे की ताकत बढ़ाता है, भूख खोलता है और मेदे को कुव्वत देता है। (जहरीला नहीं)

८१६—माही जहरा

फा०-माही जहरा। अ०-समक उलसवक व माही जहरज। रंग-जर्दी मायल। स्वाद-तेज। पहि०-एक दूध वाली घास की बारीक छाल है, बाजों के नजदीक फली है। स्व०-गर्म खुश्क। हानि-आंतों को। दर्प०-कतीरा व निशास्ता। प्रति०-बोजीदान व अथरसा। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—हर तरह के बलगम और गाढ़े खिलतों को दस्तों की राह खूब निकालता है। रियाह को तहलील करता है, गठिया व नुकरस और अकुंलनिसा को मुफीद है।

(जहरीली नहीं)

८१७—मटर काबुली

प्र०-मटर काबुली। सं०-कलाय। फा०-जलवान। रंग-सफेद। स्वाद-फीका। पहि०-एक दाना अन्न का है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-खूनी दस्त पैदा करता है। दर्प०-शहद व गुलाब व गेरू। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—तबिअत को नर्म करता है और खून बढ़ाता है और अक्सर ऐजा के आमास (सूजन) को दूर करता है। बलगम के फिसाद को दूर करता है, सुद्दे को खोलता है, जिला करता है, सीने व फेफड़े को साफ करता है और मूत्र लाता है, सख्तियों को तहलील करता है और रियाह पैदा करता है। (जहरीला नहीं)

८१८—मिट्टी दागस्तानी

प्र०-मिट्टी दागस्तानी। फा०-गिल दागस्तानी अ०-तैन दागस्तानी। रंग-गुब्बारी। स्वाद-फीका। स्व०-सर्द खुश्क २। पहि०-खुशबूदार मिट्टी की टिकियां है। हानि-सुद्दा लाती है व रंग को फासिद करती है। दर्प०-पानी से धो डालना।

गुण व कार्य—इसकी सुगन्धी पानी डालने से तेज होता है और फरहत बख्शती है, सूखी मिट्टी खून बहने को बन्द कर देती है।

(जहरीला नहीं)

८१९—मिट्टी मुल्तानी

प्र०-मिट्टी मुल्तानी। सं०-मुल्तानी मृत्तिका। फा०-गिल मुल्तानी। अ०-तैन मुल्तानी व खुरासानी। रंग-जर्दी मायल। स्वाद-मटियाली। पहि०-सख्त और चिकनी विलायती मिट्टी है। स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-सुद्दा लाती है। दर्प०-करफ्स।

गुण व कार्य—कै (वमन) को तस्कीन देती है, हैजेको मुफीद है, मेदेको कुव्वत देती है व नजालों को नाफे है और सुगंधितहै व मसामको बन्द करती है, इसका लेप गर्मीवालोंको मुफीद है और वरमको तहलील करती है।

(जहरीली नहीं)

८२०—खरिया मिट्टी

प्र० नाम-मिट्टी खरिया। सं०-खटिका। फा०-गिल सफेद। अ०-तैनउल अवैजा। रंग-सफेद। स्वाद-फीकी। पहि०-सफेद व सूखी खुशबूदार मिट्टी है। स्व०-सर्दखुश्क। प्रति०-मुल्तानी मिट्टी।

गुण व कार्य—सिरके बालों का मैल छांटती है, पुराने जखमों और फोड़ों को भर लाती है, गर्मी के वरमों को इसका लेप और छिड़कना तहलील करती है और अक्सर मरहमों में शामिल की जाती है। (जहरीला नहा)

८२१—मिट्टी सिर धोने को

प्र० नाम-मिट्टी सिर धोने की। सं०-श्वेत मृतिका। फा०-गिल सरशोए। अ०-तैन उलफार्सी रंग-कुछ पीली। स्वाद-फीकी। पहि०-चिकनी व सख्त पर्तदार मिट्टी है। स्व०-सर्द खुश्क। हानि-फेफड़े को। दप०-आब सरतानात। मात्रा-५माशे।

गुण व कार्य—फेफड़े के दर्द को खास तौर पर नफा देती है और वरम को तहलील करती है, और मसाम को बन्द करती है।

(जहरीलानहीं)

८२२—मछेछी

प्र०-मछेछी। सं०-मत्स्याक्षी। रंग-पत्ते हरे फूल लाल व पीला। स्वाद-कुछ कड़वी। पहि०-एक छत्तेदार घास है जो बहुत छोटी पत्ती की तालाब के किनारे हिन्द में होती है। स्व०-सर्द।

गुण व कार्य—पेट को क़ब्ज करती है, कोढ़ को मुफीद है, चर्म रोग व आतशक और उसकी चट्टों को व खुजली तर और सूखी को मुफीद है, पेट के कीड़े मारती है और सोजाक को नफा देती है। (जहरीला नहीं)

८२३—मुचकुन्द

प्र०-मुचकुन्द। सं०-मुचकुन्द पुष्पम्। रंग-फूल सफेद पत्ते हरे। स्वाद-कसैला। पहि०-एक हिन्दी पेड़ जो १ गज तक का होता है। स्व०-गर्म खुश्क।

गुण व कार्य—इसके फूल अधिकतर काम में आते हैं यह दर्द को तस्कीन देता है, बलगम और खांसी को नफा करता है, रियाह को दूर करता है इसका हलवा बहुत लाभदायक है और बवासीर के खून को रोकता है।

(जहरीला नहीं)

८२४—मचूकान

रंग-सफेद। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक घास की जड़ है जिसके पत्ते गोल और पेड़ छत्तेदार होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २।

गुण व कार्य—अपनी कुव्वत क़ब्जा और दस्तावरी में रेवन्द के बराबर है और गठिया व दर्द गुर्दो और कुलंज के लिये मुफीद है और धातुओं की भस्म (कुश्ता) बनानेमें इसको शामिल करते हैं।

(जहरीला नहीं)

८२५—मछली बाम

प्र० नाम-मछली बाम। फा०-मारमाही।

अ०-मार माहीज़ज । रंग-स्याही मायल वे सफ़ना । स्वाद-बूदार व लुआबदार । प०-एक मछली है जो सांपसे मिलती हुई वेसफ़त। उसके ऊपर लुआब बहुत होता है। स्व०-गर्म खुश्क।

गुण व कार्य—बाह को कुव्वत देती है, और रियाह को तहलील करती है, इसका हाथ में लेना खून के सैलान (जारी होने) को बन्द करता है बुढ़ढों के लिये उम्दा अहार है, और पीठ के दर्द को दूर करता है।

(जहरीली नहीं)

८२६---मछली झींगा

प्र० नाम-मछली झींगा । फा०-माही रोबियान। अ०-रोबियान । रंग-सफ़ेद बेसफ़ना (बेचिते)। स्वाद-खुसान्द व कुछ मीठा। पहि०-एक तरह की मछली है, जिसकी मूंछें लम्बी और एक सींग आरा सा होता है इसकी वीट सर में होती है। स्व०-ताजा गर्म २ व तर १ व खुश्क १। हानि-सौदा पैदा करती है। दर्प०-बादाम व शकर प्रति०-रंग माही।

गुण व कार्य—बाह लाती है, अच्छा खून पैदा करती है। मनी पैदा करती है, गुर्दे व रहम को गर्म करती है और अंडे की जर्दी के साथ बाह बहुत जियादा करती है और हरकत में लाती है। और सुखाई हुई का सुर्मा कालीमिर्च के साथ रतौंधी को मुफीद है, और शहद के साथ धुन्ध को नफा देती है। (जहरीला नहीं)

८२७---मछली रोहू

प्र०-मछली रोहू। सं०-रोहितमत्स्य। अ०-शबूत रंग-सफ़ेद सफ़नेदार । स्वाद-कुछ खुसान्दा व खुश्क। पहि०-एक प्रकार की प्रसिद्ध मछली है। स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-मेदे को। दर्प०-शहद। प्रति०-हुलसा बंगाली मछली।

गुण व कार्य—बाह और दिमाग को कुव्वत देती है, गाढा खून पैदा करती है। पचने के सभय रद्दी है, इसके दांत का बुरादा भी बाह को कवी (मजबूत) करता है, जब कि दूध के साथ खाया जावे।

(जहरीली नहीं)

८२८—मछली रेत की व रेगमाही

प्र०-मछली रेत की व रेगमाही। सं०-बालुका मत्स्य। फा०-रेगमाही । अ०-समकउल रमल समकउल सैदा। रंग-पीली। स्वाद-बूदार व फीका व नमकीन। पहि०-एक प्रकार की मछली है जो रेत में रहती है, और यह छिपकली सी होती है। इसके बहुत से बेजड़ किस्मेहैं जिनकी जड़ नहीं है। स्व०-गर्म खुश्क २ और उसका कफ ३। हानि-गर्म स्वभावों को। दर्प०-नमक लगाकर सुखाना। प्रति०-सालव मिश्री।

गुण व कार्य—इसके कफ को अंडे की जर्दी के साथ बाह से बहुत बेताब करने वाला कहा है और इसको भी बाह को बहुत जियादा करनेवाली और तेजी लाने वाली अक्सर हकीम जानते हैं। नर में यह गुण बहुत है, इसके इस्तैमाल का उम्दा तरीका यह बताया है कि एक दिरम पीस कर पानी मिली हुई शराब में छिड़क कर पियें लेकिन पहले माजूनों के साथ इस्तैमाल करते हैं।

(जहरीली नहीं)

८२९---मछली का अन्डा

प्र० नाम-मछली का अंडा। सं०-मत्स्यांडं। फा०-तुख्म माही। अ०-बैजुल समक। रंग-सफेद

व बाज पीली। स्वाद-बूदार। पहि०-मशहूर है। स्व०-सदेतर। हानि-बलगम बहुत पैदा करता है।

गुण व कार्य—वाह लाते हैं और ऐजा को कुव्वत देते हैं। गर्मी पैदा करते हैं और अपनी खासियत के सबब प्रमेह को दूर करते हैं।

(जहरीले नहीं)

८३०—मजीठ

प्र०-मजीठ। सं०-मजिष्ठा। फा०-रोनास। अ०-फाह व अर्कोनुलसबा। रंग-लाल स्याही मायल। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक जड़ है जिस को उबाल कर रंगमें डालते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-सिर व मसाने को और मूत्र खूनी लाता है। दर्प०-कतीरा व अनीसून। प्रति०-कबाबा व सलीखा। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—सुद्दे खोलता है, मूत्र कम लाता है चाहे खूनीहो चाहे सादा और मेदेको कुव्वत देता है, सर्द बीमारियों व पट्ठों की बीमारियों व फालिज व लक़वा और कांवर को मुफीद है। जिगर व तिहाल को पाक करता है, दाद व चर्म रोग को नफा देता है और खूनी दस्तों को बन्द करता है।

(जहरीला नहीं)

८३१—मिर्चकाली

प्र० नाम-मिर्च काली। सं०-मरिचं। फा०-पिलपिल स्याह व पिलपिल गिर्द। अ०-फ़िलफ़िल उल सौदाये। रंग-काली। स्वाद-तेज। पहि०-प्रसिद्ध जंगली व पहाड़ी फल है। स्व०-गर्म खुश्क २ और जहर खोनेकी ताकत रखती है। हानि-गर्म स्वभाव व सीने और हलक़ को। दर्प०-तेल व शहद। प्र०-दारफ़िलफ़िल व शहद। मात्रा-४ माशे तक।

गुण व कार्य—वरम व रियाह को तहलील करती है, रतूबत को खींच लेती है, जिला करती है, गर्मी करती है, बलगम को छांटती है, हाफिजे को मजबूत करती है, पट्ठों व मेदे व जिगर और हाजिमे को कुव्वत देती है, गिजाओं को लतीफ करती है, कोढ़ को मुफीद है, रियाह को दूर करती है। विषों को क़ै के जरिये निकालती है, सर्दी की कुल दिमागी बीमारियों को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

८३२—मुर्दार संग

प्र०-मुर्दारसंग। सं०-मृद्दारश्रृंग। फा०-मुर्दार संग। अ०-मुर्दार संज। रंग-पीला व सुनहरा व चमकदार। स्वाद-फीका। पहि०-एक संगीन चीज है जो रांगे व चांदी और सोने से बनती है। स्व०-गर्म खुश्क२वाजोंके नजदीक सर्द है। हानि-७माशे खाने से कातिल है। दर्प०-क़ै व रोगन बादाम व घी। प्रति०-अक़लीमिया। मात्रा-१ माशा।

गुण व कार्य—जिला करता है और मांस को खा जाता है, वरम को तहलील करता है, खुश्की करता है। काबिज है, दस्तों को बन्द करता है जो दस्त कुरह या आंतों की खराश से हों उनको नफा देता है, इसका लेप अक्सर दवाओं की तेजी को तस्कीन देता है। खारिश और अक्सर चर्म रोग की दवाइयों में काम आता है, सूखी मेंहदी व कमीला और धोये हुए घी के साथ सिर के दानों और गञ्ज को नफा करता है।

(सम क़ातिल है)

८३३—मिर्च लाल

प्र०-मिर्च लाल। सं०-रक्तमरिचं। अ०-फ़िलफ़िल अहमर। रंग-लाल व पीली व हरी। स्वाद-

बहुत तेज। पहि०-एक छोटे से पेड़ का लम्बा व गोल फल है जिसके बीज गोल व चपटे होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क। हानि-मसाने व फेफड़े और मेदे को। दर्प०-घी व शहद। प्रति०-काली मिर्च। मात्रा-२ माशे तक।

गुण व कार्य—बहुत तेजी करती है, खून को सुखाती है। सफरा पैदा करती है, सुद्दे व मसाम खोलती है, बलगम छांटती है, दिमाग को पाक करती है वरम को तहलील करती है। जिल्द को सुर्ख व गर्म कर देती है व पट्ठों के ऐंठने और बलगमी दर्द को नफा देती है और बाह को कम करती है।

(जहरीला है)

८३४—मड़ोरफली

प्र० नाम-मड़ोरफली। फा०-गश्तवरगश्त व बखुरू। अ०-इल्तवा उस्तवा। रंग-भूरी। स्वाद-कुछ कड़वी। पहि०-एक घास का गिलाफ है जो रस्सी की तरह बलदार होता है। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-बाह और दूध को। दर्प०-हब्बुल सनोबर। प्रति०-एलुवा। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—वरम और रियाह को तहलील करती है और लताफत बख्शती है, खराब बलगम को दस्तों की राह निकालती है, और जिला करती है। इसके पेड़ को हिन्दी में बिजार कहते हैं।

(जहरीला नहीं)

८३५—मसूर

प्र०-मसूर। सं०-मसूरिका। फा०-न्यूसुर्ख व बसक व मरजोंक। अ०-अदस। रंग-बाहर काली भीतर लाल। स्वाद-फीकी। पहि०-एक दाना अनाज का है जो गोल और चपटा होता है। स्व०-गर्म व खुश्क छिलका उतरा काबिज है। हानि-बीनाई व बाह को और बवासीर व कोढ़ पैदा करती है। दर्प०-घी व सिर्का। प्रति०-उरद व बाक़ला।

गुण व कार्य—सौदा पैदा करती है, खून के जोश को तस्कीन देती है व खून को गाढ़ा करती है और नफाख है, हैज जारी करती है, जिला करती है, देरहजम है। इसका गरारा खुनाक और गले के दर्द और मुंह आने को मुफीद है, बुरे और डरावने स्वप्न दिखाती है और दबाने व चिल्लाने वाले स्वप्न पैदा करती है।

(जहरीला नहीं)

८३६—मुश्कदाना

प्र०-मुश्कदाना। सं०-लता कस्तूरी। फा०-मुश्क दाना। रंग-काला व भूरा। स्वाद-कुछ तेज व खुशबूदार और फीका। प०-एक पेड़ का बीज है जिसका छिलका बिल्कुल भिंडी का सा होता है। स्व०-बाजे गर्म कहते हैं। हानि-सिर दर्द पैदा करता है। प्रति०-भिंडी के बीज। मात्रा-१ माशे।

गुण व कार्य—मुंह की बीमारियों और जिव्हा के रोग (जैसे स्वाद न आना) को दूर करता है, मेदे की गिरानी और रियाह को दूर करता है, इसके पत्ते और शाखें सोजाक व सैलान और रक्तमनी के वास्ते मुफीद हैं।

(जहरीला नहीं)

८३७—मुश्कतरा मशीह

अ०-मुश्कतरा मशीह। रंग-हरा। स्वाद-तेज व तेज बू। पहि०-एक तरह का पहाड़ी पोदीना है और सब तरह से क़वी तर है। स्व०-गर्म व खुश्क है। हानि-मेदे को। दर्प०-सुपारी व सिर्का। प्रति०-पोदीना। मात्रा-१ माशे।

गुण व कार्य—मूत्र व हैज खूब जारी करता है और कुलंज का सुद्दा खोलता है, शहद के साथ मुसब्बी (स्तम्भक) है और मेदेको कुव्वत देता है, इसका तर किया हुआ कपड़ा रोगन बिलसांके साथ रहम के दर्द को तस्कीन देता है।

(जहरीला नहीं)

८३८—मिश्री

प्र०-मिश्री। सं०-सिता। फा०-कन्दउलकन्द। अ०-नबातुल जलाव। रंग-सफेद व जर्दीमायल। स्वाद-मीठी। पहि--प्रसिद्ध है। स्व०-मातदिल। दर्प०-मुरब्बा खट्टा। प्रति०-शकर तबरजद (शकर) मात्रा-१ माशे

गुण व कार्य—तबिअत नर्म करती है व जिला करती है, गर्म पानी के साथ आवाज भर्भराने और खांसी को मुफीद है, इसकी सलाई बना कर आंख में लगाना जाले और नाखूने को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

८३९—मस्तगी

प्र० नाम-मस्तगी। फा०--कुन्दररूमी। अ०-मस्तगा व अलकरूमी। रंग-पीली व सफेद। स्वाद-फीकी व बदबूदार व कड़वी। प०-श्याम के मुल्क का एक पेड़ का गोंद है जो दो तरह का होता है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-मसाने को। दर्प०-कतीरा। प्रति०-कुन्दर व अक्लक उलवतम। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—लताफत बख्शती है, वरम व रियाह को तहलील करती है और जिला करती है। काबिज है, ऐज़ाये रईसा व मेदे व जिगर को और गुर्दे व हाजिमा को कुव्वत देती है, रतूबतों और बलगमोंको दिमागसे शोष लेता है और छांटती है और बाह को हरकत देती है। मुख से खून आने को पेट के हिस्सों के दर्द को और वरम को मुफीद है और कुल ऐठों की बीमारियोंको नाफै है व पेचिश और मितली को मुफीद है, इसका मंजन दांतों व मसूढ़ों को मजबूत करता है।

(जहरीला नहीं)

८४०—मकड़ी का जाला

प्र०-मकड़ी का जाला। सं०-लूतागृह। फा०-अबर काकिया। अ०-नसजउल अंकबूत। रंग-सफेद। पहि०-मकड़ी एकजानवर यानी कीड़ा है जो अपने लुआब से जाला बनाती है जिसके तार बारीक मिस्ल खयाल के होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क हानि-ऐजाये रईसा को। दर्प०-बादाम रोगन। प्रति०-अस्फंज। मात्रा-खाते नहीं है।

गुण व कार्य—कुल ऐजा के खून को अगर बहता हो तो रोकता और बन्द करता है, इसका ताबीज बनाकर गले में डालना बुखार को खास तौर पर मुफीद है और नकसीर को बन्द करता है।

८४१—मकोय (काकमांची)

प्र०-मकोय। सं०-काकमाची। फा०-रोबाह तरीक। अ०-अम्बुल सालब। रंग-लाल व हरी। स्वा०-कुछ कड़वी ताजी मीठी। प०-एक घासका गोल मटर की तरह का फल है। स्व०-सर्द खुश्क २ बाजे गर्म बताते हैं। हानि-मसाने को। दर्प०-शहद व कन्द। प्रति०-काकनज। मात्रा-६ मा० से ९ मा० तक।

गुण व कार्य—मादे को पुख्ता और पाक करती है। मवाद को निकलने पर तैयार करती है, और लताफत बख्शती है व काबिज है और हरारत

(गर्मी) व प्यास को तस्कीन देती है, वरम व रियाह को तहलील करती है और गर्मी के वरमों को नाफै है व आंतों को पाक करती है, और मूत्र लाती है और दस्तावर व है। (जहरीला नहीं)

४२—मकोय सब्ज

प्र०-मकोयसबज । सं०-काकमाची शाकम्। फा०-तरह गोबाह व तरीक । अ०-अतराफ़ अनबुल सालब। रंग-हरी। स्वा०-कड़वी। प०-प्रसिद्ध है। स्व-सर्द तर। हानि-मसाने को। दर्प—शहद। प्रति०-मकोय सूखी। मात्रा-१ तो० से ४ तो०तक।

गुण व कार्य—इसका पानी वरमों को तहलील करती है, चाहे वह बाहर का हो चाहे भीतर का होवे; मेदे की गर्मी व जिगर के वरम को व दर्द को नफा देती है, मवाद निकालने पर आमादह करती है और मेदकी सोजिशको नफे है,सफरावी व तलख खिलतोंको दस्तोंकी राह निकालती है,जलंधर व कांवर और गर्मों व गुदा के वरम को मुफीद है। और इसके पत्तों का लेप वरमों को तहलील करता है और इसका गर्गरा खुनाक व हलक के वरमों और गले के दर्द को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

८४३---मखाना

प्र०-मखाना । सं०-मखान्नम् । रंग-काला। स्वाद-फीका । पहि०-एक बीज है जो गोल होता है जिसका पेड़ कांटेदार कमल कासा होता है। स्व०-गर्म तर १, हानि-गरिष्ट (शकील) है। दर्प०-शकर। मात्रा-१ तोला।

गुण व कार्य—वदन और उसके ऐजा को कुव्वत देता है, मनी को अधिक करता है और पैदा करता है, खून के जोश को दूर करता है और दस्तों व जिर्यान व रक्तनमनी (खूनी पशाब)को बंद करता है।

(जहरीला नहीं)

८४४---मक्खन

प्र० नाम-मक्खन । सं०-नवनीतम् । फा०-मस्का । अ०-ज़ब्द । रंग-सफेद जर्दीमायल । स्वाद-स्वादिष्ट व चिकना। पहि०-दूध पर की चिकनाई बिना गर्मकी हुई है। स्व०-गर्म १ तर २। हानि-मेदे के मुंह को ज़इफ़ व ढीला करता और भूख मारता है। दर्प०-शकर व शहद व नमक व क़ाबिज़ चीजें। प्रति०-ताजा दूध। मात्रा- ४ से ● तोला तक।

गुण व कार्य—तबियत को नर्म करता है, मादे को पुख्ता व पाक करता है, बदन को फरबे करता है, सुद्दे खोलता है, आवाज़ को साफ करता है, फेफड़े के किनारे और हलक के खुरखुराने व सूखी खांसी और बाहरी व भीतरी वरम को मुफीद है और मल को मूत्र की राह निकालता है। और शहदके साथ जातुलजम्ब और जातुलरियाह को मुफीद है, इसका वदन पर मलना चर्म को नर्म करता है, शकर व खशखाश के साथ खाना इफ़रात से फरबही लाता है, इसका वदन पर मलना खासकर ग़िज़ा हो जाता है।

(जहरील नहीं)

८४५—मकोइया जंगली

प्र०-मकोइया जंगली। सं०-हिस्राभेदः । रंग-बैंजनी। स्वाद-रसदार। पहि०-एक कांटेदार पेड़ गजभर ऊंचे के गोल मकोय के बराबर फल हैं, स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-खांसी पैदा करता है। द०-शर्बत खशखाश । मात्रा-१० से २० अदद तक।

गुण व कार्य—सफरा व खून की तजी को दूर करते हैं, प्यास को तस्कीन देते हैं, और काबिज व निफाख (अफारा करने वाले हैं)

(जहरीला नहीं)

८४६—मलाई

प्र०-मलाई । सं०-दुग्धशरम् । फा०-सरशीर । अ०-मर्शीमा दवाबा । रंग-सफेद । स्वाद-स्वादिष्ट व चिकनी । पहि०-पकाये हुये दूध पर मोटी २ झिल्ली पड़ जाती है उसको उतार लेते हैं । स्व०-सर्दतर । हानि-देर हजम है । दर्प०-कन्द व शकर प्र०-मस्का (मखन) ।

गुण व कार्य—गरिष्ट है और बदन को कुव्वत देती है, और फरबे करती है, शकर के साथ बाह को कुव्वत देती है, मनी पैदा करती है, सौदावी माद्दे को नर्म करती है, और साफ करती है, और पट्ठों की खुश्की दूर करती है ।

(जहरीला नहीं)

८४७—मुलहठी

प्र०-मुलहठी । सं०-मधुयष्टी । फा०-बेखमहक अ०-असलुल सूस । रंग-पीली व भूरी । स्वाद-कुछ मीठी । पहि०-एक पेड़ की जड़ प्रसिद्ध है । स्व०-गर्म १ खुश्क १ । हानि-गुर्दे व तिहाल को दर्प०-उन्नाव व कतीरा व गुलसुर्ख । मात्रा-६ से ६ माशा तक ।

गुण व कार्य—गाढ़े खिलतों को पतला करता है और विपाक में मौतदिल है और प्यास व मेदे की सोजिश को तस्कीन देती है, रतूबतों को दस्तों की राह निकालती है, पट्ठों को कुव्वत देती है, सीने व लहक को नर्म करती है, सीने की बीमारियों व खांसी व स्वास रुकने और हांपने को मुफीद है, और बेमुकश्शर किये हुये (बना छिले हुये) इसका वर्तना ठीक नहीं है, क्योंकि इस पर सांप आशिक है, (चिपटा रहता है)

(जहरीला नहीं)

८४८—मुलीम

प्र०-मुलीम । रंग-भूरी । स्वाद-कड़वी व तेज प०-एक स्याही मायल हिन्दी जड़ है । स्व०-गर्म खुश्क ३ । हानि-फेफड़े को । दप०-मस्का । मात्रा-इसे खाते नहीं हैं ।

गुण व कार्य—तेज है और जखमके कीड़े मार निकालती है,इसके पत्तों का रंग (रस) भी कीड़ों को मारता है,जो दर्द नाकके बांसे पीनस में पैदा हो उसको इसका डालना नफा देता है ।

(जहरीला नहीं)

८४९—मड़ुवा

प्र० नाम-मड़ुवा । सं०-कोरदूषक । रंग-बाहर लाल भीतर सफेद । स्वाद-फीका । पहि०-एक दाना अनाज का ककुनी के बराबर है । स्व०-गर्मखुश्क २ । हानि-नफाख है ।

गुण व कार्य—गलीज है और सुद्दा पैदा करता है, इसमें अहारत्व कम है, और देर में पचने वाला है,दहकानों और भूख वालों का अहार है, इसका धूग व सेंक वरम को तहलील करता है, और मकड़ी के विष को दूर करता है ।

(जहरीला नहीं)

८५०—मुंडी

प्र० नाम-मुंडी । सं०-मुण्डी । रंग-पत्ते हरे फूल लाल व पीले । स्वाद-कुछ कड़वी । पहि०-एक छतेदार घास है जिसके फल व फूल गोल

और मटर के बराबर होते हैं। स्व०-गर्मतर२ ।हानि-मसाने को । दर्प०-बिही । प्र०-सर्फोंका । मात्रा—१ तोला ।

गुण व कार्य—ऐजाये रईसा व दिल व दिमाग व बल और रुह को कुव्वत देती है, वरम व रियाह को तहलील करती है, और लताफत करती है, सुद्दे खोलती है, खफक़ान व बरमों व दांतों को व गिलटियों और तर व सूखी खुजली को व कोढ़ और सौदावी मर्जों को मुफीद है, इसकी फंकी वाह और बीनाई को कुव्वत देती है, मूत्र खूब लाती है, कुछ रोज ३ अदद समूचे निगलना आंख के लिये मुजर्रब है। (जहरीला नहीं)

८५१—मुनक्का के बीज

प्र०-मुनक्का के बीज। सं०-द्राक्षा बीजम्। फा०-दानामवीज।अ०-हब्बुल जबीब। रंग-काली स्वाद-फीका। पहि०-नोकदार गोल दाना यानी बीज मुनक्का के हैं जो छोटे चने के बराबर होते हैं स्व०-सर्द १ खुश्क २। हानि-गुर्दे को। दर्प०-उन्नाब।

गुण व कार्य—क़ाबिज हैं और पेट को गुम करते हैं, और अधिक तरी वाले मेदे को और आंतों को कुव्वत देते हैं।

(जहरीला नहीं)

८५२—मुनक्का

प्र०-मुनक्का। सं०-द्राक्षा। फा०-मवीज। अ०-जबीब। रंग-काली। स्वाद-मीठी। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म तर १। हानि-गर्म स्वभाव को और गुर्दे व खून को जिला देती है। दर्प०-उन्नाब व सिकंजवीन। प्रति०-किशमिश व आव-जोश। मात्रा-१० दाने।

गुण व कार्य—सफरा की तेजी व हरारत को बुझाती है और बलग़म को छांटती है और खिलतों को पुख्ता मौतदिल उलकवाम (पक्का और पाग) करती है, और तबिअत को नर्म करती है, रियाह को तहलील करती है। मेदे व आंतों को जिला करती है, बदन को फरबै करती है, जिगर व ठंडे स्वभाव वालों की बाह को कुव्वत देती है, फेफड़े के किनारों को मुआफ़िक है, चर्बी के साथ इसका लेप वरम को तहलील करती है, भुनी हुई व गर्म गर्म खांसी के लिये मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

८५३—मुनमुना

प्र०-मुनमुना। फा०-गंदुम दीवाना। अ०-शोलम। रंग-भूरा। स्वाद-कड़वा। पहि०-एक दाना जौ से बारीक और बहुत छोटा व गोल मंडुवे के बराबर है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-आवाज को खराब करता है। दर्प०-घी और ताजा दूध। प्रति०-जन्दक़ोक़ी। मात्रा-३ माशे।

गुण व कार्य—ऐज़ा को सुन्न और संज्ञा हीन करता है, आवाज़ को नुकसान पहुँचाता है। सुद्दे पैदा करता है, अंडे की सफेदी के साथ सख्तियों को तहलील करता है, इसका लेप बदन से कांटे और गांसी (बर्छी तीर वग़ैरा) को खींच लाता है, इसका तेल दाद और चर्म रोग को मुफीद है और आतशक के चट्टों को नफा देता है।

(जहरीला नहीं)

८५४—मुवा बादल (अस्फंज)

प्र० नाम-मुवा बादल। फा०-अब्रमुर्दा। अ०-अस्फंज। रंग-जर्दी मायल वकाला। स्वाद-फीका। पहि०-एक चीज नर्म और जालदार

है, बाज लोग मरा हुआ बादल जानते है, सो गलत है, यह समुन्दर की तह में मिस्ल सिवार व मूंगे वगैरा के पैदा होता है और पानी को जज़ब करता है। स्व०-गर्म १ खुश्क २। हानि-शिकमी ऐज़ा को। दर्प०-अंगूर का पानी। प्रति०-जलाया हुआ कागज़। मात्रा-८ माशे।

गुण व कार्य—वरमको तहलील करता है और खुश्की लाता है, जख़मों व फोड़ों को सुखाता है जो गहरे या ताजे या पुराने जख्महों, और खूनको बन्द करता है और जलाया हुआ खुश्क आशोबचश्म बीनाई के जिला देने को मुफीद है और हलक में कांटा चुभ जानेको और जोंक चिपक जानेको इसका चुल्लू चुल्लू पीना मुफीद है और इसको इस तरह पीवें कि इसको रेजा २ करके हावन्द में कूट डालें और वे छाने पी लेवें, बाज़े कूटना मना करते हैं।

(जहरीला नहीं)

८५५—मोंठ

प्र०-मोंठ। सं०-मकुष्ठ। फा०-माष हिन्दी। रंग-सुर्खी मायल। स्वाद-फीका। पहि०-एक प्रकार का अन्न मशहूर है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-रियाह बहुत पैदा करता है। दर्प०-गाय का दूध।

गुण व कार्य—शीघ्र पचता है और काबिज भी है, पेट में क़राकर (गुड़गुड़ाहट) पैदा करता है व खूनको साफ करता है, इसमें अहारत्व कम है, और नहरू को मुफीद है, इसकी जड़ नशा लाती है और वरम को तहलील करती है।

(जहरीला नहीं)

८५६—मक्खी

प्र०-मक्खी। सं०-मक्षिका। फा०-मगस। अ०-ज़बाब। रंग-काली। स्वाद-ख़राब मजा। पहि०-एक छोटे शरीर वाला मैला पंखदार कीड़ा प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क। हानि-क़ै बहुत लाती है। दर्प०-छोटी इलायची। प्रति०-मच्छर।

गुण व कार्य— अगर लगातार ११ रोज तक गुड़ में लपेटकर यर्क़ा(कामला)वालेको बिना ख़बर किये हुये खिलाया जाय तो मुफीद है, इसकी बींट लगी हुई रस्सी पानी में घोल करके कान में डालें तो कान के दर्द को मुजर्रब है।

(जहरीला नहीं)

८५७—मोती

प्र० नाम-मोती। सं०-मुक्ता। फा०-मर्वारीद व दुर। अ०-लुलु। रंग-सफेद व चमकदार स्वाद-फीका। पहि०-बाज समुद्रों की सीपी व घोंघों व कीड़ों के पेट या सरसे गोल व चमकदार एक चीज निकलती है जो क़ीमती मशहूर है। स्व०-सर्द खुश्क २। हानि-मसाने को। दर्प०-मूंगा। प्रति०-सफेद व चमकदार सीपी। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—फ़रहत और लताफत बख़्शता है, अक्सर ऐज़ा व खासकर ऐज़ाये रईसा व क़ुव्वी और रूह को बख्शता है व मुंह से खून आने को मुफीद है और बहते हुये खून को रोकता और बन्द करता है। सफ़रावी व खूनी दस्तों को बन्द करता है, हैज को रोकता है, बबासीर को दूर करता है। दिल व जिगर व मेदे और गुर्दे की बीमारियों को मुफ़ीद है, सुद्दे खोलता है, इसका सुर्मा आँखों से पानी चलने व कम दीखने व जाले मांडे और नाखूने को मुफ़ीद है, इसको बगैर हल किये किसी

तरह पर काम में लाना उचित नहीं है।

(जहरीला नहीं)

८५८—मोचरस

प्र०-मोचरस। सं०-शाल्मली निर्यासम्। रंग-
लाल। स्वा...
पेड़का गोंद...
खुश्की लात...
प्र०-कमरक...

गुण व...
बाजीकरण...
के खून को...
है। रक्त विव...
को दूर करत...
(जब कि य...
इसका तर ि...
रतूबत को सु...
हिले हुए दांत...

प्र०-मूस...
मूसली सपेद...
एक पेड़ की...
बाजे सेंभल...
प्रति०-स्याह...

गुण व कार्य—सफरा व गर्मी को दूर करती है, बदन कवी और फरबै करती है और बाह को हरकत देती है, मनी की वृद्धी और उसे गाढ़ा करती है, यरकां और बलग़मी हैजे को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

८६०—मूसली स्याह

प्र०-मूसली स्याह। सं०-कृष्णमूसली। फा०-मूसली स्याह। रंग-काली व भूरी। स्वाद-फीकी व कुछ कड़वी और लसदार। पहि०-प्रसिद्ध है।
...र। प्रति०-सफेद मूसली। मात्रा-

...—मनी को पैदा करती है, बदन
...करती है। वारम्बार मूत्र आने
...मुफीद है, दमे और हांफने को
...मनी को दूर और मनी को गाढ़ा

(जहरीला नहीं)

...१—मौलसिरी

...। सं०-वज्रदन्ती। रंग-फूल
... स्वाद-कसेला व कुछ मीठा व
...क बड़ा पेड़ है जिसके फूल छोटे
...के बराबर होते हैं फल जियादा
... स्व०-फल सर्द खुश्क २ फूल
...ानि-नफाख है और जिगर को
...फूल की फली। मात्रा-१ मा० से

...-फल और बीज दोनों इसके
...स्तम्भक हैं व रिक्कतमनी को
...क़ाबिज हैं व पेट गुम करते हैं,
...सिरके दर्द को मुफीद है, इनका
...व दिल व दिमाग को कुव्वत देता है और सूंघना भी दिमाग को कुव्वत देता है। और फरहत लाता है, इसके फूल को मंजन दांत के दर्द को तस्कीन देता है और मसूढ़ों को कवी करता है, फूल सुहागे और गुलाब के साथ पिसे हुये दाद को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

है, बाज लोग मरा हुआ बादल जानते है, सो गलत
है,
वगै
है।
को
का
खु
ग

दूध।

गुण व कार्य—शीघ्र पचता है और काबिज भी है, पेट में क़राकर (गुड़गुड़ाहट) पैदा करता है व खूनको साफ करता है, इसमें अहारत्व कम है, और नहरू को मुफीद है, इसकी जड़ नशा लाती है और वरम को तहलील करती है ।

(जहरीला नहीं)

८५६--मक्खी

प्र०-मक्खी । सं०-माक्षिका । फा०-मगस । अ०-ज़बाब । रंग-काली । स्वाद-खराब मज़ा । पहि०-
...ोटे शरीर वाला मैला पंखदार कीड़ा प्रसिद्ध
...ाम खुश्क । हानि-कै बहुत लाती है ।
...ी इलायची । प्रति०-मच्छर ।
...व कार्य-- अगर लगातार ११ रोज तक गुड़
...र यर्का (कामला) वाले को बिना खबर किये
...या जाय तो मुफीद है, इसकी बींट लगी
... पानी में घोल करके कान में डालें तो
...दर्द को मुजर्रब है ।

(जहरीला नहीं)

८५७--मोती

... नाम-मोती । सं०-मुक्ता । फा०-मर्वा-
...दुर । अ०-लुलु । रंग-सफेद व चमकदार
...फीका । पहि०-बाज समुद्रों की सीपी व
...व कीड़ों के पेट या सरसे गोल व चमकदार
...ीज निकलती है जो क़ीमती मशहूर है ।
...सर्द खुश्क २ । हानि-मसाने को । दर्प०-
... । प्रति०-सफेद व चमकदार सीपी । मात्रा-
...शे ।

...गुण व कार्य—फरहत और लताफत बख़्शता
...मक्सर ऐज़ा व खासकर ऐज़ाये रईसा व क़वी और रूह को बख्शता है व मुंह से खून आने को मुफीद है और बहते हुये खून को रोकता और बन्द करता है । सफ़राबी व खूनी दस्तों को बन्द करता है, हैज को रोकता है, बबासीर को दूर करता है । दिल व जिगर व मेदे और गुर्दे की बीमारियों को मुफ़ीद है, सुद्दे खोलता है, इसका सुर्मा आँखों से पानी चलने व कम दीखने व जाले मांडे और नाखूने को मुफ़ीद है, इसको बगैर हल किये किसी

तरह पर काम में लाना उचित नहीं है।

(जहरीला नहीं)

८५८—मोचरस

प्र०-मोचरस। सं०-शाल्मली निर्यासम्। रंग-लाल। स्वाद-लसदार व फीका। पहि०-सेंभल के पेड़का गोंदहै। स्व०-सर्द२ खुश्क३। हानि-बदन में खुश्की लाता है। दर्प०-शकर व बादाम रोगन। प्र०-कमरकस यानी अनारकीछाल।मात्रा-५ मा०।

गुण व कार्य—गरिष्ट है, पेटको गुम करता है, बाजीकरण है, मनी पैदा करता है, दस्तों और हैज के खून को बन्द करता है कच्चे माद्दे को छांटता है। रक्त विकार व सफरा और ऐजा की सोजिश को दूर करता है और मुंह के जोश को खोता है (जब कि वह पारे के खाने से हुआ हो) और इसका तर किया हुआ कपड़ा रखना रहम की रतूबत को सुखाता है, इसको मंजन में मिलाना हिले हुए दांतों को दृढ़ करता है।

(जहरीला नहीं)

८५९—मूसली सफ़ेद

प्र०-मूसली सफेद। सं०-तामलकी। फा०-मूसली सपेद। रंग-सफेद। स्वाद-फीकी। पहि०-एक पेड़ की जड़ है शकाकुल हिन्दी की सी और बाजे सेंभल की जड़ कहते हैं। स्व०-गर्म खुश्क। प्रति०-स्याह मूसली। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—सफरा व गर्मी को दूर करती है, बदन कवी और फरबै करती है और बाह को हरकत देती है, मनी की वृद्धी और उसे गाढ़ा करती है, यरकां और बलगमी हैजे को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

८६०—मूसली स्याह

प्र०-मूसली स्याह। सं०-कृष्णमूसली। फा०-मूसली स्याह। रंग-काली व भूरी। स्वाद-फीकी व कुछ कड़वी और लसदार। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २। प्रति०-सफेद मूसली। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—मनी को पैदा करती है, बदन को पुष्ट व फरबै करती है। बारम्बार मूत्र आने को और गठिया को मुफीद है, दमे और हांफने को मुफीद है, जिर्यान मनी को दूर और मनी को गाढ़ा करती है।

(जहरीला नहीं)

८६१—मौलसिरी

प्र०-मौलसिरी। सं०-बज्रदन्ती। रंग-फूल सफेद ..ल लाल। स्वाद-कसेला व कुछ मीठा व खुशबूदार। प०-एक बड़ा पेड़ है जिसके फूल छोटे गोल और फल बेर के बराबर होते हैं फल जियादा काम में आते हैं। स्व०-फल सर्द खुश्क २ फूल गर्म १ खुश्क २। हानि-नफाख है और जिगर को दर्प०-घी। प्र०-बबूल की फली। मात्रा-१ मा० से १ तोला तक।

गुण व कार्य—फल और बीज दोनों इसके मनी को रोकते हैं, स्तम्भक हैं व रिक्कतमनी को दूर करते हैं और काबिज हैं व पेट गुम करते हैं, इसके फूल का अर्क सिरके दर्द को मुफीद है, इनका खाना व पीना मेदे व दिल व दिमाग को कुव्वत देता है और सूंघना भी दिमाग को कुव्वत देता है। और फरहत लाता है, इसके फूल को मंजन दांत के दर्द को तस्कीन देता है और मसूढ़ों को कवी करता है, फूल सुहागे और गुलाब के साथ पिसे हुये दाद को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

८६२—मूल व पोहकरमूल

प्र०-मूल व पोहकरमूल। सं०-पुष्करमूलं। रंग-काला। स्वाद-कड़वा व तेज। पहि०-एक रेशेदार जड़ है। स्व०-गर्म।

गुण व कार्य—भूख लाती है और रियाह बलगम को दूर करती है, ऐजा के वरम को तहलील करता है, स्वांस की तंगी और पहलू के दर्द को मुफीद है, बदन की सर्दी दूर करती है, ठंडे स्वभाव और दिल को ताकत देती है।

(जहरीली नहीं)

८६३—मूली

प्र०-मूली। सं०-मूलिका। फ़ा०-तुर्ब। अ०-फजल। रंग-सफेद व हरा। स्वाद-तेज व कुछ मीठा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म,तर २। हानि-नफाख़ है। दर्प०-नमक व जीरा। प्रति०-सलजम।

गुण व कार्य—ग़िज़ा को हजम करने वाली है, लेकिन खुद देर हजम है और बबासीर को नफा देती है, इसकी पकी हुई तरकारी मूत्र व हैज को जारी करती है व गुर्दे व मसाने की पथरी तोड़ बहाती है, और पुरानी खांसी और खराब रस को दूर करती है, और जिगर की सुद्दा खोलती है। और कांवर को लाभदायक है। बलगम छांटती है, रियाह पैदा करती है। मेदे को फासिद करती है, इसके खाने से खासकर जुर्वे बहुत पैदा होती हैं।

(ज़हरीला नहीं)

८६४—मूली के बीज

प्र० नाम-मूलीके बीज। सं०-मूलिका बीजम्। फ़ा०-तुख्म तुर्ब। अ०-बज्रुल फ़जल। रंग-लाल। स्वाद-तेज व कड़वे। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-गुर्द व जिगर को। दर्प०-सपिस्तां व कतीरा व शकर। प्र०-हब्बुल रशाद। मात्रा-३ माशा।

गुण व कार्य—लताफत करते हैं, रियाह व वरम को तहलील करते हैं, रियाह पैदा करते हैं, बाह लाते हैं, और के लाते हैं, जिगर दर्द सर्दी को और वरम तिहाल को मुफीद है, चेहरे की स्याही व झांई और निशानों को खोते हैं, मुंह के रंग को और सिर के बाल गिराते हैं।

(जहरीला नहीं)

८६५-मोम

प्र०-मोम। सं०-मधुच्छिष्टम्। फा०-मोम। अ०-शमअ। रंग-पीला व सफेद। स्वाद-फीका व चिकना व बदमजा। पहि०-शहद की मक्खी की बीट है जो शहद के छत्ते के भीतर से निकलते हैं। स्व०-गर्मतर। हानि-मेदे और भूख को। दर्प०-रुई व शहद। प्र०-बाकले का आटा। मात्रा-१½ माशा।

गुण व कार्य—वरम और रियाह को तहलील करता है, मादे को पक्का और पाग करता है, पट्ठों को नर्म करता है, दर्दों को तस्कीन देता है, चोट के सदमें को दूर करता है, इसका मालिश करना भीतरी जख़म और पुराने दस्तों को नफा देता है, सीने के दर्द और पहलू और सिल को नफा करता है, इसकी धूनी ऐजा के दर्द को नाफे है, अगर थोड़े दिन तक चने की बराबर इसकी गोली खाया करें तो बाह करता है।

(जहरीला नहीं)

८६६—मोमयाई

प्र० नाम-मोमयाई। फा०-मोमयाई।

अ०-अकु‍ल जबाल व हाफिजाउल अदबाब। रंग-काला। स्वाद-फीका। पहि०-पहाड़ी रतूबत पकाई और जमाई हुई है। स्व०-गर्म ३ खुश्क ३। हानि-गर्म स्वभाव वालों और तिहालको। दर्प०-सिकंजबीन व मयरल असूल। प्रति०-हजर उल यहूद। मात्रा-१ से २ जौ तक।

गुण व कार्य—रूह व दिल व ताकत और भीतरी ऐजा को कुव्वत बख्शती है, और फरहत देती है, सर्द मवाद को तहलील करती है, बाहरी ऐजा को भी कुव्वत देती है, रतूबतों को सुखाती है, बाह अधिक करती है, सुद्दे खोलती है, जिला करती है, बलगमी वर्मों को तहलील करती है, दूध और घी में हल की हुई अजू के टूट जाने व चोट और जखम में लगाने और मलने से मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

८६७—मूंज

प्र०-मूंज। सं०-मूंज। स्वाद-फीका। पहि०-सेंठे के ऊपर का छिलका है जो हिन्द में होता है, और रेशेदार है जिसकी रस्सी बनाते हैं। स्व०-सर्द खुश्क २।

गुण व कार्य—इसके जोशान्दे का गर्गरा जोश मुंह और मसूढ़ों व कवे (काग) के वरम को और दर्दको मुफीद है, इसका पीना भूख खोलता है और खूनी व बादी बवासीर व गुर्दे के दर्द व मसाने के दर्द को और इन्द्री (लिंग) के दर्द को मुफीद है, इसकी धूनी बवासीर को नफा करती है, हुक्के में तमाखू की तरह पीना हिचकी को दूर करता है, इसके पिसे हुये सेंठे का सोंठ के साथ लेप करना चेहरे की झाईं और स्याही को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

८६८—मूंग

प्र०-मूंग। सं०-मुद्ग। फा०-बनोमाश। अ०-माश व मज। रंग-हरी। स्वाद-फीकी। पहि०-एक दाना अनाज का मशहूर है। स्व०-सर्द व खुश्क २, छिलका उतरी मौतदिल है। हानि-ठंडे स्वभाव वालों को। दर्प०-खटाई। प्रति०-बाकला।

गुण व कार्य—बीमारों के लिये अच्छा और बेहतर अहार है, अहारत्व इसमें अच्छा है, अच्छा खिल्त पैदा करता है, मेदे में पचने पर अच्छी है लेकिन मेदे के गढ़े में देर से उतरती है, और नफाख है, पट्ठों को कुव्वत देती है, खून व सफरा की तेजी को तस्कीन देती है, सिर्के के साथ इसका लेप झांईको साफ करती व सीनेके दर्द और चोटको मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

८६९—मूंगा

प्र०-मूंगा। सं०-प्रवाल। फा०-मरजान। अ०-मरजान व मरगान। रंग-लाल। स्वाद-फीका। पहि०-समुद्र में एक पेड़ होताहै इसकी सुर्ख लकड़ी के दाने तराश कर लाते हैं। स्व०-सर्द खुश्क। हानि-सिर व मसाने को। द०-कतीरा व अनीसून। प्र०-दम्बुल अखवैन व कहरवा। मात्रा-४ मा०।

गुण व कार्य—सुद्दे खोलता है, शहद के साथ फालिज व लकवा और रअशा को मुफीद है, मेदे को कुव्वत देता है, जिगर व तिहाल को पाक करता है, मूत्र लाता है, खूनी दस्तों को बन्द करता है। खासकर इसको हिल करके पिलाना और गले में डालना बच्चों को नींद में चौंकने और डर कर रोने को मुफीद है।

८७०—मूंगे की जड़

प्र०—मूंगे की जड़। सं०—विद्रुम मूल। फ़ा०—बेख़ मरजान। अ०—बुसद। रंग—सफ़ेद लाल व काला। स्वा०—फीका। पहि०—एक चीज़ खानेदार व सख़्तदर्याई की है, मूंगेकी शाख़ प्रसिद्ध है लेकिन तहकीक़ात वाले इन्कार करते हैं। और कहते हैं कि समुन्दर का पत्थर है। सर्द १ व ख़ुश्क २। स्व०—गुर्दे को और उबकाई लाती है। दर्प०—कतीरा। प्रति०—कहरुबा। मात्रा—३ मा०।

गुण व कार्य—क़ाबिज़ है, ख़ुश्की करती है, दिल को फ़रहत देती है, ख़ून को बन्द करती है, जनून व मालिख़ोलिया व ख़फ़क़ान और नेत्र रोग को मुफ़ीद है, मुंह से ख़ून आने को नफ़ा करती है और कलेजे का ख़ून दस्तों की राह आने को मुफ़ीद है, आंतों के ज़ख़्म को नाफ़े है, जलायी हुई कत्थे के साथ मुंह आने और मुंह के दानों को मुफ़ीद है, इसका सुर्मा बीनाई को क़ुव्वत देता है और हिल किया हुआ सुखा शहदके साथ जुज़ाम (कोढ़) को मुजर्रब है।

(जहरीला नहीं)

८७१—महार (सनाय)

प्र०—महार। सं०—सनाय मक्की। फ़ा०—सनाय मक्की। अ०—सनाय। रंग—हरी सब्ज़ व सूखी जर्दी मायल। स्वाद—कड़वी व कषैली। पहि०—एक घास के पत्ते हैं जो मेंहदी से बड़े पहले मक्के की तरफ़ होते हैं। स्व०—गर्म २ ख़ुश्क १। हानि—दर्द व तिल्ली व मरोड़ पैदा करते हैं। दर्प०—बनफ्सा व गुलसुर्ख़ रोगन बादाम। प्रति०—तुर्बुद व पीली हैड़। मात्रा—६ मा०।

गुण व कार्य—सौदावी व सफ़रावी और बलग़मी माद्दे को दस्तों की राह निकालती है और कुत्ते जले हुये खिलनों को निकालती है, दिमाग़ को बलग़म व नज़ले से पाक करती है, दमे व हांपने और कूलंज को व नुक़रस को मुफ़ीद है व तर व सूखी खुजली को और गठिया को और पहलू के दर्द को नफ़े है और ख़ुश्की करती है।

(जहरीला नहीं)

८७२—मेंहदी

प्र०—मेंहदी। सं०—मदयन्तिका। फ़ा०—हिना। अ०—हिना। रंग—हरी। स्वाद—कसैली व कड़वी। प०—एक पेड़ ४ व ५ गज ऊंचा होता है, इसके पत्ते और बीज काम में आते हैं, पत्ते हाथ, पांव रंगने के काम आते हैं। स्व०—बलदायक सर्दी मायल कब्ज़ को ताक़त के साथ। हानि—हलक़ और फेफड़े को दर्प०—कतीरा व अस्फ़गोल का लुआब। प्रति०—मुंडी। मात्रा—४ मा०।

गुण व कार्य—रक्त को शुद्ध करती है, चर्म रोगों और कोढ़ व आतशक और ताक़त को गुणकारी है, मेदे व जिगर व तिहाल व मूत्र के मार्ग के मसाने व रहम (योनि) रोगों को लाभदायक है, कांवर को मुफ़ीद है, दर्द व मसाने की पथरी तोड़ती है, कठिनाई से मूत्र होने को लाभदायक है, इसके पत्तों के जोसांदे की कुल्ली मुंह आने को नफ़ा करती है इसका लेप वरम व छाले के वरम को दूर करता है, इसके फूलों को कपड़ों में रखने से कीड़ा नहीं लगता है।

(जहरीला नहीं)

८७३—महुवा

प्र०-महुवा। सं०-मधूक। फा०-गुल चेकान। रंग-फूल सफ़ेद फल हरा। स्वाद-फूल मीठा व फल कड़वा। पहि०-एक बड़ा पेड़ है जिसके फल का तेल घी सा होता है, खाने में अधिकतर फूल काम आते हैं। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-सिर में दर्द पैदा करता है। दर्प०-धनियां।

गुण व कार्य—रियाह और बलग़म को दूर करता है। इसके फूल दूध और मनी पैदा करते हैं, रियाह व बलग़म के फ़िसाद को दूर करते हैं। इसके बीज सर्दी के दर्द को लाभ देते हैं. बीज पानी में पीस शाफ़ा (बत्ती) बना योनि में रखना गर्भ को गिरा देता है। फूल और बराबर का कुचला पीस कर लेप करना सांप के काटे हुये को अद्भुत गुण दायक है।

(जहरीला नहीं)

८७४---मेंथी के बीज

प्र० नाम-मेंथी के बीज। सं०-मेथिका। फा०-तुख्म शमलीत। अ०-बज़रउल हलबा। रंग-सुर्खीमायल व पीला। स्वाद-कड़वा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म स्वभाव वालों को। दर्प०-घी। प्रति०-अलसी। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—रियाह और वरम को तहलील करते हैं, मूत्र व हैज़ जारी करते हैं। तबिअत को नर्म करते हैं, रियाह को दूर करते हैं। सद बीमारियों यानी मिर्गी व लक़्वा व फालिज और गठिया को लाभकारी है। इसका लेप वरम को शान्ति करता है और कान के दर्द को लाभ देता है।

(जहरीला है)

८७५---मेंथी का साग

प्र०-मेंथी का साग। सं०-मेंथीका शाकं। फा०-तुरह शमलीत। अ०-बकूलता उलहलबा। रंग-हरा। स्वाद-कुछ कड़वा व सुगन्धित। पहि०-एक साग प्रसिद्ध और अक्सीर काम का है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म स्वभाव वालों को। दर्प०-खटाई व घी। प्रति०-शलगम का साग।

गुण व कार्य—इसके पत्ते माद्दे को पुष्ट और पाग करते हैं, तबिअत को नर्म करते हैं, रियाह और वरम को शान्ति करते हैं व मूत्र लाते हैं, सर्दी के रोग व कमर के दर्द और तिल्ली के वरम को लाभदायक है और योनिके दर्द और मसानेकी सर्दी को फायदेमन्द हैं। इसका लेप सिर्कके साथ बाहरी व भीतरी वरमों को तहलील करता है।

(जहरीला नहीं)

८७६---मैदा लकड़ी

प्र०-मैदा लकड़ी। सं०-मैदाकाष्टं। अ०-मग़ास व कलज़। रंग-बाहर काली भीतर सफेद व पीली। स्वाद-फीकी। पहि०-एक पेड़ की छाल प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म २ खुश्क १। हानि-मसाने को। दर्प०-शहद। प्रति०-सोरंजान व अकरकरा। मात्रा-५ माशे।

गुण व कार्य—वरम और रियाह को तहलील करती है, काबिज है, पट्ठों को बल देती है। एंठे हुए ऐज़ा को और बाह को कुव्वत देती है, बदन को फरबै करती है। शिर के रोगों को लाभकारी है, क़ और वरमों को मुफीद है। ऐज़ा की कठिनाई और पकेपन को और चोटको नफा देती है।

(जहरीली नहीं)

८७७—मैनफल

प्र०-मैनफल । सं०-मदनफलम् । अ०-जोज़-उलकी । रंग-लाल व पीलेपन । स्वाद-कड़वा । पहि०-एक पेड़का फल जंगली अंजीर के बराबर है इसके बीज बिही दानेकेसे होते हैं,इसका छिलका काम में आता है । स्व०-गर्म खुश्क २ । दर्प०-गोंद और रब्बुल सुस । (मौरेठी का सत्व) प्र०-बोरह व राई । मात्रा-२ माशे ।

गुण व कार्य—बलग़म को छांटता है, और दस्तावर है, दिमागी बीमारियों को लाभदायक है । पट्ठों के रोगों को नफा करता है, फालिज व लकुवा व खांसी व दमे और हांपने को और कोढ़ व फोड़े फुन्सियों को नफा करता है । रियाह व पेट के अफारे को शान्ति करता है, इसका तर किया हुआ कपड़ा रखना योनि को तंग करता है ।

(जहरीला नहीं)

८७८—मैनसिल

प्र०-मैनसिल ।सं०-मनःशिला । अ०-जरनीख़ अहमर । रंग-लाल ।स्वाद-फीका व बूदार ।पहि०-गंधक की तरह से एक खनिज वस्तु है । स्व०-गर्म खुश्क ४ । हानि-खिलतों को सड़ा देता है । दर्प०-पीली हैड़ का बक्ल़ । प्रति०-हरताल व गधक । मात्रा-१ माशा ।

गुण व कार्य—तबियत व वरम को नर्म करता है, बलगम व खून के फिसाद को और जहर को दूर करता है, सर्दी की खांसी को लाभदायक है और आवाज को साफ करता है और मोटेपन को दूर करता है, इसका लेप तर व सूखी खुजली को गुणदायक है ।

(जहरीला नहीं)

बालउल नून (न) इसमें ३६ दवाइयां हैं

८७९— नाखूना

प्र०-नाम-नाखूना । सं०-नख । फा०-क़सर गियाह । अ०-अकलीलुल मलक । रंग-भूरा । स्वाद-कुछ कड़वा । पहि०-एक घास का फल मरे हुये नाखून की तरह का होता है । स्व०-गर्म खुश्क हानि-फोतों को । दर्प०-शहद व मुनक्का व अंजीर प्रति०-बाबूना और मेथी । मात्रा-३ माशे ।

गुण व कार्य—सरदी के बरमों को तहलील करता है, मवाद को पुख्ता करता है,काबिज है और खुश्की लाता है और लताफत (शुद्धी) करता है, कड़े बरमों को नर्म करता है और ऐजा (अवयव) को कुव्वत देता है, इसका जोशांदा मेदा के दर्द और जिगर व तिल्ली और गुर्दा के रोगों को फायदेमन्द है ।

(जहरीला नहीं)

८८०—नारियल व खोपरा

प्र०-नारियल व खोपरा ।सं०-नारिकेल ।फा०-नारकील ।अ०-नारजील ।रंग-बाहर लाल व काला भीतर सफेद । स्वाद-स्वादिष्ट व मीठा । पहि०-एक पेड़ का फल है जो गोल और छोटे खरबूजे के बराबर और पेड़ लंबा व सीधा प्रसिद्ध है ।स्व०-गर्म खुश्क १ । हानि-सुद्दा लाता और देर हजम है । दर्प०-शकर व मिश्री व खट्टी मेवा । प्रति०-पिस्ता व बादाम व चिलगोजा । मात्रा-१ तो० ।

गुण व कार्य—बाह लाता है, मनी को गाढ़ा करता है, सीने को नर्म करता है, अहारत्व खूब है, बदन को फरबे करता है, गुर्दे को कुव्वत देता है, और फरबे करता है, असली हरारत को बलवान

करता है फालिज व जनून और ऐज़ा की ऐठन और मालिखोलिया का लाभदायक है-ज़ाफजिगर को दूर करता है, मिश्री के साथ १ तोल हर रोज निहार मुंह खाना बीनाई को बल दायक है और आंख से पानी जाने को मुफीद है, खास कर इसका तैल बदन को नर्म रखता और बालों को बढ़ाता है, और दर्द को नफा देता है और फर वही लाता है, इसको सिर में डालने से दिमागी ऐज़ा की सेहत कायम रहती है।

(जहरीला नहीं)

८८१—नारियल दर्याई

प्रसिद्ध नाम-दर्याई नारियल । फा०-नारिगोल दर्याई । अ०-नारजील बहरी । रंग-सफेद व पुराना पीला। स्वाद-फीका व कड़वा। पहि०-एक समुद्र के फल की गिरी है जो कदू के बराबर होता है और इसका पेड़ एक टापू में होता है। स्व०-मिश्रित बल वाला और गर्म खुश्क । मात्रा-५ जौ से १ मा० तक।

गुण व कार्य—हैज़ व कै और उबकाई में गुलाब के अर्क में घिसकर देना बहुत लाभदायक है असली हरारत को बल और ठहराव और आराम देता है। और अक्सर जहरों को मारने वाला है, फिसाद करने वाला व खिलतोंके लिये नफा देता है, प्यास को खूब तस्कीन देता है, बबाई हवा के औगुन को दूर करता है, सांप व बिच्छू के विष को भी दूर करता है, जहां पर कोई कीड़ा काट खावे उसके ऊपर पीसकर लेप करना दर्द व तकलीफ को कम और दूर करता है।

(जहरीला नहा)

८८२—नारंगी

प्र०-नारंगी । स०-नारंग । फा०-किस्मेअज० नारंज । अ०-हरा व पीला । रंग-बाहर लाल गूदा पीला । स्वाद-मीठी रसदार व खट्टी। प०-एक हिन्दी फल है मिस्ल नारंजके फांकेदार, इसके बीज कैड़ कैसे होते हैं। स्व०-सर्द तर३ । हानि-पट्ठों व सीने को। दर्प०-नमक और कन्द।

गुण व कार्य—सफरा व खून की तेजी और प्यास को तसकीन देता है, फरहत देती है, मेदे को बल देती है जब कि मेदा गर्म हो, कै और उबकाई व मितली दूर करती है, चबाने वाली मोटी और हलुवाजात गिज़ा की इसलाह करती है, इसके सूखे छिलके का उबटन चेहरे की स्याह व झांई और मुहासे को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

८८३—नारी का साग

प्र० नाम-नारी का साग । सं०-कलम्बी स्वाद-हरा। पहि०-एक घास है जो ठहरे हुये पानी में उगती है पत्ते लंबे और टहनी खोखरी होती है। स्व०-गर्म खुश्क १। हानि-नफाख है। दर्प०-नमक व माष (उड़द)। प्रति०-कांडल का साग।

गुण व कार्य—पचने के समय रद्दी है, अहारत्व कम है, वरम व रियाहको तहलील करता है, फिसाद करने वाला है व खिलत सौदावी पैदा करता है और रियाह खूब दूर करता है, मेदेको कमजोर करता है।

(जहरीला नहीं)

८८४—नारदीन

फा०-नारदीन । अ०-सम्बुल रूमी। रंग-भूरा व खुश्क। स्वाद-कुछ कड़वा व सुगंधित। प०

एक घास मय जड़ व शाख व फूल के रूमी जिसके बीज पत्तों से शाख लगी होती है। स्व०-गर्म २ खुश्क २। हानि-फेफड़े को। दर्प०-कतीरा व शहद प्रति०-सम्बुल हिन्दी। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य—इसका पीना फालिज व लकवे और यर्का को मुफीद है, मेदे पर मवाद नहीं गिरने देता है, मूत्र व हैज लाता है, वरमों को तहलील करता है, इसका सुर्मा पलकों के बाल जो गिरगये हों जमाता है, इसका जोशांदे मे बैठना (आबजन करना) दर्द जिगर व दर्द गुर्दा को और अक्सर रहम की बीमारियों को लाभदायक है और इसको गर्म मरहमों में शामिल करते हैं।

(जहरीली नहीं)

८८५—नासपाती

प्रसिद्ध नाम-नासपाती । फा०-नाश-पाती। रंग-पीली भूरी। स्वाद-मीठी व रसदार। पहि०-अमरूद के बराबर एक मेवा है, परन्तु इसका गूदा सख्त होता है। स्व०-मीठी मौतदिल है खट्टी सर्द खुश्क है। हानि-कुलंज पैदा करती है, दर्प०-माय असफल। प्रति०-बिही।

गुण व कार्य—देर हजम और नफाख (अफारा लाने वाली) है, व गाढ़ा खून पैदा करती है, ऐजा (अवयव) को कुव्वत देती है, बदन को फरबै करती है, और फरहत देती है, काबिज है व जिला करती है और गर्म जिगर को कुव्वत देती है।

(जहरीली नहीं)

८८६—नागदमन

प्र०-नागदमन। सं०-नागदमन। रंग-काली। स्वाद-कुछ कड़वी। पहि०-एक लकड़ी है जो सांप की सी शक्ल की होती है, हिन्द के फकीर अक्सर पास रखते हैं। स्व०-सर्द। हानि-काबिज है।

गुण व कार्य—बदन को फरबै करती है और बलवान करती है, बलगम के फिसाद को दूर करती है, सोजाक को लाभ देती है, सफरा को दूर करती है, बाजे इसको सांप के विष का मारने वाला भी कहते हैं।

(जहरीला नहीं)

८८७—नागदौन

प्र०-नागदौन। सं०-नागदमनी। फा०-मारचोबा अ०-हलीवन व ऊद उलहय्या। रंग-हरा व जर्दी-मायल। पहि०-एक घास है जंगली व बस्तानी कबर की तरह की दूध वाली पत्ते सफेद चित्तीदार और बाज हकीमों की राय इसकी पहिचान में फरक है। स्व०-गर्म। हानि-इसकी अधिकता जोड़ों व सिर को मुजिर है। दर्प०-शहद। प्रति०-सर्षप व सरसो। मात्रा-६ मा०।

गुण व कार्य—खाने को पेट में सड़ा देती है, खासकर पेशाब लाती है, जिला करती है सुद्दे खोलती है, फोड़े फुन्सियों को दूर करती है, पसीने व मूत्र की बू दूर करती है, आंख के नजले के शुरू में इसका पीना मुफीद है, जलंदर व दर्द पहलू और फेफड़े के दर्द को लाभदाई है, जिगर और तिहाल का सुद्दा खोलती है, गुर्दे को पाक करती है, पथरी तोड़ती है, लसदार बलगम को जो मेदे में हो कै की राह दूर करती है, और तबिअत को नर्म करती है, बाह को हरकत देती है।

(जहरीला नहीं)

८८८—नागदौन के बीज

प्र०-नागदौनके बीज। सं०-नागदमनी बीजम।

फा०-तुख्म मारचोबा । अ०-बज्रुल हलीयन । रंग-काला । स्वाद-कड़वा । पहि०-नागदौन के बीज हैं जो नील के बीज केसे और उसकी बराबर होते हैं । स्व०-गर्म खुश्क २ । हानि-मेदे व दिमाग को । दर्प०-शहद । प्रति०-शक्राकुल और तोदरी । मात्रा-२ मा० ।

गुण व कार्य—बाह जियादा करते हैं और लताफत देते हैं, जिगर व तिहाल के सुद्दे खोलते हैं, मूत्र लाते हैं, बाह को बल देते हैं और वरम व रियाह को तहलील करते हैं, सुद्दे व मसाने की पथरी तोड़ते हैं ।

(जहरीले नहीं)

८८९—नागरमोथा

प्र०-नागरमोथा । सं०-मुस्तक । फा०-मुश्कजमी । अ०-सादकोनी । रंग-काला । स्वाद-कड़वा व सुगंधित व तेज । प०-गोल व लांबी एक जड़ प्रसिद्ध है । स्व०-गर्म खुश्क २ । हानि-हलक व फेंफड़े और आवाज को । दर्प०-शकर व अनीसून प्रति०-दारचीनी व बालछड़ व मुमुकी । मात्रा-६ माशे ।

गुण व कार्य—खुश्की करता मूत्रलाता और पथरी तोड़ बहाता है, सुद्दे खोलता है मुंह और बदन की बदबू दूर करता है, समझ और अक्ल को बढ़ाता है, बाह को हरकत (तेजी) देता है, मेदे व पट्ठों को बलवान करता है, रियाह को दूर करता है, कांबर और खफ़कान को मुफीद है, इसका मंजन दांतों को मजबूत करता है, इसके रंगे हुये कपड़े फरहत देते और बाह लाते हैं ।

(जहरीला नहीं)

८९०—नागकेसर

प्र०-नागकेसर । सं०-नागकेसर । रंग-पीली । स्वाद—फीकी व बहुत सुगंधित । प०-एक बड़े पेड़ का फूल है जिसकी सुगंध सब सुगंधों से तेज है । स्व०-गर्म १ खुश्क १ । हानि-जिगर गर्म व मसाने को । दर्प०-तुख्म कासनी व तबाशीर । प्रति०-बालछड़ व नारजील । मात्रा-२ माशे ।

गुण व कार्य—खून को साफ करता और सफ़रा को दस्तोंकी राह निकालता व लताफ़त करता और सर्द स्वभावों के दिलको बलवान बनाता है, मेदे के बुखारात को दिमाग पर चढ़ने नहीं देता है, मेदे व जिगर और आंतों को कुव्वत देता है, बहते हुये खूनको बन्द करता है,पसीने की बू को दूर करता है इसका फूल सफ़रा व बलगम को दूर करता है, विषों का मारने वाला है और बवासीरको नफा देता है, इसका इत्र दिमाग को कुव्वत देता है, व गुर्दे के दर्द को लाभदायक ।

(जहरीला नहीं)

८९१—चांगेरी

प्र०-नानकजारा ।सं०-चतुष्पत्रिका ।फा०-नान कुलाग । अ०-खुब्बाज़ी । रंग-स्याही मायल सफेद । स्वाद-बे स्वाद । पहि०-एक घास काबिजहै, जिसको खोल कहते हैं, गोल और फूलऊदा और छोटा और इसका पेड़ खतमीका सा होताहै ।स्व०-सर्द तर १ । हानि-जोफ मेदे को । दर्प०-फवाका का सत । प्र०-खतमी । मात्रा-८ मा० ।

गुण व कार्य—तबियत को नर्म करती और मवाद कोपुख्ता और निकलने पर तैयार करती है, जिगर के सुद्दे खोलती है, पेशाब लाती है,आंतों में

चिपक कर सुद्दा पैदा करती है, व आंतोंमें फिसल पैदा करती है, दूध अधिक करती है, वरमों को तहलील करती है, खांसी और सीने के खुखुराने को फायदेमन्द है, इसकी जड़ व शाख और बीज करीब २ बराबर गुण वाले हैं, इसके पत्तों का लेप ऐज़ा की कमज़ोरी को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

८९२—निर्वसी

प्र०-निर्वसी। सं०-निर्विसी। फा०-जदवार। अ०-ज़दवार। रंग-काली। स्वाद-कड़वी। पहि०-सनोबर की शक्लकी एक जड़ प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-आंतों में जख़म पैदा करती है। दर्प०-धनिया व दूध व कतीरा। प्रति०-ज़र नवाव। मात्रा-२ मा०।

गुण व कार्य—तबियत को फरहत देती है, ऐज़ा को कुव्वत देती है, ऐज़ाय शिकमी (पेट) और बीनाई को मजबूत करती है, सुद्दा खोलती है, लताफत करती है, वरम और बदगोश्त को तहलील करती है, बदन को फरवै करती है, भूख बढ़ाती है और बाह बढ़ाती है, तहरीक बाह करती है, मूत्र लाती है, नजला और आंख के नजूल को दूर करती है, आधाशीशी को मुफीद है, गुर्दे के दर्द के लिए अजीब गुणदायक है, अक्सर जहरों के मारने वाली है, तिर्याकका गुण रखती है और मिर्गी को लाभ देती है।

(जहरीला नहीं)

८९३—नर्गिस

प्रसिद्ध नाम-नर्गिस। फा०-नर्जिस व अबहर। रंग-रंगबरंग। स्वाद-फीका व बहुत सुगंधित। पहि०-एक घास का फूल है जिसके शाख व जड़ और बीज बिल्कुल प्याज से मिलते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-गर्म स्वभावों को। दर्प०-नीलोफर व काफूर। प्रति०-गुलसेवती व गुलखैरी। मात्रा-६ मा०।

गुण व कार्य—जिला करती और रतूबत को बदन के अन्दर से खींचती और जज़ब करती है, इसका फूल सूंघना जुकाम और नज़लेको लाभ देते हैं और दिमाग का सुद्दा खोलते हैं, बाज हकीमों का कहना है कि अगर इसको हमेशा सूंघा करे तो जाड़ों में भी जुकाम व नजला न हो, इसकी जड़ मेदे व रहम को फाजिल है और खराब रतूबत से पाक करती है और मेदे के कीड़े मार निकालती है और दर्दों को तस्कीन देती है और बाह बहुत करती है।

(जहरीला नहीं)

८९४—निसोत

प्र० निसोत। सं० त्रिवृत। अ०-तुर्बुद। रंग-सफ़ेद व पीला। स्वाद-बहुत कड़वा। पहि०-एक पेड़ की जड़ है जिसके पत्ते लोबिये कैसे और बंगाल में इसको पतोहरी कहते हैं। स्व०-गर्म खुश्क। हानि-आंतों को और ऐज़ा को खुश्क करती है। दर्प०-रोगन बादाममें चर्ब करना। प्रतिनिधि-गारि कून और काला दाना। मात्रा-४ माशे।

गुण व कार्य—बलगम और पतली रतूबतों को दस्तों की राह निकालती है व जले हुये खिल्तों को भी निकालती है, दिमाग व मेदे व जिगर और रहम को बलगम से पाक करती है और सुद्दा खोलती है, फालिज व लकवा और पट्ठों की बीमारियों को लाभ देती है, सीने के दर्द को मुफीद है, रतूबत की खांसी को नफा देती है,

काबुली हैड़ के साथ मिर्गी व जनून और मालि खोलियां को नफा देती है, अकुलनिसा को मुफीद है, सोंठ के साथ सेवन अच्छा होता है, काली से परहेज रक्खें, विष है

(बाहर से इसका छिलका विष है)

८९५—निशास्ता

प्र०-निशास्ता । सं०-सत गोधूम । फा०-निशास्ता । अ०-निशाय । रंग-सफेद । स्वाद-फीका । प०-गेहूँका सत प्रसिद्ध है । स्व०-सर्द खुश्क । हानि-सुद्दा लाता और मनी कम करता है । द०-शीरीनी व लौंग । प्रति०-धुले व भिगोये चावल । मात्रा-१ तोला ।

गुण व कार्य—मवाद को पक्का करता है, व काबिज़ है, आंतों में चिपक कर सुद्दा पैदा करता है, रतूबत को सुखाता है, ज़ख्म को भर लाता है, बहते हुये खून बन्द करता और रोकता है, हलक व सीने के खरखुरान को दूर करता है, गर्मी की खांसी व सीने के दर्द और सिल को लाभ देता है, जाफरान के साथ इसका लेप झाई को नफा देता है, इसका हरीरा दिमाग़ को बल करता और बलग़म को पकाता है

(जहरीला नहीं)

८९६—नफ़त

अ०-नफत । रंग-सफेद व काला । स्वा०-कुछ कड़वा व बूदार व तेज । पहि०-बाज जमीनों से मिस्ल जुफ्त और कैर के रतूबत लतीफ निकलती है, और उसकी हिफ़ाज़त न हो तो हवा हो जावे । स्व०-गर्म खुश्क ४ । हानि-जिगर और फेफड़े व गुर्दे को । द०-लुआब अस्पगोल व कतीरा । प्र०-जावशीर । मात्रा-२ माशा ।

गुण व कार्य—मसाम और सुद्दे खोलती है और जल्द जारी होती है, बाह जियादा करती है, रियाह को खूब तहलील करती है, पेट के कीड़े मार निकालती है, इसमें तर किया हुआ कपड़ा रखना हैज़ को जारी करता है, सर्द बीमारियों को मुफीद है, इसको कान में डालना बहरेपन और रियाह को लाभ देता है, इसका सुर्मा नजले और जाले को नफ़ा देता है ।

(करीब वसम है)

८९७—नकछिकनी

प्रसिद्ध नाम-नकछिकनी । फा०-बेख गावजबां । अ०-कुन्दस व ऊदउल । रंग-हरी । स्वाद-तेज बू व तेज व कड़वी । पहि०-एक घास बरंजासफ की तरह की है जिसको मलकर सूंघने से छींकें खूब आती हैं । स्व०-गर्म खुश्क २ हानि-फेफड़े को दर्द और गशी लाती है । दर्प०-कतीरा व दूध । प्रति०-मैनफल और काली मिर्च । मात्रा-३ रत्ती ।

गुण व कार्य—छींक खूब लाती है, और हिचकी को लाभ देती है, दिमागी मर्जो और नजले को नफ़ा करती है, आंव उतरने को मुफीद है, इसका तल नाक में डालना दिमाग़ से बलग़म को छांटता है, रियाह को तहलील करता है और जिला करता है सफेद व काले दाग व छाप और झाई और चेहरे के मैल और खुजली को नफा देती है ।

(जहरीला नहीं)

८९८—नख

प्र०-नख । सं०-नख । फा०-नाखून परियान । अ०-अज़फार उल तीब । रंग-सफेद व सुर्खी

मायल। स्वाद-फीका व सुगन्धित। पहि०-एक चीज़ कड़ी व गोल नाखुन सी और उसके बराबर होती है और सिंध नदी के किनारे लाते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-सिर दर्द लाता है और आंतों में खराश पैदा करता है। दर्प०-सिकंजबीन व गिलेअर्मनी। प्रति०-चिरायता। मात्रा २ माशे।

गुण व कार्य—गाढ़ी फुज़लात (मल) को मूत्र की राह निकालता है, गाढ़े खिलतों को हलका और उम्दा करता है, मिर्गी व सकता और खफकान को लाभदायक है जब कि ठंड से हो और सर्दी के दर्द जिगर, मेदे के दर्द और रहमको मुफीद है व जिगर को कुव्वत देता है, बवासीर को मुफीद है. इसकी धूनी योनि के फटने और हैज के खून बंद हो जाने के लिये और मिर्गी व सकते का खास कर लाभदायक है।

(जहरीला नहीं)

८९९—नल व नकुल

प्र०-नल व नकुल। सं०-नल। फ़ा०-नै। अ०-कसब। रंग-कच्चा हरा पक्का पीला। स्वाद-फीका व कुछ मीठा। पहि०-एक खोखली व हल्की लकड़ी है जिसके पत्ते गन्ने कैसे होते हैं। स्व०-सर्द वाजों के नजदीक गर्म है। हानि-फेफड़े को। दर्प०-कतीरा।

गुण व कार्य—आंख को कुव्वत देता है, खून के जोश व सफ़रा को दूर करता है और योनि की रतूबत को पाक करता है, पेशाब लाता है इसकी जड़ जिला करती है और वरम को तहलील करती है, हर प्रकार की गठिया और जोड़ों के दर्द को मुफीद है, इसकी कोंपल पीला मूत्र लाती है और मुंह से खून आने को लाभदायक है, खांसी और आतशक को नफा करती है।

(जहरीला नहीं)

९००—काली तुलसी

प्र०-काली तुलसी। सं०-कृष्ण तुलसी। फ़ा०-नमाम। अ०-नमांमुल मलक सीयाह। रंग-हरा। स्वाद-तेज व सुगंधित। पहि०-एक घास है जो तिलसी से मिलती है। स्व०-गर्म खुश्क। हानि-गुर्दे को। दर्प०-बनफ्शा। प्रति०-पौदीना व बाद-रूज। मात्रा-४ माशे।

गुण व कार्य—रियाह को तहलील करता है, पेट के कीड़े मारता है, मूत्र लाता है और उम्दा है, दिल को कुव्वत देता है, मरे हुये बच्चे को पेट से निकालता है, कै और मितली को तस्कीन देता है, जिगर के वरम और तिल्ली को और सीने के दर्द को नाफे है, भिड़ (ततैये) और बिच्छू के काटने के तजुर्बेकार है जब कि सिर्कके साथ हो.गुर्दे व मसाने की पथरी तोड़ता है, हिचकी व मरोड़ को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

९०१—नमक सांभर

प्र०-नमक सांभर। सं०-सांभर लवण। फ़ा०-नमक सांभर। अ०-मलह उज़अवक़र। रंग-मटमैली। स्वाद-कुछ खारी। पहि०-बनाया हुआ नमक खाया जाता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। मात्रा १ तोला।

गुण व कार्य—जिला करता और रियाह को तहलील करता है, बलगमी मवाद को दस्तों की राह निकालता है, रियाह को दूर करता है, हाजिम है और प्यास लाता है।

(जहरीला नहीं)

९०२—नमक लाहौर

प्र०-नमक लाहौर। सं०-लवण लाहौरी। फ़ा०-नमक लाहौरी। अ०-मलह इन्द्रानी। रंग-सफेद। स्वाद-खारा। पहि०-खान से निकलता है प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क ३। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—याददाश्त और बुद्धी को मजबूत करता है, लसदार बलग़म को दस्तों की राह निकालता है और तुख़्मा (बदहजमी), खट्टी डकार को दूर करता है, नेत्र रोगों की औषधियों में काम आता है, इसका चूर्ण पेट के अफ़ारे को दूर करता है। (जहरीला नहीं)

९०३—नमक शीसा (सौंचर)

प्र०-नमक शीसा। सं०-सौंचर लवण। फ़ा०-नमक शीशा। अ०-मलह उलजजाज। रंग-सफेद सुर्खी मायल। स्वाद-बहुत खारा। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क ३। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—हाजिम और तेज है और जिला करता है, इसका सुर्मा आंख के जाले व मांडे और कम दीखने को लाभदायक है, नाखूने को भी मुफीद है। (जहरीला नहीं)

९०४—नमक सेंधा

प्र०-नमक सेंधा। सं०-सैंधव लवण। फ़ा०-नमक सेंधा। अ०-मलह हिन्दी। रंग-सफेद चमकदार स्याह मायल। स्वाद-अधिक खारा व बूदार। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क। मात्रा-७ माशे।

सौदावी मवाद को दस्तों की राह निकालता है, बलगम को छांटता है और रियायाह को दूर करता है, भूख लाता है, बदहजमी को दूर करता है, खट्टी डकार और पेट के फूलने को लाभ देता है, इसका चूर्ण सौंफ और नरकचूर के साथ पेट के दर्द को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

९०५—नमक खारी

प्र०-नमक खारी। सं०-क्षार लवण। फ़ा०-नमक शोर। अ०-मलह उलअजीन। रंग-मटमैला स्वाद-खारा। पहि०-ज़ोनी मिट्टी से बनाया जाता है। स्व०-गर्म खुश्क ३। मात्रा-१ माशे।

गुण व कार्य—खून को बढ़ाता है, रियाह को दूर करता है, खाना खूब हजम करता है, भूख लाता है, मसाम को खोलता है, और वरम को तहलील करता है।

(जहरीला नहीं)

९०६—निवाड़ी का फूल

प्र०-निवाड़ी का फूल। फ़ा०-गुल निवाड़ी। रंग-सफेद। स्वाद-फीका। पहि०-एक सुगंधित फूल है, इसका पेड़ १ व ३ गज का होता है। स्व०-सर्द है। हानि-पट्ठों को। दप०-शहद। प्रति०-गुड़हल।

गुण व कार्य—तीनों खिलतों को दूर करता है, दिमाग को बलवान करता है, फरहत लाता है, गर्मी के सिर दर्द को मुफीद है, इसका सूंघना नजला पैदा करता है, इसका लेप खास तौर पर वरम को तहलील करता है। (जहरीला नहीं)

९०७—नौसादर

प्र०-नौसादर। सं०-नवसार। फ़ा०-नौशादर। अ०-नौशादर। रंग-सफेद। स्वाद-कुछ खारा व सफेद। पहि०-एक चीज शोर की तरह की खान की और बनाई हुई भी होती है। स्व०-गर्म खुश्क

२। हानि-तोला भर कातिल है। दर्प०-कै करना व दूध घी। प्रति०-बोरह अरमनी। मात्रा-६ रत्ती।

गुण व कार्य—क़ातिक है और सुखकी लाता है. शरीर के भीतर से रतूबत को खुश्क करता है, सुद और मसाम खोलता है; खून बहनेको बन्द करता है, इसका पीना तिल्लीके वरमको मुफ़ीद है और बलगम को छांटता है, और रियाह को दूर करता है।

(जहरीला है)

९०८-नील

प्र०-नील। सं०-नीलम्। फ़ा०-नील। अ०-नीलज। रंग-नीला। स्वाद-कड़वापन। पहि०-एक घास है उसके सत का भी नाम नील है, मतलब नील से है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-तिहाल व भूल पैदा करता है। दर्प०-रुब्बुलसूस। प्रति०-लालचन्दन व गूगल। मात्रा-३ माशा।

गुण व कार्य—क़ाबिज है, खुश्की लाता है, तिहाल के दर्द को दूर करता है, सुर्ख बांदह (छोटी फुन्सी) और जलंधर को मुफ़ीद है, बालों को दृढ़ और काला करता है, जख़्मों को सुखाता और भरलाता है, बालोंका आम तौरपर मशहूर खिज़ाब है और कोढ़ को इसका लेप मुफ़ीद है।

(जहरीला नहीं)

९०९—नीलम

प्र०-नीलम। सं०-नीलमणि। फ़ा०-याकूत कबूद। रंग-नीला चमकदार। स्वाद-फीका। पहि० एक पत्थर बहुत कड़ा व बहुमूल्य है, जिसके नग आदि बनते हैं। स्व०-सर्द १ खुश्क ३। प्रति०-याकूत अहमर। मात्रा-३ रत्ती।

गुण व कार्य—सर्दी करता है, तबिअत को नम करता है, खासकर आंखों को कुव्वत देता है, विष और फोड़े फुन्सी के रोग को दूर करता है, पेट को कुव्वत देता और खुश्की करता है।

(जहरीला नहीं)

९१०—नीलोफ़र व नीलफूल

प्र०-नीलोफर व नीलफूल। सं०-नील कमल फा०-नीलोफर। अ०-करबउन्न माय रंग-बाहर सफ़ेद भीतर पीला। स्वाद-फीका। पहि० एक पानी की घास का मशहूर फूल है। स्व०-सर्दतर २। हानि-मसाने और बाह को। दर्प०-मिश्री व शहद। प्रति०-खत्मी। मात्रा-१० माशा।

गुण व कार्य—दिल व दिमाग को बली करता है, गर्मी को शान्ति करता है, और गर्म व तेज नजला व खांसी व छाती की खुश्की और उसके खुरखुराने को मुफ़ीद है. इसका फूल सूंघना गर्म स्वभाव वालों के दिल और दिमाग को कुव्वत देता है, नींद लाता है, गर्मी के दर्द को तस्कीन देता है, इसकी जड़ गर्म व खुश्क है, दस्तों और आंतों के जख़्म को मुफ़ीद है, मनी को गाढ़ा करता है।

(जहरीला नहीं)

९११—नीलाथोथा

प्र० नाम-नीलाथोथा। सं०-तुत्थं। फ़ा०-तूतियाये सब्ज़। अ०-तूतियाये अख़ज़र। रंग-हरा स्वाद-कसैला। पहि०-खान की व बनावटी चीज है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-कातिल है; व मांस को काटता है। दर्प०-गाय का घी या कै करना। प्र०-सुहागा। मात्रा-१ माशा।

गुण व कार्य—वरम और बद को नर्म करता है, अक्सर जख़्मों का मारने वाला है, खुजली को नफ़ा देता है, बलगम को छांटता है. पेट के कीड़े

मार निकालता है, आंख के जाले व माड़े को काट कर बहाता है।

(१ माशा समकादिल है)

६१२—नीलोफर के बीज

प्र०-नीलोफर के बीज। सं०-नीलकमल बीजं फ़ा०-तुख्म नीलोफर। बब्र उलकरंब उलमाय। रंग-सुर्खी मायल व काला भीतर सफेद। स्वाद-फीका। पहि०-गोल और छोटे काकन के बराबर बीज मशहूर है। स्व०-सर्द खुश्क। हानि-बाह को कमजोर करते हैं। दर्प०-मिश्री व शहद। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—मनी को जमा देते हैं, इनका पीना रतुबत को (चाहे वह किसी राह से हो) बहने को बन्द करते हैं, इसका लेप खून बहने और मसाने के दर्द को मुफीद है और हैज जारी करता है। (जहरीला नहीं)

६१३-नीलकंठी

प्र०-नीलकंठी। सं०-नीलकंठी। रंग-फूल नीला। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक घास है, जिसके पत्ते औसत दर्जे के होते हैं। स्व०-गर्म तर प्रति०-ब्रह्मडंडी। मात्रा-७ माशे।

गुण व कार्य—खून साफ करती और पेशाब लाती है, चर्म रोग को गुणदायक है और आतशक व रक्त विकार को लाभकारी है, कोढ़ और सुर्ख वादह (छोटी २ फुन्सी) को खास कर नफा करती है। (जहरीला नहीं)

६१४—नीम

प्र०-नीम। सं०-निम्ब। फ़ा०-नीम्ब। रंग-हरा। स्वाद-खूब कड़वा व फल कुछ मीठा। पहि० एक बड़ा व ऊंचा पेड़ है जिसके पत्ते लम्बे नोकदार किनारे आरे की तरह के, फूल सफेद छोटे और फल खिरनी के बराबर होता है। स्व०-गर्मतर १ बाजों के नजदीक सर्दतर १। मात्रा-' तोला।

गुण व कार्य—वरम व रियाह को तहलील करती है, माद्दे को पक्का और पाक करता है, मवाद को पकाता है, इसका पीना रियाह को तहलील करता है, इसके कुछ हिस्से पीना खून को साफ करते हैं, यह इस गुण में बेमिसाल है, कोढ़ व सफेद दाग़ को लाभदायक है, खुजली और फोड़े फुन्सी को मुफीद है, सफरा व बलगम और बाह को दूर करती है, और इसका रस गर्मी के मौसम में जो इसके तने से टपकता है, पीना खून साफ करता है, कोढ़ व आतशक और चर्म रोग को नफा देता है, इसकी लकड़ी की दांतून करना दांतों को साफ और दृढ़ करती है, और आंख की रोशनी बढ़ाती है, लकड़ी घिसकर मुहांसे व दानों पर लगाना अद्भुत गुणदायक और बेमिसाल दवा है।

(जहरीला नहीं)

बाबउल वाद (व)

इसमें सिर्फ १ दवा है

९१५—वरस

अ०-वरस। रंग-पीला सुर्खी मायल। स्वाद-एक यमनी पेड़ है जिसके बीज तिल की तरह के होते हैं और वह पेड़ बीस बरस में फलता है उसमें से जाफरान की तरह रेशे पैदा होते हैं। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-फेफड़े को। दर्प०-कतीरा व शहद व कतीरा। प्रति०-जाफरान। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य—अक्सर जहरों को मारने वाला है, शरीर को बल देता है और बहुत फरहत देता

है, खफ़क़ान और काला दाग़ को नफ़ा करता है, ख़राबे रियाह को तहलील करता है और जिला करता है, वाह को बढ़ाता है और हरकत में लाता है, गुर्दे व मसाने की पथरी तोड़ बहाता है। इसका लेप चेहरे की स्याही व झांई और काले दाग़ को दूर करता है और छीप को लाभदायक है।

(जहरीला नहीं)

बाबउल हाय (ह)

इसमें २३ दवाइयां हैं

९१६—हरसिंगार

प्रसिद्ध नाम-हरसिंगार । रंग-पत्ते हरे फूल सफेद व डंडी पीली व लाल। स्वाद-फीका। प०-एक पेड़ हैं जिसके फूल सुन्दर व सुगंधित और फल गोल और चपटे होते हैं। स्व०-सर्द खुश्क बाजों के नजदीक गर्म खुश्क है। हानि-खांसी को। दर्प०-कतीरा। प्रति०-कुटकी। मात्रा-३ मा०।

गुण व कार्य-वाह को कुव्वत देता है, इसके पत्ते मिश्रित बुखार के लिए लाभदायक हैं, दाद व झाईं और छीप को दूर करते हैं, इसके फूल ठंडे स्वभाव वालों के दिल को बल देता है और हरारत को दूर करता है और वाह को मुहर्रक (हरकत देने वाले) भी है। इसका गोंद और जड़भी बाजीकरण है। इसके फूल की डंडियां रंगने में बहुत काम आती हैं।

(जहरीला नहीं)

९१७—हूबेर [हाऊबेर]

प्र०-हूबेर। सं०-हवुषा। फा०-तुख्म दहल अ०-अवहल व समरतुल अरअर। रंग-भूरा। स्वाद-कड़वा। प०-बाकला से बड़ा और छोटा बेर के बराबर एक फल है। स्व०-गर्म खुश्क २। हानि-जिगर व मेदे को। द०-शहद व रोगन। प्रति०-सलीखा व दारचीनी। मात्रा-६ मा०।

गुण व कार्य—निहायत लतीफ व मुहल्लिल (तहलील करने वाला) है, खुश्की लाता है, काबिज है, खराश पैदा करता है, हांफने व जलंधर और बवासीर को मुफ़ीद है, हैज जारी करता है हमल (गर्भ) को गिराता है।

(जहरीला नहीं)

९१८—हिना जोड़ी

प्र०-हिना जोड़ी। फा०-कफे मरियम व कफे आकला। अ०-प्रखावा उलसफर। रंग-पीलेपन से मटमैला। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक घास की जड़ है बच्चे के पंजे की तरह जिसके पत्ते गंदनाके पत्तेसे हैं। स्व०-गर्म २ खुश्क ३। हानि-दिलको व खराब पेशाब को। दर्प०-बलूत व समैगर्बी। प्र०-नागरमोथा। मात्रा-४ मा ।

गुण व कार्य—आनन्द देती है, गाढ़े मवाद को तहलील करती है, अधिकतर ऐजा को फिजूल और रद्दी मवाद से पाक करती है, कीड़े मकौड़ों के जहर को मारने वाली है, जनून और सौदावी मर्जों को नफा देती है।

(जहरीला नहीं)

९१९—हरताल

प्र०-हरताल। सं०-तालम् । अ०-जरनीख अस्फर। रंग-पीला। स्वाद-फीका। पहि०-पीली मिट्टी की तरह एक खान की चीज है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-अखलात को फासिद करता। और मरोड़ को पैदा करता है। दर्प०- घी और

पीली हड़। प्रति०-मैनसिल। मात्रा-१ मा०।

गुण व कार्य—बुरे और अधिक मांस और मस्से को काटता है, खुजली के चिन्हों को प्रगट करता है, गंज और जूं बढ़ जाने को मुफीद है, प्यास बहुत लाता है, चर्म व खिलतों को जला देता है और पेट के कीड़े मार निकालता है, आंतों में खराश पैदा करता है, बालसफा की तरह बाल मूंडता है।

(जहरीला नहीं)

६२०—हड़जोड़

प्र०-हड़जोड़। रंग-भूरी। स्वाद-कुछ कड़वी व कसैली। पहि०-एक फल वाले पेड़ की शाक़ (टहनी) है जो गिलोय की सी होती है। स्व०-गर्म खुश्क। मात्रा-२ माशा।

गुण व कार्य—खासकर टूटी हुई हड्डी को जोड़ देती है, और पैबन्द देती है, यह गुण इसको खाने और लगाने दोनों से होता है, इसके गुण बिलकुल गिलोय के से हैं, और पुरानी दवाओं में से हैं।

(जहरीला नहीं)

६२१—हैड़ज़र्द

प्र०-हैड़जर्द। सं०-शिवा। फ़ा० हलैला जर्द। अ०-अहलीलज अस्फ़र। रंग-पीली। स्वाद-कसैली पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द १ खुश्क २। हानि-आंतोंमें खराश और कुलंज पैदा करती है। दर्प०-बादाम रोगन और उन्नाव व सपिस्तां। प्रति०-काबुली हड़ व माजू। मात्रा-६ माशा।

गुण व कार्य—मस्तिष्क और मेदे को बलवान करती है, श्वास और बुद्धी को मजबूत करती है, दस्तावर है, सुद्दे खोलती है, मालिखौलिया व वसवास (वहम) व जनून को लाभ करती है, खफ़कान व कोढ़ और मिश्रित ज्वरों को और जलंदर व रियाह और बवासीर को मुफीद है, बलगम और रतूबतों को खुश्क करती है, इसके गुण अनगिनत हैं।

(जहरीला नहीं)

६२२—हड़स्याह व छोटी हड़

प्र०-हड़ स्याह व छोटी हड़। सं०-हरीतकी। फा०-हलैला स्याह। अ०-अहलीलज असूद। रंग-काली। स्वाद-कसैली। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-सर्द १ खुश्क २। हानि-जिगर को। दर्प०-शहद व रोगन। प्रति०-हड़ काबुली। मात्रा-६ माशा।

गुण व कार्य—हवास व पेट के अवयव को बलदायक है, रक्त को शुद्ध करती है, सौदावी माद्दे को दस्तों की राह निकालती है, कोढ़ व बवासीर और तिहाल को मुफीद है, और बसबब निचोड़ने के दस्तावर है, इसका मैदा (चूर्ण) दस्तों को बन्द करता है।

(जहरीली नहीं)

६२३—हरफ़ारेबड़ी

प्र०-हरफ़ारेबड़ी। रंग-पीला। स्वाद-खट्टा। पहि०-एक हिन्दी व जंगली और गोल फल बेर के बराबर होता है। स्व०-सर्दतर २। हानि-बलगम व सौदा पैदा करती है। दर्प०-शहद। प्रति०-कच्चा आमला।

गुण व कार्य—सफ़रा को खूब छांटती है, खून के जोश को तस्कीन देती है, गर्मी व सोजिश को दूर करती है, खून बहने को बन्द करती है, मेदे को बल करती है, इसके पत्तों का शीरा खून को साफ करता और कोढ़ को लाभदायक है।

(जहरीली नहीं)

६२४—हड़ काबुली

प्र०-हड़ काबुली। सं०-अभया। फ़ा०-हलैला काबुली। अ०-अहलीलज काबुली। रंग-पीली व भूरी। स्वाद-कसैली। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-मौतदिल है। हानि-दिमाग़ को। दर्प०-शहद। प्रति०-हड़ स्याह व जर्द। मात्रा-८ मा०।

गुण व कार्य—सौदावी व बलगमी और सफरावी माद्दे को दस्तों की राह निकालती है। मूत्र लाती है, हवास को कुव्वत देती है, मिर्गी व इलकुवा व ख़फ़क़ान और मालिखौलिया को मुफ़ीद है, और निचोड़ के दस्त लाती है।

(जहरीली नहीं)

६२५—हिरनखुरी रांगा

प्र०-हिरनखुरी रांगा। रंग-सफ़ैद व चमकीला। स्वाद-फीका व कसैला। पहि०-रांगा है जो बहुत साफ और हिरन के सुम कासा होता है। स्व०-गर्मतर।

गुण व कार्य—खुजली और कोढ़ को लाभ देता है, प्रतिदिन एक दांग (६ रत्ती) ७ माशा काली मिर्च के साथ पीसकर पीना बाह को कुव्वत देता और वीर्य की वृद्धि करता है, और नेत्र रोगों को लाभदायक है।

(जहरीला नहीं)

६२६—हफ्तवर्ग [सतपतिया]

फ़ा०-हफ्तबर्ग। अ०-माजरयून। रंग-जर्दीमायल। स्वाद-कड़वा। पहि०-कई तरह का एक पेड़ है, जिसके पत्ते समाक़ के पत्तोंसे मिलतेहैं और यहदुधारा(दूध वाला)होता है। स्व०-पुगर्म खुश्क ३। हानि-जिगर को और करब (दर्द) लाता है। दर्प०-मुदब्बर (शुद्ध) कर लेना। प्र०-गूगल व ऐरसा। मात्रा-२¾ माशा।

गुण व कार्य—जिला करता है, मवाद को पाक करता है, सफरा को दस्त के रास्ते निकालता है, पेट के कीड़े मार निकालता है, लहमी व मश्की यानी आबी जलंदर को व कांवर व जोफगुर्दा और मसाना को और तिहाल के वरम को मुफ़ीद है, इसके पेड़ का दूध समक़ातिल (विष) है और कै बहुत लाता है जिसकी इसहाल मुमकिन नहीं यानी तदबीर नहीं।

(गैरस क़ातिल दूध भी है)

६२७—हरहरा

प्र०-हरहरा। रंग-हरा फूल सफेद। स्वाद-कसैला व बदबूदार। पहि०-एक हिन्दी घास बदबूदार है। स्व०-सर्दतर बाजों के नजदीक गर्मतर है। हानि-पट्ठों को।

गुण व कार्य—मूत्र खूब लाता है, गुर्दे व मसाने की पथरी तोड़ बहाता है, कठिनाई से मूत्र होने को लाभदायक है, जुकाम पैदा करता है, पेट के कीड़े मार निकालता है।

(जहरीला नहीं)

६२८—हल्दी

प्र०-हल्दी। सं०-हरिद्रा। फ़ा०-ज़र्दचोब। अ०-उरूक़ उस्सफर। रंग-पीली। स्वाद-कड़वी व तेज बू। पहि०-प्रसिद्ध है। स्व०-गर्म खुश्क ३। हानि-दिल को। दर्प०-नीबू का पानी। प्रति०-मामिरान। मात्रा-५ माशा।

गुण व कार्य—नेत्र की रोशनी को जिला देती है-जिगर का सुद्दा खोलती है। जलंदर और कांवर को मुफ़ीद है, इसको चबाना दांत के दर्द को नफ़ा

देता है, वरम को तहलील करती है और तस्कीन देती है, नेत्ररोगों को लाभदायक है, नेत्र को बल करती है, इसका धूग व सेंक चोट को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

६२९—हुलहुल

प्र०-हुलहुल। सं०-सुवर्चला। रंग-बीज काले पत्ते हरे। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०-एक घास है, जो गज भर की व पत्ते छोटे दाना खशखाश कैसा होता है। स्व०-गर्म तर।

गुण व कार्य—कुलंज और जलन्धर को मुफीद है, इसके पत्तों का रस कान के दर्द को नफा देता है, इसके बीज बवासीर को गुणकारी है और इससाक करते हैं व जिर्यान मनी को दूर करते हैं, इसके पत्तों को जोशान्द से इस्तंजा व आवदस्त करना खूनी बवासीर को बन्द करता है।

(जहरीला नहीं)

६३०—हल्दिया [विष]

प्र०-हल्दिया विष। रंग-पीली। स्वाद-कड़वी। पहि०-हल्दी की तरह की एक जड़ है। स्व०-गर्म खुश्क ४। हानि-सीने व फेफड़े को। दर्प०-कै और रोगन। प्रति०-संखिया। मात्रा-खाते नहीं है।

गुण व कार्य—मांस को खा जाता है और जख्म डालता है, समकातिल (विष मारने वाला) है, इसका काम में लाना किसी तरह ठीक नहीं है।

(जहरीली है)

६३१—हमेशावहार

प्र०-सदाबहार। फ़ा-हमेशा वहार। अ०-अशरून व उलआलम। रंग-पत्ते हरे फूल सफेद व पील। स्वाद-कुछ कड़वे। पहि०-एक पेड़ गज डेढ गज का लम्बा रेहां की तरह का इसकी टहनी में लसी होता है, बीज खुब्बाजी कैसा होता है। स्व०-सर्द २ खुश्क १। हानि-तिहाल को। दर्प०-गिले अर्मनी। प्रति०-काहू व अम्बुल सालिब। मात्रा-६ माशे।

गुण व कार्य—जिगर व तिहाल के सुद्दे खोलता है और अजूमावफ़ (दुखते) अवयव को मवाद गिरने से बचाता है, व सिर दर्द को व नेत्रों से पानी जाने और कान के दर्द को मुफीद है, मेदे को कुव्वत देता है, पेट के कीड़े मार निकालता है, खून बहने व आंतों की खराश और गठिया को मुफीद है, गर्मी की रियाह को तहलील करता है।

(जहरीला नहीं है)

६३२—हंसराज

प्र०-हंसराज। फ़ा०-परसिया वशान। अ०-शअर उलजन व शशर उल अज व शअर उल जिबाल। रंग-हरा व भूरा। स्वाद-कुछ कड़वा पहि०-एक घास है जो धनिये की तरह की होती है और नमी व तरी की जमीन में उगती है। स्व०-मातदिल है और बाजों के नजदीक गर्म खुश्क १ है हानि-तिहाल को। दर्प०-मस्तगी व बनफ्शा और कतीरा। प्रति०-गुल बनफ्शा व मुलहटी। मात्रा-१ तोला।

गुण व कार्य—खिल्तों को लतीफ और सुद्दे खोलता है, मादे को पक्का और पाग करता है, वरम व रियाह को तहलील करता है, खुश्की लाता है और बलगम को छांटता है, सौदावी व बलगमी

माद्दे को दस्तों की राह निकालता है, सफरावी माद्दे को भी निकालता है, सीने को पाक करता है, हपनी व सीने के दर्द व दमे और खांसी को मुफीद है, कांवर और पेशाब बन्द होने और हैज व सांस बंद हो जाने को लाभदायक है।

(जहरीला नहीं)

६३३—हनकूट

प्र०—हनकूट। रंग-जर्दी मयल। स्वाद-कड़वा व कसैला। पहि०—एक पेड़ का फल है जो हैड़ जैसा और बकल भी हैड़ की तरह का होता है। स्व०—गर्म। हानि-आंतों को। दर्प०—मिश्री।

गुण व कार्य—फोड़े फुंसी व मस्से और दांतों को दूर करता है, पेट के कीड़े मारता है, इसके पेड़ की छाल खून के जोश व कोढ़ खुजली को लाभ करती है और सौदावी माद्दे को दस्तों की राह निकालती है। (जहरीला नहीं)

६३४—होफारियकून

अ०—होफारियकून। रंग-मटमैला व लाल। स्वाद-कुछ कड़वा व तेज। पहि०—एक घास है जो तितली की तरह की होती है, फल जौ की तरह का, तीन तरह के होते हैं। स्व०—गर्म खुश्क ३। हानि-गुर्दे को। दर्प०—सिकंजबीन व मस्तगी। प्रति०—बीजकत्र व पत्रज व तुख्म सोया। मात्रा-२ माशे।

गुण व कार्य—खुश्की करता है, वरम व रियाह को तहलील करता है, खिलतों को सुबक व लतीफ करती है और सुद्दा खोलती है, लसदार खिलतों को पिघलाती है, बलगम को छांटती है और बलगमी बीमारियों को मुफीद है।

(जहरीला नहीं)

६३५—हीरा

प्र०—हीरा। सं०—वज्र। फा०—अलमास अ०—अलमास। रंग सफेद व चमकीला। स्वाद-फीका। पहि०—एक बहुमूल्य और बड़े दर्जे का पत्थर प्रसिद्ध है। स्व०—सर्द व खुश्क ४। हानि-कातिल है। दर्प०—कै करना और घी व ताजा दूध। प्रति०—सांप का जहर।

गुण व कार्य—इसका पास रखना और गले में रखना दिल को कुव्वत देता है, डर व झिझकी को दूर करता है और बलादत (बच्चे) को शीघ्र पैदा करता है, शत्रु पर गालिब करता है और इसका तीन पहल का नगीना मिर्गी को दूर करता है और इसका मंजन दांतों को चमकदार करता है।

(जहरीला है)

६३६—हीरा दोखी

प्र०—हीरा दोखी। फा०—खून सियावशान। अ०—दम्मुल अखवीन फातर उज्जदम। रंग-लाल व चमकदार। स्वाद-कुछ कड़वा। पहि०—एक पेड़ का मशहूर गोंद है, बीज हकीमों की राय में इसकी पहिचान में फर्क है। स्व०—सर्द व खुश्क ३। हानि-गुर्दे को। दर्प०—कतीरा व समगअर्बी। प्र०—रसौत व उसारा काहू। मात्रा-४ माशे।

गुण व कार्य—खून को रोकता और बन्द करता है, बीनाई और मेदे को कुव्वत देता है और अजूमाऊफ (दुखते अवयव) की तरफ मवाद नहीं गिरने देता और आंतों की खराश व दस्तों को मुफीद है, इसका सुर्मा आंखों को कुव्वत देता है, इसका मंजन दांतों और मसूढ़ों को मजबूत व साफ

करता है. मेदे व जिगर की गर्मी को दूर करता है।

(जहरीला नहीं)

६३७—हीरा कसीस

प्र०—हीराकसीस । फा०-जाक सब्ज । अ०-जाज अखजर। रंग--पीला सब्जी मायल। स्वाद--चूदार व कसैला । पहि०--एक चीज खूब भारी और बनाई हुई है। स्व०--गर्म २ वाजे २ दर्जे में कहते हैं। हानि -फेफड़े को। दर्प०--रोग (मट्ठा)। मात्रा--खाया नहीं जाता।

गुण व कार्य--फूंक देता और मांस को गला डालता है और जख्म करता है, मेदे व आंतों के कीड़े मारता है, बाजे जहरों का मारने वाला है, बाह को कुव्वत देता है और मनी को गाढ़ा करता है। (जहरीला है)

६३८—हींग

प्र०—हींग। सं०—हिंगु। फा० अंगर व अंगूजा रंग—सफेद व मटमैला । स्वाद—कड़वा व बूदार। स्व०—गर्म ४ व खुश्क ३। हानि—दिमाग को और गर्म स्वभावके जिगर को। दर्प०—कतीरा व बनफ्शा व अनारीन। प्रति०—जावशीर व सकवींनज। मात्रा—३¼ मा०।

गुण व कार्य—दिमागी और पट्ठों की बीमारियो के जैसे—मिर्गी व फालिज व लकवा व राशा और सुनबहरी यानी खिंदर को मुफीद है और नेत्ररोग को नफा देती है, वरम रियाह को तहलील करती है और दूर करती है, खाना खूब हजम करती है, क्षुधा बढ़ाती है, जिगर व मेदे और तिहाल की बीमारियों को नफा करती है और गर्मी पैदा करती है, आवाज को साफ करती है, तेल के साथ इसका लेप चोट और वाई को मुफीद है। इसका कान में डालना कान के बजने और व हरेपन को लाभ करता है और अक्सर विषोंको मारने वाली है। इसका घर में रखना बबाई हवा से बचाता है।

(करीब सम है)

वाव उल ये (य)

इसमें सिर्फ दो ही दवा है।

६३९—याकूत

प्र०—याकूत। फा०—याकूत। अ०—याकूत। रंग—लाल।व चमकीला।स्वाद—फीका।प०—६ बड़े दर्जे का पत्थर है जो कड़ा व चमकीला और बहुमूल्यक होता है। स्व०—मातादिल। द०—जमुर्रद हरा व सोना व सीप। प्रति०—तामड़ा। मात्रा—३ रत्ती।

गुण व कार्य—खुश्की लाता है और दिल व ऐजाय रईसा को कुव्वत देता है, बाजे विषों का मारने वाला है, खफकान और बसबास (वहम) को दूर करता है, खून बहने को बन्द करता और उसको साफ करता है, मिर्गी व बबाई हवा के फिसाद को दूर करता है, असिल हरारत और नेत्रों की ज्योति की चौकसी करता है और भीतर के बंधे खून को फाड़ देता है और तहलील करता है।

(जहरीला नहीं)

६४०—यशब

प्र०—यशब। फा०—संग यशम। अ०—हुजर उल यशफ। रंग—कई रंग का पत्थर हरा जर्दी

मायल सफेद। स्वाद-फीका। प०-एक तरह का कड़ा व बहुमूल्य और चमकीला पत्थर है। स्व०-सर्द खुश्क।प्र०-याकूत जर्द।मात्रा-१ माशा।

गुण व कार्य—दिल और मेदे को कुव्वत देता है, खफकान व वहमको बहुत फायदेमन्द है दिमाग को बल करता है और अक्सर दिमागी मर्जों को नफा देता है, खासकर मिर्गी को और भीतर के खून को पिघला देता है और भीतरी जखमों को मुफीद है। इसको पास रखना जिस प्रकार हो, खफकान और वहम के लिये अद्भुत गुणदायक है।

(जहरीला नहीं)

॥ इतिशुभम् ॥